डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity408/2014-16 शिविरा पत्रिका (मासिक) • सितम्बर, 2016 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2016 पृष्ठ 132 • प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

हमारी विरासत

सर्वपंथ समभाव एवं सामाजिक समरसता के प्रतीक

लोकदेवता बाबा रामदेवजी

15वीं शताब्दी के आरम्भ में राजस्थान के पोकरण नामक प्रसिद्ध नगर में तोमर वंशीय राजपूत शासक अजमल जी के घर भाद्रपद शुक्ला द्वितीया वि.सं.-1409 के दिन रामदेव नामक बालक का जन्म हुआ। मान्यता है कि द्वारकाधीश श्री कृष्ण ने अजमल जी के घर अवतार लिया। उस कालखण्ड में लूट खसोट, छुआछूत व ऊँच नीच के भेदभाव चरम सीमा पर थे साथ ही हिन्दु-मुस्लिम झगड़ों आदि के कारण स्थितियाँ अराजक बनी हुई थी। बचपन से ही रामदेव ऊँच-नीच, भेदभाव व छुआछूत के घोर विरोधी थे। अन्यान्य के प्रति उनका विरोध बचपन की घटनाओं (चमत्कारों) में स्पष्ट दिखाई देता है। बड़े होने पर वे शासक से ज्यादा लोकसेवक के रूप में विख्यात हुए। सभी जाति-बिरादरी, अमीर-गरीब और हिन्दु-मुस्लिम लोग उनके परोपकारिता, धर्मपरायणता, दयालुता, समरसता, सर्वपंथ समभाव, सेवा व सद्भावना के गुणों के कारण लोकदेवता के रूप में सम्मान करने लगे। उनके कृतित्व यथा-डाली बाई का पालन-पोषण, भैरव-राक्षस के आतंक से मुक्ति, मृत भानजे को पुनः जीवित करना, पीरों के लिए मक्का से कटोरे मंगवाना आदि अनेक चमत्कारों की गाथाएँ जन-जन में कथा व गीतों-भजनों में गायी जाती है। इन्हें 'पीरों का पीर' कहा गया है।

संवत् 1425 में रामदेव जी महाराज ने पोकरण से 12 कि.मी. दूर उत्तर दिशा में रूणिचा ग्राम की स्थापना की। माता मैणादे, भाई बीरम देव, बहिन सुगनादे, डाली बाई के कहने पर संवत् 1426 में अमरकोट के ठाकुर दल जी सोढ़ा की पुत्री नेतलदे के साथ विवाह हुआ। विवाह पश्चात भी 'लोकहित परमोधर्म' के मार्ग पर चलकर जन-जन की सेवा करते रहे। डाली बाई रामदेव जी के चमत्कारों व घटनाओं को कथा के रूप में उसी प्रकार गाँव-गाँव जाकर सुनाती-गाती, जिस प्रकार मीरां कृष्ण के।

लोक मान्यता है कि वि.सं. 1442 भाद्रपद शुक्ला दशमी के दिन सभी बड़े-बूढ़ों को प्रणाम कर अन्तिम उपदेश देते हुए उन्होंने जीवित समाधि ली। आज भी रूणीचा धाम (समाधि स्थल पर) रामदेव जी के जन्मोत्सव से परम ज्योति में विलीन होने के दिन तक राजस्थान, गुजरात, पंजाब, मध्यप्रदेश, हरियाणा और दक्षिण भारत से भी बड़ी संख्या में सभी मत-मतांतरों के पैदलयात्री आकर अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं। राजस्थान के सबसे बड़े मेले के रूप में विख्यात है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों भक्त समाधि के दर्शनार्थ आते हैं।

सौजन्य: प्रकाशचन्द्र जाटोलिया, वरिष्ठ संपादक शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर मो. 9413926806

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334001

मासिक
शिविरा पत्रिका
वर्ष : 57 | अंक : 3 | सितम्बर, 2016 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹15

शिक्षक दिवस विशेषांक

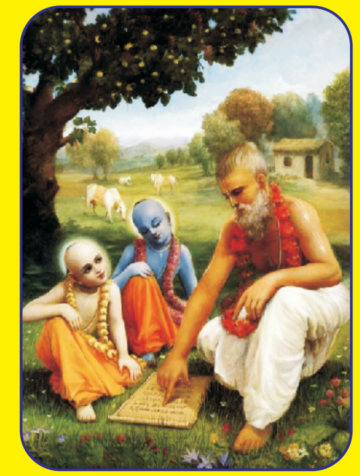

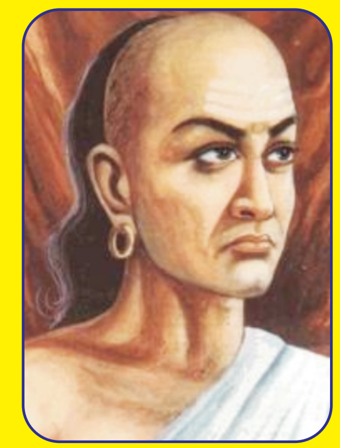

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 3 | भाद्रपद–आश्विन २०७३ | सितम्बर, 2016

प्रधान सम्पादक

बी.एल. स्वर्णकार

❊

वरिष्ठ सम्पादक

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

❊

सम्पादक

गोमाराम जीनगर

❊

सह सम्पादक

मुकेश व्यास

❊

प्रकाशन सहायक

नारायण दास जीनगर

रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर–334 001

दूरभाष : 0151-2528875

फैक्स : 0151-2201861

E-mail : shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- शिक्षक सम्मान : प्रेरणा पर्व 5

शैक्षिक चिन्तन

- शिक्षा में भारतीयकरण की अपेक्षा 7
  डॉ. गिरीशदत्त शर्मा
- विश्व धरातल पर 'शिक्षक दिवस' 9
  नरेश शर्मा
- न गुरोरधिकम् : **सतीश चन्द्र श्रीमाली** 10
- गुरु की गुरुता : **वृद्धिचन्द गोठवाल** 11
- गुरु अमृत की खान : **गायत्री शर्मा** 12
- बालक का चरित्र निर्माण : माँ की भूमिका 13
  प्रोफेसर डॉ. अजय जोशी
- डॉ. राधाकृष्णन् का शिक्षा दर्शन 14
  डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- सम्भवामि युगे-युगे! 15
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- चंगुल में चहकता बचपन 17
  भगवती प्रसाद गौतम
- बाल विकास और शिक्षा 19
  अरनी राबर्ट्स
- शिक्षक एक कालजयी मशाल 21
  चम्पा देवी
- दिशा बोध : **शंकर लाल माहेश्वरी** 22
- शिक्षा, विकास और अर्थशास्त्र 23
  डॉ. जमनालाल बायती
- 'भारत की खोज' करे कौन? 26
  जयसिंह राठौड़
- सृजनशील बालक 29
  रामजीलाल घोड़ेला
- धीरता : संकलन–**रामकिशोर** 29
- विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा 30
  सरोज राठौड़
- विचार क्रांति : **सरस्वती माहेश्वरी** 32
- जीवनोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता 33
  सुरेन्द्र माहेश्वरी
- भावी पीढ़ी की खुशी को प्राथमिकता दें 35
  नारायण दास जीनगर
- व्यक्तित्व निर्माण : शिक्षक भूमिका 36
  शिवनारायण शर्मा
- भाषा और साहित्य शिक्षण की संस्कृति 37
  डॉ. राम निवास
- अध्यापक क्या नहीं चाहते, क्यों नहीं चाहते? 40
  रूपनारायण काबरा
- शिक्षा प्रयोजनशीलता : शिक्षक सरोकार 41
  पी.डी. सिंह
- विद्यालय की घण्टी 42
  प्रदीप कुमार माथुर
- शिक्षण की बेहतरी : अनर्गल सवाल 43
  डॉ. मूलचन्द बोहरा
- काल करे सो आज कर 44
  संकलन : रमेश कुमार व्यास
- बाल साहित्य कैसा हो? 45
  मईनुदीन कोहरी
- प्राथमिक शिक्षा का माध्यम–मातृभाषा 46
  श्रीकिशन वैष्णव
- खुलकर रखने दें अपनी बात 47
  प्रकाश चन्द्र शर्मा
- मिट्टी और पत्थर : **भरत छंगाणी** 48
- बधिर बालकों का शैक्षणिक पाठ्यक्रम 48
  योगेन्द्र सिंह नरुका 'फूलैता'
- अनुभव जो हमें सीख देते हैं 49
  मुरारी लाल कटारिया
- समर्पण भाव की श्रेष्ठता 50
  संकलन : ज्येष्ठानन्द जीनगर

मुख्य आवरण :

नारायणदास जीनगर, बीकानेर

मो. 9414142641

हिन्दी विविधा

- हिन्दी देश-विदेश में : **रामगोपाल 'राही'** 51
- सदाचरण : **संकलन : लक्ष्मण डाभी** 52
- दुनिया में बढ़ता रुतबा हिन्दी का **डॉ. कृष्णा आचार्य** 53
- क्या समझाएँ? : **शिवचरण मंत्री** 54
- क्रान्ति के महान अग्रदूत : तात्या टोपे **मनमोहन अभिलाषी** 55
- गोस्वामी तुलसीदास के काव्य की प्रासंगिकता : **डॉ. अनुराधा पालीवाल** 57
- संकट में इंसान की परीक्षा **प्रकाशचन्द टेलर** 77
- कन्या-भ्रूण हत्या-जघन्य अपराध **उम्मेद सिंह भाटी 'सूरज'** 78
- नारी शक्ति : **डॉ. कृष्णा माहेश्वरी** 79
- ग़ज़ल **डॉ. भँवर कसाना, सुशील व्यास** 80
- जहाँ चाह वहाँ राह **सुभाष चन्द्र कस्वां** 81
- अनुगूँज : **रामचन्द्र संतवाणी** 82
- राजस्थान में जल संरक्षण **सतीश कुमार गुप्ता** 83
- बीज को गढ़ना होगा **कान्ता चाडा** 83
- नैमिषारण्य से रामेश्वरम् की ओर **जेठनाथ गोस्वामी** 84
- मुख्य अतिथि : **उषा रानी स्वामी** 85
- मायड़ का अविस्मरणीय सपूत : ओम पुरोहित 'कागद' : **डॉ. नीरज दइया** 86
- अमावस की चाँदनी : **शकुन्तला सोनी** 87
- अन्तराल के बाद : **शीला व्यास** 88
- राष्ट्रीय अनुशासन संकलन-**जुगल किशोर राठौड़** 89
- पुरस्कार : **डॉ. आशा शर्मा** 90
- बलजी-भूरजी : **जगदीश कुमार** 91
- जग्गू : **जगदीश मिश्र** 92
- सौदा : **सूर्य प्रकाश जीनगर** 93
- जागृति : **भोगीलाल पाटीदार** 93
- पिता : **विद्यानिधि त्रिवेदी** 95
- तो कोई बात बने **सैयद अहमद शाह अली** 95
- शिक्षक कर्म **लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्णकली'** 96
- बात करते रहना : **बालकृष्ण शर्मा** 97
- माँ : **कृपानिधि त्रिवेदी** 97
- समय : **देवेन्द्र पण्ड्या** 97
- महाशिव रात्रि : **जीवाराम मेघवाल 'पूरण'** 97
- कितना सुहाना : **गणपतिसिंह 'मुग्धेश'** 98
- लो चलो दीपक... : **हिम्मतराज शर्मा** 98
- माँ के स्वरूप : **मीता व्यास** 98
- कच्चा चूल्हा : **डॉ. दयाराम** 99
- पगडंडी : **दिनेश विजयवर्गीय** 99
- दीपक : **हरिकृष्ण सहारण** 99
- हे गुरुदेव नमन! **डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा** 100
- पौधारोपण : **जगदीश प्रसाद त्रिवेदी** 100
- बदरा : **किशन गोपाल व्यास** 100
- पीपल की छाँव **कमलेश कुमार नाहैलिया** 101
- माँ : **नगेन्द्र कुमार मेहता** 101
- प्यारी सी बिटिया ने **रतन लाल जाट** 102
- हिन्दी : **राजेन्द्र कुमार टेलर 'राही'** 102
- राष्ट्र की खातिर **मोहन लाल जांगिड़** 102
- खुशी, विकास और समृद्धि **पुष्पलता कश्यप** 103
- तेरी जय हो भारतमाता **शेरसिंह बाहरठ** 103
- पतझड़ : **सम्पत लाल शर्मा 'सागर'** 104
- अंधेरा मिटाता है तू **डॉ. रेणुका व्यास** 104
- युवाओं का हौसला : **सावित्री कुमारी** 104
- सुन्दर अर्थ दो **डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल** 104

राजस्थानी विविधा

- भक्ति आकास रौ चमकतो सितारौ मीराँ **उर्मिला नागर** 105
- जुगां तांई जीवैला दयालदास रा सबद **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा** 106
- माया रूंखां री **जगदीश सिंह राव 'विश्वास लोक'** 107
- रू-ब-रू : **नरसिंह सोढ़ा** 108
- मायड़ भोम महान् : **आशुतोष 'आशु'** 109
- बुढ़ापो : **छाजूलाल जांगिड़** 111
- वचन रो धंणी **दशरथसिंह खिड़िया** 112
- हाइकू : **सुरेश कुमार** 114 **घनश्याम पारीक** 119
- किण रो राज सिरे : **हेमा** 115
- मल जी रौ न्याव **मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल'** 116
- पाणी : **डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत** 117
- उडीक : **शिवशंकर व्यास** 118
- लघुकथावाँ : **अमित श्रीमाली** 118
- मरुधरां मांय-प्रकृति रा रंग ढंग **मोहम्मद अमीन छींपा** 119
- काळा-बादळा : **ओम प्रकाश सैनी** 120
- स्कूल सरकारी : **रामकुमार वर्मा** 120
- म्हारो प्यारो राजस्थान **रामदेव बाबू 'यादव'** 120
- मौसम री दोहावळी : **नरेश व्यास** 120

बाल साहित्य

- संकट में है-पृथ्वी : **पुष्पा शर्मा** 121
- भारतीय करेंसी नोट एवं उसका इतिहास **भारत भूषण गुप्ता** 122
- प्लास्टिक सर्जरी के जनक **भूरमल सोनी** 126
- उपहार : **मेहश कुमार चतुर्वेदी** 126
- स्वावलम्बी : **दीपचन्द सुथार** 127
- तिरंगा : **कल्पना दीक्षित** 127
- बच्चों को संस्कारी बनाएँ **सांवलाराम नामा** 128
- उठो जागो... : **विशम्भर पाण्डेय** 128
- मेरे दादाजी : **ओमदत्त जोशी** 129
- मेरा प्यारा भारत देश : **उत्सव जैन** 129
- आओ हम अच्छे बनें : **ऋतु संदल** 129
- माटी हिन्दुस्तान की **सत्यनारायण नागोरी** 129
- बस्ता भारी : **घनश्याम शर्मा** 130
- ऋतुराज : **चन्द्रशेखर शर्मा** 130
- बेटी बचाओ : **नृहसिंहदास वैष्णव** 130
- घटता पानी... : **डॉ. लीला मोदी** 130
- बाल कविता : **ज्ञानप्रकाश पीयूष** 130
- जीवन मूल्य : **शमिन्द्र कौर** 130

इस माह का गीत

- यह कल कल छल छल बहती संकलनकर्ता : **नटवरराज** 16

स्तम्भ

- पाठको की बात 6
- आदेश-परिपत्र 59-76
- कार्टून : **रामबाबू माथुर** 10, 11, 12, 77

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"शिक्षक सदैव सम्माननीय रहा है। जो समाज शिक्षकों का सम्मान करता है, वह शिक्षकों से प्राप्त ज्ञान और नीति के आधार पर कर्म करके जाग्रत समाज का निर्माण करता है, इसी से समाज का यश कीर्ति और गौरवशाली इतिहास बनता है। एक आदर्श शिक्षक अपने शिष्य को संकल्प दिलाता हैं कि ''अनीति से प्राप्त सफलता की तुलना में नीति से प्राप्त असफलता को शिरोधार्य करना।''"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षक सम्मान : प्रेरणा पर्व

महान शिक्षक, दार्शनिक और देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् का जन्म दिन 'शिक्षक दिवस' के रूप में कृतज्ञ राष्ट्र हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उत्साहपूर्वक मना रहा है। इस अवसर पर राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में श्रेष्ठ कार्य करने वाले चयनित शिक्षकों का सम्मान करना शासन की उज्ज्वल परम्परा रही है।

शिक्षक सदैव सम्माननीय रहा है। जो समाज शिक्षकों का सम्मान करता है, वह शिक्षकों से प्राप्त ज्ञान और नीति के आधार पर कर्म करके जाग्रत समाज का निर्माण करता है, इसी से समाज का यश कीर्ति और गौरवशाली इतिहास बनता है। एक आदर्श शिक्षक अपने शिष्य को संकल्प दिलाता हैं कि ''अनीति से प्राप्त सफलता की तुलना में नीति से प्राप्त असफलता को शिरोधार्य करना।''

शिक्षा में नीति और नीति में शिक्षा, जीवन की दिशा निर्धारित करती है। शिक्षा बचपन को संवारती है, यह न तो यथास्थितिवादी है न ही अतीतमुखी। शिक्षा का उद्देश्य जीवन का विकास करना, आवश्यकतानुसार जीवन में परिवर्तन लाना है।

डॉ. राधाकृष्णन् का मानना है कि जीवन के प्रति श्रद्धा का भाव महत्त्वपूर्ण है। इस पर बच्चों की शिक्षा में जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षा में मनुष्य का सर्वांग बदलने की क्षमता है। हमारे शिक्षक अपने आचरण से शिक्षार्थी के लिए आदर्श बने।

शिक्षक दिवस के अवसर पर शिविरा सितम्बर २०१६ का यह अंक 'शिक्षक दिवस विशेषांक' है। सृजनशील शिक्षकों, विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारियों और विशिष्ट लेखकों ने अपनी श्रेष्ठ रचनाएँ देकर इस अंक को संग्रहणीय बनाया है। रचनाकारों ने मौलिक लेखन से अपनी सृजन क्षमता का परिचय दिया है उनको धन्यवाद। वे अध्ययनशील रहते हुए निरन्तर प्रगति करें। शिक्षक, पाठक प्रेरणा पाएँ तथा अपने रचनात्मक सुझावों से अवगत कराएँ।

शिक्षक दिवस की बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ!!!

(बी.एल. स्वर्णकार)

पाठकों की बात

● शिविरा पत्रिका अगस्त 2016 का अंक मिला। सुंदर व मनमोहक मुखपृष्ठ व अंतिम आवरण पृष्ठ ने आनन्दित कर दिया। अंक की विविध शिक्षा संबंधी सामग्री पठनीय, प्रेरक एवं जीवन में धारण करने योग्य है। निदेशक महोदय जी का 'दिशाकल्प' का छात्र पठन-पाठन एवं कर्तव्यनिष्ठा से निर्वाहन करें। अन्तर्मन की आवाज मुकेश व्यास जी की प्रेरणा-'आना पूर्व विद्यार्थी का अपने विद्यालय में' सद्प्रेरणा का साकार उदाहरण है। डॉ. के.के. पाठक जी का चिन्तन 'आत्मविश्वास' मनोवैज्ञानिक सत्य तथ्यों को बखूबी प्रस्तुत करता है। 'बालक की सांवेगिक बुद्धि बढ़ने दो' हमें इस लेख अनुसार छात्रों को अग्रसर करना ही होगा। शेरसिंह बारहठ का लेख राजकीय विद्यालय में अध्ययन के लाभों को बखूबी सच्चाई से प्रस्तुत करता है जो अभिभावकों, छात्रों के लिए हितकारी है। 'विद्यालय में प्रार्थना सभा' प्रिय लगा।

वेदों का ज्ञान देकर, जीवन का सार दे माँ।
वाणी में ओज भर दें, रचना निखार दे माँ।
अपनी कृपा से हम सब का लेखन संवार दे माँ।
आये शरण तुम्हारी, हमें तू तार दे माँ शारदे।

-साँवलाराम नामा, जालौर

● शिविरा पत्रिका का माह अगस्त 2016 का अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम 'सा विद्या या विमुक्तये' में अपनों से अपनी बात नई शिक्षा नीति, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गोगानवमी, महर्षि अरविन्द का जन्म दिवस के बारे में अच्छी जानकारी मिली। दिशा कल्प में राष्ट्र निर्माण में हमारी भागीदारी, डॉ. के.के. पाठक का लेख 'आत्मविश्वास', शासन सचिव श्री ओ.पी. मीणा का अपने पूर्व विद्यालय में आना आदि प्रेरणा लेखों से पता चलता है कि शिविरा पत्रिका में अब पहले से बहुत ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है। आजकल शिविरा का कवर भी लेमिनेशन युक्त आता है और शिविरा पत्रिका के कवर, छपाई, कवर का अन्तिम पृष्ठ आदि में भी काफी सुधार हुआ है। व.स. महोदयजी का आभार व सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

-किरण व्यास, जैसलमेर

● शिविरा पत्रिका में उच्च स्तरीय लेख पढ़ने को मिलने लगे है, जैसे-मंत्री जी, निदेशक महोदयजी, के.के. पाठक जी, शासन सचिव जी, विजय सिंह माली, सुभाष चन्द्र कस्वाँ का लेख देशरत्न ध्यानचंद, संस्कृत दिवस पर शशिकांत द्विवेदी का लेख आदि पढ़कर मन कहता है कि किसी भी महीने की शिविरा नहीं छूटे। मैं सम्पादक महोदय से आशा करता हूँ कि आप इसी तरह इस पत्रिका की गुणवत्ता को कायम रखेंगे आपको साधुवाद।

शिविरा पत्रिका में उत्तरोत्तर सुधार हुआ है। हमारे देश के प्रधानमंत्री जी हर माह 'मन की बात' कहते है। ठीक उसी प्रकार हमारे शिक्षा मंत्री जी भी 'अपनों से अपनी बात' में अपने मन की बात करते है।

-मुरलीधर सोलंकी, बीकानेर

● प्राप्त गतांक में भरपूर शैक्षिक संबल प्रधान करने वाली सामग्री रही। मंत्री महोदय व उच्च शिक्षा अधिकारियों का मार्गदर्शन सभी शिक्षकों के लिए अनुकरणीय है। देशरत्न ध्यानचन्द का आलेख, 'संस्कृत दिवस', महर्षि अरविन्द के जन्म दिन पर विशेषतः पठनीय सामग्री रही। आवरण की सुन्दरता व सम्पादक मण्डल का समन्वय पूरी पत्रिका को संग्रहणीय बनाती जा रही है। लेखों का चयन व प्रस्तुती का ढंग सम्पादक मण्डल की टीम भावना को ही प्रकट करता हे। पत्रिका से जुड़े सम्पूर्ण शिविरा परिवार को इस स्वतन्त्रता दिवस विशेषांक पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

-किसनलाल बालौत, भीनमाल, जालौर

● मैं पिछले ढाई साल से शिविरा का नियमित पाठक हूँ। पिछले महीने शिविरा का अगस्त का अंक प्राप्त हुआ। शिविरा का आवरण पृष्ठ बहुत ही शानदार लगा। पीछे के पृष्ठ पर भारतीय तिरंगे झण्डे का ऐतिहासिक क्रम देखकर बहुत अच्छा लगा। इससे मुझे भारतीय झण्डे का इतिहास जानने में बहुत सहायता मिली। शिविरा पत्रिका ज्ञान का बहुत बड़ा भण्डार है। शिविरा पत्रिका को पढ़कर कहा जा सकता है कि इससे बड़ा ज्ञान का भण्डार और कहीं नहीं है।

-विनोद शर्मा, नायला, जयपुर

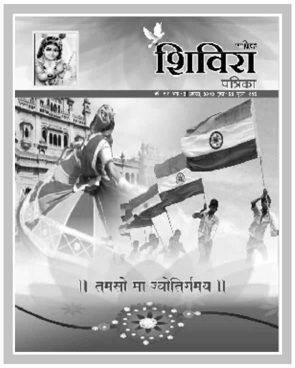

▼ चिन्तन

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्य लोके भूविभार भूताः
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

मनुष्य के लिए विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील (चरित्र) और धर्माचरण अति आवश्यक है। इससे रहित मनुष्य भूमण्डल पर पशु के समान भार स्वरूप ही है।

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा में भारतीयकरण की अपेक्षा

❒ डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

'सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद दुःखभाग्वेत्।।'

यह है भारतीय शिक्षा पद्धति का आदर्श जिसमें शिक्षा को आरम्भ करने के साथ ही बालक को सिखाया जाता है कि हम 'स्व' के स्थान पर ईश्वर से कामना करें कि विश्व के सभी लोग सुखी और सम्पन्न हों, सभी स्वस्थ और निरोग हो, सभी का कल्याण एवं मंगल हो, किसी को कोई भी कष्ट या दुःख की अनुभूति न हो। भारतीय शिक्षा की अनूठी नीति एवं दर्शन के कारण भारत सदैव से विश्व गुरु रहा है। विश्व कल्याण की ऐसी भावना और उसका अनुसरण अन्य किसी देश की शिक्षा नीति में दुर्लभ है। परन्तु खेद का विषय है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों के व्यतीत हो जाने के बाद भी हम अपनी शिक्षा पद्धति में वे आदर्श एवं मूल्य स्थापित नहीं कर पाए जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने विदेशी शासन में ह्रास होती अपनी शिक्षा नीति में स्वप्न रूप में देखे थे। यद्यपि स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा में भारतीयकरण के अनुरूप आमूलचूल परिवर्तन करने के लिए देश में अनेक आयोग बने, सेमिनार आयोजित हुए, अनेक विचारगोष्ठियां एवं खुली चर्चाएं हुई परन्तु अधिकांश कागजी कार्यवाही तक सीमित रही और व्यावहारिक रूप नहीं ले पाए। कारण, हमारी शिक्षा नीति ऐसे व्यक्तियों के हाथ में रही जिनका शिक्षा से कोई सरोकार न रहा। दूसरे, कुछ वामपंथी विचारधारा के लोग पाठ्यक्रम निर्धारण, पाठ्यपुस्तकों के लेखन और उनकी अनुशंसा आदि के कार्य में सम्मिलित रहे जो हमारे गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और दर्शन संबंधी तथ्यों को विकृत कर विदेशी शासकों की विचारधारा के अनुरूप प्रस्तुत कर उनकी तुष्टिकरण में संलग्न रहे हैं। विभिन्न राजनीतिक दल भी सत्ता के व्यामोह में फंसकर वर्षों से चली आ रही इस शिक्षा व्यवस्था में भारतीयता के अनुरूप परिवर्तन कर पाने का साहस नहीं जुटा पाए।

किसी भी देश की शिक्षा पद्धति उस देश की संस्कृति, परम्पराएं, जीवनदर्शन और सामाजिक मूल्यों के अनुसार निर्धारित की जाती है और उन्हें प्रारंभिक शिक्षा से ही समाहित कर दिया जाता है। प्रारंभिक शिक्षा के माध्यम से बालकों में जो संस्कार, आचरण आदि स्थापित किए जाते हैं वे उनके व्यक्तित्व में जीवन भर बने रहते हैं। अतः हम देश में जो भी परिवर्तन या सामाजिक अपेक्षाएं चाहते हैं। प्रारंभिक शिक्षा में समन्वित कर बिना किसी रक्तपात या हिंसा के क्रांति रूप में ला सकते हैं। आज हमारे देश की शिक्षा में भी भारतीयता को सम्मिलित कर एक ऐसी ही क्रांति की अपेक्षा है जिसके आधार पर भारत पुनः जगद्गुरु के शीर्ष पद पर आसीन हो सके।

वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा एक मिशन के रूप में न होकर एक वस्तु (Commodity) के रूप में मानकर उसका व्यावसायीकरण किया जा रहा है। इसे लाभ हानि की तराजू में तौलकर इसकी उपादेयता जाँची जाती है। बालक के व्यक्तित्व निर्माण का उसमें कोई स्थान नहीं है। जरा सोचिए ऐसी शिक्षा से व्यक्ति में आज भौतिकवाद बढ़ने के अतिरिक्त और क्या अपेक्षा की जा सकती है? उसमें भावनात्मक एवं चारित्रिक उत्कर्ष कैसे आ सकता है। जबकि भारतीय शिक्षा एक 'मिशन' के रूप में रही है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हमारी शिक्षा का उद्देश्य बालक में निहित दैवीय शक्तियों का विकास करना है। उसका सर्वांगीण विकास करना है। हमारी शिक्षा एक वस्तु न होकर सोलह संस्कारों में से एक संस्कार है और जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त जीवन के प्रत्येक पहलु से जुड़ी हुई है। भारतीय विद्यार्थी ऐसी शिक्षा के द्वारा ही 'स्व' से हटकर समष्टि के बारे में सोचने को बाध्य होता है।

महर्षि पाराशर ने कहा है कि 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् वास्तविक शिक्षा वही है जो हमें ऐसे बन्धनों से मुक्त कर सके जो हमारे आचरण, व्यवहार और व्यक्तित्व के निर्माण में बाधक बनते हैं। काम, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ,

मोह, द्वेष आदि ऐसी ही तो प्रवृत्तियां हैं जो मनुष्य को ऊपर उठने से बाधित करती हैं। स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गाँधी, पं. मदनमोहन मालवीय आदि सभी तो ऐसी शिक्षा के समर्थक रहे हैं। भारतीय शिक्षा का केन्द्र बिन्दु मोक्ष रहा है जो हमें सब प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों से हटाकर जीवन के परम उत्कर्ष को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। मोक्ष में मनुष्य को किसी प्रकार की आकांक्षा नहीं रहती इसलिए मनुष्य में कुण्ठा, हताशा, दुःख, संताप, मानसिक विकृतियां आदि कुछ भी नहीं रहती और वह राग द्वेष रहित परमानन्द को प्राप्त कर लेता है। छात्रों में ऐसी स्थिति लाने के लिए हमें अपने पाठ्यक्रमों और अध्यापन में ऐसे ही धर्ममूलक विचारों को समाहित करना अपेक्षणीय है।

शिक्षा को मात्र रोजगारोन्मुखी बना देना, उसे व्यावसायिक बना देना भारतीय परम्परा के विपरीत है क्योंकि उससे व्यक्ति में प्रतिस्पर्द्धा, प्रतिद्वंद्वता, द्वेष, हिंसा, भ्रष्टाचार जैसी अनेक दुष्प्रवृत्तियां धन और सम्पत्ति के संग्रह के लिए उत्पन्न हो जाती हैं। नैतिकता, सहिष्णुता, सहानुभूति, धर्म जैसी भावनाएं समाप्त हो जाती हैं और मनुष्य धनोपार्जन की मशीन बनकर रह जाता है। भारतीय शिक्षा पद्धति में उसके सर्वांगीण विकास को महत्त्व दिया गया है जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक तीनों विकास सम्मिलित हैं 'विद्या ददाति विनयम्' के सिद्धांत को लेकर चलते हुए हमारी शिक्षा व्यक्ति को विनम्रता की ओर ले जाती है जिससे व्यक्ति को सुख और धन दोनों प्राप्त हो जाते हैं और जीवन में सम्पूर्णता आती है।

भारत में शिक्षा में धर्माचरण को महत्त्वपूर्ण स्थान देकर भारतीय मनीषियों द्वारा मनुष्य को पशुश्रेणी से पृथक किया गया है क्योंकि ''आहार निद्रा, भय, मैथुनं च सामान्येतत् पशुभिः नराणाम्, धर्मो हितेषामधिको विशेषः; धर्मेणहीनाः पशुभिः समानाः''। अतः धर्म के आधार पर ही मनुष्य को विश्व के समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है। यह श्रेष्ठता उसी धर्म के आधार पर प्राप्त की जा सकती है जो शाश्वत है सत्य है जिसमें कहीं भी भिन्नता नहीं है और सम्पूर्ण सृष्टि के लिए परोपकारी है। हमारी प्राचीन परम्परा सदैव इसी भावना से अनुप्राणित रही है। वर्तमान में भी ऐसी शाश्वत परम्पराओं को शिक्षा में सम्मिलित करना आवश्यक है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसे ऋषियों के संरक्षण में पुष्पित, पल्लवित और संरक्षित रही है जो स्वच्छ, शान्त और शीतल वातावरण से युक्त आश्रमों में रहते थे। निरन्तर चिन्तन, मनन करते हुए उन्होंने ज्योतिष, अन्तरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन, गणित, धर्म, राजनीति, युद्ध कौशल आदि विविध क्षेत्रों में न केवल निपुणता प्राप्त की अपितु अद्वितीय कार्य और योगदान से विश्व का ऐसा मार्गदर्शन किया है कि आज भी हमारे लिए उनका अनुकरण अपेक्षणीय बन गया है। आर्यभट्ट, भास्कर, धन्वंतरि, सुश्रुत, चाणक्य, पाणिनी, द्रोण, भीष्म जैसे अनेक महापुरुषों के बराबरी का व्यक्तित्व आज दुर्लभ है। अतः अपेक्षा है कि हमारे विद्यालयों को पाठ्यक्रमों में ऐसे व्यक्तित्व के जीवन दर्शन और उनकी रचनाओं को सम्मिलित करके आज की पीढ़ी को अपने अतीत के गौरव से परिचित कराया जाये जिससे भारत की भावी पीढ़ी वर्तमान पाठ्यक्रमों के भ्रमित तत्त्वों के स्थान पर भारत के विविध क्षेत्रों के वास्तविक स्वरूप को समझ सके और अपने समृद्धि शाली वैभव का आचरण कर सके। खेद है कि आज भी अनेक लोग विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े सत्ता के मोह में तुष्टिकरण को अपनाते हुए शिक्षा में भारतीयता के नाम पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाते है। रामायण, महाभारत जैसे ग्रन्थों को कपोलकल्पित मनगढ़न्त बताते हैं। प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं में विसंगतियां प्रस्तुत करते हैं। विभिन्न प्रकार के विरोध और प्रदर्शन करते है। जबकि वास्तविकता यह है कि भारत में पूर्ण रूप से धर्म निरपेक्षता है भारत में सभी धर्मों, सम्प्रदायों, मत मतांतरों आदि के लिए समान आदर भाव है। सभी की भाषा, संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं को साहित्य, दर्शन, इतिहास आदि में भारत में उदार भाव से संरक्षण मिलता है। यहाँ की संस्कृति ने सभी को अपने में आत्मसात कर लिया है। अपनी इसी उदारता और समत्व भाव के कारण भारतीय संस्कृति आज तक अक्षुण्ण बनी हुई है जबकि विश्व की अनेक संस्कृतियां, सभ्यताएं उदित हुई और विलुप्त हो गयी।

विश्व में सम्भवतः भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ के व्यक्ति अपने ही राष्ट्र की नीति, आदर्श और मूल्यों की आलोचना करते विदेशी संस्कृति और सभ्यता को गौरव की दृष्टि से देखते है। उनकी रीति-नीति को अपनाने में अपने को एडवान्स समझते हैं। उदाहरण के लिए हम नववर्ष 31 दिसम्बर की मध्य रात्रि को मनाते हैं। परन्तु इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। जबकि भारत में नया वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मानते हैं कि उसी दिन सृष्टि की उत्पत्ति मानी गयी है। विक्रम संवत भी उसी दिन से आरम्भ हुआ है। अनेक महापुरुषों का जन्म भी उसी दिन हुआ है। खेतों में नवीन फसलें भी उस समय तक पककर तैयार हो जाती है। जिससे लोगों में नया उत्साह होता है। दूसरे, हमारी परम्परा में मध्य रात्रि अंधकार, अज्ञान, हताशा, निराशा का प्रतीक मानी जाती है। अतः उस दिन का आरम्भ उषा की लाली, जो उत्साह का प्रतीक है, से माना जाता है। हमें चाहिए कि विद्यालयों में नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाएं और उस दिवस की गरिमा को पहचानें।

शिक्षा में भारतीयता लाने के लिए 'वन्दे मातरम्' ज्योतिष आदि को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने पर अपने ही समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा विरोध प्रतिरोध करते हुए शिक्षा में साम्प्रदायिकता एवं भगवाकरण जैसी संज्ञाएं दी गयी हैं। जबकि 'वन्दे मातरम्' किसी वर्ग विशेष से संबंधित न होकर मातृभूमि की प्रार्थना है। जिसके रजकण में हम पले और बढ़े है। कुछ व्यक्ति हमारे अद्वितीय ग्रन्थ भगवद्गीता को हिन्दुत्व से जोड़ते हैं। जबकि भगवद्गीता का अध्ययन न केवल हिन्दुओं को अपितु विश्व की समस्त मानव जाति के उन्नयन के लिए उपयुक्त है। अतः आज के भौतिकवादी युग में जहाँ लगभग प्रत्येक देश में अराजकता, आतंकवाद, वैमनस्य, कुण्ठा, अविश्वास और अशांति फैली हुई है। वही भारत की शिक्षा व्यवस्था में यदि भारतीय मानकों के अनुरूप पाठ्यक्रमों में शिक्षण प्रक्रम अपनाया जावे तब मानवों में मार्गदर्शन कर भारत पुनः विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त कर सकता है।

4/82 चौटाला रोड, वार्ड 23
संगरिया (राज.)-335063

विश्व धरातल पर 'शिक्षक दिवस'

❒ नरेश शर्मा

भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वरतुल्य महत्त्व प्रदान किया गया है। 'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः', 'बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय' जैसे पद उस युग के आदर्श के साक्षात् प्रतिरूप हैं। गुरु का जो आदर्श प्राचीनकाल में था कालान्तर में उसकी गरिमा दिनों-दिन गिरती चली गई। इस स्थिति के अनेक कारण उत्तरदायी हैं किन्तु इतना सत्य है कि वर्तमान हाईटेक और भौतिकवादी युग में भी अच्छे शिक्षकों को सम्मान प्राप्त है। 5 सितम्बर को हम 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। इस दिवस के प्रयोजन से सब भलीभांति परिचित हैं। शिक्षक दिवस 5 सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है, इसका कारण है कि 5 सितम्बर, भारत के महान् शिक्षाविद् एवं दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस होता है। डॉ. राधाकृष्णन विश्वविख्यात शिक्षाशास्त्री और शिक्षक थे इसलिए शिक्षकों-गुरुओं को आदर-सम्मान का भाव प्रकट करने हेतु भारत में उनके जन्मदिवस को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाने की परंपरा विकसित हुई।

'शिक्षक दिवस' केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों में मनाया जाता है लेकिन इसका रूप और समय अलग-अलग है। मूल भावना शिक्षकों के प्रति सम्मान और उनके राष्ट्रनिर्माण की भूमिका के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है। यूनेस्को (UNESCO) जो संयुक्त राष्ट्र संघ का ही एक विशिष्ट सहायक अंग है, द्वारा 5 अक्टूबर को 'वर्ल्ड टीचर्स डे' (विश्व शिक्षक दिवस) मनाया जाता है। हमारे पड़ोसी देशों की बात करें तो पाकिस्तान में विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। भूटान में मई महीने की दूसरी तारीख को 'शिक्षक दिवस' मनाने की परंपरा है। 2 मई का भूटान में ऐतिहासिक महत्त्व है क्योंकि भूटान के तीसरे सम्राट जिग्में दोरजी वांगचुक का जन्मदिन भी 2 मई को आता है। भूटान के इस सम्राट ने अपने देश में न केवल आधुनिक शिक्षा की नींव रखी अपितु अपने अविकसित राष्ट्र के शैक्षिक उन्नयन के लिए असाधारण योगदान दिया था।

चीन में 'शिक्षक दिवस' का आयोजन 10 सितम्बर को होता है। भारत की तरह वहाँ भी शिष्य, गुरुओं के प्रति आदर-सम्मान प्रकट करने हेतु उन्हें उपहार-सम्मान प्रदान करते हैं। भारत की तरह चीन में भी शिक्षकों को पुरस्कृत करने की परम्परा है। एशिया महाद्वीप के ही एक अन्य राष्ट्र थाईलैण्ड में यह दिवस वान खू के नाम से 16 जनवरी को मनाया जाता है। थाईलैण्ड में भी शिक्षक दिवस की धूमधाम देखने योग्य होती है। उस दिन विद्यालय में शैक्षणिक कार्य नहीं होते अपितु शिक्षकों के लिए सम्मान-अभिनन्दन समारोह आयोजित किए जाते हैं। सार्वजनिक रूप से शिक्षकों के सराहनीय योगदान के लिए पूरा राष्ट्र अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है। शिक्षकों को पुरस्कार-सम्मान दिए जाते हैं।

वियतनाम में 20 नवम्बर का दिन 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वहाँ इस दिवस को वियतनामीज ऐजुकेटर्स डे के नाम से जाना जाता है। इस दिन की गतिविधियाँ भारत के शिक्षक दिवस के समान ही होती हैं। शिक्षकों को सम्मान-पुरस्कार के साथ-साथ विद्यार्थी व्यक्तिगत स्तर पर भी उनके प्रति सम्मान-आभार प्रकट करते हैं। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे कवितापाठ, नाटक, अभिनंदन समारोह आयोजित होते हैं। उन्हें उपहार, पुष्प भेंट किए जाते हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों को अपने घरों पर भोजन के लिए निमंत्रित भी करते हैं। विद्यार्थियों द्वारा अपने अपने घरों पर आदर सहित शिक्षकों को भोजन कराना बहुत ही सम्मान का विषय माना जाता है।

हरिगुरु के नाम से 23 सितम्बर को ब्रूनेई में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। 23 सितम्बर ब्रूनेई के 28 वें शासक, सुल्तान ओमर अली सैफुद्दीन तृतीय का जन्म दिवस होता है तथा सुल्तान सैफुद्दीन तृतीय को आधुनिक ब्रूनेई का जन्मदाता माना जाता है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान के लिए उनके जन्म दिवस को शिक्षक दिवस का रूप दिया गया है। ब्रूनेई में सुल्तान सैफुद्दीन तृतीय ने निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करके एक अनोखी मिसाल कायम की थी।

विश्व की महाशक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं है। अमेरिका में मई के प्रथम सप्ताह को टीचर एप्रीसिएशन वीक के रूप में मनाने की व्यवस्था है। वहाँ 'शिक्षक दिवस' के रूप में पूरे सप्ताह विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते हैं जिसमें जन भागीदारी देखने लायक होती है। शिक्षकों के प्रति आभार, सम्मान, पुरस्कार दिए जाते हैं। अमेरिका में शिक्षक दिवस के आयोजन की पहल द्वितीय विश्व युद्ध के समय विसकोसिन के एक टीचर रेयान क्रुग द्वारा प्रारम्भ की गई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 1953 में कांग्रेस में ऐसा प्रस्ताव लाने का प्रयास किया लेकिन सफलता प्राप्त नहीं हुई। अमेरिका में शिक्षक दिवस की घोषणा के लिए शिक्षकों एवं अन्य प्रबुद्धजनों के संघर्ष की कथा बड़ी रोचक है। अमेरिकी कांग्रेस ने सन् 1980 में 7 मार्च का दिन 'राष्ट्रीय शिक्षक दिवस' घोषित किया। उसी समय से नेशनल ऐजूकेशन सोसाइटी द्वारा 7 मार्च को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया। सन् 1985 में टीचर एप्रीसियेशन वीक मनाने की पहल हुई। उसी समय नेशनल एजुकेशन सोसाइटी ने सप्ताह के दूसरे दिन को नेशनल टीचर्स डे मनाने का निश्चय किया। मेसाचुएट्स में जून माह के प्रथम रविवार को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

आस्ट्रेलिया में अक्टूबर माह के अंतिम शुक्रवार को 'टीचर्स डे' मनाने की प्रथा है। आस्ट्रेलिया में भी इस दिवस की गतिविधियाँ अन्य देशों के समान ही हैं। अतः स्पष्ट है कि ज्ञान प्रदाता गुरु का महत्त्व सार्वभौमिक है। यह देशकाल और भौगोलिक सीमाओं से परे है। इसीलिए शिक्षक दिवस को विभिन्न रूपों में विश्व के अनेकानेक देशों में मनाया जाता है।

व्याख्याता
बी-111, अशोक विहार
कर्मचारी कॉलोनी, अलवर (राज.) 301001
मो. 9829730611

न गुरोरधिकम्

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

'गायन्ति देवाः किल गीत कानि धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे' विष्णु पुराण में उल्लिखित उक्त पंक्ति के मूल में विश्व के इस भू भाग के सन्दर्भ में कहा गया है- 'यतो हि कर्म भूरेषा ततोऽन्या भोग भूमयः'। अतः जहाँ कर्म की प्रधानता होती है वहाँ इच्छा और ज्ञान की भी उतनी ही अनिवार्यता है। तभी कर्त्ता अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। अतः इच्छा-ज्ञान क्रिया में इच्छा और क्रिया, कर्त्ता पर निर्भर है परन्च ज्ञान वह अन्यत्र, बाह्य स्रोतों से प्राप्त करता है। जिन स्रोतों से वह ज्ञान प्राप्त करता है वह 'पद' समाज में 'गुरु' शब्द से सम्बोधित हुआ है। कर्म के पूर्ण प्रतिफल की प्राप्ति में 'ज्ञान ' की महती भूमिका होने के कारण ही 'गुरु-पद' को समाज में श्रेष्ठ माना गया है। यदि हम 'ज्ञानार्जन' के क्षेत्र में दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि वैदिक काल से अर्वाचीन समय में जो भी श्रेष्ठ व्यक्ति हुए हैं उन्हें उनके लक्ष्य को पूर्ण करवाने में उनके श्रेष्ठ पूर्ण (ज्ञान से) सद्गुरुओं से 'ज्ञान' की प्राप्ति ही रही है। इसी कारण भारत एक समय में 'विश्व गुरु' कहलाया जाता था, चूंकि विश्व के विभिन्न स्थानों से व्यक्ति अध्ययन के लिए यहाँ के शिक्षण संस्थानों में आते थे। जहाँ उन्हें ज्ञान से परिपूर्ण गुरुओं व आचार्यों के द्वारा ज्ञान दिया जाता था।

समाज में 'गुरु' पद की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण होने के कारण ही इन्हें श्रेष्ठ सम्मान दिया गया है, चूंकि इनसे प्रदत्त ज्ञान से ही विद्यार्थियों में अपने-अपने विषयों के ज्ञानार्जन के साथ-साथ कर्त्तव्य कर्मों का बोध होता है जिससे वे सुयोग्य नागरिक बनकर अपने तथा राष्ट्र के प्रति श्रेष्ठ दायित्त्वों का निर्वहन कर सकते हैं।

हमारे आर्ष ग्रन्थों में 'गुरु-पद' पर आसीन गुरुओं के सन्दर्भ में कहा गया है कि-

ज्ञान शक्ति समारूढास्तत्त्व माला विभूषितः।
भुक्ति-मुक्ति प्रदाता च तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात् जो ज्ञान की शक्ति से सम्पन्न हैं, जो तत्त्व बोध की माला से शोभायमान हैं और जो भोग तथा मोक्ष के देने वाले हैं उन श्री गुरु को नमस्कार है।

निःसंदेह 'गुरुपद' ज्ञान का केन्द्र है। अतः सदुगुरुओं में निहित 'ज्ञान' के महत्त्व का उल्लेख श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में इस प्रकार से किया गया है-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
(4/38)

अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसन्देह कुछ भी नहीं है। ज्ञान रूप अग्नि ही न करने योग्य कर्मों को भस्ममय कर देती है, यानि व्यक्ति ज्ञान के द्वारा ही उचित-अनुचित में अन्तर समझता है तथा विवेकयुक्त बुद्धि से कार्यों को करता है। यह स्थिति ही समाज में कल्याणकारी मानी गई है। अतः गुरु-पद को धारण करने वालों को भी इस विषय का बोध होना आवश्यक है कि मेरे अन्दर स्थित ज्ञान ही ईश्वर रूप है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमें ज्ञात है कि हमारे राष्ट्र में लाखों की संख्या में शिक्षण संस्थाएँ हैं, जिनमें प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक का अध्ययन करवाया जाता है। समाज में शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है परन्च इसके साथ ही साथ यह भी देखना अनिवार्य है कि हमारी शिक्षण संस्थाओं में दी जाने वाली शिक्षा जिन

शिक्षकों व गुरुओं द्वारा दी जा रही है उनका ज्ञान कैसा है तथा वे राष्ट्रीय प्रसङ्गों में कितने जागरुक हैं। प्रसङ्गवश मैं वर्तमान परिप्रेक्ष्य का उल्लेख करना चाहूँगा कि हमारे राष्ट्र के कतिपय राज्यों की कुछ प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में जाकर इलेक्ट्रोनिक मीडिया के कर्मियों ने वहाँ कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं से कतिपय प्रश्न पूछे, जिसका प्रसारण उनके चैनल पर भी हुआ। इन प्रश्नों में मुख्यतः सामान्य ज्ञान से तथा उनके पढ़ाने के विषय से जुड़े प्रश्न थे जिनका वे उत्तर नहीं दे पाए जैसे देश के राष्ट्रपति का नाम क्या है, आप के राज्य के राज्यपाल कौन हैं, शिक्षा मन्त्री कौन है, प्रधानमंत्री कौन है, गणतन्त्र दिवस व स्वाधीनता दिवस कब मनाया जाता है आदि। इसी प्रकार से दो संख्याओं के बीच का गुणनफल, अंग्रेजी में कुछेक शब्द की स्पेलिंग आदि पूछी गई, वे नहीं बता सके। शिक्षकों के उत्तर सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और दुःख भी, क्या ऐसे शिक्षकों के भरोसे हमारे बालकों को श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त हो सकता है? क्या वे सुयोग्य-संस्कारित एवं ज्ञानार्जन करके राष्ट्रहित में अपना श्रेष्ठ योगदान देने में समर्थ हो सकते हैं? यह एक बहुत ही गम्भीर एवं विचारणीय प्रश्न है। अगर शिक्षा के क्षेत्र में प्रारम्भिक स्तर की दी जाने वाली शिक्षा को देने वाले हमारे गुरुजनों का ज्ञान अल्प होगा तो वे इस महत्त्वपूर्ण पद का दायित्व कैसे पूर्ण करेंगे। अतः क्यों नहीं आज हम 'शिक्षक दिवस' के इस पावन पर्व पर तथा आजादी के 70वें वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यह संकल्प लें कि प्रत्येक शिक्षक अनवरत रूप से अपने विषय के ज्ञानार्जन से जुड़ा रहे तथा साथ ही साथ वह राष्ट्र से भी (समसामयिक घटनाओं आदि) जुड़े। चूंकि राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। जब हमारे राष्ट्र के सभी प्रान्तों में ऐसे सजग एवं ज्ञान से परिपूर्ण शिक्षक होंगे तभी हम गर्व से कह पायेंगे- 'न गुरोरधिकम्'

जस्सुसर गेट रोड,
धर्म कांटे के पास, बीकानेर (राज.)
मो. 9414144456

गुरु की गुरुता

❐ वृद्धिचन्द गोठवाल

शिक्षक समाज में इसलिए पूज्य है क्योंकि उसका कार्य अद्वितीय व असाधारण है। शिक्षक एक प्रणेता है जिसका कोई विकल्प नहीं। हमारे देश में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और साक्षात् परब्रह्म रूप माना है। इसके अतिरिक्त गुरु राष्ट्र का प्रतीक, राष्ट्र का आदर्श एवं राष्ट्र के भाग्य का निर्माता है। अर्थात् शिक्षक महान है लेकिन वर्तमान में महानता घट रही है जो चिन्तनीय एवं विचारणीय है। शिक्षक एवं शिक्षा पर एक अदना व्यक्ति भी कटाक्ष कर रहा है एवं शिक्षक को हीन समझ रहा है। कहा जाता है कि शिक्षक की कार्यशैली बदल गई तथा शैक्षिक कार्य को एक व्यवसाय का रूप दे दिया है। शिक्षक ही जब अपने मूल कर्तव्य से विमुख हो जाए तो गुरुता कहाँ? शिक्षक के आचरण का छात्रों एवं समाज पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक खुले आम धूम्रपान करे, छात्रों के हाथों तम्बाकू (हिंगवाष्टिक चूर्ण कोड वर्ड काम में) का सेवन करे, छात्रों के पैसों से जलपान का उपयोग, पहनावा एवं आचरण अद्भुत हो, अनुशासन और साम्यता का कोई ध्यान नहीं दिया जाए तो गुरुता की महानता कैसे कायम रह सकती है? जबकि अज्ञान को नष्ट करके ज्ञान की ज्योति एक सच्चा शिक्षक ही कर सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों का मूल्यांकन एवं अध्ययन करें तो गुर की गुरुता को हम निम्न प्रकार से पाते हैं।

महान् शिक्षक, शिक्षक, नाममात्र के शिक्षक (कुशिक्षक) जो महान् शिक्षक हैं वे सचमुच ही देवतुल्य हैं। जिनमें शिक्षक के गुणों का भरपूर समावेश होता हैं, ऐसे गुरु दिखाई देते हैं तो छात्र हो या अभिभावक स्वतः चरण स्पर्श करते हैं। जिनमें कर्तव्यपरायणता, मर्यादित जीवन के सद्गुण, विषय की सम्पूर्ण जानकारी, प्रेरणा एवं चारित्रिक विशेषता, साहित्य प्रेमी, छात्र एवं अभिभावक से मधुर सम्बन्ध, राष्ट्र प्रेम की भावना होती है उन्हें महान् शिक्षक कहा जा सकता है। ऐसे शिक्षकों का प्रतिशत बहुत कम है। जिनमें शिक्षकत्व है और गुरु गरिमा समाई होती है वे कठिन परिस्थितियों में भी अपनी महानता गिरने नहीं देते हैं, क्योंकि त्याग और सेवा की भावना होती है। इस श्रेणी के शिक्षक का जीवन खुली किताब होता है और वे शिक्षक होने का गर्व करते हैं तथा लक्ष्य प्राप्त करने पर ही ध्यान लगाते हैं। जब गुरु की गुरुता को गौरवशाली बनाने वालों की आवश्यकता है।

दूसरी कैटेगरी के शिक्षकों की संख्या सर्वाधिक है। इन शिक्षकों में अच्छा कार्य करने की धारण पाई जाती है और महान् शिक्षकों से सम्पर्क बनाए रखते हैं। इनका स्वभाव लचीला होता है तथा समय व अवसर का लाभ उठाने पर दृष्टि होती है। इस श्रेणी के गुरु अपने विषय की पकड़ रखते हैं पर बहुधा उदासीन प्रकृति के होते हैं। समाज से सम्पर्क बनाना और शैक्षिक कार्य करना अनिवार्य नहीं समझते हैं। लेकिन शिक्षक होने की गरिमा का पालन करना और अध्यापन कार्य उत्कृष्ट बनाना इनका ध्येय होता है। इन पर जनरल शिक्षकों का प्रतिशत अधिक है।

तीसरी श्रेणी के गुरुजनों पर चर्चा करें तो पाएँगे उनकी गिनती कुशिक्षक यानि नाममात्र का शिक्षक कहलाने की है, जिनका आचार-विचार उच्च कोटि का भी नहीं और अपराधी प्रवृत्ति होती है, अर्थात् सभी प्रकार के अवगुणों से भी मना नहीं किया जा सकता, जिससे समाज में

शिक्षक के प्रति गलत संदेश जाता है। कतिपय शिक्षक के चाल-चलन के कारनामे समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। इन शिक्षकों को मान-सम्मान का कोई ख्याल ही नहीं रहता। ज्ञान के छिछले ऐसे शिक्षकों से शिक्षा विभाग की छवि गिरती है और शिक्षक समुदाय समाज की निगाहों में बदनामित होते हैं। ऐसी श्रेणी के शिक्षकों से विद्यालय व्यवस्था चरमराती है और अनुशासनहीनता को बढ़ावा मिलता है। इन्हें क्रोध, ईर्ष्या, संघर्ष, छात्रों की ट्यूशन और समय की चोरी की आदत होती है। समय पर नहीं आना, पूरे समय पद पर नहीं रहना, जल्दी विद्यालय छोड़ देना इनकी रीति-नीति रहती है। ये शिक्षक अध्ययन-अध्यापन को बोझ समझते हैं। इस कैटेगरी का शिक्षक मनमौजी स्वभाव का धनी होता है। गुरु की गरिमा को बनाए रखना भी इनकी समझ से बाहर की बात होती है। शिक्षा नीति को विफल करने में यही शिक्षक प्रमुख होते हैं।

उपर्युक्त सब बातों से समझा जा सकता है कि गुरु की गुरुता कहाँ और कैसी हैं? कहने की बात नहीं शिक्षक ने अपना सम्मान खुद गिराया है तो उसे पुनः पाना भी उसी का धर्म-कर्म होना चाहिए। शिक्षक का सम्बन्ध विद्यालय परिवार से ही नहीं होकर समूचे मानव समाज से होता है, कहा गया है-

शिक्षक दास समाज का और समाज का अंग।
निर्माता जन जाति का इसका उत्तम संग।।

अतः शिक्षक समुदाय को अपनी मनः स्थिति में सुन्दर सपना संजोना चाहिए। समाज एवं राष्ट्र को शक्तिशाली और गौरवशाली शिक्षक बना सकते हैं। आज के हालात में नई सोच, नई नीति और कर्तव्यपरायणता पर ध्यान देना आवश्यक है। समग्र शिक्षक समाज की गणना महान् शिक्षक की श्रेणी में हो, ऐसी आशा और कामना सबके मन में है।

पूर्व व्याख्याता
गौत्तम आश्रम के पास,
पो. कपासन, चित्तौड़गढ़
मो. 9414732090

गुरु अमृत की खान

❒ गायत्री शर्मा

हर वर्ष आषाढ़ मास में आने वाली पूर्णिमा को हम भारतवासी गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते आ रहे है। गुरु पूर्णिमा जगत गुरु माने जाने वाले वेदव्यास को समर्पित है। माना जाता है कि वेदव्यास जी का जन्म आषाढ़ मास की पूर्णिमा को हुआ था। वेदों के अनुसार ब्रह्मसूत्र की रचना भी वेदव्यास जी ने आज ही के दिन की थी। वेदव्यास जी ने ही वेद ऋचाओं का संकलन कर वेदों को चार भागों में विभाजित किया था। उन्होंने ही महाभारत, 18 पुराणों, 18 उप पुराणों की रचना की थी, जिसमें भागवतपुराण जैसे अतुलनीय ग्रंथ भी सम्मिलित हैं। ऐसे जगत गुरु के जन्म दिवस को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है।

गुरु के प्रति नतमस्तक होकर कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन ही गुरु पूर्णिमा है। गुरु के लिये पूर्णिमा से बढ़कर कोई तिथि या दिवस नहीं हो सकता है, जो स्वयं में पूर्ण है, वहीं तो पूर्णत्व की प्राप्ति दूसरों को करा सकता है। पूर्णिमा की भाँति जिसके जीवन में केवल प्रकाश है, वहीं तो अपने शिष्य के अंतःकरण में ज्ञान रूपी चंद्र की किरणें बिखेर सकता हैं। गुरु कृपा ही असंभव को संभव बनाती है। गुरु कृपा शिष्य के हृदय में अगाध ज्ञान का संचार करती है। आत्मबल को जगाने का कार्य गुरु ही करता है। गुरु अपने आत्मबल द्वारा शिष्य में ऐसी प्रेरणाएं भरता है जिससे कि वह अच्छे मार्ग पर चल सके। गुरु शिष्य को अन्तः शक्ति से ही परिचित नहीं करता बल्कि उसे जागृत एवं विकसित करने के हर संभव उपाय भी बताता है।

संस्कृत भाषा के शब्द 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है इस अंधकार को मिटाने वाला। गुरु ही हमारे जीवन को सही राह पर ले जाता है। एक कवि ने तो गुरु की तुलना कुम्हार से की है। वह बताते हैं कि जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को विभिन्न प्रकार के आकार में ढाल लेता है ठीक उसी प्रकार गुरु रूपी कुम्हार भी अपने शिष्य रूपी मिट्टी को विभिन्न रूपों में ढाल लेता है। गुरु की भूमिका एक मार्गदर्शक की होती है।

भारतीय संस्कृति में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। भारतीय परम्पराओं के अनुसार गुरु के बिना न तो ज्ञान मिलता है और न ही संसार सागर से मुक्ति। रामचरितमानस में इसे बड़े अच्छे ढंग से कहा गया है कि– ''गुरु बिना होय न ज्ञान तथा गुरु बिन भवनिधि तरई न कोई'' अर्थात् गुरु के बिना ज्ञान को प्राप्त नहीं किया जा सकता है तथा बिना गुरु कोई भी मनुष्य इस संसार रूपी सागर से मुक्ति नहीं पा सकता है।

स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्भागवत गीता में भी गुरु को ढूंढ़ने और उन तक पहुँचने की विधि बताई है। जैसे सूर्य देव सम्पूर्ण लोकों को प्रकाशित करते हैं, उसी प्रकार गुरु अपने शिष्यों को उत्तम बुद्धि देकर उनके अन्तर्जगत को प्रकाशपूर्ण बनाते हैं। मानव जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। इसके जीने की कला, जीवन की सार्थकता गुरु से सीख सकते हैं। गुरु स्वार्थ सिद्ध के लिये नहीं होना चाहिए। एक बार आपने गुरु का चयन कर लिया हो तो उसे जन्म भर निभाना चाहिए। गुरु शिष्य परम्परा बहुत पुरानी परम्परा है। हमारे ग्रंथों, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत एवं साहित्यिक कृतियों में गुरु–शिष्य की गाथाएं भरी पड़ी हैं। जिस घर में गुरु का आदर और सम्मान होता है वहाँ हमेशा देवता निवास करते हैं। गुरु की संगत में बुरे से बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन सकता है। मानव मन में व्याप्त बुराई रूपी

विष को दूर करने में गुरु का आदर और सम्मान होता है वहाँ पर हमेशा देवता निवास करते हैं। गुरु की संगत में बुरे से बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन सकता है। मानव मन में व्याप्त बुराई रूपी विष को दूर करने में गुरु का विशेष योगदान रहता है।

गुरु ही वह आदर्श है जो मानव को सही दिशा की ओर प्रवृत्त कर सकता है। आज समाज अनेक विघटनकारी शक्तियों जैसे धर्म, जाति, मानवीय संघर्ष, साम्प्रदायिकता, वैमनस्य, तनाव आदि से घिरा हुआ है। इन विघटनकारी एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों से भावी पीढ़ी को बचाने एवं उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाने में गुरु की महती भूमिका है। अच्छे एवं उत्तरदायी नागरिक तैयार करना गुरु का महत्त्वपूर्ण कार्य है। गुरु का नाम श्रद्धा और निष्ठा को परिपक्व करता है। गुरु अपने शिष्य के भ्रम को दूर कर उसे नष्ट करता है और लोहे को पारस बना देता है।

अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की प्रक्रिया में गुरु का बहुत बड़ा योगदान है संसार में भटकने वाले मनुष्यों को तारने के लिए गुरु के समान बंधन नाशक तीर्थ दूसरा कोई नहीं है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी महान माना गया है। मनुष्य उचित मार्गदर्शन में गुरु की प्रभावी भूमिका रहती है। गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है तथा बिना गुरु के कोई कार्य सम्पन्न करना मुश्किल है। गुरु हमारे अन्तःमन को आहत किए बिना हमें सभ्य जीवन जीने योग्य बनाते हैं। दुनिया को देखने का नजरिया गुरु की कृपा से मिलता है। पुरातन काल से चली आ रही गुरु की महिमा को शब्दों में नहीं लिखा जा सकता है। संत कबीर कहते है–

सब धरती कागज करूं,
लेखनी सब वनराज।
सात समुद्र की भक्ति करूं,
गुरु गुन लिखा न जाए।

अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि गुरु के बिना जीवन अधूरा एवं अंधकार मय है।

5/279 एस.एफ.एस.
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
मो.9414796071

बालक का चरित्र निर्माण : माँ की भूमिका

❐ प्रोफेसर डॉ. अजय जोशी

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में चरित्र को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। किसी भी व्यक्ति का चरित्र निर्माण उसके बाल्यकाल से ही प्रारंभ हो जाता है। बाल्यकाल में चरित्र निर्माण की महत्त्वपूर्ण शिल्पी माँ ही होती है। माता ही बालक में उच्च संस्कार डालकर उच्च चरित्रवान व्यक्ति का निर्माण करती है। वैज्ञानिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है कि बालक के आचार-विचार तथा व्यवहार में सर्वाधिक माता का ही प्रभाव परिलक्षित होता है। यह सिद्ध हो चुका है कि रजस्वला होने के पश्चात् एक पक्ष (10 दिन) तक स्त्री का आचार, विचार, व्यवहार जिस प्रकार का होता है, गर्भधारण करने पर वे ही गुण प्रायः बालक में आ जाते है। इसीलिये गर्भधारण से बच्चे के पैदा होने तक माता के लिए विशेष आहार तथा दिनचर्या बताई गई है। इस अवस्था के दौरान चिन्ता मुक्त रहने तथा सद्आचारण करने व सत् साहित्य पढ़ने पर विशेष जोर दिया जाता है। इन सभी के पीछे मूल धारणा यही होती है कि माता के गर्भ में जो बालक पल रहा है उसके सद्चरित्र का निर्माण हो। वास्तव में बालक के कुछ संस्कार गर्भावस्था में ही पड़ जाते हैं।

बालक के जन्म के पश्चात् शैशवकाल में विकास की गति तीव्र होती है। इस अवस्था में बालक अधिकतम माँ के पास ही रहता है। अतः माँ की दिनचर्या, भोजन, व्यवहार, परिधान, अध्ययन आदि का शिशु के कोमल मन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। बालक जब धीरे-धीरे बड़ा होने लगता है तभी भी माता का ही प्रभाव उस पर होता है। उसके चरित्र निर्माण का महत्त्वपूर्ण दायित्व माता को ही उठाना पड़ता है। माता को चाहिए कि बाल्यकाल से ही महापुरुषों की जीवनियाँ व उनके द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों को बच्चों को समझाएं। प्रारंभ में ही माता द्वारा यह प्रयत्न किया जाना चाहिए कि बालक ऐसे व्यक्तियों की संगत में रहे जिससे उसे सद्व्यवहार, सच्चचरित्रता की शिक्षा मिले। बुरी संगति से प्रारंभ से ही बच्चे को बचाना माँ का ही दायित्व होता है अन्यथा इसका गंभीर परिणाम

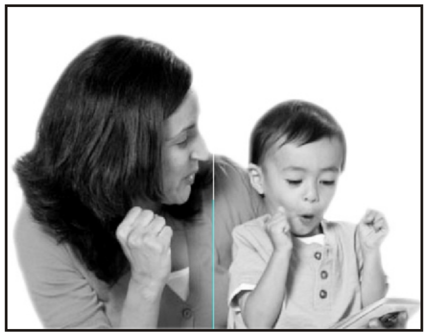

बच्चे के चरित्र पर पड़ता है।

दुनिया में अधिकांश महापुरुष अपनी माता की शिक्षा के कारण ही सद्चरित्र तथा ज्ञानी बन सके हैं। इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द का उदाहरण लिया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द की माँ श्रीमती भुवनेश्वरी देवी का उनके चरित्र निर्माण पर अत्यधिक प्रभाव था। भुवनेश्वरी देवी धर्मपरायण तथा तेजस्वी महिला थी। बालक नरेन्द्र (स्वामी विवेकानन्द) बचपन से उद्दण्ड थे। अपनी माता से कई प्रकार के प्रश्न पूछा करते थे। माँ उन्हें रामायण, महाभारत तथा अन्य ग्रंथों के उपख्यान सुनाया करती थी। बालक नरेन्द्र भी उन्हें बहुत ध्यान से सुना करते थे। रामायण तथा महाभारत के चरित्रों का बालक नरेन्द्र के कोमल मन पर अमिट प्रभाव पड़ा। माँ को ध्यान लगाते देख बालक नरेन्द्र भी ध्यान मग्न हो जाते थे। स्वामी विवेकानन्द के चरित्र पर उनकी माँ की साधना तथा शिक्षा की अमिट छाप विद्यमान थी। स्वामी विवेकान्द के अतिरिक्त छत्रपति शिवाजी को भी अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने तथा लड़ने की प्रेरणा उनकी माँ जीजा बाई ने ही दी थी, माता कुन्ती भी अपने पाँचों पुत्रों को समय-समय पर मार्गदर्शन करती थी तभी उनके पुत्र इतने यशस्वी बन सके।

बालक के चरित्र निर्माण की दृष्टि से माँ का योगदान वर्तमान समय की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान परिवेश में बालक अपना अधिकतम समय माँ के पास ही बिताता है। माँ ही उसकी पहली गुरु होती है। उसके संस्कार बालक में आते ही है। यदि माँ ने प्रारंभ से बालक के चरित्र निर्माण पर ध्यान दिया तथा उसे यथोचित मार्गदर्शन तथा शिक्षा प्रदान की तो एक सच्चरित्र व्यक्ति का निर्माण होगा। इसके विपरीत माँ की शिक्षाएं, आचार-विचार, व्यवहार उचित नहीं रहा या अपने बच्चों पर पूरा ध्यान नहीं दे पायी तथा उसकी बुरी आदतें थी तो उनका निश्चित प्रभाव बच्चे पर पड़ा। यदि हम उन व्यक्तियों का सर्वेक्षण करें जो बुरी आदतों तथा बुरी संगत में फंसे हैं तो हम पाएंगे कि बचपन में उन्हें समुचित मार्गदर्शन तथा शिक्षा का प्राप्त न होना ही उनके बिगड़ने का कारण रहा है।

वर्तमान में नैतिकता व चरित्र में निरन्तर कमी आ रही है तब माताओं का दायित्व और बढ़ जाता है। उन्हें चाहिए कि वे अपने बच्चे के सर्वांगीण विकास तथा चरित्र निर्माण हेतु अपना आचार-विचार, व्यवहार सही रखे तथा बच्चों में सद्गुणों का विकास करें ताकि राष्ट्र को सच्चरित्र नागरिक प्राप्त हो सकें। आज जब फिल्मी, टी.वी. व सोशल मीडिया हमारे जीवन में हावी हो चुका है तथा बच्चे के चरित्र निर्माण की तरफ ध्यान देने की परम्परा कम होती जा रही है। इन नये माध्यमों से जहाँ एक तरफ माता-पिता के पास अपने बच्चों को समय देने तथा उसके अच्छे चरित्र की तरफ सोचने का समय नहीं रहा है। बच्चे भी समझ पकड़ते ही टी.वी., इंटरनेट, यू ट्यूब, फिल्म आदि विभिन्न मीडिया माध्यमों में इतने उलझे रहते हैं कि उन्हें भी अपने माता-पिता के पास बैठने तथा उनसे सीखने की प्रवृत्ति नहीं रही। इसलिए बच्चे को चरित्रवान बना कर सजग नागरिक बनाने की तरफ अधिक संजीदगी से प्रयास नहीं हो पा रहे है। इस परिवेश में बच्चों को सुसंस्कृत तथा सच्चरित्र बनाने, रोज की जरूरत और अधिक महसूस होने लगी है। इस दिशा में माँ की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। यह कहा भी जाता है कि माता ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है। वह उससे बहुत कुछ सीखता है और निरन्तर सीखता ही जाता है।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ संकाय सदस्य
जीएचएस राजकीय स्नात्तकोत्तर
महाविद्यालय, सुजानगढ़, चूरू
मो. 09414968900

डॉ. राधाकृष्णन् का शिक्षा दर्शन

❒ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

भारत वीरों, साहसी स्त्री पुरुषों के अलावा दार्शनिक संतों, ऋषि-मुनियों एवं उच्च कोटि के शिक्षाविदों की भी भूमि रही है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भी उन दार्शनिक शिक्षाविदों में एक थे जिनका नाम भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन् एक उच्च कोटि के वक्ता, दार्शनिक, लेखक एवं शिक्षाविद् थे। पूर्व राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन् के शिक्षा सम्बन्धी निम्न विचार प्रेरक एवं अनुकरणीय हैं।

1. भारत सहित सारे विश्व के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा केवल मस्तिष्क के विकास तक सीमित रह गई है। उसमें धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश नहीं है। आदर्श शिक्षा एक बालक की प्रवृत्तियों को सही मार्गदर्शन प्रदान करती है और उसके मस्तिष्क को क्रियाशील बनाती है
2. समुचित शिक्षा देने के लिये यह अनिवार्य है कि शिक्षार्थी बालक की मनोवृत्ति का भरपूर अध्ययन किया जाए और उसकी आवश्यकता, रुचि तथा योग्यता के अनुकूल शिक्षा दी जाए। प्राचीन भारतीय शिक्षा के आदर्श को विदेशी शिक्षा-शास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है।
3. प्राचीन भारतीय शिक्षा में उन सभी सिद्धांतों का समावेश है जिन्हें आज के शिक्षा शास्त्री भी उपादेय और आवश्यक मानते हैं। भारतीय शिक्षा में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों का समन्वय है।
4. जिस साधन से हमारी ऊँची-नीची प्रवृत्तियों पर विजय पाती है उसी का नाम आदर्श शिक्षा है, पश्चिमी शिक्षाविद् हर्बर्ट का यह कथन भारतीय शिक्षा में ही निहित है।
5. सच्चे अर्थों में शिक्षा वह है जिससे बालक का व्यक्तित्व इस प्रकार उभर कर आए कि वह समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो।
6. पश्चिमी दर्शन ने भोगवाद प्रतिपादित कर सामान्य जन को यह तो सिखला दिया कि इससे जीवन में उल्लास आता है, पर यह प्रकट नहीं होने दिया कि सुख क्षणिक है। ओस चाट कर प्यास बुझाने के समान है।
7. भारतीय शिक्षा में नम्रता और सहिष्णुता कूट-कूट भरी हुई है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार गुरु शिष्य को आशीर्वाद देता हैः- ''तुम शिष्ट, बलिष्ठ और कल्याणी बनो, यही मेरी शिक्षा का सारांश है। भारतीय शिक्षा माता-पिता, गुरु व बंधुओं का आदर करना सिखाती है।
8. प्राचीन मान्यता के अनुसार जीव रूपी पक्षी के दो पंख होते हैः- एक से कर्म का अभ्यास होता है और दूसरे से ज्ञान का । जीवन सफल बनाने के लिए ज्ञान और कर्म की आवश्यकता है।
9. यह गलत धारणा है कि पूर्वी देश विज्ञान से अपरिचित है। यदि हम अपने दृष्टिकोण को विकसित करें तो देखेंगे कि वर्णमाला, संख्याएँ, अंक, शून्य आदि भारत की ही देन है।
10. जिस राष्ट्र ने शिक्षक के महत्त्व को नहीं समझा उसके लिए भविष्य अंधकारमय है।
11. मानवोचित आचरण से धर्म को अलग नहीं किया जा सकता। धर्म दूसरी सब प्रवृत्तियों को नैतिक आधार प्रदान करता है, जो अन्य किसी प्रकार से उन्हें प्राप्त नहीं होता।
12. सच्ची शिक्षा वह जो हमारे भीतर के उत्तम तत्वों को बाहर लाकर प्रकट करती है। मानवता की पुस्तक से बढ़कर दूसरी कौनसी पुस्तक हो सकती है।
13. जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक आनंद उठाना नहीं बल्कि आत्मा का शाश्वत आनंद प्राप्त करना है।
14. आज की शिक्षा मस्तिष्क का यंत्रीकरण और बुद्धि के बीज को जड़वत् करती है।
15. अपने स्वार्थी अहं को त्याग कर ही मानव आत्मा के आंतरिक सुख को पा सकता है।

डॉ. राधकृष्णन् पूर्व के दर्शन को आदर्शवादी तथा चिन्तनशील तथा पश्चिम के दर्शन को भौतिकवादी तथा उपयोगितावादी मानते थे।

शिक्षक दिवस मनाने की सच्ची सार्थकता तभी होगी जब हम बालकों में भारतीय जीवन मूल्यों को स्थापित करने में व्यावहारिक रूप से सफल होंगे। गुरु व शिष्य का सम्बन्ध प्राचीन परिपाटी के अनुसार आदर्श होना चाहिए। शिक्षा का व्यापार व उसका व्यावसायीकरण बन्द होना चाहिए।

पूर्व शिक्षा उपनिदेशक
15 पंचवटी, पो. उदयपुर-313004
मो. 9352103162

गीता नीचे क्यों?

एक बार एक पादरी ने गीता को सबसे नीचे रख कर उस पर बाइबिल, कुरान आदि धार्मिक ग्रन्थ रख कर डॉ. राधाकृष्णन् से बोला :-''देखो, तुम्हारा धर्मग्रन्थ तो सबसे नीचे है, बाइबिल आदि अन्य धर्मों की पुस्तकें सबसे ऊपर है।

इस पर डॉ. राधाकृष्णन् ने उत्तर दिया- ''आपने ठीक कहा है, गीता ही सब धर्मग्रन्थों का मूल है अर्थात आधार है। हिन्दू धर्म के सिद्धांत ही सब धर्मों का सार है। पादरी यह बात सुनकर हतप्रभ रह गया।

राजनीतिज्ञ की योग्यता

एक बार किसी ने डॉ. राधाकृष्णन् से पूछाः- 'राजनेता बनने के लिए आवश्यक योग्यता क्या हैं?''

उनका उत्तर था-''कल, अगले महीने और अगले साल क्या होने वाला है, यह भविष्यवाणी करने की सामर्थ्य और बाद में यह समझाने की सामर्थ्य कि वैसा क्यों नहीं हुआ।''

सम्भवामि युगे-युगे!

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

यदा यदा हि धर्मस्य,
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्हयम्।।
परित्राणाय साधूनां
विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय
सम्भवामि युगे-युगे।।

(गीता अध्याय 4 श्लोक 7-8)

श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा कि-''हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु-पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।''

इस युग में स्वतंत्रता के 70 वर्ष तक भी निर्धारित घोषित उद्देश्यों की प्राप्ति न कर पाते हुए लक्ष्य प्राप्ति में कठिनाई के दौर गुजर रहे हैं। शिक्षा में सुधार के लिए समय-समय आयोगों का गठन किया, उनके सुझाव आए, क्रियान्विति के भरसक प्रयत्नों के पश्चात भी शैक्षिक गुणवत्ता का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके हैं। नागरिकों को साक्षर बनाने का प्रयत्न चल रहा है, लेकिन शिक्षित नहीं हो पा रहे हैं। शिक्षा की डिग्रियों में बढ़ोतरी हो रही है लेकिन शिक्षित नहीं हो पा रहे हैं। शिक्षा की डिग्रियों में बढ़ोतरी हो रही है लेकिन जीवनोपयोगी शिक्षा की कमी के कारण बेरोजगारी बढ़ रही है। नवयुवक भटक रहे हैं। शिक्षाविद्, सामाजिक कार्यकर्ता, सरकार चिंतित है। विद्यालय में शिक्षक स्वयं को वेतनभोगी कर्मचारी मानकर 'अर्थकरी च शिक्षा' का ध्येय लेकर विद्यालयों में मन से कार्य न करके ट्यूशन, कोचिंग के कारण शिक्षा देना चाहते हैं। शिक्षक कर्त्तव्य से विमुख होकर मात्र धनार्जन का उद्देश्य लेकर शिक्षक बनना चाह रहा है। परिणाम दिखाई दे रहा है कि शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। सरकार योजना बनाती है। शिक्षा सुधार हेतु नए-नए प्रयोग करती है। परन्तु अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहा है। ऐसे में श्री कृष्ण का कर्मयोगी के रूप में अवतार कथा प्रासंगिक है जिन्होंने धर्म (कर्त्तव्य) की स्थापना हेतु अपने सखा (शिष्य) को कर्त्तव्य पथ पर चलने, समाज व्यवस्था को सुदृढ़ करने, राजधर्म का पालन करने में परिवार जन के मोह को त्यागने का उपदेश दिया था। आज की आवश्यकता है श्रीकृष्ण, संदीपनी, चाणक्य जैसे शिक्षकों की जो कर्त्तव्यशील, परिश्रमी, संस्था हितार्थ विचारक, विद्यार्थियों को सुनागरिक, चरित्रवान, योग्यतानुसार व्यावसायिक कर्मशील मानव निर्माण कर, राष्ट्र हित में विचारवान नागरिक का निर्माण करें। राज्य के 4 लाख सरकारी शिक्षक तथा शिक्षण व्यवसाय में कार्यरत गुरुजन कृष्ण स्वरूपा होकर शिक्षा का अलख जगाने का संकल्प, कर्त्तव्यपरायणता से पूरा करने में लग जाए तो कठिन कुछ भी नहीं है। मात्र आवश्यकता है दृढ़ प्रतिज्ञ, संकल्पित, विद्यार्थी हित और राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानकर कर्त्तव्यपरायणता की।

वर्तमान युग में शिक्षकों के अनुकरणीय प्रेरक कृत्य-देश में अनेकों शिक्षक अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए आचार्य धर्म का पालन कर रहे हैं। उन्हें प्रसिद्धि अथवा पुरस्कार की आवश्यकता नहीं है। वे अपने कर्त्तव्य पथ पर चलकर अपने शिष्यों को शिक्षादान दे रहे हैं। वे- 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' के सिद्धांत पर चलकर कार्य कर रहे हैं। उनका सम्मान समाज गुरु रूप में करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे कई कर्त्तव्यपरायण शिक्षकों के उदाहरण गिनाये जा सकते हैं, जिनसे शिक्षकगण प्रेरणा ले सकते हैं-(समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार 2015-16)

गाँव का स्कूल जहाँ बच्चे तरसते हैं दाखिलों के लिए-संगरुर (पंजाब) के 30 कि.मी. दूर गाँव रत्तोके में अध्यापक दम्पत्ति सुरेन्द्रजीत सिंह और रेणु सिंगला सन् 2002 में राजकीय प्राइमरी विद्यालय में नियुक्त हुए। उस समय छात्र संख्या 35 थी। जिसमें भी डमी संख्या थी। दोनों ने मिलकर शिक्षा की अलख जगाने का संकल्प लिया। प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक विद्यालय चलाते हुए, पढ़ाई, कमजोर बालकों की अतिरिक्त कक्षा, खेल संगीत, प्रकृति भ्रमण करते हुए अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क में रहे तथा जो बालक दिन में नहीं आ सकते थे, उन्हें रात्रि में पढ़ाना प्रारम्भ किया। अंग्रेजी, गणित जैसे कठिन विषयों को सरलतम विधि से पढ़ाना शुरू किया। परिणाम यह हुआ कि क्षमता से अधिक बालक होने के बाद भी प्रवेश हेतु लाइन लगती है। इनके विद्यालय के बालक विद्यालयी प्रतियोगिता तथा राज्य स्तर पर भी पुरस्कृत होते हैं।

बच्चों को पढ़ाने नदी पार कर प्रतिदिन दूर गाँव जाते हैं मास्टर साहब- छत्तीसगढ़ के राजनांद गाँव के मानपुर से 15-20 कि.मी. गाँव चापरगाँव में प्रधानाध्यापक रामलाल मंडावी, सहपाल गाँव के प्र.अ. कोठूराम नेताम, शिक्षक राजेन्द्र वर्मा, त्रिवेदी साहू, मुंजालाल गाँव में शिक्षक रफीकरवान प्रतिदिन पैदल चलकर सड़क मार्ग नहीं होने से पगडंडियों से नदीपार प्रतिदिन अध्यापन हेतु जाते हैं। वर्षा के दिनों में 4-5 कि.मी. रास्ता बदलकर कर्त्तव्य निर्वाह करते हैं।

दो बेटियों से ही पूरा किया परिवार- छत्तीसगढ़ के राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्राचार्य सीताराम साहू व गंडूर देवी के दो बेटियाँ ही हैं। उन्होंने 100 से अधिक शिष्यों को प्रेरित कर 1 या 2 बेटी के बाद बेटा की चाह न रखकर, उन्हें सुशिक्षित करने की प्रेरणा दी। साहू ने आकाशवाणी के कलाकार के रूप में तथा अन्य कई नाटक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों को प्रेरणा प्रदान की।

मेकअप के पैसों की बचत से गरीब बच्चों को पढ़ाया-मोदीनगर (झारखण्ड) की लेक्चरर शीला श्रीवास्तव बाजार में कचरा बीनने वाली बालिकाओं के गरीबी के कारण न पढ़ने की व्यथा सुनकर, अपनी 5 सहेलियों को प्रेरित कर विद्यालय चलाने हेतु पैसों की व्यवस्था मेकअप की सामग्री, ब्यूटी पार्लर का व्यय तथा

शॉपिंग की बचत कर, गरीब बालिकाओं के लिए विद्यालय चला रही हैं।

11 वर्ष की सोनिया टीचर बन कर विद्यालय चला रही है– पटियाला (पंजाब) के वल्लभगढ़ गाँव में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक स्थानान्तरण हो जाने और अध्यापक के न आने के कारण विद्यालय बन्द न हो। गाँवा वालों ने उसी विद्यालय की कक्षा 5 की छात्रा को अध्यापक की जिम्मेदारी दे दी तथा दो ग्राम के बुजुर्गों को सहयोग करने की ड्यूटी लगा दी। सोनिया 43 विद्यार्थियों को कुशलता से अध्ययन करा रही है।

बच्ची को भुट्टा बेचते देख होटल को बनाया स्कूल–रामगढ़ (झारखण्ड) होटल चलाने वाले अरुणसिंह नो बच्चियों को भुट्टा बेचते देख, उन्हें शिक्षित करने की ठानी। उन्होंने होटल के बेसमेंट में पहले 4 बच्चियों को पढ़ाना प्रारंभ किया। बाद में संख्या बढ़कर 25 गरीब बच्चियों को पढ़ाने के लिए होटल के हॉल में पढ़ाने की योजना गणिनाथ विद्यालय के अध्यक्ष जितेन्द्र प्रसाद से मिलकर पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। भविष्य में 21000 गरीब बालकों के लिए उन्हें स्कूल भेजने का लक्ष्य लिया है।

कोचिंग के पैसों से गरीब बच्चों के लिए 'मुक्ति निकेतन' खोला– बिहार के बाँका जिले के 69 वर्षीय अनिरुद्ध प्रसाद सिंह ने नक्सल प्रभावित कटोरिया में 1983 से महाविद्यालय खोला। उन्होंने स्वयं की कमाई से 5 एकड़ जमीन खरीदकर, बी.एड., एम.एड. तथा नेशनल ओपन स्कूल के माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बालक भाग लेते हैं। सुविधायुक्त प्रयोगशाला, लाइब्रेरी, छोटा सा अस्पताल भी है।

कॉलेज में पढ़ने वाले युवा अपने स्तर पर विद्यालय चला रहे हैं– किशनगढ़ (अजमेर) में महाविद्यालयों के 4 विद्यार्थियों ने रिको इण्डस्ट्रीयल क्षेत्र की कच्ची बस्ती में सर्वे में पाया कि बच्चे पढ़ने ही नहीं जाते हैं। चारों मित्रों ने सरकारी सहायता के बिना स्वयं की एकत्र राशि से कमरा किराया लेकर 60 बच्चों को पढ़ा रहे हैं। टाटपट्टी, श्यामपट्ट, वर्णमाला चार्ट क्रय किये हैं।

शैक्षिक क्रांति की आवश्यकता– प्रत्येक काल में किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के शैक्षिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के उन्नयन का दायित्व शिक्षक एवं शिक्षित समुदाय पर रहता है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता का उत्थान उसकी समृद्धि तथा उसके पतन के मूल में शिक्षक ही रहे हैं। यदि आज के विश्व में सभ्यता एवं संस्कृति के पतन की गाथा देखते हैं तो इसके पीछे मूल्यों एवं शिक्षा के पतन का एक विकृत स्वरूप दिखाई देता है। चाणक्य ने शैक्षिक क्रांति का नायक शिक्षक को मानते हुए कहा है कि– ''शिक्षक भिक्षुक नहीं, सृजनकर्ता होता है। वह सम्राट बनाने की क्षमता भी रखता है। इसलिए गीता के अध्याय 3 में 8 श्लोक में कहा है कि– ''तू शास्त्रविहित कर्त्तव्य कर्म कर क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है तथा कर्म न करने से तेरा शरीर निर्वाह भी सिद्ध नहीं होगा।''

प्रधानाध्यापक (से.नि.)
सांपला (अजमेर)
मो. 9460894708

इस माह का गीत

यह कल कल छल छल बहती

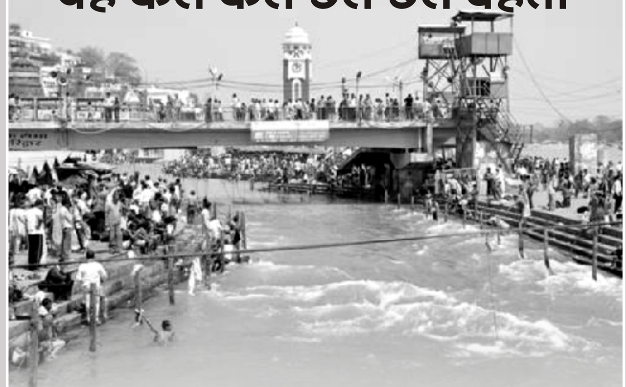

यह कल कल छल छल बहती क्या कहती गंगा धारा।
युग-युग से बहता आता यह पुण्य प्रवाह हमारा ।।ध्रु.।।

हम इसके लघुतम जल कण, बनते मिटते हैं क्षण-क्षण,
अपना अस्तित्व मिटाकर, तन मन धन करते अर्पण।
बढ़ते जाने का शुभ प्रण, प्राणों से हमको प्यारा,

यह पुण्य प्रवाह हमारा।।1।।

इस धारा में घुल मिलकर वीरों की राख बही है,
इस धारा की कितने ही ऋषियों ने शरण गही है,
इस धारा की गोदी में खेला इतिहास हमारा।

यह पुण्य प्रवाह हमारा।।2।।

यह अविरल तप का फल है, यह राष्ट्र प्रवाह प्रबल है,
शुभ संस्कृति का परिचायक भारत माँ का आंचल है,
यह शाश्वत है चिर जीवन, मर्यादा धर्म सहारा,

यह पुण्य प्रवाह हमारा।।3।।

क्या इसको रोक सकेंगे मिटने वाले मिट जायें,
कंकर पत्थर की हस्ती, क्या बाधा बन कर आयें,
ढह जायेंगे गिरि पर्वत, कांपे भू-मण्डल सारा।।

यह पुण्य प्रवाह हमारा।।4।।

संकलनकर्ता–नटवरराज व.अ.
राउमावि. ताऊसर (नागौर)
मो. 8003391470

चंगुल में चहकता बचपन

❐ भगवती प्रसाद गौतम

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन : 1964-66) की विस्तृत रिपोर्ट के 'एपिलोग' में अपने बच्चों के भविष्य को लेकर माता-पिता की खास चिंता को जिस तरह रेखांकित किया गया है उसका मूल भाव यही है कि हमारे स्कूल और कॉलेज बेरोजगार बच्चों (Unemployed males) और अविवाहित बच्चियों (Unmarried Females) के लिए प्रतीक्षालय बनकर रह गए हैं।

वस्तुतः आजादी के बाद ऐसा दौर था जब यहाँ तकनीक (Technique) और प्रौद्योगिकी (Technology) का ऐसा विस्तार नहीं हुआ था जैसा आज के कालखंड में दिखाई देता है। बदलते समय के साथ इस विस्तार ने दुनिया भर के सोच को ही बदल दिया है। रोजगार का स्वरूप बदल गया है। पारिवारिक सम्बन्धों की अवधारणा बदल गई है। व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र सृजन के माध्यम बदल गए हैं। कुल मिलाकर देखें तो इस सदी के मनुष्य की जीवनशैली ही बदल गई है। बच्चों में समय से पहले भविष्य की आहट अनुभव होने लगी है। सीधे-सीधे ही कहें तो वे समय से पहले बड़े हो रहे हैं। उनका निश्छल बचपन, उनका मासूमियत भरा बालपन टीवी, कम्प्यूटर और मोबाइल सरीखे परदों में कैद होकर रह गया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में सबकुछ सिमटकर उनकी अंगुलियों के नीचे आ गया है।

प्रौद्योगिकी का साथ जो मिलाः- वैसे यह वह समय है जिसमें मनुष्य जीवन को प्रौद्योगिकी का साथ ही नहीं मिला, अपितु इसके चलते बहुत-कुछ ऐसा भी प्राप्त हुआ जिसने बरबस ही उसे कई चमत्कारों से रूबरू भी करा दिया। यह प्रसंग ज्यादा पुराना नहीं है, जिसमें 17 वर्ष पूर्व बिछुड़ी दो बहनें अनायास ही आ मिलीं और वह भी फेसबुक की वजह से। दरअसल एरीजोना (अमेरिका) की 18 माह की केटी को संयोग से छोटी बहन नेल्सी का नाम मय जन्म-दिनांक याद रह गया। वह बड़ी हुई तो उसने नेल्सी का फोटो व कुछ सूचनाएं फेसबुक पर अपलोड कर दीं। बस फिर क्या था, चंद घंटों बाद ही कुछ लोगों और समाचार सूत्रों के जरिए उन दोनों की भेंट हो गई।

शुरूआती बचपन से ही जिंदगी की लड़ाई लड़ते एक ऐसे बच्चे का मामला भी सामने आया है जिसका नाम है राहुल। वह 'मायलाइट्स पोस्ट वायरल' नाम की बीमारी से पीड़ित है। हाथों में कलम पकड़ने की कोई ताकत नहीं है, फिर भी उसकी अंगुलियाँ कम्प्यूटर के की-बोर्ड पर बड़ी तेजी से चलती और थिरकती-सी लगती हैं। उसकी सुनने-समझने की क्षमता भी जबरदस्त है और सवालों के सटीक उत्तर प्रस्तुत करने में वह बिल्कुल देर नहीं करता। इसी के बूते 10 वीं, 12 वीं, बीसीए और एमसीए जैसी सभी परीक्षाओं में वह 'टॉपर' रहा। हाँ, इस सफलता में उसकी माँ, बहन और शिक्षकों के धैर्य की भी कड़ी परीक्षा होती रही मगर उन्होंने भी किसी पड़ाव पर हार नहीं मानी।

यह शहर (कोटा) अब कोचिंग नगरी के नाम से जाना जाता है। लेकिन मौज-मस्ती और भौतिक संसाधनों से दूर, अभावों में जीवन जीकर भी बहुत कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाले लखाराम, खैराज, सुधा और कपिल गौतम.... नितांत निर्धन एवं दयनीय पृष्ठभूमि से आए इन चारों किशोरों ने इस वर्ष की मेडिकल प्रवेश परीक्षा में श्रेष्ठतम अंकों के साथ सफलता हासिल की और साबित कर दिखाया कि प्रतिभा को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। सच्ची लगन, मजबूत इरादे और सतत परिश्रम के बल पर ही मिलती है मंजिल....।

भयावह स्थितियों से जूझता बचपनः- मगर इसी के उलट समाज में ऐसे दृश्य-परिदृश्य भी सामने आते रहे हैं जहाँ खाने-पीने, खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने की उम्र में कई बर्तन माँज रहे हैं, कहीं गन्ना पेल रहे हैं, कहीं रेत-ईंटें ढो रहे हैं तो कहीं गले-सड़े कचरे के ढेर में धँसकर ऐसी चीजें बीन रहे हैं, जिन्हें किसी कबाड़ी को संभालकर वे कम-से-कम एक वक्त की रोटी जुटा सकें। इसी के चलते मानव तस्करी विरोधी यूनिट ने पिछले दिनों यहाँ पाँच नाबालिगों को बालश्रम से मुक्त कराया। इस कार्यवाही में 10 से 12 वर्ष के तीन बालक और दो बालिकाएं एक मेस में बंधुआ मजदूर की तरह काम करते पाए गए थे।

यह तो केवल एक प्रकरण है जो अभी हाल सामने आ गया। ऐसे और भी अनगिनत मामले हैं... और हो सकते हैं जो मासूम बचपन को कुकृत्यों, अपराधों और दुष्कर्मों की दुनिया की ओर धकेल रहे हैं। उल्लेखनीय है कि 'नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो' (NCRB) के अनुसार जहाँ 1971 में दुष्कर्म के दर्ज मामले 2487 थे, वही यह संख्या अब 36735 तक पहुँच गई है। चिंताजनक स्थिति यह है कि दुष्कर्म की बीमारी अब बच्चों को भी चपेट में ले रही है। विगत वर्ष (2014) में बच्चों द्वारा दुष्कर्म के 1989 मामले पंजीकृत हुए, जिनमें सबसे अधिक (434) मामले मध्य प्रदेश में उजागर हुए। इनमें समग्रतः 60.3 फीसदी वृद्धि का आकलन माना गया। चौंकाने वाली बात यह भी है कि दुष्कर्म के 95 फीसदी मामलों में अपराधी कोई सगा-संबंधी, परिचित अथवा जानकार व्यक्ति होता है और 40 फीसदी मामलों में पीड़ित अवयस्क ही होता है।

भारतीय पुलिस सेवा से जुड़ी पूर्व अधिकारी किरण बेदी के अनुसार तो ''.... इससे ही स्थिति की गंभीरता का अनुमान लगाया जा सकता है। इन आंकड़ों की गहराई में जाएंगे तो इससे भी भयावह स्थिति दिखाई देगी।... इसके लिए जिम्मेदार कौन है? इसके लिए समाज की भी जवादेही बनती है।... (सच) दुष्कर्म पशुता है।'' सवाल तो उठ ही सकता है- आखिर इस हैवानियत का, इस क्रूरता-निर्ममता का अंत कब और कहाँ जाकर होगा? क्या इस प्रश्न का कभी कोई सटीक उत्तर मिल सकता है?

डिजिटल वर्ल्ड के साथ बड़े होते बच्चेः- आश्चर्यचकित कर देने वाले इस एक और आपराधिक 'केस' को कौन-कैसे नजरअंदाज कर सकता है? खाते-पीते घर-घराने की एक किशोरी (गुजरात) ने खेल के बहाने खुद से 6 वर्ष बड़े भाई की आँखें बाँधी, हाथ बाँधे और सीने में चाकू ही जा घोंपा। भाई का 'दोष' सिर्फ इतना था कि वह अपनी अवयस्क बहन को किसी लड़के से मिलने से रोकता था। सवाल यह है कि लड़की के मन में ऐसा कुत्सित विचार आया कहाँ से? सच तो यही है कि उसे इस

घिनौने कृत्य की प्रेरणा मिली किसी 'क्राइम पेट्रोल' जैसे सीरियल से। वास्तव में कितना कठिन समय है यह! कितना अजीब लगता है जब पढ़ने-सुनने को मिलता है कि एक स्कूली किशोर के बस्ते से पिस्टल जब्त की गई है या फिर किसी छठी-सातवीं कक्षा में अध्ययनरत छात्रा की किताबों-कापियों के बीच छिपी शराब की थैली व अन्य आपत्तिजनक सामग्री छिपी मिली है।

सोशल मीडिया से जुड़े 'एसोचेम' द्वारा अभी -अभी करवाए गए सर्वेक्षण के अनुसार महानगरों में 8-13 आयुवर्ग के 73 प्रतिशत बच्चे फेसबुक अथवा दूसरी साइटों पर अत्यधिक सक्रिय रहते हैं। इस संदर्भ में 'सोशल डेवलपमेंट फाउंडेशन' ने देश के कुछ नगरों-महानगरों के 4000 से अधिक माता-पिताओं/अभिभावकों से बातचीत के आधार पर जानकारी हासिल की है और कहा है कि 75 प्रतिशत अभिभावकों ने खुद उनके अकाउंट बनाने में मदद की है। इसी से जुड़ा एक तथ्य यह भी है कि 85 प्रतिशत बच्चों की पसंद फेसबुक के साथ में गूगल प्लस, वाट्स ऐप, स्नेपचेट जैसी साइटें भी हैं। जाहिर है, यही आकर्षण, यही सम्मोहन अब बच्चों को भी चंगुल में फांस-फंसा रहा है। इस क्षेत्र के अनुभवी लेखक विशेष गुप्ता (जन/रवि. 23.8.2015) कहते हैं-''सच्चाई यह है कि सोशल मीडिया साइट का प्रयोग करने के मामले में भारत आज एशिया में तीसरा और विश्व में चौथा देश है।... दादा-दादी और नाना-नानी की बांहों से लिपटकर कहानियाँ सुनने वाला बचपन अब डिजिटल दुनिया के आभासी समाज के साथ विकसित हो रहा है।... संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्यों की सीख देने वाले परिवार और स्कूल तक बच्चों के बचपन से दूर होते जा रहे हैं।''

हकीकत यह है कि केवल बच्चे ही नहीं, हमारे अनेक अपने परिजन, हमारे समाज, हमारे अधिकांश नगर-कस्बे ऐसे ही उलझे फंदों की जकड़ में आ गए हैं। बालमन के मर्मज्ञ अखिलेश श्रीवास्तव चमन लिखते भी है- ''ये फंदे हैं सूचना क्रान्ति के, बाजारवाद के, उत्तर आधुनिकता के, अति महत्वाकांक्षा के और भौतिकता की अंधी दौड़ के। लेकिन इससे सर्वाधिक प्रभावित हो रहे हैं बच्चे। बच्चे जो हमारी आशा हैं, हमारा भविष्य हैं और हमारे आने वाले कल की तस्वीर हैं।'' (आजकल, नव. 2009) वे तो और भी आगे बढ़कर कहते हैं कि बीते दशकों में जब से एक के बाद टीवी, कम्प्यूटर और मोबाइल यानी तीन पर्दों का हमारे घरों में प्रवेश हुआ है, उन्होंने हमारी सुख-शांति, शील-संस्कार, अदब-लिहाज, मान-मर्यादा सबकुछ 'बे-पर्दा' करके रख दिया है।

...और अब तो जब से स्मार्टफोन आया है तब से लैपटॉप का चलन भी फीका दिखाई देने लगा है। यद्यपि कई उत्साही अभिभावक छोटी उम्र के बच्चों को मनचाही मॉडल दिलवा तो देते हैं किन्तु बाद में उन्हें चिंता सताने लगती है कि वे ही बच्चे हमेशा फोन पर इंटरनेट खोले बैठे मिलते हैं या गेम खेलते रहते हैं और अंततः बरबस ही कई तरह की शारीरिक-मानसिक विकृतियों के शिकार हो जाते हैं।

जब बड़े भी हों भटकाव के शिकारः- यह भी एक ध्रुव सत्य है कि सीखना बच्चों की जन्मजात एवं नैसर्गिक प्रवृत्ति है। परिवार उनका पहला शिक्षण केंद्र होता है और उनकी पहली गुरु होती है माँ। विद्यालय उनका दूसरा केन्द्र है जहाँ उन्हें एक नहीं अनेक शिक्षकों का सान्निध्य प्राप्त होता है। घर-बाहर का यह परिवेश ही उनके शारीरिक, मानसिक, भाषिक, भावनात्मक और सृजनात्मक विकास में अर्थात सर्वांगीण विकास (ALL-Round Development) में खास भूमिका निभाता है। मगर तब कोई भी सकते में आ जाता है जब 'पहली गुरु' माँ ही ढाई वर्ष की बच्ची का गला इसीलिए घोंट देती है और खुद भी आत्महत्या कर लेती है कि उसकी बेटी मानसिक विकलांगता से ग्रस्त है। जाहिर है, बेटी की परवरिश करने वाली माँ भी तो किसी दिमागी विकार से पीड़ित रही जो उसे इतना भयावह और जघन्य कदम उठाना पड़ा।

इस विशाल लोकतंत्र की धरती पर ऐसे और भी उदाहरण मिल जाएंगे जहाँ संतानों के जीवन को संवारने वाले अभिभावक खुद ही जबरदस्त भटकाव के शिकार हो रहे हैं। पिछले दिनों (सितंबर) कानपुर के गंवई क्षेत्र के एक प्रौढ़ ने तंत्र-मंत्र के फेर में पड़कर 'बलि' के नाम पर अपनी ही नौ वर्षीय बेटी की जान ले ली। मन घुटता है यह सोच-सोचकर की आखिर कब उबरेगा समाज रुढ़ियों-अंधविश्वासों की इस जड़ता से? कब संभलेगा मनुष्य अंधेरी राहों में ठोकरें खाते हुए गिरने से?

समस्या यह है कि नई-पुरानी पीढ़ियों में संवादहीनता के चलते बालपन से कैशौर्य की ओर बढ़ते बच्चों को अभिभावकों की सीख-सिखावन व टोका-टोकी से परेशानी है तो अभिभावकों को शिकायत है कि बच्चे उन्हें कुछ समझते ही नहीं। वस्तुतः मॉल में घूमना, मित्रों के साथ मस्ती मारना, ब्रांडेड कपड़ों-जूतों के लिए हठ करना, तरह-तरह के जंकफूड के स्वाद चखना और तो और धूम्रपान, तंबाकू, हुक्का, शराब जैसे नशों की दुनिया में विचरना, यह सब इस उदीयमान पीढ़ी की लाइफ स्टाइल का एक अपरिहार्य हिस्सा बन गया है। नशामुक्ति के क्षेत्र में सक्रिय गैर सरकारी संगठन 'कृपा फाउंडेशन' (पणजी) के संस्थापक फादर जोसेफ परेरा के मुताबिक वर्तमान में गोवा में बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों के चंगुल में फंसते जा रहे हैं और स्थिति अब खतरनाक स्तर तक पहुँच गई है।

तो फिर क्या हैं समाधान?:- दरअसल में सब बातें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से इतनी घातक साबित हो रही हैं कि अंततः जीवन को निचोड़कर रख छोड़ती हैं। आखिर अनगिनत सवालों से घिरे इस भटकाव का क्या कोई समाधान है?.. हाँ, है। एक ही समाधान, वह है शिक्षा....बस, सार्थक शिक्षा। 'सार्थक शिक्षा' इसलिए कि इस दौर में शिक्षा के अभिप्राय बदल गए हैं। शिक्षा के निजीकरण की हवा के साथ ही समांतर कोचिंग संस्कृति फल-फूल रही है। रोजगारपरक पाठ्यक्रमों और नई सदी की तथाकथित माँग के चलते नैतिक जीवन मूल्यों को परे ठेलते हुए दुधमुंहे बच्चों को भी आईएएस, सीईओ, इंजीनियर, डॉक्टर या अन्यान्य लुभावने शब्दों से अवगत कराया जाता है और उम्र के साथ वह इस दौर में आ ही जाता है जहां बच्चा सोते-जागते उठते-बैठते तनावभरी जिंदगी जीने लगता है। मनोरोग विशेषज्ञों के निष्कर्षानुसार मेरे ही गृहनगर में अध्यनरत 40 प्रतिशत बच्चे 'साइकोसोमेटिक प्रोब्लम' (दिमागी अवस्था से शरीर में होने वाले असामान्य अनुभव) से ग्रस्त हैं। अंततः ऐसी स्थिति बन जाती है कि कोई न

कोई 'योगेश' हॉस्टल की ऊपरी मंजिल से कूदकर जिंदगी से हाथ धो बैठता है। (दैभा/12.8.2015) मुंबई से 12 गुना छोटा होते हुए भी यहाँ मुंबई से ज्यादा आत्महत्याएं होती हैं। राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो के मुताबिक विगत वर्ष (2014) में यहाँ 45 छात्रों ने अपना जीवन समाप्त किया।

बोझिल बस्तों के साथ परवरिशः- चहकते-किलकते बालपन के विकास में बाधक बनने वाले तत्व और भी हो सकते हैं, किन्तु बोझिल बस्तों और होमवर्क की मारा-मारी आलम अलग ही है। बच्चों की दबी-झुकी पीठों को देखकर दुष्यंत कुमार की एक गजल की ये शुरूआती पंक्तियां बरबस ही याद हो आती हैं-

'ये सारा जिस्म झुककर
बोझ से दुहरा हुआ होगा।
मैं सजदे में नहीं था,
आपको धोखा हुआ होगा।'

वस्तुतः हम भूल जाते हैं कि बच्चों की परवरिश भी किसी कला-कौशल से कम नहीं है। लेकिन कुछ अभिभावक बच्चों के भविष्य और उनके कार्य-कलापों को लेकर ज्यादा ही सजग रहते हैं। वे हमेशा 'होवरिंग' (मंडराते रहने वाले) या 'हेलिकॉप्टर पैरेंट्स' की भूमिका में नजर आते हैं। आकुल-व्याकुल मनस्थिति के साथ उनकी दृष्टि सदैव बच्चों की गतिविधियों पर जमी रहती है। यदि यों कहें कि वे खुद बच्चों से ज्यादा बंधन में जकड़े हुए रहते हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सच तो यह है कि आप चाहे अभिभावक हैं, अध्यापक हैं या उनके जीवन में कोई और.... उन्हें बढ़ने दीजिए अपने आप। लेकिन आप अपने स्तर पर सही व सकारात्मक बने रहिए, अपनी उपस्थिति से संबलन करिए.. क्योंकि आप ही उनके असली आदर्श हैं। आप ही हैं जो जीवन मूल्यों और संस्कारों से उन्हें संवार सकते हैं। हाँ, दिल से उनके साथ रहना है, उन्हें भरपूर प्यार देना है, हर पल, हर क्षण आत्मिक जुड़ाव बनाए रखना है। बाकी तो वे अपने कदम खुद ही उठाएंगे और नए-से-नए अनुभवों से गुजरते हुए अपने व्यक्तित्व-सृजन की राह पर बढ़ते चले जाएंगे।

1-त-8 अंजलि, दादाबाड़ी
कोटा (राज.)-324009
मो. 09461182571

बाल विकास और शिक्षा

❐ अरनी राबर्ट्स

शिक्षा का उद्देश्य है बालक का सर्वांगीण विकास और बालक की विकास यात्रा में सबसे प्रमुख हाथ होता है शिक्षा एवं शिक्षक का। शिक्षा ही बालक को जीना सिखाती है, उसे योग्य बनाती है, स्वावलम्बी बनाती है, सोचने-समझने, निर्णय लेने व तर्क करने की बुद्धि प्रदान करती है। अगर यूं कहा जाए कि शिक्षा बालक के भविष्य का निर्माण करती है, तो बालक के विकास के संदर्भ में यह कहना सारगर्भित होगा। बालक के उचित लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, संस्कार देने व चरित्र निर्माण करने में यूं तो कई घटक हैं, पर इनमें चार महत्त्वपूर्ण हैं-बालक के माता-पिता, शिक्षक, परिवेश और मित्र।

बालक के विकास और शिक्षा में सबसे मुख्य घटक हैं बालक के माता-पिता और शिक्षक। विशेष रूप से 'माँ'। इसीलिए माँ को बालक की प्रथम पाठशाला कहा गया है। माँ के साथ पिता की भी जिम्मेदारी होती है कि वह उसे उचित मार्गदर्शन दे। बच्चा जीवन की पाठशाला में पहला शब्द जो बोलना सीखता है वह है 'माँ'। 'माँ' का महत्त्व इतना अधिक है कि गाय का नवजात बच्चा भी 'माँ' शब्द ही मुँह से निकालता है। इंसान तो इंसान यहाँ तक कि पक्षी व जानवर मादाएं भी अपने बच्चों को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करती हैं।

वे अभागे बच्चे जो माँ को बचपन में या पैदा होते ही खो देते हैं वे सचमुच दुर्भाग्यशाली हैं। वे माँ के स्नेह से तो वंचित रह ही जाते हैं, बाकी जीवन समर में आगे बढ़ाने में माँ जो अहम् भूमिका निभाती है उससे भी वे अछूते रह जाते हैं।

बालक के जीवन के विकास की प्रथम सीढ़ी पर जब वह अपना कदम रखता है तो माँ उसका हाथ रहती है और वह भी इतनी मजबूती से कि बालक असंतुलित होकर गिर न जाए। साथ ही वह उसे हर दिन शिक्षा देती है-उठने, बैठने, चलने, बात करने, दूसरों से व्यवहार करने, अच्छी आदतें अपनाने व बुरी बातों से बचे रहने, संयम रखने, धैर्य से काम करने, निराश न होने और अच्छा नागरिक बनने में उसके द्वारा दी गई शिक्षा विशेष महत्त्व रखती है।

बाल विकास की अगली कड़ी होती है 'शिक्षक' जो कि एक महत्त्वपूर्ण घटक होता है। माँ-बाप तो बालक को शिक्षित बनाने में तथा उसके उचित विकास हेतु तो सदैव तत्पर रहते ही हैं, पर अनौपचारिक शिक्षा से उसे जोड़ने का सेतु बनता है शिक्षक। एक अच्छा शिक्षक वही भूमिका अदा करता है जो भेड़ों का रक्षक और और उन्हें संभालने वाला चरवाहा करता है। बालक शिक्षक को अपना सच्चा हितैषी मानता है और उसकी कही हर बात उसके लिए ग्राह्य होती है। वह शिक्षक के प्रति सम्मान व आदर का भाव रखते हुए सीखने की प्रक्रिया से गुजरता है। गुरु का स्थान तो वैसे भी भारतीय संस्कृति में श्रेष्ठ है। ईश्वर के बाद अगर व्यक्ति के जीवन में कोई सम्माननीय व आदरणीय होता है तो वह है शिक्षक। शिक्षक बालक का रोल मॉडल होता है। उसका कहा बालक के लिए परम सत्य व पत्थर की लकीर होता है। उसे शिक्षक पर इतना विश्वास होता है कि उसका कहा उसके लिए हर हाल में मानने योग्य होता है।

अपने शिक्षक के द्वारा ही बालक जान पाता है और इस सत्य से अवगत होता है कि जीवन के लिए ज्ञान और शिक्षा की महती आवश्यकता है। शिक्षा ही ज्ञान की प्राप्ति की कुंजी है। प्रारंभिक शिक्षा तो 'माँ' के द्वारा पूरी कर ही दी जाती है। आगे की शिक्षा का कार्य विद्यालय का शिक्षक करता है। बाल विकास के लिए बालक का स्कूल जाना बहुत जरूरी है। कोई अगर यह सोच ले कि घर पर पढ़ाकर बालक को शिक्षित कर लिया जाएगा तो यह सम्भव नहीं है। बालक को विद्यालय में एक ऐसा वातावरण मिलता है जहाँ न केवल वह किताबी ज्ञान प्राप्त करता है बल्कि मानसिक, शारीरिक, नैतिक व आत्मिक रूप से भी परिपक्व होता चला जाता है। समूह में रहने का आनन्द क्या उसे घर पर मिल सकता है?

मैं प्राथमिक शिक्षकों को उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के लिए उनके अथक प्रयासों के लिए प्रशंसा करूंगा कि वे बालक को अक्षर व अंक ज्ञान देते हैं और यही दो महत्त्वपूर्ण घटक

(अक्षर व अंक) ही बालक की समस्त शिक्षा की नींव के पत्थर होते हैं। नींव जितनी मजबूत होती है, इमारत उतनी ही ठोस होती है। दुर्भाग्य से कुछ शिक्षक अपने इस दायित्व का निर्वहन ठीक से नहीं कर पाते और बालक कमजोर नींव वाली इमारत साबित होता है। लेकिन प्राथमिक शालाओं के अधिकांश शिक्षक परिश्रम से बालकों को पढ़ाते-लिखाते हैं। वे ही देश के सच्चे निर्माता हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दों में शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार है-''शिक्षा का उद्देश्य मानव के मस्तिष्क को विकसित करना है, उसे भरना नहीं।'' कुछ शिक्षक बालकों को रटंत विद्या प्रदान करने को ही विद्या दान समझते हैं। वे बालकों को कुछ देने के बजाय केवल भर रहे हैं। यदि तोते को भी बार-बार कुछ बोला जाए तो वह भी वैसा ही बोलने लगता है। इस प्रक्रिया में ज्ञान कहाँ मिला? अच्छे नागरिक, अच्छे इंसान और संस्कारयुक्त पीढ़ी तैयार करने का दायित्व शिक्षक पर है मुख्य रूप से। अच्छे आदर्श शिक्षकों की बदौलत ही आज हमारे देश भारत को कुशाग्र इंजीनियर्स, जीनियस डॉक्टर्स और सुयोग्य आर्किटेक्ट तथा वाणिज्य के क्षेत्र में दक्ष व्यक्ति मिल पाते हैं और यह सब शिक्षक की ही देन है जो विद्यार्थी का मार्गदर्शक, मित्र व दार्शनिक कहलाता है।

बालक के विकास का अगला मुख्य घटक है वातावरण (माहौल)। बालक कैसे माहौल में पल रहा है, वैसे वातावरण में पढ़ रहा है, कैसे उसके मित्र हैं। बालक के इर्द-गिर्द का माहौल ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। यदि बालक स्वस्थ व अच्छे वातावरण में रहता है तो उसका व्यक्तित्व भी अच्छा होता है। शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार बालक के व्यक्तित्व का विकास या निर्माण दो मुख्य बातों पर आधारित होता है- एक है नैसर्गिक गुण जो वह अपने पेरेन्ट्स से पाता है (जीन्स के आधार पर) तथा दूसरे होते हैं अर्जित गुण जो वह अपने चारों ओर के माहौल से प्राप्त करता है। अगर स्कूल अच्छा है, सुयोग्य शिक्षक हैं, पढ़ने-पढ़ाने का उपयुक्त माहौल है, घर का वातावरण अच्छा है, माता-पिता व घर के बड़े-बुजुर्ग बालक का ध्यान रखते है, उसे संतुलित भोजन मिलता है, पढ़ने के साथ खेलने-कूदने की भी सुविधा है तो बालका का विकास बहुत अच्छा होगा, अन्यथा वह एक साधारण और चिड़चिड़ा बालक बनकर रह जाएगा। बाद में उसमें बहुत सी बुरी आदतें घर कर जाएंगी।

इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि बालक के सम्मुख स्वस्थ एवं दोषरहित वातावरण हो ताकि वह अच्छे संस्कार, अच्छी आदतें ग्रहण करने के साथ-साथ शांत और प्रसन्न मन से अध्ययन कर सके। प्रेम व स्नेह से बालक को गलत मार्ग पर जाने से रोका जा सकता है। बालक वही करता है जो वह अपने से बड़ों को करते देखता है। समाज में रहते हुए बालक को एकता, परस्पर सहयोग, निष्ठा व ईमानदारी के गुण भी अर्जित करना माहौल पर निर्भर करता है। परन्तु यह तभी सम्भव है जब उसके आसपास व घर का माहौल उसके शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास के अनुरूप हो।

पढ़ाई के साथ-साथ सहगामी कार्यक्रम भी अत्यंत आवश्यक है। ये बालक के विकास में रीढ़ स्तम्भ का कार्य करते हैं। बाल सभाएं, बालचर, खेलकूद, अंताक्षरी (फिल्मी गीतों पर आधारित नहीं), शैक्षिक भ्रमण व सांस्कृतिक कार्यक्रम बालक के नैसर्गिक विकास की सीढ़ियां हैं। बालक स्वभाव से उच्छंखृल होता हैं और कई बार उसकी शरारतें सीमा को पार कर जाती हैं। ऐसे में उसे रचनात्मक कार्यो से जोड़ना उचित समाधान है ताकि वह अनुशासित रहे। अनुशासन ऐसा पाठ है जो उसके जीवन भर काम आता है क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन का महत्त्व है।

प्रत्येक बालक में कोई न कोई प्रतिभा होती है। सुअवसर व उचित वातावरण न मिल पाने के कारण बालक में निहित प्रतिभाएं दम तोड़ देती हैं। इसलिए उसकी प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय से बढ़कर और कौनसा स्थान हो सकता है। विनोबा भावे ने इस सम्बन्ध में बहुत अच्छी बात कही है ''प्रतिभा का अर्थ है बुद्धि में नई कोपलें फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई आशा, नई खोज और नई स्फूर्ति आदि प्रतिभा के लक्षण हैं।'' आज क्लॉस रूम शिक्षा तो बहुत उन्नत है। बालक 90+ अंक पा रहे हैं पर समाज व परिवार से मिलने वाले लुप्त होते जा रहे हैं। कला, साहित्य, संगीत और संस्कृति परक ज्ञान से बालक वंचित है। मुट्ठी भर बालक ही जीवन में कभी खेल मैदान के दर्शन कर पाते हैं। मोबाइल, टी.वी., लेपटॉप ने संस्कारों को छीन लिया है। पहले कम्प्यूटर और लेपटॉप नहीं थे तब क्या देश में डॉक्टर, इंजीनियर्स और आई.ए.एस. ऑफिसर्स नहीं बनते थे? संयुक्त परिवार के आनन्द को एकल परिवार निगल गए हैं। जेनरेशन गेप ने युवाओं और बुजुर्गों में बड़ी खाई खड़ी कर दी है। एक समय था जब घर के बुजुर्ग घर के बच्चों का रिमोट कंट्रोल होते थे और उनकी हर गतिविधि पर उनकी पैनी नज़र होती थी। बच्चे उनकी आज्ञा का पालन करते थे, भय से नहीं, सम्मान आदर से। आज परिदृश्य बदल गया है, न बच्चे माता-पिता की सुनते हैं और न बुजुर्गों की। लेकिन ज़रूरी है ऐसा माहौल बने जहाँ माता-पिता, घर के बुजुर्ग और बच्चों के बीच प्रेम का ऐसा सेतु बने जो उन्हें सुसंस्कृत बनाने के साथ-साथ संस्कारवान बनने की भी प्रेरणा दे।

बाल विकास का चौथा घटक है- संगति या मित्र वर्ग। कहा जाता है कि मनुष्य की असली पहचान देखनी हो तो उसके मित्र देख लो। एक अच्छा बालक अच्छे ही बालकों से मित्रता करना पसंद करता है। गलती से कोई संस्कारवान बालक बुरे लड़कों की संगत में पड़ जाता है तो वह भी एक दिन उन्हीं के समान बन जाता है। कहा जाता है कि 'बुरी संगति अच्छे इंसान के चरित्र को बिगाड़ देती है। कोचिंग ले रहे छात्रों को देखा जाए तो वे ही छात्र आई.आई.टी./पी.एम.टी. में सलेक्ट होते हैं जो कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने वाले छात्र हारे हुए योद्धा की तरह घर लौट आते हैं। माता-पिता/अभिभावक व शिक्षक इस बात का विशेष ध्यार रखें कि उनके बच्चे किसी भी तरह बाहर के असामाजिक तत्वों के हाथ पड़कर अपना जीवन बरबाद न करें।

अच्छे मित्र सदैव अच्छी ही सलाहें देते हैं। आज के इस प्रदूषित वातावरण में भी संस्कारवान बच्चों की कमी नहीं है। बस उन्हें किशोरावस्था में सही मार्गदर्शन मिले। अभिभावकों व शिक्षकों को बालकों को मुख्य रूप से यह सीख देनी है कि जीवन में कुछ पाने के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता है। शिक्षा जीवन के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी कि इंसान को जीने के लिए अन्न, जल व प्राणवायु की जरूरत है। जो पढ़ाई मिस कर देते हैं वे एक न एक दिन अवश्य पछताकर कहते हैं 'काश हम भी पढ़ पाते!'

पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगंज मण्डी
कोटा-324002 (राज.)
मो. 9414939850

शिक्षक एक कालजयी मशाल

❐ चम्पा देवी

'पीढ़ियों का फर्क' और 'जेनरेशन गैप' ये सुपरिचित उक्तियाँ है। इनका प्रयोग पारिवारिक और सामाजिक संदर्भ में होता है लेकिन शिक्षक-शिक्षार्थी के लिए नहीं। पारिवारिक संबंधों में दादा-पिता-पुत्र और पौत्र के व्यक्तित्व तथा कृतित्व में जो सर्वविदित अंतर साम्य होता है वही अंतर साम्य शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच भी होता है। यह भी एक विशिष्ट पीढ़ी ही है। भिन्न परिवेशों से आने पर भी एक उल्लेखनीय समानता इनमें होती है, वह है विद्यालयी परिवेश में व्यक्तित्व का विकास। हम शिक्षक जिन विद्यालयों में अपने छात्रों को संस्कारित करते हैं उन्हीं तरह के विद्यालयों में हम अपने अध्यापकों के सान्निध्य में रहे होते हैं। एक विद्यालय के प्रांगण से कितनी पीढ़ियां और हर पीढ़ी में कितने व्यक्तित्व और चरित्र आकार लेकर कितने क्षेत्रों में जाते रहते हैं। यह रंगमंच कभी खाली नहीं होता लेकिन नाटक की तरह इसमें कुछ भी पूर्व नियोजित नहीं होता। मानव जीवन कभी भी एक साँचे में फिट नहीं हो सकता। व्यक्तित्व विकास तो एक अनंत यात्रा है कोई एक उद्देश्य नहीं कि उसके बाद पूर्ण विराम लग जाए। जीवन में आने वाली परिस्थितियाँ भी मील के पत्थरों की तरह पूर्व निर्धारित नहीं होती कि जीवन को योजनाबद्ध तरीके से जिया जा सके। अनेकानेक संभावनाओं के कारण ही मानव जीवन अन्य प्राणी जीवन से अलग है, विशिष्ट है। इतना अवश्य है कि जिस तरह परिवार में रहते हुए मानव अपने पूर्वजों-अग्रजों से पूरी तरह अप्रभावित नहीं रह सकता उसी तरह विद्यार्थी भी अपने शिक्षक के व्यक्तित्व से अप्रभावित नहीं रहता। शिक्षक का व्यक्तित्व भी मूक शिक्षक ही होता है। विद्यार्थी जीवन पर उसी का प्रभाव त्वरित गहरा और चिरस्थायी होता है। हमारे मन में अपने कुछ शिक्षकों की अमिट स्मृति है। यदि उनका व्यक्तित्व आज हमारे भीतर जीवंत है तो हमारा व्यक्तित्व भी जाने-अनजाने हमारी अगली पीढ़ी में हस्तांतरित होगा ही।

सूचना और तकनीक के इस युग में हम शिक्षकों की जिम्मेदारी कुछ और बढ़ गई है। छात्रों के लिए अनेकानेक स्पर्द्धाएं हैं, वे बहुत तेज चलने के लिए ही नहीं दौड़ने के लिए मजबूर हैं। ज्ञान के तो अनंत, त्वरित और सुलभ साधन उनके पास हैं। कुछ जानने के लिए उसे कहीं जाना नहीं है, किसी से पूछना नहीं हैं सिर्फ एक क्लिक करते ही वांछित सूचना या ज्ञान स्क्रीन पर हाज़िर। इसीलिए जिम्मेदारी बढ़ गई है। इस स्क्रीन पर तो ग्राह्य और त्याज्य, वांछित और अवांछित दोनों एक साथ उपस्थित हैं। दोनों के अंतर का विवेक भी होना चाहिए उनमें। शिक्षित करने के साथ-साथ इन अबोध बालकों को संस्कारित करने की भी हमारी ही जिम्मेदारी है। केवल नियम-सूत्र रटाकर, उपदेश, आदेश, निर्देश, पुरस्कार या दण्ड देकर तो हम एक बालक को सच्चे अर्थों में मनुष्य नहीं बना सकते। जैसे कोई पिता अपने पुत्र को विरासत में अकूत संपत्ति दे पर उसे संस्कारित न करे तब 'पूत कपूत तो क्यों धन संचै'' वाली उक्ति चरितार्थ हो जाएगी वैसे ही परीक्षा में पास होने के लिए ही ज्ञान देंगे, उनमें जीवन मूल्यों और नैतिकता का विकास नहीं करें तो शिक्षा हृदयहीन कम्प्यूटर की मेमोरी में डाटा ट्रांसफर की प्रक्रिया होकर रह जाएगी। कवि तुलसीदास ने कलियुग के लक्षणों में 'उदर भरै सोइ ज्ञान सिखावा' को भी गिनाया है जो हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं जबकि मनीषियों ने 'सा विद्या या विमुक्तये' कहकर भी विद्या को परिभाषित किया है। आज के युग में हमें यथार्थ और परमार्थ दोनों को ही साधना है। हमें रामानन्द की तरह कबीर, विश्वामित्र की तरह राम, संदीपनि की तरह कृष्ण, द्रोण की तरह अर्जुन, चाणक्य की तरह चन्द्रगुप्त और परमहंस की तरह विवेकानन्द बनाने हैं। मात्र उपदेशों से ये शिष्य ऐसे नहीं बने, ये सब अपने गुरुओं की पहचान बन गए थे। गुरुओं के सान्निध्य में रहते हुए इनके चरित्र पर उनके व्यक्तित्व की छाया भी तो पड़ी होगी।

गीता में कहा गया है कि जैसे कर्म के फल पर मनुष्य का अधिकार नहीं है वैसे कर्म न करना भी मनुष्य के अधिकार में नहीं है। न चाहते हुए और न करते हुए भी कर्म अनायास अनवरत होता रहता है। 'नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् कार्यते ह्यवशः कर्म सर्व प्रकृतिजैगुणैः।।'' कोई भी पुरुष किसी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता है। प्रकृतिज गुण है यह मानव का। वही बात शिक्षक के व्यक्तित्व के साथ है। उसका प्रभाव भी अनायास और अनवरत होगा ही इसलिए हमें अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति सचेत रहना चाहिए। कई बार चर्चाओं में ऐसा सुनने को मिलता है कि जिस दौर के हम शिक्षक हैं उसमें आदर्श शिक्षक होना असंभव है। मेरे विचार से असंभव नहीं है कष्ट साध्य और समय साध्य है। व्ययसाध्य बिल्कुल नहीं है। कुछ का कहना है कि अध्यापन के अतिरिक्त जो कार्य आज के शिक्षक को करने पड़ते हैं वे उन तथाकथित आदर्श गुरुओं के पास नहीं थे इसलिए वे आदर्श बन सके। वाद-विवाद और प्रतिवाद होते रहे हैं और होते रहेंगे लेकिन सारी बहस को एक तरफ रखकर हमें यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि शिक्षक के रूप में हम मनुष्य ऐसे दूसरे मनुष्यों के सामने खड़े होते हैं जो अभी कच्ची मिट्टी के समान हैं। जो अभी गढ़े जाने के लिए तैयार हैं। शिक्षक रूपी प्रजापति के हाथों से समय के चाक पर उस गीली मिट्टी को रखा जाना तय है। घूमते चाक पर रखे इस लोचदार चिकने सुनम्य लौंदे को दक्ष हाथों का स्पर्श और एक सुपात्र बनाने की कर्तव्यनिष्ठा दोनों मिल जाएं तो यह सुरूप, सुयोग्य बनेगा अन्यथा तेजी से घूमते चाक के साथ दिग्भ्रमित होकर एक विरूप कुपात्र तो बन ही जाएगा। उनका संस्करण फिर संभव नहीं है। पात्र को आँवे में पकाना होगा ही लेकिन कितनी भी सुंदर चित्रकारी और रंगाई उसे सुरूप-सुयोग्य नहीं बना सकेगी। यह पात्र तो होगा लेकिन वह बात नहीं होगी जो हो सकती थी। बालक के जीवन का यह अमूल्य कालखंड जो विद्यालय की चारदीवारी में बीतता है उसी में भावी जीवन के बीज पड़ जाते हैं। हम शिक्षकों के सान्निध्य में उसने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, सकारात्मक-नकारात्मक, उपयोगी-अनुपयोगी,

कल्याणकारी-अकल्याणकारी कुछ न कुछ ग्रहण कर लिया है। अभी जो रोज-रोज भ्रष्टाचार और दुराचार के समाचार सुनते -पढ़ते हैं उनकी नींव कहाँ पड़ती है? सोचने की बात है। रिश्वत लेकर जनता का काम करने वाले इंजीनियर, वकील, व्यापारी, अधिकारी, जनप्रतिनिधियों, नशाखोर युवाओं और तथाकथित नारी मुक्ति के नाम पर स्वेच्छाचारी युवतियों की एक पीढ़ी जो हमारे सामने है ये वही अनगढ़ विरूप पात्र तो नहीं हैं? ज्वलंत प्रश्न है- कुपात्र या सुपात्र क्या स्वयं बनता है? सिर्फ एक ही कोई कारक नहीं है लेकिन एक अंशमात्र ही सही, क्या हम शिक्षकों का कोई दायित्व नहीं है? अगर नहीं है तो अक्षर ज्ञान के लिए प्राथमिक शिक्षा आजकल प्ले स्कूल देते हैं, उसके बाद पुस्तकें और सूचनाओं के लिए इंटरनेट काफी हैं।

किसी भी तरह का आरोप-आक्षेप नहीं है पर अनुभव होता है कि शिक्षक-शिक्षार्थी के बीच एक दूरी और उदासीनता आ गई है। कितनी ही दलीले हैं- 'विद्यालय और विद्यार्थियों के हित के अतिरिक्त और काम न करने पड़ते, बच्चों के माता-पिता भी शिक्षा के प्रति थोड़े जागरूक होते, शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों में ठहराव की कोई नीति नहीं होती। फीस, किताबें, भोजन, कक्षा क्रमोन्नति, छात्रवृत्ति की शत-प्रतिशत सुलभता से 'मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय'वाली बात चरितार्थ हुई है- ऐसी कई बातें उठती रहती हैं लेकिन इन सबमें बच्चों का क्या दोष? इनके माता-पिता गरीब, अनपढ़ किसान-मजदूर हैं तो या हम अपने विभाग के नीति-नियमों से असंतुष्ट हैं तो सजा अबोध बच्चों को क्यों मिले? हमारे अपने बच्चे भी पढ़ने में कमजोर और लापरवाह होते हैं क्या उन्हें भी यही कहकर छोड़ दिया जाता है? तमाम व्यस्तताओं के बावजूद हम अपने बच्चों को समय देते हैं और उठते-बैठते, सोते-जागते उनकी चिन्ता करते है। शिक्षा और संस्कार के क्षेत्र में हम अपने बच्चों को सर्वश्रेष्ठ बनाना चाहते हैं। हम काफी हद तक सफल भी होते हैं। उनकी सफलता का श्रेय हम लेते हैं, हमें उनपर गर्व होता है। इस दौर में हम यह भूल ही जाते हैं कि अपने बच्चों को सफल बनाने के लिए हमने देश-समाज के बच्चों को शिक्षित और संस्कारित करने की जिम्मेदारी वाली आजीविका स्वेच्छा से प्रयास पूर्वक हासिल की थी। उन्हें उनका दाय मिला या नहीं, उनके साथ न्याय हुआ या नहीं, आपका शिक्षक व्यक्तित्व चरितार्थ हुआ या नहीं, प्रमाण पत्रों और डिग्रियों से कहीं मूल्यवान संस्कार उसे दिये या नहीं? वे आपके शिष्य होकर या आप उनके शिक्षक होकर गौरवान्वित हैं या नहीं? ये प्रश्न ही वास्तविक मूल्यांकन करते हैं। पुस्तकीय शिक्षा देना हमारा व्यवसाय है वहीं जीवन मूल्यों की दीक्षा हमारा कर्तव्य है।

एक अध्यापक और उसके विद्यार्थी के बीच आत्मीयता ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। शेष सब उसके बाद में है और उसके बिना सब कुछ फीका है। विद्यार्थी आतंकित न हों, साधिकार सप्रेम आपके निकट आएं, कुछ पूछें कुछ बताएं। आपके सामने हँसे-खिलखिलाएँ। यह शिक्षण की पृष्ठभूमि है। यह हृदय-परिचय कभी पुराना या धूमिल नहीं होता बल्कि कालजयी होता है। इसी पृष्ठभूमि और भावभूमि पर हम उच्च मानवीय मूल्यों के बीज बो सकते हैं। यही बीज कालांतर में अंकुरित, पल्लवित पुष्पित फलित होंगे। विश्रांति की वेला में हम इन्हीं की छाया में बैठेंगे। अपने हाथों से पालित-पोषित सघन छायादार, पुष्पसज्जित और फलभार नमित दरख्त के नीचे बैठने का सुख और उसके पालक पोषक होने का गर्व किसी नेमत से कम नहीं होता।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि.बरेव (नागौर)
पिन-341512

दिशा बोध

❐ शंकर लाल माहेश्वरी

एक यात्री कवि कालीदास की नगरी उज्जैन पहुँचा। उसे महाकालेश्वर के दर्शन की उत्कट अभिलाषा थी, वह महाकाल की महाआरती में सम्मिलित होना चाहता था। उसका निर्धारित समय उसे ज्ञात नहीं था। उसने रास्ते में आते हुए एक ऑटो रिक्शा को हाथ देकर रुकवाया, रिक्शा ड्राईवर को महाकाल मंदिर तक ले जाने का किराया पूछा। उसने दो सौ रुपये बताया। यात्री ने किराया ज्यादा होने की बात कहकर कम करने का आग्रह किया किन्तु ऑटो रिक्शा चालक टस से मस नहीं हुआ, उसने किसी भी स्थिति में किराया कम नहीं करते हुए कह दिया कि उस लम्बे रास्ते का किराया इससे कम नहीं होगा।

किराया अधिक मानते हुए यात्री पैदल ही चल पड़ा। लम्बी दूरी पार करने के बाद वही रिक्शा वाला उसी रास्ते से जाता हुआ दिखाई दिया। यात्री ने उसे रोका और कहने लगा ''भैया! अब आधा रास्ता पार कर लेने के बाद रिक्शे का कितना किराया लोगे?'' रिक्शे वाले ने कहा ''अब चार सौ रुपये लगेंगे।'' ''भले आदमी! आधी दूरी तो मैंने पैदल ही पार कर ली है अब तो आधी दूरी ही रही है न? फिर भी तुम पहले से दुगुना किराया माँग रहे हो। कुछ तो विचार किया होता अब तो तुम्हे सौ रुपया लेना चाहिए है न''। ''महाशय! जिस रास्ते से तुम जा रहे हो ये ठीक विपरीत रास्ता है। तुमने रास्ता ही गलत चुना है। अब महाकाल की दूरी दुगुनी हो गई है इसलिए चार सौ रुपये माँग रहा हूँ समझ गये ना?''

आरती का समय निकला जा रहा था समय पर पहुँचना भी संदिग्ध था। जो व्यक्ति सही समय पर सही दिशा नहीं चुन पाता उसकी भी स्थिति इसी प्रकार की होती है। उचित निर्णय, सही दिशा, सफलता के सोपान और लक्ष्य की समग्र जानकारी नहीं होने पर व्यक्ति भटक जाता है, उसकी मंजिल की दूरियाँ भी बढ़ जाती हैं और लक्ष्य की प्राप्ति में वह असफल रहता है। व्यक्ति जब दिशा ही गलत चुन लेता है तो समय शक्ति और पैसा भी अधिक खर्च होता है।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
पोस्ट-आगूचा, जिला-भीलवाड़ा-311022
मो. 9214581610

शिक्षा, विकास और अर्थशास्त्र

❒ डॉ. जमनालाल बायती

कई बार ऐसा लगता है कि हम शिक्षा का अर्थ, उसके कार्य ही भूल गए हैं या जान कर भी उसके अर्थ को याद रखना नहीं चाहते हैं-यह कैसी विडम्बना है? शिक्षा का अर्थ है, उसका कार्य है जन्म मरण के चक्र से मुक्ति। शास्त्रों में कहा गया है-असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय अर्थात् हे परमात्मा! हमें असत्य से सत्य की ओर ले चल, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल, तथा मृत्यु से अमरत्व या अमरता की ओर ले चल। सभी दिशाओं से शुभ-कल्याणकारी विचार हमें मिलें। शिक्षा हमें सिखाती है कि माता-पिता, भाई-बहिन, दादा-दादी के साथ कैसे व्यवहार करें, नाना-नानी, मौसा-मौसी के साथ हमारा व्यवहार कैसा हो? समाज से स्वीकृत मूल्यों-आदर्शों-प्रतिमानों के अनुसार ही हमारा व्यवहार हो, सही शिक्षा का, विश्व बंधुत्व का, मानव कल्याण की दृष्टि से शिक्षा का यही अर्थ स्वीकार्य है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का कार्य है-बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, बालक के सोचने-विचारने का सीमाहीन क्षेत्र विस्तार, मस्तिष्क का विकास हो जिससे वह अपने पांवों पर खड़ा हो सके, आत्मनिर्भर बन सके। महात्मा गाँधी इसी बात को भिन्न शब्दों में कहते है-श्रेष्ठता या विचारों की उच्चता तो बालक में जन्म से ही छिपी हुई है-उसके प्रकटीकरण में शिक्षक मदद ही तो करता है। इस प्रकार भारतीय संदर्भ में शिक्षा का अर्थ है-जीवन के प्रति समग्र तथा विस्तृत दृष्टिकोण, वित्तीय स्व प्रबंधन तथा सीखने में अनूठा आनन्द या समरसता।

विकास, प्रगति, उन्नति, समृद्धि, वृद्धि आदि शब्दों को प्रायः पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। यहाँ इस पर मुख्यतः आर्थिक विकास के रूप में विचार किया जा रहा है। मानव के जीवन स्तर में सुधार, प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय में वृद्धि, दैनिक जीवन में आवश्यकता की संतुष्टि के लिए भिन्न-भिन्न वस्तुएं प्रयोग करना, मोटे रूप से राष्ट्रीय दृष्टि के अनुसार प्रति व्यक्ति आय में अपेक्षानुकूल वृद्धि जिससे वह समृद्ध जीवनयापन के लिये भिन्न-भिन्न वस्तुओं का उपयोग कर सके। इस विवेचन के प्रकाश में कहा जा सकता है कि शिक्षा शास्त्र की पाठ्य सामग्री न्यूनाधिक रूप से दर्शन शास्त्र ही प्रस्तुत करता है।

विकास मोटे रूप से व्यक्ति के जीवन स्तर से जुड़ा हुआ है। व्यवहार में देखा जाता है कि शिक्षा प्राप्त व्यक्ति की आय निरक्षर व्यक्ति की तुलना में अधिक होती है, इसी भाँति स्कूली शिक्षा समाप्त कर रोजगार खोजने वाले व्यक्ति को तुलनात्मक रूप से महाविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर निकले स्नातक की तुलना में कम पारिश्रमिक मिलता है। फिर शिक्षा प्राप्त मजदूर मशीनों की सार-सम्भाल में पूरी रुचि लेता है जिससे मशीने अधिक समय तक अच्छा काम करती हैं, इससे राष्ट्रीय सकल उत्पादकता में वृद्धि होती है या कारखानों में वस्तुओं का लागत मूल्य कम आता है और प्रकारान्तर से इससे मजदूर अपने मिल मालिकों या नियोक्ताओं से पारिश्रमिक बढ़वाने में सफल हो जाते हैं। पढ़ा-लिखा व्यक्ति बेकार नहीं बैठेगा। वह प्रयत्न कर धन उपार्जन कर भोजन की व्यवस्था करेगा। इसके विपरीत निरक्षर हाथ पर हाथ धरे बिना काम बैठा भी रह सकता है, कारण कि उसके सोचने विचारने का क्षेत्र सीमित है। बढ़ी हुई मजदूरी से श्रमिक को जीवन स्तर सुधारने में मदद मिलती है। वह बच्चों को अच्छी व उच्च शिक्षा दिलाएगा, भोजन में एक सब्जी और बढ़ सकती है, मनोरंजन के साधन यदि नहीं है तो बढ़ जाएंगे, अधिक महंगे कपड़े खरीदेगा, अवकाश में सैर सपाटे पर जा सकता है, इन सब गतिविधियों से मुद्रा की तरलता बढ़ेगी, फलतः आर्थिक विकास होगा। व्यवहार में देखा जाता है कि पढ़े लिखे परिवारो में सन्तान की संख्या कम पाई जाती है, पढ़े-लिखे परिवारों में इतनी ही सन्तान की चाह रहती है जितनी की वे अच्छी व उच्च शिक्षा की व्यवस्था कर सके तथा उनका पालन-पोषण उच्च स्तरीय हो। पढ़े-लिखे परिवारों का जीवन स्तर उच्च पाया जाता है तथा वे मनोरंजन के लिए समय निकालते हैं। व्यवहार में देखा गया है कि पढ़े लिखे शिक्षित परिवारों में महिलाओं ने कम सन्तान को जन्म दिया हैं।

शिक्षा और विकास-अर्थशास्त्र का सम्बन्ध:-व्यवहार में कई बार व्यक्तियों को ऐसा कहते हुए सुना होगा कि शिक्षित व्यक्ति के चार आँखें होती है-ऐसी राजस्थान में कहावत है। प्रत्यक्षता हम देखते हैं कि किसी भी व्यक्ति के चार आँखें नहीं है। पर ऐसा कहने का आशय यह है कि शिक्षित व्यक्ति सोच समझ कर विवेकपूर्ण निर्णय लेता है। अब इस पर विचार किया जाए कि आज के इस विविधतापूर्ण-सार्वभौमिकरण तथा प्रतियोगितापूर्ण जीवन में शिक्षा की क्या भूमिका है? पिछली कुछ दशाब्दियों से विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विकास हुआ है। जीवन के हर क्षेत्र में इस विकास का प्रभाव देखा जा सकता है पर साथ ही यह भी सूर्य के प्रकाश के समान स्पष्ट है कि विज्ञान के विकास के साथ सामान्य जनता में आर्थिक असमानता बढ़ी है, गरीबों की संख्यों में कई गुना वृद्धि हुई है। ऐसा लगता है कि ये लक्षण आज के विविधतापूर्ण जीवन के सामान्य लक्षण बन गए है।

ऊपर के विवेचन के प्रकाश में सहज ही यह प्रश्न उठता है कि शिक्षा का सर्वाधिक अच्छा तरीका कौनसा है? जिससे कि वैज्ञानिक शोधों तथा आर्थिक प्रगति का लाभ अधिकाधिक जनता तक, जिसमें समाज के सर्वाधिक गरीब भी सम्मिलित है, पहुँचाए।

विकसित देशों से सीख लेने के लिए बहुत कुछ है। अधिकांश विकसित देशों में सामान्य जनता का जीवन स्तर, दैनन्दिन रहन-सहन बहुत उच्च स्तर का है। इन देशों के नागरिकों का दैनिक जीवन स्तर बहुत उच्च श्रेणी का है, वहाँ उनकी सामाजिक सुरक्षा है, वे प्रसन्नचित रहते है, तथा वहाँ की प्रतिव्यक्ति आय सामान्य की अपेक्षा कहीं अधिक उच्च स्तर की है। वहाँ ये सब सुविधाएँ राजकीय प्रयत्नों के फलस्वरूप प्राप्त हुई है। यही कारण है वहाँ पर गरीबी पर नियंत्रण लगा है, अशिक्षित लोगों के प्रतिशत में कमी आई है, सामाजिक, आर्थिक पिछड़ापन

घटा है, इन्हीं सबके साथ आबादी पर भी काफी अंशों में नियंत्रण लगा है। पूर्व में विकासोन्मुखी रहे इन राष्ट्रों में वहाँ की शिक्षा व्यवस्था (दोनों विद्यालयी तथा महाविद्यालयी स्तरों पर) ने पिछड़ेपन के कारणों को दूर करने में बहुत मदद की है। प्रकारान्तर से यह कहा जा सकता है कि इन शिक्षा संस्थाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में योग्य, उपयुक्त तथा दक्षता प्राप्त कार्मिक उपलब्ध कराने में भरपूर मदद की है।

पश्चिमी देशों में यह सब वहाँ की सुगठित शिक्षा व्यवस्था से ही सम्भव हुआ है। पूर्व में दल दल में फंसी शिक्षा व्यवस्था को प्रयत्न कर स्वनिर्भरता के धरातल पर लाई गई। नये रोजगार के बहुउद्देशीय क्षेत्र खोजे गये जिससे बेकारी का अन्त हुआ, समर्थ कामगारों को रोजगार मिला, उनकी नीतियाँ सुविचारित आधारों पर तैयार की गई जिसके लिए अकादमिक अधिकारियों तथा औद्योगिक एवं व्यापारिक संस्थानों के प्रबंधकों की सहायता ली गई, मार्गदर्शन लिया गया, स्वरोजगार में रुचिशील व्यक्तियों को इन शैक्षिक संस्थानों के प्रबुद्ध लोगों ने प्रशिक्षण दिया। इसका फल यह हुआ कि इन प्रशिक्षित कार्मिकों को बिना कठिनाई रोजगार मिल सका, कुछ उच्च प्रशिक्षित कार्मिकों को उच्च वेतनमान भी मिला तथा प्रशासक या अधिकारी भी बन गये। यहाँ यह भी स्मरणीय है कि विज्ञान, तकनीक, व्यापार, अंकेक्षण, प्रबंधन आदि के नाम पर कला, मानविकी, वाणिज्य, शिक्षा, ललित कला, गृह विज्ञान की शिक्षा को भी नहीं भुलाया गया। इस प्रकार की शिक्षा से किसी भी शिक्षित व्यक्ति को जीवन में तालमेल बिठाने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इन सब गतिविधियों से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है एवं साथ ही साथ जीवन से जुड़े कला एवं साहित्य का भी विकास हुआ–उन पर भी अपेक्षानुकूल ध्यान दिया गया। जीवन से जुड़ी सभी कलाओं पर उचित ध्यान देने से आदमी दक्ष एवं कुशल बना है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि एक सामान्य दीन–हीन आदमी भी समाज पर भार नहीं बनता है। इन सब प्रयत्नों के पीछे उद्देश्य यह रहा है कि छोटे से छोटा सामान्य नागरिक भी समाज की भलाई या श्रेष्ठता के लिये योगदान कर सके।

स्पष्टतः किसी भी शिक्षा–व्यवस्था या प्रणाली के पीछे कुछ सोचे समझे या सुविचारित सिद्धांत या दर्शन कार्य कर रहे होते है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी किन्स के नाम से सुपरिचत होंगे। उनके विचारों से आर्थिक जगत् में हलचल मच गई। लगभग 50–60 वर्ष पूर्व तक किन्सीयन (या किन्स के) अर्थशास्त्र के सिद्धांत बड़े महत्त्वपूर्ण माने जाते थे। आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करने के लिये किन्स के अनुसार सेवाओं तथा वस्तुओं के वितरण पर ही फलीभूत हो सकता है। इसलिए जनकल्याण की दृष्टि से राज्य का एक प्रमुख कार्य यह माना गया है कि वह जनता पर कर लगाए तथा कानून बनाए तथा करों से प्राप्त आय को सार्वजनिक हित के कार्यों पर खर्च करे। इस प्रकार जनकल्याण को राज्य का एक प्रमुख कार्य माना गया। पर इतिहास बताता है कि ये सब प्रयत्न अपेक्षानुरूप सफल नहीं हुए। पिछली सदी के अन्तिम दो दशकों से इन विचारों पर महत्त्व कम हुआ है तथा नागरिकों एवं अध्ययेताओं ने सोचा कि बाजार को अपने ढंग से चलने दीजिए। इसके पीछे विचार यह था कि मुक्त बाजार की व्यवस्था में कुशलता तथा विकास को अग्रसर किया जा सकता है तथा मुद्रा या धन की तरलता बढ़ सकती है। यह विश्वास किया जाता है कि इससे गरीब जनता सकारात्मक ढंग से सीधी प्रभावित होती है अर्थात् ढेरों गरीब गरीबी से ऊपर उठकर मध्यम तथा मध्यम से सम उच्च श्रेणी में आ जाते है।

आइए, अब किन्स के सिद्धांतों पर भारतीय संदर्भ में विचार किया जाए। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक सुधारों के लिए निरन्तर योजनाएं बनी, योजनाबद्ध विकास के लिए पूरा–पूरा प्रयत्न किया गया, सभी विभागों तथा वहाँ कार्यरत सभी कर्मचारियों का पूरा ध्यान विकास पर ही केन्द्रित हो गया। स्वतंत्रता से पूर्व के राजाओं के प्रिवीपर्स समाप्त, ऋण माफी, किसानों के ब्याज मुक्त ऋण, रासायनिक खाद पर आर्थिक मदद, इतना सब करने के बाद भी गरीब और गरीब होते गए, कई सामान्य परिवार गरीबी के चंगुल में फंस गए। आज स्थिति यह है कि गाँवों से लोग शहरों की ओर दौड़े चले आ रहे हैं–भले वहाँ रहने के लिए स्वास्थ्यप्रद मकान न मिले, भरपेट भोजन न मिले, इतना ही नहीं कई ग्रामीण अपनी जमीन या जेवर बेच कर पश्चिमी देशों में रोटी–रोजी की तलाश में जा रहे है। मुद्रा की तरलता गतिशील हो– न केवल इतना ही वरन् भारतीय बौद्धिक सम्पदा में विदेशों में पैर जमा लिए है, पहचान पाई है। पढ़े–लिखे, तकनीकी विशेषज्ञों ने विदेशों में नाम कमाया है। अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति ने तो खुले आम यह घोषणा की कि पढ़ो–लिखो, परिश्रम करो नहीं तो भारतीय नौजवान नौकरियां हथिया लेंगे। पढ़े–लिखे भारतीय नवयुवकों को जिनमें उच्च शिक्षित अभियन्ता, प्रबंधक, प्रशासक, वैज्ञानिक, तकनीशियन तथा चिंतक सम्मिलित है, विदेशों में सम्मान पाया है। यहाँ ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह सब उच्च शिक्षा के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ है। भारतीय संदर्भ में आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा के प्राथमिक स्तर को आँखों से ओजल नहीं करना था–प्राथमिक शिक्षा की स्थिति में ढेरों सुधार की सम्भावनाएं तलाशी जानी थी पर ऐसा नहीं किया गया, इससे जो स्थिति विकसित हुई वह हम सबके सामने है।

ऐसा मानने के पर्याप्त आधार है कि भारत के नागरिक भी यूरोप के अन्य देशों के निवासियों से किसी क्षेत्र में कमतर नहीं है–पीछे नहीं है यद्यपि वे भिन्न–भिन्न वर्गों या सम्प्रदायों में बंटे हुए है। भारत ने विश्व में सभ्यता के विकास में अभूतपूर्व योगदान किया है–यही कारण रहा कि यूरोपीय देश भारत के साथ संघर्ष करते रहे–यही संघर्षपूर्ण सम्पर्क मानवता के विकास के इतिहास में एक मोड़ का पत्थर सिद्ध हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में भारत का दृष्टिकोण यह रहा है कि शिक्षा को सिर्फ भौतिक आवश्यकताओं तथा सुखों या सुख के साधनों पर ही ध्यान नहीं देना है–ऐसी शिक्षा समस्याएं ही अधिक लाती है तथा शान्ति एवं प्रसन्नता को भुला देती है। ऐसी भौतिकता पर आधारित शिक्षा आरम्भ में अधिक आराम, अधिक खाद्य वस्तुएं, अधिक शान शौकत तथा अधिक ऐश्वर्य ला सकती है पर आगे चलकर वह मनुष्य को मानवता से गिराती है, पदच्युत कराती है, उसे पथभ्रष्ट बनाती है। यही कारण है कि सम्पन्नता के साथ–साथ आदमी को ईर्ष्या, द्वेषभाव, कण्ठच्छेदी प्रतियोगिता, नफरत आदि बुराइयां जकड़ लेती है और समय बीतने के साथ–साथ आदमी को दयाहीन, निष्ठुर, कपटी, बेईमान तथा निर्दयी बना देती है तथा आज यही स्थिति पाठकों के सामने है।

एक सुशिक्षित, सामान्य समझ बूझ वाला व्यक्ति यह प्रश्न कर सकता है कि क्या आर्थिक समता या प्रगति ही एक सुसभ्य समाज की द्योतक है? मात्र रुपया, पैसा तथा अच्छा शासन तंत्र ही क्या अच्छे मानव समाज का सूचक है? हमारे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक धरातल का क्या स्थान है? यदि समाज भौतिक सम्पन्नता या मूल्यों पर तथा शारीरिक आवश्यकताओं पर ही ध्यान देता रहा तो सावधान रहना चाहिए कि आपकी आवश्यकताएं अंकगणितीय अनुमान दृष्टि से बढ़ती है जबकि आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के साधन रेखागणितीय अनुपात में बढ़ते है। स्पष्ट है कि दोनों में तालमेल बिठाना कठिन है।

प्राचीनकाल में आदमी जंगल में रहते थे, पहनने के लिये बहुत कम कपड़े होते थे, उनकी आवश्यकताएं भी कम थी, एक दूसरे का माँस खा जाने की भी बातें सुनी जाती थी, वे कच्चा माँस खाते थे। पर आज तो स्थिति उससे भी अधिक भयावह है। आदमी आदमी को धोखा दे रहा है, वह दूसरे का माँस तो नहीं खा रहा है पर उससे झूठ बोल रहा है, फरेब कर रहा है, छल प्रपंच कर रहा है- पूरा राष्ट्र ही धोखाधड़ी की चपेट में है-क्या यह प्रगति का मापदण्ड है? इसलिए कहा जा सकता है कि स्वयं नैतिकता ही अन्तिम उद्देश्य नहीं है पर सही स्थिति यह है कि आन्तरिक उद्देश्य प्राप्ति का मार्ग नैतिकता है। यदि उद्देश्य का ही ज्ञान नहीं है तो हम नैतिक क्यों बने? किस लिये बने? दूसरों के लिए भलाई का काम या भलाई क्यों करे? या क्यों उसे कष्ट न दे? पर नीतिपूर्ण कार्य या धर्मांचरण/ आध्यात्मिकता तथा धर्म के अनुसार गतिविधियों पर खरे उतरना चाहिए, इस प्रकार मानव के सम्पूर्ण कार्यकलाप इसमें समाहित होते है। इस प्रकार आदमी के वैयक्तिक प्रयत्नों तथा कार्यों पर ध्यान दिया जाता है। पर आदमी को समाज से पृथक (भी) तो नहीं किया जा सकता। यह सही है कि कई व्यक्ति मिल कर ही तो समाज बनता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की वैयक्तिक अस्तित्व समाप्त हो जाता है। फिर चाहे वह अल्पकाल के लिए ही क्यों न हो।

तत्वतः यह कहा जा सकता है कि जब तक शिक्षा में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तब तक आर्थिक प्रगति के प्रयत्न निरर्थक ही रहेंगे। इन्हीं दोनों पक्षों से आदमी में अच्छाई-भलाई एवं कल्याणकारी प्रकृति का या विचारों का विकास हो सकता है, इन गुणों के विकास के बिना आदर्श समाज की रचना नहीं की जा सकती। इस प्रकार की समाज रचना के लिये निरन्तर लम्बे समय तक भारतीय ऋषियों-महात्माओं के आदर्शों का सहारा लेना ही होगा, उनके उपदेशों को उनकी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाना ही होगा और यह कार्य पलक झपकते ही हो जाए-ऐसा सम्भव नहीं है। मानव में छिपी अच्छाई या देवत्व तथा भलाई के बीजों को अंकुरण तक पहुँचाना ही एक मात्र मार्ग होगा, साथ ही इस दिशा में कठिन परिश्रम निरन्तर आवश्यक होगा।

मानव में छिपी अच्छाई ही उसके व्यवहार के वक्त धर्म के रूप में प्रकटीकरण है, मानव में अनन्त शक्ति छिपी हुई है, समाप्त न होने वाली शक्ति का अक्षुण्ण भण्डार मानव मन में छिपा हुआ है और उसे धर्म ही बाहर ला सकता है।

मानव को देवत्व तक उठाने के लिए धर्म के माध्यम से होकर ही रास्ता बनता है- इस प्रक्रिया में मनुष्य की पाशविक वृत्तियाँ समाप्त हो जाती है। धर्म ही मनुष्य को जंगली, पशुवत व्यवहार से ऊपर उठा कर मानव बनाता है तथा मानव से देवत्व तक पहुँचाता है। मात्र धर्म को बाहरी या बाह्य आचरण में लाना, बिना आध्यात्मिकता का सहारा लिए, उस पर या उसके अनुसार आचरण करना आदमी का यंत्रवत व्यवहार ही मानना चाहिए। सही शिक्षा का, संस्कृति का, दर्शन का कार्य ही यह है कि वह मनुष्य को पशुवत व्यवहार से, पाशविकता से ऊपर उठाए।

मानव जीवन की पहेली को हल करने के लिए धर्मशास्त्रों का सहारा-मार्गदर्शन लिया जाना चाहिए। धर्मशास्त्र ही विश्व की एकता का संदेश देते है। ऐसा केवल तभी हो सकता है जबकि जीवन में आध्यात्मिकता का विकास हो। विश्व बंधुत्व या विश्व नागरिकता का सही भाव उच्च मानवीय चेतना के विकास पर निर्भर है। मानव कल्याण की दृष्टि से इस एक्य भाव को समझने के लिए भौतिक विज्ञानों, संस्कृति, राजनीति, समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र आदि के ज्ञान से जुड़े अन्य सभी शास्त्रों का ज्ञान वांछनीय है। इस प्रकार एक निश्चित अर्थ में आपकी आध्यात्मिकता ही नए समाज का निर्माण कर सकेगी।

आध्यात्मिकता तो मनुष्य में जन्म से ही है। किसी को इसे बाहरी जगत में नहीं खोजना चाहिए। यही व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है-इस क्षेत्र में हम अपने मस्तिष्क को जितना अधिक प्रशिक्षित करेंगे उतना ही अधिक श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण कर सकेंगे, अपनी सभी शक्तियों का उच्च उद्देश्य के लिए प्रयोग करेंगे। ऐसा समाज जिसके सभी सदस्य उच्च आध्यात्मिक भावना से परिपूर्ण हो, जितना चरित्र अनुकरणीय हो, जिनके कार्य आध्यात्मिकता की कसौटी पर खरे उतरते हो-ऐसा समाज ही सदा प्रसन्न, संतुष्ट, लोक कल्याण के कार्यों में रुचि सम्पन्न तथा सद्मार्ग पर चलने वाला होगा।

मानव मन की इस प्रकार की आंतरिक संरचना को मनुष्य अपने दैनिक जीवनक्रम में अपनाए। मानवीय मूल्यों, मानव विज्ञान का गहन प्रशिक्षण ही उच्च नैतिक समाज का विकास कर सकता है। इस प्रकार की समाज रचना के लिए आज की युवा पीढ़ी को योग, प्रार्थना, ईश वंदना, सराहनीय मानवीय व्यवहार तथा समाज द्वारा स्वीकार्य मानवीय सम्बन्धों का गहन ज्ञान एवं प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

अन्त में यह स्मरण रखना उचित होगा कि ईर्ष्या, तनाव, विरोधी विचारधारा एवं मानवता को हानि पहुँचाने वाली स्थितियों से बचा कर ही समाज में तथा वैयक्तिक रूप से समाज के सदस्यों को प्रसन्नता तथा कल्याण के राह पर आगे बढ़ा सकते है, तभी ऐसे सम्पन्न समाज में प्रसन्नता एवं खुशहाल स्थितियों के विकास को प्रोत्साहन मिल सकता है। धर्मग्रंथों का यही संदेश है। मानसिक परिवर्तन तथा मानवता के बेहतर हित में इसके सिवाय कोई अन्य सरल रास्ता नही है, शॉर्टकट नहीं है और न ही इसमें कहीं दो राय है।

पूर्व प्राचार्य
बी-196, डॉ. राधाकृष्णन् नगर,
भीलवाड़ा (राज.)-311001

देश हमें देता है
सब कुछ
हम भी तो कुछ
देना सीखें।

'भारत की खोज' करे कौन?

❒ जयसिंह राठौड़

'आखिर यह भारत है क्या? अतीत में किस विशेषता का प्रतिनिधित्व करता था? उसने अपनी प्राचीन शक्ति को कैसे खो दिया? क्या उसने इस शक्ति को पूरी तरह खो दिया है?' ये सभी प्रश्न हमसे पूछ रहे हैं भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु। 'भारत की खोज' हिन्दी की पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर ने भले इसे कक्षा 8वीं वर्षों पूर्व इस आशय से लागू की गई थी कि पाठ्यक्रम में शैक्षिक नवाचार के साथ-साथ विद्यार्थी को सोच-विचार, विस्मय, छोटे समूह में बातचीत करने, स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करने एवं कल्पनाशील गतिविधियाँ सुझाने के एवं राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थी की पहचान बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करेगी, जिससे विद्यार्थी की अन्तर्निहित प्रतिभा का विकास होगा पर क्या यह भारत की खोज करने की पोथी साबित हुई?

आजादी पूर्व वर्ष 1944 में नेहरु जी ने 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' नाम से अहमदनगर के किले में अपनी नौवीं जेल यात्रा के समय इस पुस्तक को अंग्रेजी में लिखा था। उसी का हिन्दी अनुवाद है यह 'भारत की खोज'।

इसी क्रम में वे और प्रश्न करते हैं- 'भारत माता की जय' आपके विचार से इस नाम में किस जय की बात कही जाती है? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

पं. नेहरु अपने 'मन की बात' करते हुए इस के आरम्भ में ही एक दबाव की बात करते है जिसे उन्होंने 'अतीत के भार' नामक शीर्षक दिया है। अहमदनगर किले का महत्त्व नेहरु जी की जेल यात्रा और 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' से ही नहीं है, अपितु वह तो उस सुंदर महिला चाँद बीबी से है जिसके साहस की चर्चा स्वयं नेहरु जी ने यहाँ की है। नेहरु जी एक लेखक के रूप में उस समय कुदाली और लेखनी के द्वन्द्व में फंसे आखिरकार अतीत की खुदाई छोड़ भविष्य की 'पैगम्बर की भूमिका' से असहाय अपने वर्तमान के विचारों और क्रियाकलापों के साथ सम्बन्ध बना, आगे लिखना आरम्भ करते हैं।

'तलाश' नामक शीर्षक से भारत के अतीत की झाँकी में नेहरु जी पुनः भारत की उन जड़ों में जाना चाहते हैं और अपने आप से पूछते हैं-'आखिर यह भारत है क्या? अध्यायों के चरणबद्ध विकास के चलते और 'नयी समस्याएं' में नेहरु जी अरब और मंगोल के बढ़ते इस्लामी राजनीतिक विस्तार के बारे में लिखते हैं- मध्य युग के आरम्भ से पूर्व ही अरब सभ्यता के पतन के बाद भारत उसमें इस्लाम राजनीतिक शक्ति के प्रवेश के बाद भी ज्ञान, चिकित्सा और व्यापार में निरन्तर सम्पर्क में था।

यही कारण था कि अरब देश का सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बन्ध भारत के उत्तर से दक्षिण तक बना रहा। यह वह समय था जब भारत में एक नए धर्म इस्लाम का पर्दापण हो उसकी भूमि पर अपनी पौध का शांति से रोपण हो रहा था। भारत में इस्लाम राजनैतिक ताकत के रूप में आने से पहले ही वह धार्मिक रूप में भारत आ चुका था।

भारत में इस्लामी फैलाव के तीन सौ वर्षों तक कोई आक्रमण नहीं हुआ था लेकिन 1000 ई. के आते-आते सुल्तान महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। अफगानिस्तान जो कि 'युगों का दौर' में भारतीय और यूनानी संस्कृतियों के मेल से अपने गांधार की भूमि पर यूनानी-बौद्धकला को जन्म देने वाला और पाणिनि जैसे व्याकरणाचार्य के जन्म देने वाला था, अब भारत का अभिन्न अंग की तरह नहीं रह गया था। नादिरशाह के भारत पर दूसरे हमले के कारण अफगानिस्तान भारत से पूर्णतः अलग हो गया। इसी दौर में तुर्कों के आक्रमणों से हिन्दू धूलिकणों की तरह चारों तरफ बिखर गए और उनकी याद भर लोगों में मुँह में पुराने किस्से की तरह बाकी रह गई। नेहरु जी आगे लिखते हैं-जो तितर-बितर होकर बचे उनके मन में मुसलमानों के प्रति गहरी नफरत पैदा हो गई।

आगे इन्हीं अफगानों का भारत में मुगलों के साथ आना-जाना लगा रहा और मुगलों की तरह ये भी भारत में समा गए और उनके परिवारों का पूरी तरह भारतीयकरण हो गया। भारत को वे अपने घर और बाकी सारी दुनिया को विदेश मानने लगे। समन्वय और मिली-जुली संस्कृति का विकास नामक शीर्षक में नेहरु जी द्वारा अमीर खुसरों का वर्णन करते हुए लिखा है कि भारत के लोकप्रिय तंत्री वाद्य सितार का आविष्कार उन्होंने ही किया था, जो कि सही नहीं है। इस संदर्भ में आचार्य बृहस्पति की पुस्तक मुसलमान और भारतीय संगीत को उल्लेखित कर खुसरो खाँ एवं अमीर खुसरो नामक दो भिन्न व्यक्तियों के नाम से जो भ्रम पैदा हुआ उसे दूर करना उचित होगा। इस पुस्तक में लेखक बृहस्पति जी ने स्पष्ट किया है कि भारत में तंत्री वाद्य वीणा जो कि प्राचीनकाल से विविध रूप एवं आकार में प्रचलित थी को ही थोड़ा परिवर्तन कर इस वाद्य में पर्दे लगा वादन हेतु सरलीकरण कर खुसरो खाँ नामक संगीतज्ञ ने सितार को इजाद किया था। खुसरो खाँ मोहम्मद शाह रंगीले के दरबार में था और अमीर खुसरो के लगभग तीन सौ बरस बाद हुआ।

नेहरु जी के अनुसार इस दौर में भाषाओं का समन्वय हुआ और अरबी-फारसी भाषाओं के साथ-साथ जन-भाषाओं का भी विकास हुआ। 'हिन्दू राष्ट्रवाद के उभार में वारेन हेस्टिंग के 1784 ई. के कथन को नेहरु जी ने विषय को गति देने के लिए प्रस्तुत किया है, जिसमें राष्ट्र के प्रति हर व्यक्ति में यह तत्त्व होना अनिवार्य है। हेस्टिंग ने लिखा था-'हिन्दोस्तान और दक्खिन के तमाम लोगों में से केवल मराठों के मन में राष्ट्र प्रेम की भावना है, जिसकी गहरी छाप राष्ट्र के हर व्यक्ति के मन पर है।'

ब्रितानी युग की आर्थिक पृष्ठ भूमि पर

नेहरु जी लिखते हैं- 'भारत में इंग्लैण्ड का आगमन तब हुआ जब 1600 ई. में रानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को परवाना दिया। उस समय शेक्सपियर जीवित था और लिख रहा था।'

ईस्ट इण्डिया कम्पनी जो कि सर्वशक्तिमान थी और व्यापारियों की कम्पनी होने के कारण वह धन कमाने तुली हुई थी।

भारत में वर्षों पूर्व अपने राष्ट्र में जिस अर्थतंत्र को खड़ा किया था विदेशी हुकूमत ने पहले उसी को खत्म किया। यूरोप में मशीनी युग के कारण भारत का सूत, लोहा व अन्य कच्चा माल भारत से जाकर पुनः भारत व अन्य राष्ट्रों को कम्पनी द्वारा बेचा जाकर बदले में कर वसूल करने का जाल बिछाना आरम्भ कर दिया था। यही कारण है कि भारत अन्तिम दौर में राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से पहली बार एक अन्य देश का पुछल्ला बनता चला गया।

'अंतिम दौर' नामक छठे अध्याय में नेहरु जी ने शिक्षा सम्बन्धी उन पहलुओं को लिया है जिनको पढ़ने से हमें इस लेख की सार्थकता और वर्तमान में राष्ट्र में उठे उन निरर्थक विवादों को समझने में हो सकती है। साहित्य और राजनीतिक परम्परा से भारत को परिचित कराने का श्रेय उन योग्य और उत्साही अंग्रेजों को ही है, जिन्होंने अपने चारों ओर उत्साही भारतीय, विद्यार्थियों को इकट्ठा कर लिया था। यह सर्व विदित है कि अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा का प्रसार भले ही क्लर्कों को प्रशिक्षित करके तैयार करने के लिए किया था, परन्तु शिक्षा का प्रसार तो होने लगा था।

नेहरु जी इस पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं 'यह शिक्षा सीमित भी थी और गलत ढंग की भी, फिर भी उसने नए और सक्रिय विचारों की दिशा में दिमाग की खिड़कियाँ और दरवाजे खोल दिये। धीरे-धीरे परिवर्तन होने लगा और आधुनिक चेतना का प्रसार हुआ।'

पत्रकारिता के लिए नेहरु जी राममोहन राय के बारे में लिखते हैं कि वे भारतीय पत्रकारिता के प्रवर्तकों में से थे और सन् 1780 के बाद भारत में अंग्रेजों ने कई अखबार निकाले। पहला भारतीयों का स्वामित्व एवं सम्पादन वाला अखबार सन् 1818 में अंग्रेजी में निकाला था। नेहरु जी ने इसमें यह नहीं लिखा कि यह अखबार कहाँ से प्रकाशित हुआ था। यह जरूर लिखा है कि भारतीय भाषा में निकलने वाला एक मासिक और एक साप्ताहिक पहला पत्र कलकत्ता से श्रीरामपुर के बैपटिस्ट पादरियों ने ही बंगाली में प्रकाशित करवाया था। इसके बाद एक के बाद एक अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं में मद्रास, बम्बई से अखबार और पत्रिकाएं बड़ी तेजी से निकलने लगीं।

हम पाठकों के लिए यहाँ यह गौरतलब है कि नेहरु जी ने सर सैय्यद अहमद खाँ के बारे में तो स्पष्ट रूप से लिखा है कि 'गदर के बाद भारत के मुसलमान इस असमंजस में थे कि किस ओर मुड़े।' सन् 1870 के बाद मुसलमानों के ब्रितानी हुकूमत की नीति धीरे-धीरे उनके अनुकूल हो गई थी सर सैय्यद अहमद खाँ सुधारवादी विचारों के साथ वैज्ञानिकों के साथ इस्लाम का मेल बैठाना और नए ढंग की शिक्षा को बढ़ावा देना चाहते थे।

सर सैय्यद अहमद खाँ का जिस अलीगढ़ कॉलेज की स्थापना कर, मुसलमानों को ब्रिटिश ताज की योग्य और उपयोगी प्रजा बनाने का था, घोषित उद्देश्य को भारत के ही अब्दुल कलाम आजाद ने 'अल-हिला' का आरम्भ कर सर सैय्यद अहमद को हिला दिया था। अलीगढ़ कॉलेज की परम्परा और मुस्लिम लीग की विचारधारा पर खड़े सर सैय्यद अहमद को युवा मुसलमान 'मौलाना आजाद' द्वारा पुरातन पंथी और राष्ट्र विरोधी भावना के गढ़ पर हमला किया।

एक युवा लेखक और पत्रकार ने मुस्लिम बुद्धिजीवी समुदाय में सनसनी पैदा कर अलीगढ़ कॉलेज परम्परा की जड़ों को हिला दिया।

भारतीय राजनैतिक मानचित्र पर गाँधी जी के आगमन को राष्ट्रीयता बनाम 'साम्राज्यवाद का दौर' कहकर नेहरु जी अध्याय सात में गाँधी जी के 'सपनों का भारत' का चित्रण कर उनके नेतृत्व में कांग्रेस की सक्रियता का भी वर्णन करते है। यह सक्रियता का आह्वान दोहरा था एक तो विदेशी शासन को चुनौती देना और दूसरा उससे मुकाबला करते हुए अपनी खुद की सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध भी लड़ना था। एक तरफ जहाँ काँग्रेस के मुख्य आधार थे 'राष्ट्रीय एकता, जिसमें अल्पसंख्यकों की समस्याओं को हल करना और दलित जातियों को ऊपर उठाने के साथ छुआछूत के अभिशाप को खत्म करना, शामिल था, तो दूसरी तरफ वायसराय के दरबार और रजवाड़ों की शान-शौकत,बेहद उपहासास्पद, अभद्र और शर्मनाक लगने लगी थी। इसका कारण था आम जनता की गरीबी और उसके कष्टों से घिरा होना। नेहरु जी ने गाँधी जी की उन पंक्तियों को भी प्रमुखता से लिया,जो कि भारत के आम जन की उस पीड़ा का दर्द उनके हृदय में था। जिसे इन शब्दों में उन्होंने बयान किया'' एक अध भूखे राष्ट्र का न कोई धर्म हो सकता है, न कला, न संगठन। करोड़ों भूखे मरते लोगों के लिए जो कुछ भी उपयोगी हो सकता है वही मेरे लिए सुन्दर है। मेरी आकांक्षा है हर आँख से हर आँसू को पोंछ लेना।

इसी अध्याय में अल्पसंख्यकों की समस्या मुस्लिम लीग और मोहम्मद अली जिन्ना का वर्णन है। नेहरु जी लिखते हैं कि जिसे साम्प्रदायिक समस्या कहा जाता था, वह अल्पसंख्यकों के अधिकारों के साथ इस तरह तालमेल बैठाना था ताकि उन्हें बहुसंख्यकों के खिलाफ पर्याप्त संरक्षण मिल सके। भारत के अल्पसंख्यक यूरोप की तरह जातीय या राष्ट्रीय अल्पसंख्यक नहीं, वे धार्मिक अल्पसंख्यक हैं। नेहरु जी आगे लिखते हैं- जातीय दृष्टि से भारत में एक विचित्र मिश्रण है, पर जातीय सवाल भारत में न कभी उठे हैं न उठ सकते हैं। धर्म इन जातीय विभिन्नताओं से ऊपर है।''

इसी अध्याय में आगे 'दो राष्ट्रों' की बात भी आती है और नेहरु जी कहते हैं-दो ही क्यों? मैं नहीं जानता, क्योंकि अगर राष्ट्रीयता का आधार धर्म है, तब तो भारत में बहुत से राष्ट्र हैं। यहाँ तक कहा जा सकता है कि अतीत में भारत का विकास एक बहुराष्ट्रीय राज्य के रूप में हुआ और उसमें राष्ट्रीय चेतना धीरे-धीरे आई। इसके अन्तिम पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है कि मिस्टर जिन्ना के दो राष्ट्रों के सिद्धांत से पाकिस्तान का भारत से विभाजन की अवधारणा का विकास तो हुआ लेकिन समस्या का समाधान नहीं, क्योंकि वे तो पूरे देश में थे।

इस पुस्तक का आठवां अध्याय 'तनाव' युक्त लेकिन छोटा है और नौवें में 'दो पृष्ठ भूमियाँ' है, भारतीय और अंग्रेजी, जिसका समापन व्यापक उथल-पुथल और उसका दमन पर चर्चा कर बीमारी-अकाल पर ला खड़ा करता है। अन्त में भारत की 'सजीव-सामर्थ्य' नामक शीर्षक में जो पंक्तियाँ यहाँ प्रयोग की गई हैं वे 'प्रकृति' को समर्पित कर मशाल को आगे ले चलने और आने वाले कल को सौंपने के साथ ही उपसंहार किया जाता है।

'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' प्रकाशित हुई वर्ष 1946 में और इसी वर्ष नेहरु जी को भारत की अन्तरिम सरकार का प्रधानमंत्री चुना गया।

साल भर बाद ही ब्रितानी सत्ता ने 14 अगस्त 1947 को मध्यरात्रि बहुत ही दुखद और रक्तरंजित विभाजन के बाद भारत के राजनेताओं को इस देश की बागडोर सौंप दी।

हिन्दी के प्रमुख अखबारों में से 'हिन्दुस्तान' ने प्रभात संस्करण नई दिल्ली, शुक्रवार को अपने मुख्य पृष्ठ पर छापा 'शताब्दियों की दास्ता के बाद भारत में स्वतंत्रता का मंगल प्रभात' बापू की चिर तपस्या सफल, भारतीय विधान परिषद् ने जिसमें हिन्दुस्तान के लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि शामिल है, सार्वभौम सत्ता अपने हाथों में ली। 75 मिनट तक परिषद् की बैठक होने के बाद, जिसमें उसने शासन की सत्ता अपने हाथ में ली और लार्ड माउन्टबेटन को गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति का समर्थन किया, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और पं. जवाहर लाल नेहरु लार्ड माउन्टबेटन को परिषद् के निर्णय की सूचना देने वायसराय भवन में गये।

उसके बाद श्रीमती हंसा मेहता का हिन्दुस्तान के नारी समाज की ओर से परिषद् को भेंट किया हुआ राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। भवन के बाहर खड़े हुए हजारों लोगों ने....।

The Hindustan Times नई दिल्ली, अगस्त14, 1947 "At the stroke of midnight hour when the world sleeps, India will awake to life and freedom. "Pandit Jawaharlal Nehru." इस अंग्रेजी भाषण की मुख्य हाइलाइट पंक्ति छपी थी। यहाँ गौर करने की बात है कि आधी रात को इस मुल्क को आजादी दे ब्रितानी हुकूमत ने हमारे राजनयिकों के साथ जो सत्ता सौंपने की कार्यवाही की क्या वह पूर्णतः एक सोची समझी चाल या किसी योजना का हिस्सा थी। भारत के राजनेताओं को ऐसी क्या जल्दी थी जो कि सूर्योदय की प्रतीक्षा-इंतजार भी नहीं कर सके, जबकि हमारे यहाँ 15 अगस्त तो सूर्योदय से ही हुआ था।

'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' नामक पुस्तक में भारत की खोज तो फिर भी नहीं हो पाई, परन्तु नेहरु जी इस में एक ऐसी पुस्तक की बात करते हैं जिसमें भारत स्वयं एक तलाश आरम्भ करता है। नेहरु जी ने इस पुस्तक के तीसरे अध्याय में 'वेद' नामक शीर्षक में उद्धृत किया है, ऋग्वेद शायद मानव जाति की पहली पुस्तक है, इसमें हमें मानव मन के सबसे आरंभिक उद्‌गार मिलते हैं, काव्य-प्रवाह, प्रकृति के सौंदर्य और रहस्य के प्रति हर्षोन्माद मिलता है। इसके अलावा हमें मनुष्य के साहसिक कारनामों का रिकार्ड मिलता है। नेहरु जी स्पष्ट लिखते हैं कि यहीं से भारत ने एक ऐसी तलाश आरम्भ की जो उसके बाद कभी समाप्त नहीं हुई। अब प्रश्न यह है कि क्या इस देश का नाम महाराजा दुष्यन्त के पुत्र भरत के नाम पर भारत पड़ा अथवा जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के आत्मज-भरत के नाम पर? इस संदर्भ में मैं यहाँ राजस्थान के ही विद्वानों के लेखों की चर्चा करना चाहूँगा, वैचारिकी, मार्च-अप्रैल 2015 'आर्यों का मूल निवास स्थान' लेख प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा का इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण है, जिसमें लिखा है कि प्राचीन चीन में भारत का नाम 'इन्तुको' भी मिलता है, चीनी भाषा के इस शब्द का अर्थ होता है 'यज्ञ का देश'। सम्राट चन्द्रगुप्त के शासनकाल में आये यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने भारत पर लिखी अपनी पुस्तक का नाम 'इंडिका' रखा था। भारत में हिन्दू शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सम्भवतः संस्कृत ग्रन्थ 'मेरुतंत्र' में आठवीं शताब्दी में किया गया। 'महाराज दुष्यन्त के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ गया।' शर्मा जी आगे स्पष्ट करते हैं कि-'इस प्रकार हिमवर्ष, कुमारिका, आर्यवर्त, ब्रह्मवर्त आदि नामों से सम्बोधित किये जाने वाले हमारे देश के नाम अब तीन हो गये- हिन्दुस्तान, भारत और इण्डिया।'

अपने 'राजगीर भ्रमणः इतिहास रस का रोमांच' नामक यात्रा वृत्तान्त में डॉ. बाबूलाल शर्मा वैचारिकी के सितम्बर-अक्टूबर 2015 अंक में इस संदर्भ में लिखते हैं- 'राजगीर भ्रमण के बहाने हम भारतीय इतिहास के जिस दौर में जायेंगे, उस समय भारत का इण्डिया नाम से कोई देश नहीं था, अपितु हमारे यहाँ 16 महाजनपद या राज्य थे जिनमें राजतंत्र था और राज्य की समस्त सत्ता अकेले राजा के हाथों में नहीं थी।' वहीं वैचारिकी नवम्बर-दिसम्बर 2016 के अंक में उदयपुर के डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने ही अपने 35 पृष्ठ के लेख में लिखा है कि-'समरांगण सूत्रधार, भोजराज द्वारा रचित ग्यारहवीं शताब्दी के ग्रंथ को सम्पादित किया। 'मालवा नरेश भोजराज ने मानवीय सृष्टि विकासक्रम का जो वर्णन इस ग्रंथ में किया है हमारे लिए यहाँ अति महत्व का है-कल्पद्रुमाक्तभोगानां न चैषां प्रभुरप्यभूत्। पुरास्मिन भारते वर्षे तेषां निवसतामिति।।5।। उक्त श्लोक में भारत नाम एक राष्ट्र के लिए प्रयोग हुआ है।

इस लेख में चार ऐसे ग्रंथों का विवरण मिलता है जिसमें भारत क्षेत्र और भरत क्षेत्र को एक साथ प्रयोग होते हुए हमें यह ज्ञात होता है कि भारत वर्ष एक विशाल भू-भाग और भरतजनों का क्षेत्र (राज्य) दो विभिन्न रूपों में थे।

डॉ. कृष्ण के अनुसार ये ग्रंथ विश्वकर्मा ने अपने चार मानसपुत्रों, जय, विजय, सिद्धार्थ और अपराजित के प्रति कहे थे। अपराजित पृच्छा नामक ग्रंथ में 238 सूत्र ही उपलब्ध हुए हैं, जिसमें वास्तु, शिल्प, संगीत एवं चित्रकला आदि का विस्तृत वर्णन है। इसी में भारत का प्रमाण एवं भरत क्षेत्र के बीच के किस देश का कौन सा धर्म है इस सम्बन्ध में भी प्रश्न किये गये हैं- 'उत्तमं भारतं क्षेत्र तत्प्रमाणं च ख्यातुमे। स्वेदाण्डोर्ध्वजरायुजो भूतग्रामःकथचंजन।। को धर्मः कुत्र क्षेत्रेषु रम्यकादौ वदेभ्दवान्। ये देशा भारते क्षेत्रे आश्रम ग्रामसगंयया।। को धर्मः कुत्र देशे तु भरतक्षेत्रमध्यतः।।''

उपर्युक्त विद्वानों के लेखों से तो भारत वर्ष एवं इस **भारत** राष्ट्र के नाम प्राचीनकाल से ही प्रयोग होता सिद्ध होता है इसके अलावा ऋग्वेद में भी 'भारत' को एक क्षेत्र के रूप में उद्धृत किया गया है। ऋग्वैदिक ऋचाओं में भारत एवं भरतजनों को विभिन्न रूपों में सम्बोधित किया है जिससे यह भी स्पष्ट है कि भारत भू-भाग मात्र भरतजनों के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था अपितु एक विशाल भू-भाग इसके क्षेत्र को परिलक्षित करता था। उक्त ऋचाओं को संदर्भ के रूप में यहाँ भाषित करना उचित ही होगा फिर इस राष्ट्र के भारत नाम से कुछ संशय हो तो विद्वजन आगे चर्चा कर मार्गदर्शन अवश्य करे-

य इमें रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रहेदं भारतंजनम्।।

(ऋक्-3.53.12)

त्वमीळे अध द्विता भरतोवाजिभिः।
शुनम्। ईजे यज्ञेषु यज्ञियम्।।

(ऋक् 6.16.4)

उक्त ऋग्वैदिक ऋचाओं में भारत को अग्नि देव के साथ संलग्न कर मनुष्यों के

हितकारी, श्रेष्ठतम् संसार का भरण-पोषण करने वाला, आहुतियों के अधिपति, रक्षक एवं सर्वज्ञ से भाषित किया गया है-

श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने द्युमन्तमा भर।
वसो पुरुस्पृहं रयिम्।।
(ऋक् 2.7.1)

त्वं नो असि भारताग्ने वशाभिरुक्षभिः।
अष्टादीभिराहुतः।।
(ऋक् 2.7.5)

आग्निरगामि भारतो वृत्रहापुरुचेतनः।
दिवादासस्य सम्पतिः।।
(ऋक् 6.18.19)

उदग्ने भारत द्युमदजस्त्रेण दविद्युतत्।
शोचा वि भाह्यजर।।
(ऋक् 6.16.45)

नेहरु जी की पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' के विवेचन और वैदिक ऋचाओं में हुई स्पष्टता के बाद भारत राष्ट्र का नाम **भारत** ही समीचीन है। भारत देश का नाम आंग्ल भाषा में BHARAT हो न कि INDIA, एक शिक्षक और जिज्ञासु विद्यार्थी बना रहते हुए मुझे 'भारत' नाम की खोज नए सिरे से करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

अध्यापक
'जय सदन' नोड़िया, एफ.सी.आई. रोड,
इन्द्रा कॉलोनी, बीकानेर (राज.)
मो. 7737686959

धीरता

छोटी उमर में ही स्वामी विवेकानंद विपरीत परिस्थितियों का सामना हिम्मत से कर लेते थे। हर समय सतर्क रहते। उनके घर के पास स्पोर्ट्स क्लब था जहां पर लड़के शारीरिक व्यायाम करते। एक बार कुछ लड़के झूला टांगने के बारे में सोच रहे थे। कई लोग दूर ही खड़े होकर इन लड़कों को देख रहे थे। उनमें से एक अंग्रेज नाविक भी था। उसने लड़कों की मदद करनी चाही। नाविक लंबा और हट्टा कट्टा था। लड़कों के साथ मिलकर स्तंभ उठा रहा था कि अचानक वह उसके हाथ से छूटकर गिर गया। नाविक के सिर पर चोट लगी। वह अपना होश खो बैठा और गिर पड़ा। लड़कों को लगा कि वह मर गया, इसलिये डर के मारे वहां से भाग गए। लेकिन नरेंद्र नहीं भागा। अपने धोती में से थोड़ा कपड़ा फाड़कर उस अंग्रेज की चोट पर बांध दिया।

-रामकिशोर, व्याख्याता
रा. सार्दुल उ.मा.वि., बीकानेर **मो. 9414604631**

सृजनशील बालक

❒ रामजीलाल घोड़ेला

सृजनशीलता को कल्पना, चिन्तन, उत्पादन आदि की दृष्टि से देखा जाता है। स्टेगनर ने सृजनात्मकता के विषय में कहा है किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन सृजन कहलाता है। स्किनर के अनुसार सृजनात्मक चिन्तन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष नवीन, मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हो। इन परिभाषाओं का विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होगा कि किसी नई वस्तु की खोज इन परिभाषाओं का केन्द्रीय तत्व है। अतः हम कह सकते हैं कि सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा किसी नये विचार या नई वस्तु का निर्माण होता है। इन शब्दों के अन्दर व्यक्ति की वह योग्यता भी सम्मिलित है जिसके द्वारा वह पूर्व प्राप्त ज्ञान का पुनर्गठन करता है।

पूर्व ज्ञान के पुनर्गठन के आधार पर सृजनात्मकता का उपयोग शिक्षा में किया जाता है। इसके लिए सृजनशील बालकों की पहचान आवश्यक है। ऐसे बालकों की पहचान के लिए हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. सृजनशील बालकों में मौलिकता एवं नवीनता का अद्‌भुत गुण होता है। **2.** उनकी बुद्धिलब्धि उच्च होती है। **3.** ऐसे बालक प्रत्येक बहु प्रचलित धारणा की नए सिरे से जाँच करने को उत्सुक रहते हैं। **4.** इनका व्यक्तित्व जटिल होता है। **5.** इनमें जिज्ञासा की मात्रा अधिक होती है। इसी कारण ये हर कार्य और प्रश्न का पूर्ण उत्तर चाहते है। **6.** इनमें सामान्य बात पर भी ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति होती है। सामान्य बालक इन सामान्य बातों की अवहेलना कर देते हैं, किन्तु सृजनशील बालक इन बातों पर भी पूरा ध्यान देते हैं। **7.** सृजनशील बालकों में साहस की अतिरिक्त मात्रा होती है। इस कारण वे जीवट के कार्यों में हाथ डाल लेते हैं। **8.** संवेदनशीलता के कारण ये प्रत्येक कार्य को गंभीरता से लेते हैं। **9.** ये कार्यों में व्यावहारिक, परिश्रमी एवं लगनशील होते हैं।

आज हम कक्षाओं में सभी विद्यार्थियों को एक ही दृष्टि से देखते हैं। इससे बालकों की सृजनात्मक शक्ति कालान्तर में समाप्त हो जाती है। बालकों की सृजनशीलता को उचित प्रशिक्षण, शिक्षा व अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने चाहिए। शिक्षक और अभिभावक चाहें तो सृजनात्मक योग्यता के लिए उचित अभिप्रेरणा, अनुकूल परिस्थितियाँ और बालकों की इच्छानुकूल अध्ययन का वातावरण बना सकते हैं।

1. बालक को समस्या की पहचान व समाधान के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। **2.** यह मेरी रचना है, मैंने इसे हल किया है, जैसी भावना से बच्चों को अत्यधिक संतुष्टि प्राप्त होती है। वे वस्तुतः इस भावना से सृजनात्मक कार्यों की ओर बढ़ते हैं। बालकों को खुद करने व सोचने के अवसर दिये जाने चाहिए। **3.** बालकों में विद्यमान मौलिकता को प्रोत्साहन देने से नहीं चूकना चाहिए। तथ्यों के अंधानुकरण, दूसरे के अनुभवों की नकल, रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहत करना चाहिए। **4.** बालकों में व्याप्त भय और झिझक की भावना को दूर करना चाहिए। **5.** बालक की जिज्ञासा को दबाना नहीं चाहिए। उनकी जिज्ञासा शान्त करने के लिए हमें विद्यालयों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं, सामाजिक उत्सवों, धार्मिक व सामाजिक मेलों, प्रदर्शनियों और प्रदर्शनों का लाभ उठाना चाहिए। नियमित कक्षा-कार्यों को भी इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है ताकि विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति बढ़ सके। **6.** विद्यार्थियों को कला केन्द्रों, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक केन्द्रों का भ्रमण करवाना चाहिए। कलाकारों, वैज्ञानिकों और अन्य सृजनशील व्यक्तियों से मिलवाना चाहिए।

इन उपायों से विद्यार्थियों में निश्चित रूप से सृजनशीलता बढ़ेगी, उनमें मौलिकता अंकुरित होगी।

प्रधानाचार्य
c/o राज क्लॉथ स्टोर
लूणकरणसर (बीकानेर)
मो. 9414273575

विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा

❒ सरोज राठौड़

शिक्षा के सार्वजनीकरण तथा उसमें विभिन्न वर्ग की शिक्षा समस्याओं को पहचानकर उनके समाधान हेतु विशिष्ट वर्ग के बालकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की आज महती आवश्यकता है।

विशिष्ट से तात्पर्य केवल शारीरिक, मानसिक रूप से दिव्यांग बालक ही नहीं बल्कि वे समस्त श्रेणी के बालक जिनके लिए अलग से कुछ खास व्यवस्था करने की आवश्यकता पड़ती है विशिष्ट कहलाते हैं, यथा- दिव्यांग, पिछड़े, प्रतिभाशाली, सृजनशील आदि।

शिक्षा का अर्थ:- जन्म के समय एक मांस के लोथड़े के समान संवेगहीन, पाश्विक प्रवृति के बालक जिसे केवल भूख, प्यास, निद्रा, शौच आदि का ज्ञान होता है। प्रेम और उत्तेजना के आधार पर अहसास करता है, उन अहसासों को मानवीय बनाने का कार्य शिक्षा करती है। पाश्विक प्रवृत्तियों का परिमार्जन कर मनुष्य बनाती है शिक्षा, अतः मानव जीवन की पूर्णता हेतु शिक्षा की महत्ता है। शिक्षा के माध्यम से ही मूल प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गान्तरीकरण होता है और संसार का श्रेष्ठ बुद्धिजीवी, पूर्ण व्यक्तित्व बनता है मनुष्य का विकास एक सतत प्रयास की प्रक्रिया का फल है उसका एक औपचारिक साधन है।

लॉक के अनुसार-''पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।

जॉन डी.वी. के अनुसार- ''जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्त्व है, ठीक उसी प्रकार से सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का महत्त्व है।

शिक्षा के उद्‌देश्य:- शिक्षा के उद्देश्य देशकाल परिस्थितियों एवं समय के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं, कहीं शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण है तो कहीं आदर्श नागरिक बनाना, तो कहीं सांस्कृतिक विकास, कहीं केवल जीविकोपार्जन ही प्रमुख उद्देश्य माना जाता है।

प्राचीनकाल में भारतीय समाज में शिक्षा का उद्देश्य 'मोक्ष की प्राप्ति' था, तत्पश्चात् राजनीतिक विचारधाराएँ विकसित हुईं जिसमें 'यथाराजा तथा प्रजा' का भाव आया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में उद्योगों की ओर भी ध्यान दिया गया और पश्चिम से 'तकनीक का आयात' कर देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य आरम्भ हुआ।

वंचित एवं विशिष्ट वर्ग के बालकों की शैक्षिक आवश्यकताएँ:- विशिष्ट शिक्षा का अर्थ है विशिष्ट रूप से निर्मित अनुदेशन जो विशिष्ट बालकों की आवश्यकताओं से संबंधित हो, विशिष्ट बालक उन बालकों को कहा जाता है जो अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, व्यवहार तथा व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं की दृष्टि में अपनी आयु के अन्य औसत तथा सामान्य बालकों से बहुत अधिक भिन्न होते हैं।

विशिष्ट बालकों में नकारात्मक संवेग- जैसे क्रोध, घृणा तथा ईर्ष्या आदि का प्रयोग कम होता देखा जाता है जबकि सकारात्मक संवेग, जैसे- स्नेह, आनन्द का भी अनुभव यथा समय आवश्यकतानुरूप होते हैं अपने साथियों से भली भांति समायोजित रहते हैं।

वंचित बालक:- वंचन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े आवश्यक एवं अपेक्षित अनुभव उद्दीपकों का अभाव है। जिसके फलस्वरूप बालक का अपेक्षित विकास नहीं हो पाता है, इसका सांसारिक ज्ञान कम होता है।

गहराई प्रत्यक्षीकरण (Depth perception) और प्रत्यक्षात्मक प्रभेदन (Perceptional Differentiation) निम्न स्तर का होता है।

कोठारी आयोग के अनुसार:- असाधारण बालकों की शिक्षा का गठन सिर्फ मनुष्यता पर आधारित न रहकर उपयोगिता पर आधारित करना होगा। यदि इन्हें समुचित शिक्षा दी जायेगी तो न केवल विकलांगता पर विजय प्राप्त करेंगे, अपितु समाज के उत्तरदायी नागरिक बनेंगे। यही सामाजिक न्याय की आवाज है भारतीय संविधान में अनिवार्य शिक्षा पर जो कुछ कहा गया है, उसमें विकलांगों की शिक्षा भी सम्मिलित है।

विशिष्ट या असाधारण बालक/बालिकाओं के लिए अलग शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए, साथ ही साथ उनकी सहगामी प्रवृतियाँ भी अलग से होनी चाहिए, क्योंकि इनकी शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक, संवेगात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। उनके लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम होने पर वे भली भाँति शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

विशिष्ट बालकों में से प्रतिभावान एवं सृजनात्मक बालकों की प्रतिभा, योग्यता एवं क्षमता का समाज एवं राष्ट्र को पूरा लाभ मिल सके, इसके लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता है।

विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा का उद्देश्य:-

1. मानसिक विकास का उद्देश्य- संपूर्ण मानसिक विकास करना एवं विशिष्ट बालकों की बुद्धिमता का प्रयोग करना जिससे ये बालक सामान्य लोगों के साथ रह सकें। मानसिक विकास का उद्देश्य ऐसे बालकों को आजीविका योग्य बनाना है।
2. शारीरिक विकास का उद्देश्यः- विशेष तौर पर दिव्यांग बालकों को शिक्षा देने का उद्देश्य तो यह है कि उनकी शारीरिक दुर्बलता या दिव्यांगता महसूस नहीं हो।
3. व्यावसायिक दक्षता का उद्देश्यः- प्रतिभाशाली, मंद, पिछड़े बालकों को इस प्रकार शिक्षा दी जानी चाहिए। जिससे की उनकी व्यवसायिक प्रगति हो सके।
4. कलात्मक विकास का उद्देश्यः- विशिष्ट बालकों में कलात्मक प्रतिभा होती है। यदि उन्हें उचित दिशा एवं मार्गदर्शन का अवसर दिया जाए तो वे अपनी कलात्मक कुशलता का भरपूर उपयोग कर सकते हैं।
5. चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास का उद्देश्यः- इसका सीधा संबंध मानसिक विकास से होता है अतः उचित मार्गदर्शन एवं महापुरुषों की जीवनियों से प्रेरणा दी

जाए।

विशिष्ट वर्ग के बालकों का वर्गीकरणः-

शारीरिक रूप से विशिष्ट बालकः-

1. सांवेगिक रूप से दिव्यांग बालक- जन्मांध, बधिर, गूँगे, देर से बोलने वाले।
2. गतीय रूप से दिव्यांग बालक- पोलियो, लकवा, अनियमित रक्त चाप, दुर्घटना लम्बी बीमारी के कारण पूर्ण या आंशिक क्षति वाले बालक।
3. बहुल विकलांग बालक-सेरविल पाल्सी, मिर्गी, पेराप्लेजिया आदि।

मानसिक रूप से विशिष्ट बालक-

1. प्रतिभाशाली बालक-उच्च बुद्धिलब्धि युक्त।
2. सृजनात्मक बालक-उच्च मानसिकता युक्त।
3. मंद बुद्धि बालक-बुद्धिलब्धि औसत से कम।

शैक्षिक रूप से विशिष्ट बालकः- जो बालक पढ़ने लिखने की योग्यता एवं निष्पादन में सामान्य बालकों से भिन्न होते हैं।

- शैक्षिक रूप से समृद्ध बालक।
- शैक्षिक रूप से पिछड़ा बालक।
- सम्प्रेषण बाधित बालक।
- सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक।

समस्यात्मक बालकः- चोरी, झूठ, झगड़ा, बिस्तर गीला करना, भगोड़े आदि।

बाल-अपराधी बालकः- समाज विरोधी कार्य, कानून की अवहेलना, विध्वंसकारी कार्य आदि करने वाले बालक।

विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु व्यवस्थाः-

उपरोक्त बालकों की शिक्षा हेतु औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए, विशेष परिभ्रामी (Visiting) समाजसेवियों, विशेषज्ञों द्वारा शिक्षण एवं निर्देशन होना आवश्यक है। विशेष शिक्षा एवं आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था होनी आवश्यक है, जिससे विशेषता हर समय निगरानी एवं संरक्षण दे सके।

शिक्षा हेतु किये जा रहे प्रयास- कक्षा-कक्ष की बैठक व्यवस्था का उचित प्रबंधन हो साथ ही ऐसे विद्यालय जिनमें सीढ़ियाँ है तथा विकलांग बालक पढ़ रहे हैं वहां रैम्प की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे बालकों को चढ़ने में कठिनाई नहीं हो।

- गूँगे, बहरे बालकों के लिए संकेत भाषा एवं चिह्नों के साथ ओष्ठलिपि का प्रयोग किया जाना आवश्यक है।
- अंधे दृष्टिबाधित बालकों हेतु ब्रेल लिपि का प्रयोग होना आवश्यक है।
- मानसिक रूप से कमजोर बालकों के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं चिकित्सा केन्द्र खोले जाएँ क्लिनिकल साइकोलोजिस्ट का सहयोग लेकर शिक्षा को सुचारु बनाया जाए।
- इन बालकों को क्रियात्मक शिक्षा के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- बहुल विकलांगता वाले बालकों हेतु डाल्टन विधि, मोंटेसरी विधि, ड्रेकाली विधि, विनेटिका विधि जैसे इन्द्रिय प्रशिक्षण आधारित विधियों से शिक्षण करवाना प्रभावी सिद्ध होगा।
- शिक्षण को अधिकाधिक प्रभावी बनाने के लिए ज्ञानेन्द्रियों का उद्दीपन आवश्यक है।
- गूँगे, बहरे बालकों को छोड़कर भारत में श्रवण उद्दीपन ही शिक्षण का आधार है।
- विभिन्न भव्य दृश्य उपकरणों के प्रयोग से आकृति भेद, अन्तर रंग, तुलना, विशिष्ट अवस्था, बनावट आदि से स्पष्ट सुनिश्चित मूलाकृति के रूप में दर्शाये जा सकते हैं।

विदेशों में बहुल विकलांग बालकों के अनुसार शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु कई प्रोग्राम बनाये गए हैं, जिनसे प्रेरणा लेकर भारतीय शिक्षण व्यवस्था में भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः-

1. MIT Logo Program
2. Bio Medical Engineering जैसे innovating devices की रचना। जिससे बालक कुछ गति कर सके एवं अपने को Communicate (संचरित) कर सकें।
3. सेटली (Sattle) में एक स्नायुशारीरिक, वैज्ञानिक, विद्युत इंजीनियर इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी ने मिलकर एक प्रोगाम बनाया है जो कि-

- गंभीर रूप से पीड़ित बहुल दिव्यांग बालकों को सिर संतुलन में सहायता करते हैं।
- माँसपेशियों को नियन्त्रित करने में सहायता करते हैं।
- श्रवण उत्तेजकों को संचार हेतु दृश्यचित्रों में परिवर्तित कर देते हैं।

इस प्रकार ये प्रोग्राम्स प्रमस्तिष्कीय पक्षाघाती, अंधे, बहरे, गूँगे आदि गंभीर रूप से बहुल विकलांग बालकों के लिए वरदान स्वरूप है।

निःशक्तजनों हेतु सहयोगी प्रमुख संस्थाएँ

1. भारत विकास फाउण्डेशन, नई दिल्ली
2. महावीर इन्टरनेशनल, जयपुर
3. नारायण सेवा संस्थान, जयपुर
4. अंधविद्यालय, जोधपुर
5. मूक बधिर विद्यालय बासनी, जोधपुर
6. अंधविद्यालय, गंगानगर
7. Lion's club, Lio club, NGOs आदि।

अतः निष्कर्षत विशिष्ट बालकों को धारा में लाने हेतु विशिष्ट प्रयासों की आवश्यकता है। दिव्यांगों के अतिरिक्त प्रतिभाशाली, सृजनशील भी हो सकते है।

प्रतिभाशालियों को उनकी योग्यता के समान विषयवस्तु एवं अध्ययन विधियों का प्रयोग करवाया जाना चाहिए एवं सृजनात्मक बालकों के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त कलात्मक शिक्षा पर बल दिया जाए।

बालक राष्ट्र की धरोहर, बौद्धिक सम्पदा है, अतः हमारा दायित्व है कि धरोहर को उचित संरक्षण एवं बढ़ावा दिया जाए।

व्याख्याता
स्वामी विवेकानन्द कॉलेज
फॉर प्रोफेशन स्टडीज, सींथल, बीकानेर
मो. 9828571112

राष्ट्र-अंधकार के विनाश के लिए,
चिर अतीत के धवल प्रकाश के लिए
बुद्धि के विवेक के विकास के लिए
वृद्धि के समृद्धि के प्रयास के लिए
त्याग की लिए मशाल-ज्योति ये जले।
कोटि-कोटि दीप बाल ज्योति ये जले।।

विचार क्रांति

❒ सरस्वती माहेश्वरी

जिसके विचारों में बल है, वह प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में बदल सकता है।

विचार, चिन्तन, अभिव्यक्ति एवं आचरण की स्वतंत्रता जब कभी किसी कारणवश बाधित होती है, तभी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विचार चिन्तन स्पष्ट एवं अविरोधी होना चाहिए। व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि वह वही बात कहे जो उसके मन में है। अपने विचारों को स्पष्ट रूप से तभी अभिव्यक्त कर सकता है जब उसका दृष्टिकोण सुनिश्चित एवं सुदृढ़ होता है और वह भावनाओं के अधीन न होकर विवेक सम्मत होता है, साथ ही वह वस्तुगत होता है। विचार व चिन्तन जितने व्यक्ति परक होते हैं, उतने ही धूमिल एवं दुर्बल होते हैं। विचार जितने सकारात्मक होते हैं, वे उतने ही प्रेरक एवं हितकारी बन जाते हैं।

सार्थक विचार सकारात्मक सोच द्वारा ही पोषित होते हैं, मस्तिष्क को श्रेष्ठ दिशा प्रदान करते हैं। किसी भी कार्य को करने पर मस्तिष्क नये-नये आयामों का सृजन करता है, जिससे सफलता अवश्य प्राप्त होती है। सभी में अपार क्षमता है, शक्ति का भण्डार है। अद्भुत कार्य करने की समर्थता है। सकारात्मक विचारों द्वारा अपनी विशिष्ट क्षमताओं में पूर्ण विश्वास लाकर प्रतिकूल अवसरों को भी अनुकूल अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं यही विचार क्रांति है।

वैचारिक क्रांति का महत्त्व सदैव से ही रहा है। जब जब भी समाज में अराजकता उत्पन्न हुई नकारात्मक सोच का प्राधान्य हुआ। बदलती परिस्थितियों में करवट नहीं ले पाए और समय के साथ कदम नहीं मिला सके तो विचार क्रांति की आवश्यकता महसूस की गई। भारतीय पौराणिक साहित्य में नीति वाक्यों, बोध कथाओं व लघुकथाओं आदि के द्वारा जनमानस को आंदोलित किया गया। हितोपदेश, मित्रलाभ और पंचतंत्र की कहानियों का उद्भव भी विचार क्रांति का ही परिणाम है। चाणक्य नीति, विदुर नीति और नीतिशतक आदि ग्रंथों की रचना तत्कालीन समाज में विचार क्रांति की सूत्रधार रही है। बिगड़े राजकुमारों को कथा कहानियों द्वारा सुधारने का प्रयास तत्कालीन आचार्य विष्णु शर्मा का रहा था। यह भी विचार क्रांति का ही सूत्र था।

सामाजिक समरसता, पारिवारिक सामंजस्य, वैचारिक सोच में शालीनता और सुसंस्कारों के सृजन में सम्बल अधिक महत्व रखता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसमें विश्वबन्धुत्व की भावना, परोपकार, सहयोग, सदाशयता, समरूपता और आत्मिक विकास के साथ वैचारिक सम्पन्नता तथा कल्याणकारी भावनाओं का अभ्युदय होना आवश्यक है और यह विचार क्रांति पर आधारित है। समय के साथ चलने की सीख बड़ों से मिलती रही है। प्रेरक साहित्य, विचारकों के विचार और समाज सुधारकों के सुझाव भी यही हैं कि समय की गति को देखकर चलना होगा अन्यथा बहुत पीछे रह जाएँगे और पिछड़ जाने पर दौड़कर भी मंजिल नहीं प्राप्त कर पायेंगे क्योंकि तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। कहा भी गया है 'अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत'। अतः समय की रफ्तार को देखकर ऊँची आकाँक्षा रखते हुए सफल होने की तमन्ना रखना जरूरी है।

अतः उचित हैं ये पंक्तियाँ-

''उठो जागो, चलो और आगे बढ़ो,
हारकर बैठने से कहाँ सार है।
चलने वालों के चरणों में रहती विजय,
आलसी अधमरा भूमि का भार है।''

व्यक्ति की उपयोगिता उसके सद्‌गुणों व सद्कार्यों से होती है स्वयं को उपयोगी व जनमानस में लोकप्रिय होने के लिए सद्‌गुणों व सद्‌विचारों का विकास आवश्यक है। व्यक्ति को चाहिए वह प्रेम, सद्भावना, शुभेच्छा, गुणकथन आदि सकारात्मक विचार व चिन्तन के प्रति प्रवृति को अधिकाधिक प्रश्रय प्रदान करे। ईर्ष्या, द्वेष, दोषदर्शन, अहित चिन्तन आदि अभावात्मक विचारों को अपने मन में न आने दे। इतना ही नहीं जो लोग नकारात्मक अथवा अभावात्मक विचारों में लिप्त रहते है और परनिंद्रा, छिद्रान्वेषण आदि में रस लेते हैं, उनसे दूर रहें, क्योंकि दूषित विचारों से वातावरण में उत्पन्न कम्पन समस्त पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं। जीवन मूल्यों में गिरावट का कारण भी वैचारिक दुर्बलता ही है। अतः मानवतावादी दृष्टिकोण के जागरण तथा समाजोपयोगी कार्यों के क्रियान्वन में हमारी सकारात्मक सोच ही विशेष सहयोगी है और यह विचार क्रांति द्वारा ही संभव है।

विचार व्यक्ति के आचरण के स्वरूप का निर्धारण करते हैं और आचरण द्वारा उसके चरित्र का निर्माण होता है तथा चरित्र ही उसके भाग्य का निर्माण करता है। स्पष्ट है कि सकारात्मक विचार, सकारात्मक चरित्र ही अनुकूल भाग्य का निर्माण करते हैं। सकारात्मक विचार एवं आंतरिक सौंदर्य वस्तुतः अन्योन्याश्रित है। सुन्दर मन में सुन्दर विचार जन्म लेते हैं और सुन्दर विचार मन की सुन्दरता को नित्य नवीन ऊर्जा प्रदान करते रहते हैं। समृद्धि, विजय और सफलता के विचार सबसे पहले मन से ही उत्पन्न होते हैं। आशाजनक विचारों में महान् विलक्षण शक्ति विद्यमान है। सामाजिक रुढ़ियों, दूषित परम्पराओं और समाज विरोधी मान्यताओं को ध्वस्त करने के लिए वैचारिक सहिष्णुता आवश्यक है। व्यक्ति की शिक्षा, पारिवारिक संस्कार, उसकी संगत और जीवन जीने की शैली, सद्साहित्य का स्वाध्याय, आध्यात्मिक दृष्टि तथा विचारवान व्यक्तियों की शिक्षा उसे विचार क्रांति की ओर अग्रसर करेगी।

सकारात्मक विचार व्यक्ति को अतिरिक्त शक्ति प्रदान करके कर्म के प्रति उत्साहित बनाता है, अभावात्मक दृष्टिकोण अपनी नजरों में दुर्बल एवं असमर्थ बना देता है। व्यक्ति अपने विचारों को सकारात्मक बनाएँ और अनुभव करे कि उसने अपनी सामर्थ्य का जितना मूल्यांकन कर रखा है, उससे कहीं अधिक सामर्थ्य का धनी है। सकारात्मक विचारों से जीवन में मधुरता आती है तथा विचारधारा को नवीनता मिलती है। सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति के मन में उत्साह का संचार करता है और उसको व्यक्त करने के लिए उसके मन में उमंग रहती है और वह अपने जीवन के प्रति निराश नहीं होता। समय के अनुरूप ढलने की स्थितियों, आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा शक्ति, कार्य के प्रति निष्ठा व समर्पण, प्रगतिशील जीवनचर्या का बीजारोपण, व्यवस्था के प्रति आस्था व लगन, मानसिक

दक्षतावृद्धि की ललक तभी संभव है जब उसकी बौद्धिक क्षमता में अनुकूल वृद्धि हो और विचारों में सार्थकता का प्रादुर्भाव हो। वैचारिक क्रांति के लिए शिक्षण संस्थानों में विशेष बल दिया जाना चाहिए। सद्साहित्य का अध्ययन, पुस्तकालयों व वाचनालयों में विचार क्रांति व मानसिक दक्षता संबंधी सामग्री की उपलब्धता, संस्कार शिविरों की अनिवार्यता, प्रबुद्ध व्यक्तियों के वक्तव्य, नवीनतम साहित्य सृजन, बालिका जागृति के लिये विशेष प्रयास तथा उत्सव आयोजनों पर विचार गोष्ठियों और तत्संबंधी प्रतियोगिताओं के आयोजनों से विद्यार्थियों में नवीन विचारों का प्रादुर्भाव हो। समय की माँग के अनुकूल विद्यार्थियों में नयी सोच, नया विचार उद्भूत होगा तभी जमाने के साथ आगे बढ़ने में सफलता मिलेगी।

दृढ़ सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने के लिए विचार क्रांति आवश्यक है ताकि उमंग उत्पन्न करने वाले तथा निर्माणकारी विचारों को यथाशीघ्र कार्य रूप में परिणित किये जाएँ और वायदा पूरा करने की आदत डालें। एक चिन्तक की यह सोच कितनी प्रेरणाप्रद है कि यदि हम छोटे-छोटे वायदे करने और उन्हें पूरा करने की आदत डालें तो इसकी काफी सम्भावना है किसी महान लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। जीवन रूपी वृक्ष में सुविचारों के फूल और सदाचार के फल लगते हैं, तभी उसकी सुन्दरता निखरती है और जीवन सार्थक होता है। पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं के निराकरण में उद्यमी के लिए व्यवसाय में आशातीत प्रगति के लिए, विद्यार्थियों के लिए सही पाठ्यक्रम के चयन के साथ उच्चतम सफलता अर्जित करने में, सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण में, नारी चेतना, बाल संस्कार आदि समस्त जीवन मूल्यों में निखार हेतु विचार क्रांति आवश्यक व उपयोगी है।

विचार क्रांति से मानव मन की कलुषित भावनाओं का दमन होगा तथा व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेष, जलन, कुण्ठा, उत्पीड़न व अनाचारों से मुक्ति प्राप्त करेगा। नई सोच, नया उत्साह और नवीन तकनीक द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान करते हुए सुखी जीवनयापन करेगा और निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर होगा।

प्रधानाचार्य
SIERT उदयपुर

जीवनोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता

❐ सुरेन्द्र माहेश्वरी

आज की शिक्षा का विशद्ध रूप से बाजारीकरण हो रहा है, प्रतियोगिता की इस अंधी दौड़ में हर कोई परीक्षा में अधिकाधिक अंक लाने की दौड़ में शामिल है। ऐसा प्रतीत होता है मानो शिक्षा परीक्षा के लिए है न कि जीवन के लिए। विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का परम लक्ष्य परीक्षा में बेहतर परिणामों को प्राप्त करना है। आज सम्पूर्ण शिक्षा परीक्षा केन्द्रित हो चुकी है। शिक्षकों ने अपने शिक्षण कार्य को अधिकाधिक अंक प्राप्त करने तक सीमित कर दिया है। जीवन के जो संस्कार इस आयु में बच्चों को दिए जाने चाहिए वे सब मानो बीते जमाने की बात हो गई। परीक्षा के अलावा अन्य बातों से विद्यार्थियों का कोई सरोकार नहीं रहा है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, ''आज की शिक्षा की सबसे बड़ी खामी यह है कि इसके सामने अनुसरण करने के लिए कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। एक चित्रकार अथवा मूर्तिकार यह जानता है कि उसे क्या बनाना है तभी वह अपने कार्य में सफल हो पाता है। आज शिक्षक को यह स्पष्ट नहीं है कि वह किस लक्ष्य को लेकर अध्यापन कार्य कर रहा है। सभी प्रकार का एक मात्र उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करना है इसके लिए वेदान्त के दर्शन को ध्यान में रखते हुए मनुष्य निर्माण की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

आज पाठ्यक्रमों के अलावा अन्य किसी पुस्तक के अध्ययन-अध्यापन का कोई महत्व नहीं रहा है। शिक्षक भी परीक्षा के पाठ्यक्रम तक सीमित है और विद्यार्थी भी। परीक्षा में प्रदर्शन के आधार पर ही शिक्षा तथा शैक्षिक योग्यता का मूल्यांकन किया जा रहा है, जिसमें सर्वाधिक जोर लिखित परीक्षा पर दिया जा रहा है। सभी परीक्षा को साधने में लगे हुए हैं। बच्चों ने जो कुछ पढ़ा उस विषय की उसमें कितनी गहरी समझ है, वह सीखी हुई विषय वस्तु को अपने जीवन की बदलती परिस्थितियों के अनुसार कितना क्रियान्वित कर सकता है, वह जीवन में कितना बेहतर इंसान बन सकता है इस पर किसी का ध्यान नही है। विषय वस्तु को रट कर परीक्षा में हूबहू उतार दिया जाता है जिससे शिक्षा जीवन से कट चुकी है। अब जिन्दगी जटिल होती जा रही है नित नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तुरन्त निर्णय लेने पड़ते हैं। ऐसे में आवश्यकता है कि बच्चा अपने जीवन में जो शिक्षा ग्रहण करे उसका उपयोग केवल कॅरियर निर्माण या धन अर्जन तक ही सीमित न रखें बल्कि पग-पग पर जो उसे चुनौतियाँ मिल रही है उसका सामना करने के लिए सीखे हुए ज्ञान का उपयोग कर सके।

शिक्षा का संबंध नौकरी से होना एवं प्राप्त अंको द्वारा उसकी गुणवत्ता का निर्धारण होना ही वे कारण हैं जिनके चलते बाजार ने शिक्षा को मुनाफे का माध्यम बना लिया है। आज कम पैसे वालों के लिए अलग शिक्षा और अधिक पैसे वालों के लिए अलग। कोचिंग क्लासेज नए बिजनेस के रूप में बाजार में पाँव पसार चुकी है। गाइड, पास बुक, वनवीक सीरिज छापने वालों का धन्धा जोरदार चल रहा है। सभी अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने की दौड़ में हैं, जो सफल हो गये हैं वो अपने आप को सिकन्दर से कम नहीं समझते और जो असफल हुए हैं मानो उनके लिए तो पहाड़ टूट पड़ा। जिन्दगी अब उनके लिए कोई मायने नहीं रखती है वे कुण्ठा, अवसाद और तनाव से ग्रस्त होकर आत्महत्या कर रहे हैं। क्या यही शिक्षा का लक्ष्य है?

बाजार में बिकाऊ शिक्षा का जीवन मूल्यों से कोई सरोकार नहीं है। इसका उद्देश्य मानव और व्यवस्था की मशीन में फिट बैठने वाले पुर्जे तैयार करना है। शिक्षा का निर्धारण उसी प्रकार किया जा रहा है जैसी कॉरपोरेट जगत को जरूरत है। बाजार को ऐसा मानव संसाधन चाहिए जो उसकी कम्पनियों में लगी अत्याधुनिक तकनीकों से लेस मशीनों का संचालन कर सके। उसके उत्पादों को खरीदने वाले ग्राहकों को मानसिक रूप से तैयार कर सके, भले ही उस वस्तु को खरीदने वाले के लिए उपयोगी है या नहीं यह कोई नहीं सोचता है।

आज की शिक्षा अच्छे डॉक्टर,

इंजीनियर, प्रबन्धक, प्रशासक तो तैयार कर रही है लेकिन वो इन्सान तैयार नहीं कर पा रही है जो संवेदनाओं से परिपूर्ण हो, जिसमें मानवता निवास करती हो, जो सृजनशील हो, जो समाज के पिछड़े वर्गों को ऊपर उठाने में सहयोग करे, जो संस्कारों से परिपूर्ण हो। इसका नितान्त अभाव है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार- ''हम बालक को एक ऐसे नागरिक के रूप में विकसित करना चाहते हैं जो विश्व के नागरिकों की तकलीफ, दुःख, दर्द, अभाव, कष्ट, व्यथा, सन्ताप अनुभव कर सके। हमें ऐसा आदमी नहीं चाहिए जो वस्तुओं और स्थितियों को परिपूर्ण बना सके। जो प्रकृति को पूरे मन से गहराई तक समझ सके, उसमें खोज कर सके, हमको ऐसा मनुष्य चाहिए जो रुके नहीं, निरन्तर कार्य करे जो कार्यों को सही रूप में सम्पूर्णता तक पहुँचा सके।''

शिक्षा अधिनियम 2009 ने तो रही सही कसर भी पूरी कर दी है। इस अधिनियम ने तो शिक्षा को निजी हाथों में पूरी तरह सौंपने की तैयारी कर ली है। आम जनता के पैसों से विद्या मन्दिरों का आधारभूत ढाँचा तैयार कर उसका प्रबन्धन निजी हाथों को सौंपने की तैयारी है। इसी तरह कम से कम पच्चीस प्रतिशत बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने के बहाने निजी स्कूलों का बाउचर प्रदान कर आने वाले समय में सरकार नये स्कूल खोलने के दायित्वों से भी बचना चाहती है। हम कल्पना कर सकते हैं कि जिस दिन शिक्षा पूर्णरूप से निजी क्षेत्र का हिस्सा बन जायेगी उस समय शिक्षा का क्या उद्देश्य रह जायेगा। शिक्षा में कितनी मूल्यों की बात रहेगी और कितनी जीवन की। आज के पाठ्यक्रम में विज्ञान, मानविकी, भाषा जैसे चेतना विकसित करने वाले एवं समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले पाठ्यक्रमों की निरन्तर उपेक्षा हो रही है। हर कोई अपने बच्चों को प्रबन्ध एवं तकनीकी विषयों को पढ़ाने पर जोर दे रहा है।

आज शिक्षा पूरी तरह बाजारोन्मुखी हो चुकी है। बड़े-बड़े विज्ञापनों द्वारा छात्रों और अभिभावकों को गुमराह किया जा रहा है। उन्हें हसीन सपने दिखाएँ जा रहे हैं और ऐसे ऐसे दावे किए जा रहे हैं कि अमुक पाठ्यक्रम से उनकी किस्मत ही बदल जायेगी। पिछले कुछ सालों में देखने में आया कि इन छात्रों की किस्मत बदली या नहीं बदली लेकिन मानवीय मूल्य जरूर बदल गये हैं। अपने व्यवसाय तक सीमित रहना, व्यक्ति का सामाजिक जीवन से कोसों दूर चले जाना, बस यहीं तक सीमित हो चुकी है इन्सान की जिन्दगी। शिक्षा को कट्टरता, धर्मान्धता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, फैलाने का माध्यम बनाया जा चुका है।

छात्रों पर परीक्षा के बोझ को कम करने के लिए नित नए नियम बन रहे हैं। परीक्षा को चाइल्ड फ्रेण्डली बनाया जा रहा है। बोर्ड परीक्षा को वैकल्पिक तथा अंकों के स्थान पर ग्रेड पद्धति अपनाई जा रही है। यह माना जा रहा है कि इससे बच्चों पर परीक्षा का तनाव कम होगा लेकिन फिर वही प्रश्न आकर खड़ा हो जाता है कि जब तक परीक्षा से उसके स्तर का निर्धारण होता रहेगा या उसे वर्गीकृत किया जाता रहेगा, यह स्तर उसके जीवन को पग-पग पर प्रभावित करता रहेगा, जीवन में सफलता और असफलता का मानक भी यही होगा, फिर स्तर का निर्धारण या वर्गीकरण अंकों के माध्यम से हो या ग्रेड से क्या फर्क पड़ता है, क्योंकि जहाँ परीक्षा होगी वहाँ तनाव कायम रहेगा। परीक्षा प्रतिस्पर्धा को जन्म देती है और प्रतिस्पर्धा ही आज के बालकों के तनाव का मूल कारण है। एन.सी.एफ. 2005 में प्रतिस्पर्धा को समाप्त करने की बात कही गई है, पर यह प्रतिस्पर्धा जब तक समाज में कायम रहेगी हम स्कूलों में कैसे समाप्त कर सकते हैं। आज काम के लिए आदमी चाहिए, आदमी नहीं मिलते और आदमी के लिए काम चाहिए, काम नहीं मिलता। यही आज की शिक्षा की विडम्बना है।

शिक्षा परीक्षा के लिए न होकर परीक्षा शिक्षा के लिए होनी चाहिए जैसे की परीक्षण स्वास्थ्य के लिए होता है न कि स्वास्थ्य परीक्षण के लिए होता है। परीक्षा से प्राप्त परिणामों से बच्चों का वर्गीकरण न किया जाकर उन पद्धतियों को विकसित किया जाना चाहिए जो सीखने की प्रक्रिया को रोचक और सरल बना सके।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को देखकर ऐसा नहीं लगता कि परीक्षा को समाप्त किया जा सके, लेकिन परीक्षा को तनाव रहित बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। एन.सी.एफ 2005 ने तनाव रहित परीक्षा के जो सुझाव दिए हैं वे उल्लेखनीय हैं-

- परीक्षा हॉल में पेन कॉपी से ली गई परीक्षा के अलावा भी मूल्यांकन के और तरीके होने चाहिए।
- मौखिक परीक्षा और समूही परीक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- खुली पुस्तक परीक्षा और लचीली समय सीमा को प्रायोगिक तौर पर लागू किया जाना चाहिए।
- स्मृति आधारित परीक्षा से उच्च योग्यताओं की परीक्षा का मार्ग प्रशस्त होगा जैसे- व्याख्या, मूल्याँकन एवं समस्या समाधान आदि।

जब से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने अपनी जड़ें मजबूती से जमायी हैं तब से ही प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। यह माना जाता है कि शिक्षा को अपनी प्रक्रिया एवं मूल्याँकन में प्रतिस्पर्धा के बजाय सार्थकता, सहभागिता, आनन्द और आत्मावलोकन को महत्व देना चाहिए और वह तभी सम्भव है जब ज्ञान की प्रतिष्ठा उपयोगिता के कारण नहीं, बल्कि आनन्द एवं सामाजिक प्रतिबद्धता की वजह से हो। शिक्षा को यदि बाजारवाद से मुक्त कराना है तो शिक्षा को परीक्षोन्मुखी बनाने की बजाय जीवनोन्मुखी बनाना होगा। शिक्षा द्वारा विद्यार्थी में बौद्धिक विकास के साथ-साथ अनुशासन , सहिष्णुता, ईमानदारी, दायित्वबोध, व्यापक दृष्टिकोण और व्यापक चिन्तन का विकास अवश्य होना चाहिए।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
टहुँका (भीलवाड़ा)
मो. 9829925909

भूल-सुधार

राजस्थान सरकार के माननीय चीफ सेक्रेटरी (मुख्य सचिव) महोदय के राजकीय विद्यालय में आने की घटना से भावाभिभूत होकर शिविरा के गत माह के अंक के पृष्ठ संख्या 6 पर रपट में 'चीफ सेक्रेटरी' पद नाम का हिन्दी अनुवाद 'प्रमुख शासन सचिव' प्रकाशित हो गया है। माननीय मुख्य सचिव महोदय से क्षमा याचना सहित सुधी पाठकों से अनुरोध है कि 'प्रमुख शासन सचिव' पदनाम के स्थान पर 'मुख्य सचिव' पढ़ने की कृपा करें।

-वरिष्ठ संपादक

भावी पीढ़ी की खुशी को प्राथमिकता दें

❐ नारायण दास जीनगर

दो डॉक्टर। दोनों पुणे में अस्पताल चलाते। दोनों ने पुत्र होने पर जश्न मनाया। पुत्रों की शिक्षा जूनियर व सीनियर किंडर गार्डन शुरू की। दो साल निजी स्कूल में दाखिले के बाद महसूस किया कि बच्चे न तो अपनी मातृभाषा (मराठी) और न ही अंग्रेजी ठीक ढंग से सीख पा रहे हैं। इसके अलावा पालकों ने यह भी महसूस किया कि अपनी ही संस्कृति में रुचि कम हो रही है और वे अलग ही 'आधुनिक संस्कृति' अपना रहे हैं। यह बात उन्हें विचलित कर रही थी और दोनों मित्र थे सो चिन्तन मनन से अहसास हो गया कि हमारे बच्चे अपने वैभवमयी भारतीय सभ्यता व गौरवमयी संस्कृति से कट रहे है।

इसी कारण डॉ. आशीष उचगांवकर और डॉ. पुरुषोत्तम बोरहाड़े अन्त में अपने-अपने स्तर पर बच्चों को तुरंत उस अंग्रेजी माध्यम के स्कूल, जहाँ वे प्री-प्रायमरी के दो साल बिता चुके थे, से निकालकर जिला परिषद् शाला में भेजने का निर्णय लिया। 8/8/2016 के दैनिक भास्कर में पृष्ठ संख्या 9 पर प्रकाशित मैनेजमेंट फंडा लेखक- एम. रघुरामन को जब पढ़ा तो विषय गम्भीर व प्रासंगिक लगा।

यही बात हमारे प्रदेश में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत के लिए भी चिन्तन का विषय है। शिक्षा के माध्यम में ही सभ्यता व संस्कृति के बीज छिपे होते है। भले राजस्थान की राजस्थानी भाषा को मान्यता नहीं मिली हो पर फिर भी अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों की अपेक्षा सरकारी या हिन्दी माध्यम की स्कूलों के बच्चे भारतीय सभ्यता, संस्कृति के ज्यादा नजदीक मिलेंगे। वे ज्यादा भारतीय संस्कारों के महत्व को समझ कर भले ही पूर्ण रूप से अपनाने में हिचकिचाएँ परन्तु बूढ़ों के सामने आदर व सम्मान तथा उत्सव आदि अवसरों पर उन परम्पराओं का कुछ न कुछ भाग अवश्य पालन करते हैं और ऐसा करते देख उनके पालक स्वयं पर गर्व महसूस करते है।

यदि आप देखें तो महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात आदि जहाँ मातृभाषा के रूप में स्थानीय भाषा को मान्यता है के बालकों पर निजी और अंग्रेजी माध्यम की स्कूलों का जुनून सवार नहीं है। सरकारी आँकड़ों में तो दावा किया गया है कि हजारों डॉक्टर व अधिकारियों ने आदित्य व अनुश्री का रास्ता अपनाया है। चूँकि ऐसा कोई रिसर्च भी नहीं कि अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों ने उनकी मातृभाषा के स्कूलों से बेहतर प्रदर्शन किया है। अपने व्यवसाय में अच्छी तरह से जमे इन डॉक्टरों को सरकारी स्कूल में दिए जा रहे निःशुल्क यूनिफार्म, पाठ्यपुस्तकों और मध्याह्न भोजन से कोई लेना-देना नहीं था। पर उनकी मात्र चिन्ता यही थी बड़े होते उनके बच्चे कितने शांतचित्त रह पाते है, उनका बढ़ना व पढ़ना सहज व सरल रह पाता है। कितने तनावमुक्त है और समय का सदुपयोग कर पा रहे है।

आशीष व नरेन्द्र जैसे डॉक्टर आज महसूस कर रहे है कि चूंकि उनके ज्यादातर रोगी स्थानीय होते हैं, वे स्थानीय भाषा में बातें करने वाले डॉक्टर के साथ ज्यादा सुविधायुक्त महसूस करते हैं, वे उनकी संवदेना को अच्छे ढंग से महसूस करते है। उनका डॉक्टर होने के नाते चाहे जो आकलन हो पर अपनी जिंदगी के बारे में स्पष्टता उन्हें हैं। वे अपने बच्चों को साथियों व समाज की ओर से भविष्य में पड़ने वाले दबाव का शिकार नहीं बनाना चाहते। साथ ही यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि स्थानीय भाषा में भी वही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, जो अंग्रेजी या विदेशी भाषा में।

यह निश्चित ही अगली पीढ़ी की खुशी की दिशा में एक अच्छी व सकारात्मक पहल है। आजादी के बाद विदेशी भाषा में शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती रही। नतीजे हमारे सामने हैं। आज हम ही हमारी संस्कृति, परम्परा, धर्म, रीति-रिवाज, सभ्यता की हँसी उड़ाते है। जबकि आदर व सम्मान के साथ इन्हें अपनाते हुए समयानुकूल सुधार के साथ नई पीढ़ी को हस्तांतरण करने की हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

> हे जन्म भूमि भारत, हे कर्म भूमि भारत
> हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत।
> जीवन सुमन चढ़ाकर आराधना करेंगे,
> तेरी जनम-जनम भर, हम वन्दना करेंगे।
> हम अर्चना करेंगे।।

परिस्थिति जब लाभ की बजाय हानि कराती है, तो सोचना पड़ता है। पुरानी सभ्यता व संस्कृति के लोग सही-गलत का सामाजिक आधार पर ही सारा व्यवहार करते थे, आजादी के बाद इस विदेशी भाषा व उससे उपजी संस्कृति तथा सभ्यता ने इस आधार को बदल कर 'सरल-कठिन' के रूप में स्थापित कर दिया। तभी से सम्पूर्ण समाज में अधोगामी बदलाव आने लगा है। सरलता के चक्कर में अपना ये काम का जब परिणाम गलत आता है तो समझ में आता है कि चयन का आधार ही गलत था।

शिक्षक को भी अपना शिक्षा-कर्म, अपना संप्रेषण, अपनी प्रतिभा, अपने कौशल ही नहीं बल्कि अपना सब कुछ चाहे वह विद्यालय में अध्यापन कराते हो, चाहे वे सेवारत प्रशिक्षण दे या ले रहे हो, चाहे वे शिक्षा के अधिकारी हो, हम सब का दायित्व है कि 'नई पीढ़ी कैसे भारतीय बने' भारतीय यानी सभ्यता व संस्कृति से ओत प्रोत सम्मानजनक, खुशहाल नागरिक, साथ ही वो परोपकारी, भाईचारे, संवेदनशील भी हो। हर अभिभावक अपना जीवन अपनी नई पीढ़ी के लिए समर्पित करता है।

आओ शिक्षक दिवस पर निर्णय लें, भारतीय होने पर गर्व करें, भारतीयता को अपनाएँ व इसे नई पीढ़ी के मन में बसाएंगे। हर भारतीय खुशहाल, रोजगार युक्त, नशामुक्त, अपने कौशल में दक्ष, सच्चा व सुसंस्कृत बनकर बनाने में भी हर समय-हर जगह नियमित व निरन्तर प्रयासरत रहे।

यदि ऐसा हुआ तो बहुत जल्द विश्व में भारत पुनः विश्वगुरु कहलाने में सक्षम व समर्थ होगा।

मरुधर भवन, जीनगर मोहल्ला,
गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर,
बीकानेर-334001
मो. 9414142641

व्यक्तित्व निर्माण : शिक्षक भूमिका

❒ शिवनारायण शर्मा

शाला समाज का लघुरूप है। शाला में समाज की संस्कृति व आचार-विचार बालकों के माध्यम से प्रतिबिम्बित होते हैं। प्राचीन भारत में शिक्षक का स्थान अत्यंत आदरणीय था। प्रजा के साथ-साथ राजा-महाराजा भी शिक्षक का गुरु के रूप में आदर-सम्मान करते थे। शिक्षक को समाज में सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्त्ता समझा जाता था। मध्ययुग में भी शिक्षकों को समाज का निर्माता माना जाता था। लेकिन आधुनिक युग में मैकाले की शिक्षा नीति के कारण शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका एक वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में हो गयी।

यह आज भी ध्रुव सत्य है शिक्षा में किसी भी प्रकार की प्रगति या नवाचार लागू करना शिक्षक के बिना असंभव है। शिक्षक बालक के व्यक्तित्व निर्माण की धुरी हैं, परिवर्तन का अभिकर्त्ता तथा राष्ट्र निर्माता हैं।

शिक्षा कहती है, ''मैं सत्ता की दासी नहीं, कानून की किंकरी नहीं, अर्थशास्त्र की बांदी नहीं मैं तो धर्म का पुनरागमन हूँ। मानव के हृदय, बुद्धि एवं इन्द्रियों की स्वामिनी हूँ। मनोविज्ञान और समाजशास्त्र मेरे दो पैर है। कला और हुनर मेरे दो हाथ है। विज्ञान मेरा मस्तिष्क है। धर्म मेरा दिल है। निरीक्षण व तर्क मेरी दो आँखें हैं। इतिहास मेरे कान हैं। स्वतंत्रता मेरी साँस है तथा उत्साह व उद्योग मेरे फेफड़े हैं। धैर्य मेरा व्रत हैं। विश्वास चेतना है। मैं ऐसी जगदम्बा और जगद्दात्री हूँ। मेरी उपासना करने वाला किसी का मुखापेक्षी नहीं रहता उसकी सारी आशा आकांक्षाए मेरे द्वारा तृप्त हो सकती हैं।''

ऐसी शिक्षा को बालकों तक सम्प्रेषित कर उनके व्यक्तित्व निर्माण का सृजनकर्ता हैं शिक्षक। इरास्मस के अनुसार विद्यालय शिक्षक होना राजा होने के निकटतम है। इसको दीन-व्यवसाय मानना मूर्खों का मत है। वास्तविकता यह है कि यह एक श्रेष्ठतम व्यवसाय है।

प्राचीन समय में प्रतिष्ठित ऋषियों के गुरुकुल एकान्त सुरम्य वनों में पवित्र नदियों के तटों पर स्थापित थे। बालकों का चहुँमुखी विकास करने के लिए ऋषि उन्हें अट्ठारह विद्याओं तथा चौसठ कलाओं की शिक्षा देते थे। इसके साथ-साथ बालकों को व्याकरण, ज्योतिष, न्याय व धर्मशास्त्र, नृत्य, गायन, वाद्य, चित्रकला तथा वास्तुशास्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। उन गुरुकुलों में आर्थिक विषमता और जातिभेद नहीं था। गुरुकुलों से निकले विद्यार्थियों का व्यक्तित्व आकर्षक एवं अनुकरणीय था।

आज हमारे देश ने शिक्षा, कृषि, विज्ञान, टेक्नोलोजी एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की हैं। 'एल्ट्राइन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी' ने शिक्षा के क्षेत्र में तहलका मचा दिया है। परम्परागत शिक्षण की जगह रेडियो कॉन्फ्रेस, इन्टरनेट, प्रोजेक्टर तथा सी.डी. रोम के जरिए शिक्षण होने लगा हैं। शीघ्र ही विद्यालयों में ई-बुक प्रणाली लागू होने वाली है। विद्यालयों में शीघ्र ही 'वेबसाइट लाइब्रेरिज' की स्थापना होने वाली हैं। शीघ्र ही प्रिण्ट मीडिया का स्थान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेने जा रहा हैं। शिक्षा व्यवस्था में इस भारी फेरबदल के कारण शिक्षक किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं। यद्यपि सरकार और विभाग द्वारा शिक्षकों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षणों का आयोजन कर उन्हें इन विद्याओं में निपुण बनाने का प्रयास किया जा रहा हैं।

परिवर्तन की इस आँधी में कहीं शिक्षक इस बात को विस्मृत न कर जाए कि वही बालकों के व्यक्तित्व का निर्माता है। आज भी इस देश के शिक्षकों ने कई ऐसे बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व को संवारा हैं जिन्होंने राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनायी है। 'फॉर्च्यून' द्वारा जारी सूची में एशिया की नामचीन महिलाओं में भारत की आठ महिलाएँ-चंद्राकोर, अरुंधति महाचार्य, निशि वासुदेव, शिखा शर्मा, किरण मजूमदार, चित्रा रामकृष्णन, नैना किदवई तथा मल्लिका श्रीनिवासन शामिल हैं। बालकों के व्यक्तित्व विकास हेतु शिक्षकों को फ्रॉयड एवं एरिक्सन के सिद्धांतों पर अमल करना आवश्यक है।

बालकों के व्यक्तित्व निर्धारण में फ्रॉयड का 'मनोविश्लेषण सिद्धांत' अपनी महत्ती भूमिका अदा करता है। इस सिद्धांत का पालन कर मनोचिकित्सक बालकों के मानसिक रोगों का उपचार करते है। फ्रायड ने अचेतन मन को व्यक्तित्व निर्माण का महत्त्वपूर्ण घटक माना है। शिक्षा के क्षेत्र में अचेतन की गरिमा ने तहलका मचा दिया हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में, अधिगम की प्रक्रिया में तथा स्मृति व विस्मृति में अचेतन मन सक्रिय रहता हैं। फ्रॉयड ने इदम्, अहम् तथा पराहम् की धारणा विकसित कर व्यक्तित्व सम्बन्धी विचारों पर नया प्रकाश डाला हैं।

एरिक्सन का सिद्धांत फ्रॉयड के सिद्धांत को निरन्तरता प्रदान करता हैं। अपने सिद्धांत में एरिक्सन ने व्यक्तित्व के 3 गुणों पूर्णता, पर्यावरणवादिता तथा परिवर्तनशीलता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया हैं। एरिक्सन ने अपने मनोसामाजिक सिद्धांत में अहम् (Ego) को प्रमुख स्थान दिया हैं। इस सिद्धांत में उसने व्यक्तित्व विकास की आठ मनो-सामाजिक अवस्थाएँ बतायी है जिनमें से पाँच अवस्थाओं का विकास विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर होता हैं। ये अवस्थाएँ है- (1) प्रारंभिक बाल्यावस्था (1 से 3 वर्ष तक) (2) खेल अवस्था (3 से 6 वर्ष तक) (3) विद्यालय अवस्था (6 से 12 वर्ष तक) (4) किशोरावस्था (12 से 20 वर्ष तक) (5) तरुण वयस्कता (20 से 30 वर्ष तक)

इन अवस्थाओं में व्यक्तित्व का विकास विशेष नियमों से होता हैं जिन्हें पश्चजनक सिद्धांत कहते हैं। व्यक्तित्व विकास की उक्त मनोसामाजिक अवस्थाओं में 'Crisis'(संकट) उत्पन्न होता है।

'संकट' (Crisis) का अर्थ ऐसे बदलाव बिन्दु (Turning Point) से हैं जो उस Stage की जैविक परिपक्वता तथा सामाजिक आवश्यकता (Social Demands) के बीच Conflict के फलस्वरूप उत्पन्न होता हैं। यही वह समय होता हैं जब सकारात्मक अथवा नकारात्मक गुण बालकों के व्यक्तित्व का अंग बन सकते हैं। इस मोड़ पर शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। उसे चाहिए कि बालक सकारात्मक गुणों को ही आत्मसात करें।

यदि शिक्षक इस दिशा में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन कर सका तो विद्यालयों तथा महाविद्यालयों से निकलने वाले विद्यार्थी आदर्श व्यक्तित्व के धनी होंगे तथा वो अपने अनूठे प्रयासों से समाज एवं राष्ट्र में प्रगति एवं उपलब्धियों के नये प्रतीक एवं बिम्ब स्थापित कर सकेंगे।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
गिलूण्ड, राजसमंद-313207 (राज.)

भाषा और साहित्य शिक्षण की संस्कृति

❐ डॉ. राम निवास

भाषा, साहित्य का अध्ययन-अध्यापन, लेखन व्यापक दृष्टि लिए हुए होता है क्योंकि संपूर्ण मानव जाति इसके केन्द्र में होती है। जीवन के विभिन्न रंग और रूप साहित्य शिक्षण में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। साहित्य किसी भी भाषा, देश काल का हो उसमें वही प्रकट होता है जो आँखों के सामने आता है। जहाँ एक ओर मनुष्य और मानवता के विभिन्न पक्ष दिखाई देते हैं वहीं मनुष्य की कमजोरियाँ और सीमाओं को भी रेखांकित किया गया है। शिक्षण की दृष्टि से देखा जाए तो जहाँ पर प्रबंध तंत्र कमजोर पाया जाता है वहाँ शिक्षक भी मजबूर हो जाते हैं जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। इसलिए यह शिक्षकों, शिक्षाविदों का दायित्व हो जाता है कि वे शिक्षा जगत् कि वास्तविक जिंदगी को दिखाएं और बताएं। शिक्षा जगत् में यह नए दौर के लोकतंत्र और परिवर्तन की ओर कदम है। आज की दुनिया विज्ञापन और पब्लिसिटी की दुनिया है और शिक्षा की दुनिया भी इससे अछूती नहीं है। विज्ञापन दाता आम आदमी की कमजोर नस पर हाथ रखते हैं और उन्हें भविष्य के सुनहरे सपने दिखाते हैं। इनके माध्यम से शिक्षा में भी संघर्ष हो रहा है जो चीज शांति प्राप्त करने हेतु प्राप्त करना चाहते हैं वहाँ तो बड़ा भारी तनाव भरा संघर्ष विद्यमान है।

1. भाषा और शिक्षा व्यवस्था की लकीरेंः–शिक्षा धनी और निर्धन वर्ग का विभाजन भी कर रही है वह ऐसे कि आम आदमी के बच्चे जहाँ शिक्षा प्राप्त करते हैं वहाँ धनी वर्ग अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहता। शिक्षा व्यवस्था में लकीरें हदबंदी और विभाजन नहीं होना चाहिए यह लोकतंत्र का मजाक है। जिस देश में चौबीस भाषाएं जहाँ सरकारी हैसियत रखती हैं वहाँ कोई भी भाषा किसी वर्ग जाति समाज या संप्रदाय की नहीं हो सकती। न ही कोई बड़ी या छोटी कही जा सकती क्योंकि ''जब घर बड़ा हो जाता है तो वह बँट जाता है'' जो परिवार के विकास के लिए आवश्यक माना जाता है। हिन्दी और उर्दू के संदर्भ में देखा जाए

तो यह कथन पूर्णतया सत्य सिद्ध होता है। परम्परा इतिहास और समय के दायरे में रहते हुए इन्हें तोड़ने की कोशिश की जानी चाहिए। जो भी व्यक्ति ऐसा करता है वही समाज को किसी न किसी क्षेत्र में कुछ नया दे जाता है। यहाँ यह भी स्मरणीय है कि व्यक्ति को बड़ा होने का अहसास सदैव हानि पहुँचाता है जिम्मेदारी का अहसास अनिवार्य है इसके बिना जीवन में वांछित प्रगति संभव नहीं है।

2. परिवर्तन के लिए लचीलापन जरूरीः– साहित्य, भाषा के शिक्षण में शिक्षक पाँच सौ या हजार वर्ष पूर्व के कवि लेखक को आज की दुनिया में खींच लाते हैं। कभी-कभी इन दो युगों की दुनिया मेल खा जाती है तो कभी-कभी टकराव भी हो जाता है। इसे समझना आवश्यक है। परिवर्तन के लिए लचीलापन होना जरूरी है। क्योंकि जब तक मिट्टी में थोड़ी नमी नहीं हो तो उसे कोई बदल नहीं सकता। साहित्य अनुभव से उत्पन्न होता है। कभी-कभी आदमी विचारों और भावों से भी टकराता है। वह जीती जागती दुनिया को सपने के तौर पर देखने की कोशिश भी करता है, यहाँ वह भाषा, जीवन और अनुभव से खेलने लगता है। बंधनों को स्वीकार नहीं करना और स्वयं को आजाद रखने का लगातार प्रयास करता रहता है। यह सब क्यों है? वह इसलिए कि परम्परा से अलग हटकर मुख्यधारा से कटकर बात कहने वाले प्रायः कम ही व्यक्ति होते हैं। पहचान के संकट के कारण ही मनुष्य अपनी अलग पहचान बनाता है जो सकारात्मक होनी चाहिए। छोटी-छोटी चीजों में रस लेना आना चाहिए इससे जीवन में नकारात्मकता घटती है और व्यक्ति में ऊर्जा का संचार भी होता है। जिसे आप प्रेम करेंगे उसे आप सुखी और संपन्न देखना चाहेंगे उसे फटेहाल देखना नहीं चाहेंगे। यह जीवन के हर क्षेत्र में एक समान रूप से लागू होता है इसी भाव से प्रेरित होकर भाषा, साहित्य, विभिन्न कलाएं एवं कौशलों का विकास हुआ है। जो व्यक्ति अपने समय गाँव, नगर, भाषा, बोली, परिवार का नहीं होता वह किसी और कहीं का नहीं हो सकता। जन्म लिया है अमृत जीवन मिला है यह कोई हँसी खेल नहीं है जहाँ पर भी व्यक्ति जाए अपनी जड़े फैलाएं। व्यक्ति जिंदा है तो जिंदा नजर भी आना चाहिए। व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में कार्य करे उसे क्रियेटिव होना आवश्यक है। क्रियेटिव में बहुत ताकत होती है। क्रियेटिव शिक्षक, विद्यार्थी को दबाया नहीं जा सकता उसे दबाया भी नहीं जाना चाहिए।

3. एक भाषा से दूसरी भाषा और साहित्य में विरोध नहींः– पाठ्यपुस्तकों में क्षेत्रीयता, राष्ट्रीय अस्मिता और ग्लोबल के महत्त्व को स्पष्ट किया जाता है। परन्तु राष्ट्रीय अस्मिता से ग्लोबल अस्मिता बड़ी होती है इनमें टकराव नहीं होना चाहिए। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय अस्मिताएँ जब व्यापक रूप ले लेती हैं तब ये ग्लोबल अस्मिता में बदल जाती हैं। आप किसी भी जन आंदोलन को देख लीजिए जब उसका दायरा विस्तृत हो जाता है तो वही लोक व्यापी बनकर ग्लोबल में रूपांतरित हो जाता है। एक भाषा साहित्य से दूसरी भाषा और साहित्य की यात्रा में अवरोध नहीं होना चाहिए। भाषा साहित्य का फैलाव विस्तृत होता है। दायरे संकुचित नहीं किए जाएं। आज हम देखते हैं कि हिंदी वालों के बीच उर्दू और अंग्रेजी वाले होते हैं ऐसे ही उर्दू और अंग्रेजी वालों के बीच हिंदी वाले पाए जाते हैं। इंशा अल्लाखाँ, प्रेमचंद और नजीर अकबराबादी उर्दू साहित्य के इतिहास के साथ-साथ हिंदी साहित्य के इतिहास में भी आते हैं। यही भाषा और साहित्य का रश्मो रिवाज है यह उठना नहीं चाहिए। इसमें निरंतर वृद्धि होनी चाहिए। भाषा बोध की इकाई शब्द और वाक्य हैं हिन्दी में ही भाषा और उपभाषा सहित छोटी-बड़ी लगभग पचास-साठ बोलियाँ साँस ले रही

हैं जो लगातार खड़ीबोली को खींचती है और ये बोलियाँ अपनी तरावट अपना जादू भी दिखाती हैं। विकास की प्रक्रिया यही है।

4. शिक्षण में चोर दरवाजे की बुनियाद न रखेंः– व्यक्ति कोई भी हो किसी भी व्यवसाय में हो वह जितना अच्छा होता है ठीक उतनी ही मात्रा में उसके अंदर बचपना और सरलता पायी जाती है। यदि आप शिक्षण करते हैं और जिस विषय को भी पढ़ाते हैं तो सौंदर्य का एक नया आसमान विद्यार्थियों को दिखाएँ। तब ही विषय में नवीनता और रुचि उत्पन्न होगी। अक्सर देखा जाता है कि शिक्षक परिचित विचार भाव और वस्तु को अपरिचित बनाने का प्रयास करते रहते हैं जो उचित नहीं है। आज कक्षा शिक्षण लोकतांत्रिक हो गया है इसमें 'चोर दरवाजे की बुनियाद नहीं डाली जानी चाहिए।' ज़मीर और ख़मीर की आवाज सुनकर ही फितरत को आइना दिखाया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि इंसानी उदारता और शराफत को कायम रखते हुए भी अपनी अलग राह निकाली जा सकती है। जैसे लोगों के साथ रहना और लोगों से अलग रहना। ये दोनों स्तर एक साथ और एक ही समय में संभव हैं।

5. बालक–बालिकाओं की दुनिया में प्रवेश करनाः– अमूर्त भाव, विचारों में शब्दों का रंग भरने पर वे सजीव और साकार हो उठते हैं और वहाँ भी जिंदगी साँस लेती दिखाई देने लगती है। जीवन को करीब से देखने पर ही व्यक्ति उसका आनंद उठा सकता है। खुशी बाँटने से बढ़ती है ऐसे ही गम भी बताने, कहने, प्रकट करने से घट जाता है। बदहाली में भी खुशहाली का अहसास जागने लगता है। जीवन का सौंदर्य सिर्फ रंगीनियाँ ही नहीं है। कवि, लेखक, साहित्यकार, सफल शिक्षक अपने पाठकों, श्रोताओं और विद्यार्थियों को अपनी भाव अनुभवी दुनिया में खींच लेता है। विद्यार्थियों की, बच्चों की दुनिया में प्रवेश करने वाला ही व्यक्ति शिक्षक होता है जो कि अपने समय से पहले ही पैदा हो जाता है। शिक्षक आज के लिए नहीं अपने ज्ञान और विवेक के बल पर वह भविष्य के लिए नई पीढ़ी का निर्माण करता है। तो वह तो अपने समय उसे पहले या वर्तमान समय से आगे होगा ही। शिक्षक साधारण मनुष्य की तरह रहने में गौरव का अनुभव करे और एक अन्वेषक के रूप में समाज के सामने आए। अपने युग की उपज होते हुए भी मनुष्य और तात्कालिक समाज को देखने की दृष्टि होनी चाहिए। यही उसका शिक्षक होने का बोलता हुआ सबूत है।

6. जो है उससे आगे विद्यार्थियों को आगे बढ़ानाः– शिक्षा और बाजार एक साथ नहीं चल सकते। इनके साथ चलने से ज्ञान के प्रवाह में बाधाएँ भी आती हैं। बाजार आम आदमी से शिक्षा के रिश्ते को तोड़ता है। प्रतियोगिता और व्यावसायिक आपाधापी के कारण जो एक बार मनुष्य के अंदर बैठ जाता है उसे हिलाना अत्यन्त कठिन है। मन मस्तिष्क में कई सतह बन गई हैं। भौतिकवादी दृष्टि से भी देखा जाए तो मनुष्य की आँखें अंदर की दुनिया की बजाय बाहर की दुनिया में अधिक खुलती हैं और देखती परखती भी हैं। जीवन प्रकृति प्रदत्त है शाश्वत है यह कभी भी न रुकता है और न ही कभी थकता है। ऐसे ही जीवन से जुड़े समस्त क्रियाकलाप अनवरत गति से निरंतर चलते रहते हैं। परन्तु फिर भी जीवन में मौत का साया अन्य सभी सायों से अधिक गहरा है। इसमें मनुष्य का संसार से अटूट रिश्ता टूटता है। जिसे हम सभी देखते हैं साकार और यादगार रूप में। यहाँ जीवन दर्शन दिखाई देता है। अब यदि जीवन पर विचार किया जाए तो स्पष्ट करना होगा कि कवि ने ऐसा क्यों लिखा? मध्यकालीन साहित्य में ऐसी अनेक कविताएं आती हैं। शब्दों के पीछे छिपे अर्थ को उद्‌घाटित करना शिक्षक का कार्य है। तत्कालीन युग, परिस्थितियों, कवि की मनःस्थिति को समझकर ही अर्थ का स्पष्टीकरण सम्भव है। नए और मौलिक विचारों की खोज कर विद्यार्थियों की समझ को विस्तार देना शिक्षण में ही सम्भव है। शिक्षण का कार्य है– 'जो है उससे आगे विद्यार्थियों को बढ़ाना।' मामूली चीजों को भी खोज लेना उसे आना चाहिए।

7. कालजीवी ही कालजयी होता हैः– जीवन और शिक्षण में एकता हो तो बहुत अच्छा है। वर्तमान में जीना अतीत और भविष्य की चिंताओं से मुक्त रहना एक उत्तम जीवन शैली की पहचान है। इसीलिए कहा जाता है कि– 'कालजीवी ही कालजयी होता है।' व्यक्ति का नाम और उसके द्वारा किए गए कार्य समाज पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। मनुष्य मार्केट कल्चर की चक्की में पीसा जा रहा है। अधिक सुख सुविधा भोगने की इच्छा इसी कल्चर ने उत्पन्न की है। विद्यार्थियों को इससे सचेत भी करना आवश्यक है। फितरत की चीजों से लगाव होता है। बाजार में दुकानों पर व्यापारी बैठे हुए ऐसे लगते हैं जैसे कि चोर कैदी बनकर बैठे हों। मार्केट कल्चर का प्रभाव समाज में बढ़ता जा रहा है। विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बोलबाला दिखाई देता है। जिनके प्रभाव से पिज्जा, बर्गर, पेप्सी जनसाधारण में अपनी पैठ और मजबूत बना रही हैं। साथ ही हम ककड़ी, खीरा, अचार, आम का पाना के प्रयोग को भूलते जा रहे हैं। यह कोई शुभ लक्षण नहीं है। सांस्कृतिक विरासत और उसकी पहचान बनी रहना जरूरी है। बाजारी संस्कृतिक के प्रभाव से समाज से स्वस्थ परम्पराएं लुप्त न हों। इसमें विद्यालयों और शिक्षकों की महत्ती भूमिका है। आज के चकाचौंध भरे नगर–महानगर के वातावरण में 'खीलों की खिलखिलाहट और दीप बत्तियों की झिलमिलाहट' भी दिखाई देनी चाहिए।

8. सफलता और अपने संघर्ष के हुनर को फैलाएंः– अतीत और वर्तमान, आधुनिक नए और परंपरागत के मध्य संतुलन होने पर ही स्वस्थ जीवन शैली का विकास संभव है। महान् विचारों, कहानियों, अनुभवों अपने विषय के कौशलों इत्यादि को अन्य विद्वानों शिक्षा प्रेमियों से साझा करना चाहिए। मूल्यवान विचारों सुझावों का प्रसार आवश्यक है। जीवन परिवर्तित करने वाले अनुभवों जैसे–'ध्यान की शक्ति', 'प्रातःकाल का भ्रमण', 'जीवन में समय का सदुपयोग', 'माता–पिता बड़े बुजुर्गों की सेवा' जैसे विषयों पर चर्चा की जानी आवश्यक है। अच्छा समाज बनता है अच्छी शिक्षा के प्रचार प्रसार से जिसमें समर्पित शिक्षकों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। जो बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं वे अपने विचार अनुभवों को फैलाएं जिनके प्रयोग से वे सफल होकर इस मुकाम तक पहुँचे है। यदि सफल हस्तियाँ अपने देश समाज की बेहतरी में योगदान करना चाहती हैं तो उन्हें अपनी सफलता के संघर्ष और हुनर को विमर्श के रूप में बांटना होगा। बाँटने से ही बेहतरी के लिए देश में समाज व्यापी परिवर्तन होंगे। अपने लक्ष्य का पीछा करते हुए अधिकारों के प्रयोग द्वारा ही

आगे बढ़ा जा सकता है।

9. नए और स्वस्थ विचारों को जन्म दें:– विवेक के जागरण और आधुनिक युग में अत्यंत आवश्यकता है ज्ञान और कौशल आधारित समाज सदा सम्पन्न देखा जा सकता है। परन्तु यह ज्ञान, विवेक मिलेगा कहाँ से इसे प्राप्त करने का रास्ता क्या है? यदि ज्ञान पाना है तो सच्चे मार्गदर्शकों की संगति, राह पकड़ लो। इनका साथ त्याग और परिश्रम की माँग करता है। मानव समाज की बहुमुखी प्रगति के लिए जहाँ बुद्धि की प्रधानता की माँग की जाती है वहीं गुणों का धारण करना भी अनिवार्य है। विश्व शांति समरसता के लिए संपूर्ण मनुष्य समाज के अंदर सद्‌गुणों का विकास भी निरंतर होना चाहिए। दूरदर्शन के विभिन्न चैनल संन्यास, त्याग, उपदेश, प्रवचन और दान का मार्केटिंग करते दिखाई देते हैं। भविष्य बताना, कष्ट निवारण के विभिन्न उपाय धन के बदले सुझाए जाते हैं। जिनके झाँसे में पढ़े लिखे भी आसानी से आ जाते हैं। ऐसी सोच समाज को अकर्मण्य बनाती है। स्वयंभू भौतिकवादी धर्मगुरुओं से सचेत करना शिक्षा और शिक्षकों की ही जिम्मेदारी है। स्वयं घोषित धर्मगुरु क्या स्वयं अच्छे इंसान बन पाए हैं? यदि नहीं तो फिर दूसरों को नैतिकता, सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाने का अधिकार किसने दिया और क्यों दे दिया। इस पर विचार किया जाना चाहिए। एक शिक्षक कितने वर्षों की कड़ी मेहनत से परीक्षाएं पास कर किसी संस्था की सरकारी या गैर सरकारी सेवा में आता है। कितने स्तर पर उसे अपनी योग्यता सिद्ध करनी पड़ती है यह हम सभी जानते हैं। ऐसे ही विभिन्न व्यवसायों के व्यक्ति हैं जैसे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर इत्यादि। लेकिन धर्मगुरु बनने के लिए कोई मापदंड नहीं है। समाज में शिक्षा के माध्यम से वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है। अंधविश्वास, जड़ता, धर्मभीरुता जैसे विचारों की आधुनिक युग में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। स्वस्थ सोच की नई पीढ़ी का निर्माण कक्षाओं में ही शिक्षकों के द्वारा संभव है अन्य कोई भी संस्था या व्यक्ति यह कार्य करने में सफल नहीं हो सकता। नए विचारों का जन्म स्वस्थ मानसिकता के शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा ही हो सकता है।

10. विद्यालय और शिक्षक दोनों ही छात्र–छात्राओं में प्रसन्नता जगाएँ:– जीवनोन्मुखी शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा स्वीकार की जाती है। जो आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, सदाचरण, राजनीति और कला की भी जननी है जिससे व्यक्तित्व पूर्णता को प्राप्त करता है। विद्यालय और शिक्षक दोनों ही विद्यार्थियों में प्रसन्नता जगाएँ। अभिभावकों के मन में भी यह विश्वास जगाएँ कि विद्यालय जीवन का सबसे अधिक रचनात्मक, सर्जनात्मक स्थल है जहाँ जीवन गढ़ा जाता है। स्वप्रेरित शिक्षक शिक्षिकाएँ ही शिक्षण में नए रुचिकर प्रयोग कर समाज की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हैं। विचारों का आदान–प्रदान मौलिक चिंतन शिक्षण को उन्नत बनाता है। कक्षा शिक्षण दंड के भय से मुक्त हो। शिक्षक का सामान्य लोक मनोविज्ञान का जानकार भी होना आवश्यक है इससे विद्यार्थी शिक्षण में रुचि लेने लगते हैं। उन्हें ऐसा अनुभव होता है कि हमारी रुचि और आस पास की बातें कक्षा में हो रही हैं और हम भी कक्षा शिक्षण का हिस्सा हैं। पहेलियाँ पूछना भी एक ऐसा ही रुचिकर प्रयोग है जो बच्चों में आई उदासीनता और नीरसता को खत्म कर देता है। सारे बच्चे एक्टिव हो जाते हैं सहज ढंग से ही। एक उदाहरण लीजिए– चार स्त्रियाँ रास्ते में एक साथ चली जा रही हैं उन्हें रास्ते में एक तरबूज बेचने वाला मिलता है वे चारों उससे तरबूज खरीद लेती हैं। तरबूज बेचने वाला उनसे पैसे माँगता है तो वे चारों अपने घर का पता बता देती हैं कि आकर पैसे ले जाना। उनके घरों का पता इस प्रकार है– पहली स्त्री कहती है– जहाँ घर में घर हो वहीं मेरा घर है। दूसरी स्त्री कहती है– जहाँ मुँह में घर हो वही मेरा घर है।

तीसरी स्त्री अपने घर का पता बताते हुए कहती है– जहाँ हाथ में घर हो वही मेरा घर है। चौथी स्त्री अपने घर के पते की सूचना देती हुई कहती है कि– जहाँ घर के पास घर हो वही मेरा घर है। विद्यार्थियों को सोचने विचारने का अवसर देकर पहेलियाँ का अर्थ स्पष्ट करना भी आवश्यक है। यथाः पहली पहेली–'जहाँ घर में घर हो'अर्थात मेरे घर के आँगन में नारियल का पेड़ है। दूसरी पहेली 'जहाँ मुँह में घर हो' अर्थात मेरे घर पान मिलता है पनवाड़ी का घर ही मेरा घर है। तीसरी पहेली– 'जहाँ हाथ में घर हो' अर्थात मेरे घर के आँगन में मेंहदी का पेड़/झाड़ी है। चौथी पहेली–'घर के पास घर हो' अर्थात् इत्र बेचने वाले घर के पास ही मेरा घर है।

11. ग्राम्य लोक जीवन अनुभव को साझा करें:– लोक जीवन से अपेक्षित बालक–बालिकाओं का जुड़ाव भाषा साहित्य शिक्षण के साथ–साथ अन्य विषयों से भी होना अपेक्षित है। सिल–बट्टा, ऊखल–मूसल, गाय–भैंस के गोबर से घर लीपना, रस्सी की चारपाई, उपले कण्डे खेतों में मचान बाँधकर फसल की रखवाली करना इत्यादि, कस्बों, नगरों और महानगरों में दिखाई नहीं देता। अतः हमारा नई पीढ़ी का शिक्षक और छात्र दोनों ही इन वस्तुओं से अपरिचित हैं। ऐसे ही नगर जीवन के भौतिक सुख–सुविधाओं के उपकरण सामान इत्यादि से गाँवों के विद्यार्थी परिचित होते। नगर और ग्रामीण जीवन, परम्पराओं और खानपान का ढंग वेशभूषा रहन–सहन का स्तर को जो अंतर है इसे भी दृष्टि में रखकर शिक्षण करना होगा। जब हम ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में जाकर देखते हैं तब हमें अंतर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। शिक्षक और विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों का भी दायित्व है कि वे अतीत वर्तमान और भविष्य में एक प्रगतिकामी संतुलन स्थापित करें। चित्र चार्ट पोस्टर और ग्रामीण अंचल के विभिन्न क्रियाकलापों की फिल्म बनाकर नगर जीवन के विद्यार्थियों को दिखाई जा सकती है। ऐसे ही नगर जीवन शैली को भी दिखाया जा सकता है। नगर के विद्यार्थियों को ग्रामीण अंचल का भ्रमण कराया जाए जिसमें खेत, खलिहान, पगडंडी, मचान, फसल बोना, काटना, पशुगाड़ी सहित वे गाँव के जीवन का दर्शन अपनी आँखों से कर सके। बालक–बालिकाएँ जीवन के स्तर, उसका अंतर स्वयं अनुभव करें वे जानें कि कम सुविधाओं के होते हुए कैसे जीवन को कलात्मक एवं सुरुचिपूर्ण ढंग से जिया जा सकता है। सिर्फ शिकायतें करते रहना और अधिक से अधिक सुविधा बटोरना स्वस्थ जीवन शैली का लक्षण नहीं है। शिक्षक ये सभी विचार स्पष्ट करें।

एसोसिएट प्रोफेसर
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.आर.टी.)
कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी मार्ग, अजमेर–305004
मो. 9549737800

अध्यापक क्या नहीं चाहते, क्यों नहीं चाहते?

❐ रूपनारायण काबरा

मास्टरजी क्या चाहते थे सभी जानते थे सरकार भी, समाज भी और शिक्षाधिकारी भी और इसकी पूर्ति हेतु सम्मेलन, हड़तालें, प्रदर्शन, काम रोको आंदोलन, धरने, अनशन सभी कुछ हुए और माँगे बस यही तो थीं कि वेतन बढ़े, भत्ता बढ़े तथा व्यावसायिक विकास की पूर्ति हो तथा समय पर पदोन्नति हो। आखिर सरकार को सुनना पड़ा और चाहत पूरी हुई और इस माँग पूर्ति से शिक्षण में और बोर्ड परीक्षा परिणामों में कितनी वृद्धि हुई या उन्नति हुई यह भी सब जानते ही है। पर अध्यापक जी क्या नहीं चाहते, ये है अन्दर की बात। यह उनका दूसरा मांग पत्र है, जो वे खुल कर नहीं कह सकते, पर रोज कहते जरूर हैं वाणी से नहीं व्यवहार से। मैंने स्वयं से तथा अन्य अनेकों से बात की। सुना और देखा भी। संक्षेप में उनकी 'नापसंदगी का माँग पत्र (अघोषित) यह हैः

डायरीः– डायरी भरना एक बोझा है। राष्ट्र निर्माण के कार्य में व्यस्त इसे भरने का समय कहाँ से निकाल पाएंगे। उसे अध्यापक के लिए कितना अध्ययन, कितनी तैयारी करनी पड़ती है, यह कोई सोच नहीं सकता। यदि डायरियों के नाम पर व्यर्थ हो रहे कागज का सदुपयोग किया जाए तो हजारों निर्धन बच्चों की कॉपियों का खर्च निकल सकता है। डायरी अध्यापक जी अपने लिये तो भरते नहीं, प्रधानाध्यापकजी के लिए भरते हैं, और प्रधानाध्यापकजी जिला शिक्षा अधिकारी जी चाहते हैं इसलिए भरवाते हैं और निदेशक जी के खातिर जिला शिक्षाधिकारी जी अब ऐसी थोपी गई चीज के लिए अरुचि स्वाभाविक ही तो है। यह अध्यापक ही 'फॅल्ट नीड' (महसूस की गई आवश्यकता) तो है नहीं।

परिवीक्षणः– परिवीक्षण चाहे प्रधानाध्यापकजी का हो या दलीय परिवीक्षण (जो अभी शायद कम हो गया है) भी अरुचिकर ही होता है। प्रधानाध्यापक जी संस्था प्रधान होने के नाते अपने को हर विषय में भी प्रधान ही समझते हैं और टाँग अड़ा देते हैं और कई महानुभाव तो छात्रों के समक्ष अपने ज्ञान प्रदर्शन हेतु बिचारे अध्यापक जी को हीन बना देते हैं, इसीलिये बुरा लगता है, परिवीक्षण। काश, कि अध्यापक स्वयं चाहने लगें कि कोई आकर उनका अध्यापन देखें, परखे और सराहे। पर यह तभी संभव है कि पूरी तैयारी, दिलचस्पी और मनोयोग से पढ़ाया जाए। और जब ऐसा नहीं है तो परिवीक्षण बुरा नहीं तो क्या अच्छा लगेगा?

व्यवस्थापन कालांशः– बड़ी मुश्किल से साधारणतया आठ कालांशों में से किसी को दो, तो किसी को एक कालांश रिक्त मिलता है, और उसको भी भर दिया जाए तो किसे बुरा नहीं लगेगा। अध्यापक इंसान है कोई फरिश्ता नहीं। क्यों नहीं व्यवस्थापन कालांशों की व्यवस्था पुस्तकालय, वाचनालय, खेलकूद, टी.वी. कम्प्यूटर लैब इत्यादि के माध्यम से कर ली जाए।

गृह परीक्षा का जाँच कार्यः– यह भी एक बड़ी आफत है। एक बार कक्षा 9 की जाँची हुई 100 उत्तर पुस्तिकाओं के पुनर्मूल्यांकन का निष्कर्ष सामने आया कि उत्तर पुस्तिकायें भयंकर लापरवाही से जाँची गई थी। शायद ही किसी उत्तर को पूरा पढ़ा गया हो। जाँच गलत, टोटल गलत, लिखावट गलत। यह सब क्यों? सभी को यह बेगार लगती है, बोझ लगता है, क्योंकि इसका पारिश्रमिक नहीं मिलता। इसको भी अतिरिक्त कार्य माना जाता है। और बोर्ड का कार्य तो बहुत सुस्त आदमी भी समय पर निपटा देता है और शायद ही उसमें कोई गलती हो। यह कुशलता पारिश्रमिक से आती है। आज का मानस सीधा पैसे से जुड़ा है, इस तथ्य को आप आदर्शों एवं अपेक्षाओं से दबा नहीं सकते।

गृहकार्य जाँचनाः– शिक्षण के साथ-साथ गृहकार्य की जाँच का भी अपना विशिष्ट महत्त्व है, पर आज का अध्यापक कॉपियाँ घर पर नहीं जाँच सकता। एक तो कॉपियों की संख्या, उनका बोझा, इतना कार्य आसान नहीं। घर पर दो-चार बच्चे पढ़ाए या कॉपियाँ जाँचे। स्कूल में जितनी जाँच सकता है, जाँच देता है। हारा-थका खाली पीरियड में कुछ हँस बोल लेता है, तो जाँचना क्या जी, यदि होमवर्क कापियों पर हस्ताक्षर हो जाएं वही बहुत और अंग्रेजी अध्यापक तो जाँच कार्य पूरी तरह कर ही नहीं सकता। शिक्षण का इतना बोझ रहते हुए तो गृहकार्य की जाँच अरुचिकर रहेगी ही। जितनी थकान पढ़ाने में नहीं आती उससे दस गुनी थकान अंग्रेजी की कापियाँ जाँचने में आती है। प्रधानाध्यापक जी तो इन दुःखों को न समझ पाते न सहानुभूति दिखाते।

छुट्टी के लिये इनकारीः–कई प्रधानाध्यापक जी को छुट्टी से इनकार करने का शौक रहता है। वे चाहते हैं कि अध्यापक उनकी मिन्नत करें, निवेदन करें, उनका एहसास मानें। सच वाकया है कि एक प्रधानाध्यापकजी ने छुट्टी इसलिये मंजूर नहीं की क्योंकि अध्यापक जी ने प्रार्थनापत्र में परम्परागत संबोधन 'सेवा में.. सादर निवेदन है कि...' नहीं प्रयोग किये थे, सीधी सपाट दरख्वास्त लिख दी थी। तनख्वाह में तो एक पैसा भी वे मर्जी से बढ़ा नहीं सकते, इसलिये रौब जमाने, मेहरबानी दिखाने का ले-देकर यह छुट्टी देना ही उनका अधिकार है। यह ठीक है कि अध्यापक अपनी ही छुट्टियां लेता है जिनकी संख्या सीमित होती है, इसके लिये भी जी-हुजूरी क्यों करें? हाँ, कभी विद्यालय के हित में, सत्रान्त में, परीक्षा के दिनों में जबकि उस समय काम ज्यादा होता है और लोग बची हुई छुट्टियों का सदुपयोग करना चाहते हैं।

जल्दी जाना और देर से आनाः– ग्रामीण क्षेत्रों की स्कूलों में तो यह भी अलिखित अधिकार सा है। मना करने पर असहयोग कई रूपों में प्रदर्शित होगा। बिचारे अध्यापक जी को परिवार तो संभालना ही है, उनसे सहानुभूति कोई नहीं रखता, सब समय की पाबन्दी और अनुशासन की बात करते है।

प्रयोग एवं प्रायोजनाः–इसे अध्यापक प्रायः धूतक मानते हैं, समय की बर्बादी मानते है, इनका प्रभाव भी अस्पष्ट बताते हैं। इसके लिये परिश्रम भी करना पड़ता है, समय भी देना पड़ता है, योग्य अध्यापक अन्य क्षेत्रों में चले जाते हैं। यदि इन कार्यक्रमों की उपलब्धियों को मानदेय से जोड़ दिया जाए तो चेतना की लहर जाग उठेगी।

(शेष पृष्ठ 44 पर)

शिक्षा प्रयोजनशीलता : शिक्षक सरोकार

❒ पी.डी. सिंह

शिक्षा मानव जीवन की प्रथम आवश्यकता है। सुखी सम्पन्न जीवन का आधार शिक्षा है। जीविकोपार्जन और जीवन को सही सार्थक, सोद्धेश्य ढंग से जीने का आधार शिक्षा ही तो है। मानव की सर्वांगीण प्रगति का आधार शिक्षा है। शिक्षा जीवन को दिशा देती है और जीवन को अर्थ प्रदान करती है। यह चिन्तन-मनन की गति और प्रभाव प्रदान करती है, सृजनशीलता को प्रस्फुटित करती है और मानव के विवेक को जाग्रत करती है। इसका प्रभाव न केवल व्यक्ति अपितु समाज एवं राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति पर भी पड़ता है।

आज का विद्यार्थी उद्धेश्यपूर्ण स्कूली कार्यक्रम की उपेक्षा करता है और इसके लिए आवाज भी उठाता है। विद्यार्थियों को शिक्षा अर्थात विद्यालय जाने का प्रयोजन ही स्पष्ट नहीं है। यह प्रयास होना चाहिए कि हर स्तर पर शिक्षा अपने में पूर्ण हो अर्थात् बालक के समग्र विकास के कार्यक्रम को लेकर चले।

आज शिक्षा का मूल प्रयोजन रह गया है होड़ अर्थात् प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्द्धा। आज की शिक्षा जीवन की तैयारी हेतु साधना, सावधानी, समर्पण और धैर्य का रास्ता अपनाने की बजाय प्रतिस्पर्द्धा का मार्ग अपनाती है और इसी में शिक्षक-शिक्षार्थी उलझे रहते है। पाठ्यक्रम, परीक्षा और प्रतियोगिता बस इसी में सिमट कर रह गई है शिक्षा। वस्तुतः शिक्षण कार्य अर्थात् विद्यालयी शिक्षा एकांगी प्रक्रिया नहीं है। वैसे तो समग्र वातावरण एवं परिवेश तथा समाज, सभी अनौपचारिक रूप से कुछ न कुछ सिखाते ही रहते हैं पर शिक्षा के मुख्य घटक हैं शिक्षा का ढाँचा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी। इन तीनों में तादात्म्य एवं तालमेल आवश्यक है। शिक्षा के नियामकों, नियोजकों एवं आयोजकों का दायित्व है कि वे पाठ्यक्रम ऐसा बनाएं जो शिक्षार्थी की व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति कर सके। ऐसे शिक्षक प्रशिक्षित करें जो शिक्षा के व्यापक उद्धेश्य की सम्पूर्ति को समर्पित हों। इन तीनों घटकों अर्थात् शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी में परस्पर संवाद एवं विमर्श आवश्यक है अर्थात् यदि शिक्षा की संरचना एवं क्रियान्विति में इन घटकों में पारस्परिक संवाद न हो तो वह व्यवस्था अपूर्ण होगी तथा आवश्यक संतोष नहीं दे सकेगी। हम शिक्षा की गुणवत्ता, सार्थकता एवं उपादेयता के बारे में सोचते ही नहीं, बस लीक के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम में थोड़े-बहुत परिवर्तन को ही हम शिक्षा सुधार मान लेते हैं।

क्या शिक्षार्थी, शिक्षक एवं अभिभावकों ने यह प्रश्न किया है कि दी गयी शिक्षा का प्रभाव वांछित है कि नहीं। क्या यह शिक्षा शिक्षार्थियों के जीवनक्रम एवं चिन्तन को सार्थक दिशा दे पा रही है? क्या यह शिक्षा व्यक्तित्व के समग्र निर्माण में अपनी कोई भूमिका निभा रही है? क्या हमारे द्वारा शिक्षित एवं दीक्षित छात्र जीवन के संघर्ष में जूझने की सामर्थ्य रखते हैं, क्या शिक्षार्थियों ने जीवन स्तर का समग्र उन्नयन सीख लिया है? यदि ऐसा नहीं है तो हमारी शिक्षा प्रक्रिया अधूरी है। यह सत्य है कि यदि हम शिक्षा का ध्येय संस्कारित होना मानते हैं तो हमें निराश ही होना पड़ेगा क्योंकि इस दिशा में हम पिछड़ते चले जा रहे हैं।

हम 21वीं सदी के लिए अपने आपको तैयार करने की बातें कर रहे है। हमारे राजनेता एवं शिक्षाविद् सभी यही मानने लगे हैं कि शिक्षा में कम्प्यूटर, टी.वी., इंटरनेट एवं अन्य आधुनिक उपकरणों के प्रयोग से हम अपनी शिक्षा को अप टू डेट करने की दिशा में बढ़ सकते हैं। शिक्षार्थी भी यही सोचता है पर ये सब भ्रान्ति में ही हैं। विकसित देशों में जहाँ शिक्षा के लिए अत्याधुनिक भवन, तकनीक एवं उपकरण हैं तथा प्रचुर साधन-सुविधाएँ है वहाँ भी रंगभेद की मानसिकता, बढ़ते हुए अपराध, स्वच्छंद यौनाचार, अश्लील साहित्य, पारिवारिक विघटन एवं हिंसा की प्रवृत्तियाँ बढ़ने लगी है। भारतीय समाज में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, जाति भेद, सामाजिक हिंसा, अनुशासनहीनता एवं अनैतिकता को क्या हम आधुनिक मानसिकता एवं प्रगतिवाद का पर्याय मान सकते है, एक ओर तो हम आधुनिकता को प्रगति मानते है और दूसरी ओर हमारी इंसानियत गिरती जा रही है, आखिर क्यों, क्यों हम दिनों-दिन पाशविकता की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं? इस संदर्भ में हमें और गौर करना होगा कि शिक्षा में ऐसी क्या कमी है जो हम मूल्यविहीन होते जा रहे हैं?

आज शिक्षक-शिक्षार्थी के बीच फासला बढ़ता जा रहा है। गुरु का गुरुत्व लुप्तप्राय होता जा रहा है। वह 'फ्रेंड-फिलॉसफर-गाइड' नहीं है। शिक्षक केवल वेतनभोगी बनकर रह गया है, छात्र उसकी कर्तव्यशीलता का केन्द्र नहीं है और छात्र भी परीक्षा में प्राप्त अंकों पर ही केन्द्रित है, तभी तो वह साक्षात् शिक्षक के होते हुए भी कुंजियों, गाइड्स, कोचिंग एवं ट्यूशन का सहारा लेता है। गुरु के प्रति एक अस्वीकृति भाव सा है। शिक्षक को वह मात्र एक औपचारिक आवश्यकता ही समझता है। श्रद्धा तो लुप्त होती जा रही है, उच्छृंखलता बढ़ती जा रही है। शिक्षक से नहीं पढ़ने का भाव अधिक पनप रहा है। शिक्षक भी अर्थलोलुप होकर छात्र को अपने शिक्षण से संतुष्ट नहीं करता है और अपने व्यवसाय को एक साधन मात्र मानता है।

शिक्षा परिवर्तन का माध्यम है। ऐसा परिवर्तन जो श्रेष्ठ विचारों को संजोए तथा कूड़ा-करकट बाहर करे, साथ ही अपनी परम्परा के स्थाई तत्वों को वर्तमान से जोड़ सके। यह सही है कि शिक्षा का सामाजिक महत्त्व इसी में है कि कोई भी समाज शिक्षा के माध्यम से अपने विकास की दिशा को निर्धारित कर सकता है पर हमें यह देखना होगा कि हमारी शिक्षा प्रक्रिया, शैक्षिक संरचना तथा प्रगति में क्या सम्बन्ध है? एक संस्कारित प्रगतिशील आधुनिक समाज में शिक्षा का उद्देश्य संस्कृति को संचारित करना ही नहीं बल्कि अनुभव, ज्ञान व विज्ञान के माध्यम से उसकी संरचना करना भी है ताकि वह समाज के सभी वर्गों को एक सम्पूर्ण जीवन जीने की क्षमता प्रदान कर सके। यह तभी संभव है

जबकि छात्रों को भाषा व ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण के साथ-साथ कला-कौशल का भी प्रशिक्षण मिले व उनमें समतावादी दृष्टिकोण का विकास हो। खेलकूद, नृत्य, नाटक, भ्रमण, पर्वतारोहण, समाज सेवा आदि द्वारा छात्रों में श्रमनिष्ठा, सहयोग, सद्भाव, उत्तरदायित्व की भावना, आत्म विश्वास अनुशासन-प्रियता उत्पन्न की जा सकती है। इससे उनके जीवन में रुचि बढ़ेगी एवं रचनात्मक कार्यों से सम्मान बढ़ेगा। वैश्विक सभ्यता की ओर बढ़ते वातावरण में सम्प्रेषण कौशल एवं कलात्मक अभिव्यक्ति का भी अपना विशिष्ट स्थान है।

शिक्षार्थी के भावी जीवन के संदर्भ में आज सभी कहते हैं कि शिक्षा नए समाज के अनुरुप हो, भविष्योन्मुखी हो, दकियानूसी न हो, आधुनिक हो, गतिमान हो, पर क्या हमारा तथाकथित पाठ्यक्रम इन लक्ष्यों पर केन्द्रित है? पिछले कई वर्षो से शिक्षा को लेकर एक व्यापक असंतोष छाया हुआ है और इसीलिए लोग शिक्षा में आमूल परिवर्तन की बात कर रहे हैं।

शिक्षा मनुष्य की प्रकृति को प्रयत्नपूर्वक निश्चित दिशा में ले जाने का प्रयास है, शिक्षक इसका अभिकर्ता है एवं विद्यार्थी साध्य है ही। शिक्षा की संरचना अर्थात् पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथ में विकास के लिए एक टूल है, एक माध्यम है दिशा है, लेकिन इसे कुशलता पूर्वक काम में लेना शिक्षक की कला है। शिक्षक के अध्यापन का विषय कुछ भी हो लेकिन उसके अध्ययन का प्रथम विषय है बालक। जो शिक्षक बालक को अर्थात् शिक्षार्थी को नहीं पढ़ते, नहीं जानते, नहीं पहचानते। वे केवल परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम की पूर्ति करते है। शिक्षार्थी का समग्र चिन्तन उसका अध्ययन बिन्दु नहीं है। शिक्षक का अस्तित्व, कृतित्व एवं महत्व तो वस्तुतः शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास में ही है। समाज अपनी सबसे अमूल्य धरोहर अपनी संतति को शिक्षक को सौंप देता है। शिक्षक का तो शिक्षार्थी से सीधा सरोकार है। जिस तरह नारी की पूर्णता मातृत्व में है उसी प्रकार शिक्षक की पूर्णता शिष्य के सम्यक् विकास में है क्योंकि शिक्षण तो सजीव से सजीव को एक सार्थक सम्प्रेषण है। आज परीक्षा में प्राप्त अंक ही सब कुछ हो गए हैं। इन्हीं पर मेरिट, भावी शिक्षा, छात्रवृत्ति तथा कैरियर सभी कुछ आधारित है। जीवनोपयोगी सभी कुछ गौण एवं उपेक्षित हो गया है। इसीलिए डॉक्टर, इंजीनियर एवं तकनीशियन तो खूब पैदा हो रहे हैं पर इन्सानों की फसल को कीड़ा लग गया है, पर्यावरण प्रदूषित हो गया है, राष्ट्र की अस्मिता सिसकने लगी है। विद्यालय मात्र कोचिंग इन्स्टीट्यूट बनकर रह गए हैं जहाँ शिक्षा बिकती है। हमारे पाठ्यक्रम को मूल्य-आधारित, क्रिया-आधारित तथा पर्यावरण-आधारित होना ही है ताकि राष्ट्रीय चरित्र का विकास हो, जीवन मूल्यों में आस्था हो तथा करके सीखने, स्वावलंबी होने, गतिमान होने तथा परिवेश से जुड़ने की शिक्षा मिल सके।

वर्तमान शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी पर बिना उसकी मानसिकता और विशिष्ट गुणों को पहचाने सभी पर एक अनिवार्य, अरुचिकर अनावश्यक पाठ्यक्रम थोप देती है और परिणाम होता है असंतुष्ट एवं खीझ भरे विद्यार्थी। हमारे पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी की अपनी विशिष्टता की तलाश नहीं है।

शिक्षा के समक्ष एक चुनौती है कि आने वाली विषम और जटिल दुनिया में रहने के लिए सक्षम पीढ़ी तैयार करे और यह दायित्व शिक्षा के साथ ही शिक्षक का भी है। शिक्षक को शिक्षार्थी के समग्र विकास के अपने मुख्य कर्तव्य के प्रति जागरूक, चेतन एवं क्रियाशील होना है, इसी में शिक्षक की सम्यक् एवं सार्थक परिणति है और यही अभीष्ट है। अन्त में श्री मुनि विजयराज के शब्दों में यही कहना चाहूँगा कि 'शिक्षा जीवन का विकास है, जीवन का प्रकाश है। शिक्षा जीवन को सजाती है, संवारती है, जीवन को महिमा-मंडित करती है। यदि शिक्षित व्यक्ति भी बुराइयों के दलदल में फंसता है, अपराधीकरण के जाल बुनता है, मादकता के सागर में डूबता है तो आज की शिक्षा पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक ही है और शिक्षा की प्रयोजनशीलता से सीधा सरोकार है शिक्षक का। उसी के व्यक्तित्व, निष्ठा, प्रभावित एवं दायित्व बोध में ही समाहित है शिक्षा के समग्र लक्ष्य की सम्प्राप्ति'

निदेशक
टैगोर पब्लिक स्कूल,
शास्त्री नगर, जयपुर-302016
मो. 9829014513

विद्यालय की घण्टी

❐ प्रदीप कुमार माथुर

बुला रही विद्यालय की घण्टी,
आओ, आओ, बच्चों आओ।
आकर ज्ञान का दीप जलाओ,
अज्ञान तिमिर भगाओ,
जागो जग को शीघ्र जगाओ।
अज्ञान है एक अभिशाप,
अज्ञान का है यह पाप।
अन्धविश्वास, कुप्रथाएँ,
भ्रष्टाचार, बाल-विवाह का प्रबल-
प्रवाह,
दहेज से नहीं इसे परहेज।
अफवाहों का यह तूफान,
क्रोध, प्रतिशोध का बढ़ा देता उफान।
ना समझी नादानी, जड़ता से
रखता है यह प्रगाढ़ता।
इस विषवृक्ष को तुम्हें जड़ से उखाड़ना,
सरकार भी कर रही है प्रयास,
शिक्षा आपके द्वार शिक्षा का अधिकार,
की है दरकार सबके लिए शिक्षा के
लिए,
चल रही है सतत शिक्षा।
सुस्ती छोड़ो भागो दौड़ो,
आलस्य छोड़ो तन्द्रा तोड़ो,
आओ आओ जागो और जग को
जगाओ,
समाज, देश को प्रगति के पथ पर,
आगे बढ़ाओ।
अब तुम पढ़ो और सबको पढ़ाओ,
अपने कदम आगे बढ़ाओ।

व्याख्याता
रा.उ.मा. विद्यालय, सवीनाखेड़ा,
उदयपुर (राज.)-313001
मो. 9660591611

शिक्षण की बेहतरी : अनर्गल सवाल

❒ डॉ. मूलचन्द बोहरा

प्राची कक्षा 10 में पढ़ती है। वह अक्सर सवाल-जवाब करने हेतु उतावली रहती है। यूं ही एक दिन कक्षा में गणित शिक्षिका द्विघाती समीकरण का एक सवाल समझा रही थी। वे इस समीकरण को समझाने की कोशिश पहले भी कई दफा कर चुकी थीं, पर छात्राएं इसे समझने में बार-बार नाकाम हो रही थीं। इसी दरम्यान प्राची बोल पड़ी- 'मैडम जी! हमारी बुक में कई पंक्तियां ऐसी हैं, जिनके बीच-बीच में खाली स्थान है.....। ऐसा क्यों है? मैडम जी!' मैडम जी अकस्मात् दागे गए इस सवाल से झुंझला उठती हैं- 'अनर्गल सवाल। तभी तो तुम इसे हल नहीं कर पा रही हो।' मैडम जी की डाँट सुनकर प्राची सकपकाकर बैठ जाती है। पूरी कक्षा हा..हा..ही..ही करने लगती है।

यह एक दृश्य है। इस प्रकार के और भी दृश्य हो सकते हैं जिसमें सवाल-जवाब को लेकर इस तरह का नकारात्मक माहौल बनता है। दरअसल सवाल-जवाब की खुबसूरत दुनिया आज की नहीं है। बरसों पहले यूनान में सुकरात ने सवाल-जवाब को शिक्षण के दौरान अपनाने की बात की है। उनकी आगे की पीढ़ी में प्रेसे, स्किनर, क्राउडर, गिलबर्ट आदि ने अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण प्रणाली में इसी शैली की बात करते हैं।

भारतीय परंपरा में वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि में यही शैली अपनाई गई है। शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य, भरद्वाज, कागभुशुण्डि, गरुड़, शुकदेव, परीक्षित, संवाद वर्णन इसी शैली के है। यह तो रही परंपरा की बात। यहाँ हमारा समीक्ष्य विषय है : सवाल की अनर्गलता।

क्या सवाल विषय से जुड़े ही हो सकते है? क्या उन्हें विषय से थोड़ा बहुत भी इधर-उधर नहीं किया जा सकता है? अगर शिक्षक को सवाल का जवाब मालूम हो, तो क्या सवाल का जवाब तत्काल देने में कोई हानि है? क्या प्रश्नकर्त्ता की मनःस्थिति को टटोला जाना ठीक नहीं होगा? वह विषय से इतर सवाल सहजता से जिज्ञासावश पूछ रहा है/रही है? या कक्षा को डिस्टर्ब करने के लिए पूछ रहा है/रही है।

क्या बिना कारण जाने प्रश्नकर्त्ता को झिड़क देना ठीक है? इससे उसमें नकारात्मकता तो नहीं आ जाएगी? इन्हीं सवालों की रोशनी में हम शिक्षक की बेहतरी : अनर्गल सवाल के विषय को समझने का प्रयास करते है।

हम सबसे पहले अनर्गल शब्द को देखते हैं। अनर्गल संस्कृत भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ है- कुंडी/कुंडा, सिटकनी, ताला लगाने का स्थान। राजस्थानी भाषा में इसे भोगल कहते हैं। पश्चिमी देहाती राजस्थान में इससे अरली शब्द बना है। यह 'अरली' मुख्य दरवाजे पर मोटी लकड़ी के रूप में लगनी होती है। कहने का आशय यह है कि इस शब्द का प्रयोग सभी जगह नियंत्रण या बंदिश के अर्थ में हुआ है। जाहिर है अनर्गल का प्रयोग बेरोक, निर्बाध, स्वेच्छाचारिता या अनियंत्रण के अर्थ में हुआ है। दुर्भाग्य की बात है-विशेष्य शब्द 'सवाल' के विशेषण रूप में अनर्गल शब्द का प्रयोग नकारात्मक अर्थ में ही हुआ है। इसे विषय से इतरता, अनुशासनहीनता, स्वेच्छाचारिता आदि से जोड़कर देखा गया है। जिसमें कमोबेश अधिगमकर्त्ता को ही दोषी समझा गया है।

गौर करें, इस वक्त देश के बच्चों में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति आस्था का भाव जगाना सबसे ज्यादा जरूरी है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति की पहली माँग है। अतः इस लिहाज से बच्चों पर रोक-टोक लगाना उचित नहीं है। रोकटोक होने पर वे अपनी सहज जिज्ञासाओं का शमन नहीं कर पाएंगे और धीरे-धीरे कुंठित होकर समाज में कुसमायोजन का शिकार हो जाएंगे। अतः जरूरी है कि उन्हें सवाल पूछने के अधिक से अधिक मौके दिए जाएं। उन्हें सवाल की अनर्गलता के नाम पर बोलने/पूछने से न रोकें।

हालांकि कई बार अनर्गल सवालों से शिक्षण बाधित होने की संभावना बन जाती है, परन्तु अच्छा शिक्षक इस संभावना से बच सकता है। वह शिक्षण के आखिरी 10 मिनट में इस तरह के प्रश्नों पर, खुलकर उन से अलग से बात कर सकता है। खाली कालांश में शिक्षक उन से अलग से बात कर सकता है। अगर पहले से ही सवालों पर अनर्गलता का तमगा लगाकर उन से बचने का प्रयास किया जाता है, तो यह बच्चों के शैक्षिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होगा।

प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री रिचर्ड फिनमैन ने स्वयं स्वीकार किया है कि उनकी सफलता के पीछे एक सवाल है, जो रोज माँ घर पहुँचने पर पूछा करती थी-'स्कूल में आज तुमने क्या पूछा?' अब जरा सोचिए फिनमैन को अगर सवाल करने से शुरू में ही रोक दिया जाता, तो वह भौतिक विज्ञान के सहारे देश-दुनिया का इतना भला कैसे कर पाता?

अक्सर ऐसा देखा गया है कि बच्चों के बीच-बीच में प्रश्न पूछने पर शिक्षक कहता है- 'पीरियड के बाद पूछ लेना।' पर प्रायः ऐसा हकीकत में हो नहीं पाता है। एक पीरियड खत्म। अगला पीरियड शुरु। अगला विषय अगली मैडम जी। बात आई और गई। दो चार दफा यही प्रक्रिया दुहराई जाने पर शनैःशनैः बच्चे का जिज्ञासु मन कुंद होने लगता है। वह भी अन्य बच्चों की तरह तथाकथित मौन की मुख्यधारा में चल पड़ता है। इससे बच्चे की सर्जनशीलता बुरी तरह प्रभावित होती है। और एक उभरती हुई प्रतिभा का निखरने से पहले ही दम घुट जाता है। शिक्षण के लिहाज से यह स्थिति बहुत खतरनाक है।

प्रायः देखने में आता है कि कक्षा में दो चार ऐसे बच्चे होते हैं, जिन्हें कोई न कोई सवाल पूछना ही होता है। अगर उन्हें सवाल पूछने से रोका जाता है, तो वे उस रोक का कोई न कोई तोड़ ढूँढ लेते हैं। वे कोई अन्य कारनामा कर अपना प्रतिकार जरूर जतलाते हैं-यथा दरी, फर्नीचर, बिजली उपकरण को नुकसान पहुँचा कर।

इस तरह के बच्चे प्रायः दूसरों का ध्यान खींचने के लिए ऐसा करते हैं। वे किन्ही कारणों से घर और स्कूल में दोनों जगह 'अननोटिस्ड' रह जाते हैं। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप वे प्रायः प्रश्नों का सहारा लेते है।

शिक्षक का दायित्व बनता है कि वह बच्चे की इस स्थिति का गहराई से आकलन करें और उसे कक्षा में पूरी तवज्जो दे। इससे वह भी अन्य बच्चों की तरह स्वाभाविक शिक्षण में संलग्न हो सकेगा।

अनर्गल सवाल पूछने का एक कारण कक्षा की बोरियत भी है। कई बार शिक्षक/शिक्षिका शिक्षण के दौरान उसमें बच्चों की सक्रियता नहीं रहती। इस कारण बच्चे बोर हो जाते है। चूँकि बच्चे जन्मजात क्रियाशील होते हैं। अतः उन्हें तो कुछ न कुछ काम करना होता है। वे बोरियत कम करने के लिए अपनी ओर से शिक्षक/शिक्षिका पर सवाल दागना शुरू कर देते है। सवालों की बौछार से शिक्षक हड़बड़ा जाता है। उस समय शिक्षक को धीरज रखने की जरूरत होती है। उसे चाहिए कि वह बच्चों को डाँट-फटकार न लगाए, बल्कि यह समझने की कोशिश करे कि बच्चों ने ऐसा क्यों किया? जवाब उसे खुद-ब-खुद मिल जाएगा। यह जवाब ही उसके शिक्षण को और बेहतर बना पाएगा।

देखने में आता है कि मात्र शिक्षक ही आकलन-मूल्यांकन नहीं करते अपितु बच्चे भी ऐसा करते हैं और वे भी शिक्षक की पूरी नाप जोख करते हैं। यदि बच्चे देखते हैं कि शिक्षक जितना जानता नहीं है, उससे भी बड़ी-बड़ी डींग हाँक रहा है। तो बच्चे अक्सर ऐसे प्रश्न पूछने शुरू कर देते हैं, जिनके जवाब देना शिक्षक के बूते में नहीं रहता। उदाहरण के तौर पर शब्दकोश में ऐसे-ऐसे शब्द छाँटना, जिनका अर्थ जटिल है और अब जन साधारण के प्रचलन से बाहर है, उनका अर्थ शिक्षक से पूछते हैं। जाहिर है, हरेक को भाषा के सभी शब्दों का अर्थ ज्ञान हो, ऐसा जरूरी नहीं है, और वे सही अर्थ नहीं बता पाते। कई बार उतावले शिक्षक गलत-सलत उत्तर बताकर अपने आपको सुपर मानने-मनवाने की गलती कर बैठते हैं। फिर वे बच्चों के बीच उपहास के पात्र बन जाते हैं। शिक्षक में यह समझ विकसित होनी जरूरी है कि न जानना उतना बुरा नहीं है, जितना कि गलत जानना। यह समझ सवाल की अनर्गलता को सही दिशा देने में समझ बन सकती है।

सवाल-जवाब की निर्बाध प्रक्रिया अपनाने के कई फायदे है। पहला इससे बच्चे की शैक्षिक लब्धि स्तर को जाँचा-परखा जा सकता है। दूसरा, इससे बच्चे की मनः स्थिति का ठीक-ठीक पता लगाया जा सकता है। बच्चा जानबूझकर ऐसा कर रहा है या जिज्ञासावश। इसको जाना जा सकता है। तीसरा, बच्चे के पारिवारिक माहौल के बारे में शुरुआती जानकारी हासिल की जा सकती है। कुछ ऐसा-वैसा लगे, तो डिटेल में जाकर जानकारी को पुख्ता किया जा सकता है। चौथा, समय पर सटीक उत्तर पाकर प्रश्नकर्त्ता आनंद का आस्वादन करता है, जो उत्तम जीवन और उत्तम शिक्षण दोनों के लिए बेहद जरूरी है। इसके अलावा की कई बातें और गिनाई जा सकती है जो सवाल-जवाब की निर्बाधता की पक्षधर हो, पर एक बात जरूरी और आखिरी। किसी भी सूरत में सवाल की अनर्गलता के नाम पर अधिगमकर्त्ता को सवाल पूछने से कदापि... कदापि न रोका जाए। रोको मत, रोको मत कहने दो, कहने दो। बस कहने दो।

प्रधानाचार्य
रा.आदर्श उच्च मा. विद्यालय,
सियाणा (कोलायत), बीकानेर
मो. 8003801094

(पृष्ठ 40 का शेष भाग)

और इन सब माँगों का आधार है विद्यालय के प्रति लगाव न होना तथा कर्तव्य एवं श्रम से पलायन। अधिकार और कर्तव्य में तादात्म्य नहीं होता। अधिकांश अध्यापक तो विद्यालय को अपना समझने की गलती करते ही नहीं, यदि कर भी बैठते हैं तो प्रधानाध्यापक उन्हें हतोत्साहित कर देते हैं यह कहकर कि, 'अरे भाई, विद्यालय के विकास की सोचने वाले तो हम ही बहुत हैं, आप क्यों परेशान होते हैं।'

हाँ, शिक्षाविद् डॉ. के.जी. सैयदन साहब की यह बात तो सच है कि यदि अध्यापक उदासीन एवं असंतुष्ट बने रहते हैं, छात्र नाराज एवं विक्षुब्ध हैं तथा शिक्षा अधिकारी अपनी शोभावान कुर्सियों से चिपके रहते हैं या अपने दायित्व को बारी-बारी से टालते रहते हैं तो दर्जनों प्रस्ताव एवं आयोगों के प्रतिवेदन भी अपना कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाएंगे।

ए-438, किशोर कुटीर
वैशाली नगर, जयपुर-302021
मो. 08233360830

काल करे सो आज कर

एक दिन दरबार खत्म होने पर धर्मराज युधिष्ठिर अपने भाइयों तथा पत्नी द्रौपदी के साथ वार्तालाप कर रहे थे तभी द्वारपाल ने आकर सूचना दी कि कोई दो अतिथि मिलना चाहते हैं। युधिष्ठिर ने द्वारपाल से उन्हें दूसरे दिन आने को कहा। यह देखकर भीम वहाँ से उठ कर चले गये और राजमहल के पास लगे विशाल घण्टे को बजाने लगे। किसी को कोई आश्चर्यजनक बात दिखाई दे, तभी वह घण्टा बजाया जाता था।

भीम स्वयं विशालकाय और घण्टा भी विशाल आकार का और भीम उसे जोर-जोर से बजा रहे थे। कर्कश आवाज से सबके कान दहल गए। तब युधिष्ठिर ने भीम को घण्टा बजाने का कारण पूछा। इस पर भीम वहाँ आए हुए नागरिकों को सम्बोधित कर बोले, ''ए प्रजाजनों! हमारे राजा तो यमराज से भी श्रेष्ठ हो गए हैं।''

''क्या कह रहे हो, भीम? साफ-साफ क्यों नहीं कहते?''

भीम ने उत्तर दिया, ''महाराज, अभी-अभी आपने दो अतिथियों को कल आने के लिए कहा है। इसका यह अर्थ हुआ कि आपको पूरा विश्वास है कि आप कल जीवित रहेंगे, जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य को बिल्कुल भरोसा नहीं है कि दूसरे दिन क्या घटित होने वाला है। आपका उन्हें कल बुलाना यह सूचित करता है कि आप अवश्य ही कल इस भूतल पर रहेंगे।''

धर्मराज को अपनी गलती महसूस हुई। उसी समय उन दोनों अतिथियों को बुलाकर उनसे भेंट की।

संकलन : **रमेश कुमार व्यास**
प्रकाशन सहायक
'शिविरा' राजस्थान, बीकानेर
मो. 9214829968

बाल साहित्य कैसा हो?

❒ मईनुदीन कोहरी

ऐसा सृजन जो बच्चों को दृष्टि में रखकर लिखा जाता है; बाल साहित्य कहलाता है। बच्चों की प्रकृति बड़ों से भिन्न होती है। बाल साहित्य में बच्चों की आकांक्षाओं को केन्द्र में रखकर लिखा जाता है। बाल साहित्य बच्चों में ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ कल्पना शक्ति को भी जगाता है।

सौभाग्य की बात है कि अब बाल साहित्य का सभी भाषाओं में सृजन होने लगा है तथा वर्तमान में बाल साहित्य की आवश्यकता को भी अंगीकार किया जाने लगा है। बाल मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बालकों के बौद्धिक और चारित्रिक विकास के लिए स्वस्थ एवं उत्तम साहित्य की नितान्त आवश्यकता है।

अब प्रश्न ये उठता है कि 'बाल साहित्य कैसा हो?' इस बारे में अधिकांश साहित्य सृजकों की राय है कि बच्चों में संस्कार जाग्रत करने, मानवीय व नैतिक मूल्य पैदा करने वाला तथा बच्चों के परिवेश, रुचियों, आदतों और ज्ञानलब्धि में परिवर्तन करने वाला साहित्य सृजन हो। बालकों की रुचि, आदत, आवश्यकता और उनके विचारों को केन्द्र में रखकर लिखा गया साहित्य निश्चित रूप से बालकों के ज्ञानवर्धन में सहायक होता है।

'बाल साहित्य कैसा हो?' इस विषय पर बाल मनोवैज्ञानिकों तथा जाने माने विद्वानों ने अपने अपने विचारों द्वारा बताने का प्रयास किया है।

डॉ. राष्ट्रबंधु का कहना है कि-''बाल साहित्य रोचक एवं प्रेरक होना चाहिए।''

कविवर सोहन लाल द्विवेदी का मानना है कि-''जो बालकों की बात को बालकों की भाषा में लिख दे वही सफल बाल साहित्य लेखन है।''

विष्णुकांत पांडेय का मत है कि-''बाल साहित्य सरल, सहज और समझ में आने वाला तो हो ही, साथ में सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।''

निरंकार देव सेवक कहते हैं कि-''बाल साहित्य बच्चों के मनोभावों, जिज्ञासाओं और कल्पनाओं के अनुरूप हो, जो बच्चों का मनोरंजन कर सके।''

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की दृष्टि में-''बाल साहित्य बाल पाठकों को मनोरंजन एवं आनंद प्रदान करते हुए उनका सर्वांगीण विकास करने वाला होना चाहिए।''

विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में-''बच्चों का अर्द्धचेतन वृक्षों की तरह सक्रिय होता है। जैसे वृक्ष में धरती से रस खींचने की शक्ति होती है, वैसे ही बच्चे के मन में अपने चारों ओर के वातावरण से जरूरी खाद्य प्राप्त करने की क्षमता होती है।''

उपर्युक्त विद्वानों की परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि बाल साहित्य मनोरंजक, मार्गदर्शक और बालक के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास करने वाला हो तथा बाल मनोविज्ञान को प्रतिबिम्बित करने वाला हो।

बाल साहित्य का सृजन करते समय बालक के मानसिक धरातल पर पहुँचना जरूरी है तथा बालक की भावनाओं को अपने मन में अनुभव करके ही स्वाभाविक व सार्थक कहानी, कविता व बाल रचना का रचाव किया जा सकता है।

बाल साहित्य ऐसा हो जिसके माध्यम से हमारी संस्कृति की परम्परा सुरक्षित रखी जा सके। बाल साहित्य में अतीत का स्मरण व वर्तमान की समझ हो तथा भविष्य के लिए जिज्ञासा भी हो। बालक को ऐसा साहित्य उपलब्ध कराया जावे जो बालक के स्तर का हो तथा समय, परिस्थितियों का मुकाबला करने वाला हो।

बाल साहित्य ऐसा हो जो बालकों में आत्मविश्वास भर सके तथा बालक जिसे पढ़कर स्वयं प्रेरित हों व उनमें नवीन चेतना का स्वतः स्फुरण हो। बालक को ऐसा साहित्य दें जो बालक में पुरुषार्थ का महत्व जगाने में मददगार हो।

बालमन कोमल होता है अतः बालसाहित्य लिखते समय सावधानी रखनी चाहिए जिससे बालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास हो। बच्चों का संसार बड़ों के संसार से सर्वथा भिन्न होता है, इसलिए बालकों की रुचि, योग्यता, उम्र एवं प्रतिभा को ध्यान में रखते हुए ही बाल साहित्य का सृजन किया जावे।

बाल साहित्य का सृजन करते समय बाल साहित्य लिखने वाले को सोचना होगा कि आज का बालक क्या चाहता है?

ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में जहाँ आज सारे गैजेट्स बच्चों के सामने खिलौने की तरह पड़े हैं, शहरीकरण तेजी से गाँवों की ओर कदम बढ़ा रहा है। बालक टी.वी. के चैनलों, मोबाइल, इंटरनेट से अपडेट है। ऐसे में बाल साहित्य का स्वरूप भी बालकों की सोच, उनकी मनःस्थिति और उनके चिन्तन पर आधारित होना बहुत जरूरी है। इसलिए आज बाल साहित्य की विषय-वस्तु समय के साथ निरंतर बदल रही है। आज के बालक की रुचि गुड्डा-गुड्डी, राजकुमार-राजकुमारी, बैलगाड़ी, पोस्टकार्ड व रेडियो में न होकर ई-मेल, वाट्सअप, ब्लॉग, फेसबुक, पैन ड्राइव, लैपटॉप, टेबलेट, सुपर कम्प्यूटर, व बुलेट ट्रेन में ज्यादा है।

अब रचनाधर्मियों को बाल साहित्य सृजन करते समय, बालकों के अनुरूप ही विषय-वस्तु पात्र एवं स्थान को केन्द्र में रखना होगा, क्योंकि बालकों की सोच परिपक्व हो रही है। अब बालकों को कैसा साहित्य परोसा जाए इस पर गहन मनोवैज्ञानिक सोच की आवश्यकता है।

से.नि.अध्यापक
मौहल्ला कोहरियान,
महाजन डेरे के पास, पुरानी गिन्नानी
बीकानेर (राज.) 334001
मो.नं.9680868028

**नर की अरु नलनीर की
गति एक कर जोई
जेतो नीचो वे चले
तेतो ऊँचो होई**

प्राथमिक शिक्षा का माध्यम-मातृ भाषा

❒ श्रीकिशन वैष्णव

व्यक्ति व समाज का मानक 'भाषा' है। मातृभाषा में प्राप्त ज्ञान विदेशी भाषा से प्राप्त जानकारी से अधिक यथार्थ भावनापूर्ण एवं संवेनदनशील होता है। मातृभाषा में शिक्षित व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा स्वयं की पहचान अपेक्षाकृत अधिक होती है।

मनुष्य के जीवन के 16 संस्कारों में एवं पुंसवन संस्कार जिसे गर्भ की तीन माह की अवस्था में किया जाता है। इससे गर्भस्थ शिशु के सुनियोजित पालन पर ध्यान दिया जाता है। हमारे देश में यह मान्यता है कि बालक की शिक्षा गर्भकाल से ही शुरू होती है। इसलिए इस अवधि में महिलाओं को सर्वोत्तम वातावरण में रहना आवश्यक समझा जाता है ताकि बच्चे पर उत्तम प्रभाव परिलक्षित हो।

आज बच्चों को विषय का आधारभूत ज्ञान नहीं है। वे विषय वस्तु की याद तो कर लेते हैं परन्तु उसे समझ नहीं पाते इसका प्रमुख कारण छात्र का विषय ज्ञान से परिचय उस भाषा के माध्यम से होता है जिसकी उसे अपने पारिवारिक परिवेश में कभी अनुभूति नहीं हुई है। वह भाषा जिसके द्वारा उसने अध्ययन किया वह पूर्णतः अप्राकृतिक और उसके मनोवैज्ञानिक स्तर से परे होती हैं।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण मातृ भाषा में हो जो उसके परिवार और वातावरण से संबंधित हो इससे वह मातृ भाषा में सोचता है लिखता है और सुनता है। फलस्वरूप वह मानसिक दबाव से परे होगा। उसमें विषय के सम्बन्ध में स्वयं के कुछ विचार करने की क्षमता, विकसित होती है तथा उसकी सूझ शक्ति की धार तेज होती है।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में 'मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सिद्ध है। कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता है। हम सामान्यतः कहते है कि मनुष्य 'जानता' है, में मानवशास्त्र संगत भाषा में कहना चाहता है कि वह आविष्कार करता है, अनावृत करता है या प्रकट करता है' इस अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करने की पात्रता धारण करने वाला व्यक्ति भारतीय शिक्षा पद्धति में ब्रह्मचारी कहलाता है। अर्थात् शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नही है। हमें उन विचारों की अनुभूति करनी है जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो।

शिक्षा का सार्वभौमिक प्रथम उद्देश्य यह है कि शिक्षा के द्वारा उस राष्ट्र की संस्कृति रक्षा, संवर्धन और नई पीढ़ी को इस संस्कृति का हस्तांतरण किया जाता है। किन्तु इस दृष्टि से भारत की शिक्षा पद्धति, शिक्षा माध्यम विषयगत पाठ्यक्रम का विचार करते है तो यह प्रकट होता है कि स्वतंत्रता के पूर्व जिस शिक्षा के ढाँचे में आमूल-चूल परिवर्तन की बात करते है, उसी ढाँचे को दृढ़तापूर्वक अपनाकर विकासशील राष्ट्र की श्रेणी में लाने का स्वप्न देख रहे है।

सन् 1915 के सम्मेलन में महान् वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु का यह वक्तव्य हमारे लिए प्रेरणास्पद है। 'भगवान चन्द्र बसु ब्रिटिश राज में मजिस्ट्रेट थे। उनके पुत्र जगदीश चन्द्र बसु की आयु विद्यालय में भेजने जितनी हुई। उस समय अंग्रेजी राज था, अंग्रेजी स्कूलों का प्रभाव भी अधिक था पर भगवान चन्द्र बसु ने अपने पुत्र के लिए मातृभाषा (बंगाली) माध्यम की शाला पसन्द की। लोगों ने उनसे पूछा 'सरकारी नायाब जिला मजिस्ट्रेट होते हुए भी आप अपने बालक को बंगाली शाला में भेज रहे हो।' भगवान चन्द्र बसु ने उत्तर दिया 'अंग्रेजी पढ़ने से पहले बालक को मातृभाषा बराबर सीख लेनी चाहिए जिससे अंग्रेजी माध्यम के झूठे गर्व के कारण वह अपनो से अलग न हो जाए।'

प्राथमिक स्तर पर माध्यम के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग ऐसे वातावरण और परिस्थितियों को संवर्धित कर रहा है जिसमें भाषाएं बोलियां समाप्त हो रही है। यह समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी है। कभी-कभी तो यह भी सुनने को मिलता है कि बालक ने विद्यालय में मातृभाषा बोली इसलिए उसे शारीरिक दण्ड या आर्थिक दण्ड दिया।

एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिमाह कोई न कोई बोली विश्व में समाप्त हो रही है। हाल ही में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में एक मात्र 'वो' कबीलाई आदिवासी की मृत्यु के साथ ही एक बोली समाप्त हो गई क्योंकि आदिवासी की मृत्यु के साथ ही एक बोली समाप्त हो गई क्योंकि अब उसे बोलने वाला कोई जीवित नहीं बचा।

यूनेस्को ने संकट ग्रस्त समाप्त होती जा रही भाषाओं का जो मानचित्र प्रकाशित किया है उसमें कहा गया है कि भारत में लगभग 190 भारतीय भाषाएँ बोलियाँ नष्ट होने के कगार पर है। अगर इस संदर्भ में ठोस कदम नहीं उठाए गए तो उन भाषाओं/बोलियों में निहित देशज ज्ञान का संरक्षण नहीं हो सकेगा। इसके लिए प्रथम प्रयास प्राथमिक स्तर पर इन भाषाओं/बोलियों का प्रयोग छात्रों के बीच किए जाने की ओर जिन बोलियों की कोई लिपि नहीं है उनके वर्तमान में उपलब्ध किसी लिपि को जो क्षेत्रीयता की दृष्टि से निकट की हो अपनाने की आवश्यकता हैं।

अतः आवश्यकता है कि बालक की क्षमतानुसार सहज रोचक तथा स्वाभाविक स्तर की मातृभाषा में शिक्षा दी जाए जिसके द्वारा बालक में ज्ञान के प्रति नीरसता उत्पन्न न हो अन्यथा बिना मातृभाषा में प्राथमिक स्तर पर शिक्षण बालक की क्षमताओं के स्वाभाविक विकास को कुण्ठित करते हुए उसके मस्तिष्क को क्षति पहुँचाएगा।

अतः हमें इस मिथक धारणा का यदि अपने शैक्षणिक जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो उसे बाल्यकाल से ही विदेशी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है, उन्मूलन करना होगा। यह अतीत के प्रति रुचि ही मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा को प्रेरित व विकसित कर सकती है।

मायड़ भाषा है भली, भलो आपनो देश।
खान-पान आपणो 'हनी' भलो आपणो वेश।।

व्याख्याता
राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय
ब्यावर, अजमेर

खुलकर रखने दें अपनी बात

❒ प्रकाश चन्द्र शर्मा

हाल ही में भारत के मानव संसाधन मंत्री जी श्री प्रकाश जावड़ेकर का एक बयान देश के कई अखबारों में बड़े-बड़े अक्षरों में छपा जिसमें उन्होंने 'बच्चों को खुलकर रखने दे अपनी बात' कहकर बच्चों की अभिव्यक्ति के अधिकार की एक बार फिर सर्जना की। उन्होंने भारत में नवसृजन न होने की चिन्ता अभिव्यक्त करते हुए जो कहा, वह वास्तव में चिन्तन का विषय है। भारत में कुछ नया सृजन इसलिए नहीं हो पाता क्योंकि हमारे यहाँ बच्चों को सवाल उठाने ही नही दिए जाते, उनकी जिज्ञासाओं को दबा दिया जाता है। जब कोई नया विचार नहीं, नया सवाल नहीं, न ही विचार-विमर्श होगा, तब फिर नया आविष्कार, सृजन कहाँ से होगा? वास्तव में बात तो 'सोलह आना' सत्य है। इन बच्चों का दिमाग तो गहरी नींद में भी सक्रिय, अति सक्रिय होता है। कल्पनाएँ, कहानियाँ, उत्सुकताएँ-प्रश्न समाधान आदि की जोड़-तोड़ इनके दिमाग में चलती ही रहती है। वे कुछ पूछना चाहते हैं-कुछ जानना चाहते हैं और जानने के बाद वे नया करना प्रारम्भ भी कर देते हैं। उनकी जिज्ञासाओं और प्रश्नों का तात्कालिक समाधान उनकी दिमागी भूख की तृप्ति है। बच्चों को जब उनके प्रश्नों का जवाब नहीं मिलता, जिज्ञासाएँ शान्त नहीं होती तो वे खीझने लगते हैं, मन उदास हो जाता है, किसी अकेले कोने में दुबक कर उलटा-सीधा सोचना शुरू कर देते हैं। बंजर भूमि बनने की खेती प्रारम्भ हो जाती है। माकूल सवालों का माकूल समय पर माकूल जवाब बच्चों की सृजनात्मकता-मौलिक और बौद्धिक सृजन के रास्तों का चुनाव करने का शुभ आरम्भ है। यदि रूकावटों का दौर प्रारम्भ हो जाता है तो सीखने-समझने और स्वयं कुछ करने की इच्छाशक्ति के रास्ते कंटीले बन जाते हैं और उसकी नई सोच की पौध उनके मन में ही दम तोड़ने लगती है। घर से लगाकर स्कूल की दहलीज और कक्षा कक्षों में 'बाल मन' का दमन होना आम बात है। हमें लगता ही नहीं कि हम बालकों के साथ टोका-टोकी कर, अनावश्यक और फालतू शब्दों से डाँट-फटकार कर और किसी छोटे से प्रश्न या समस्या को नहीं उठाने देकर और अपने बड़े होने का रौब झाड़कर न केवल मानवीय मूल्यों को हनन कर देते हैं बल्कि बालकों की सृजन शक्ति को विध्वंस शक्ति में बदलने का 'पावर चार्ज' कर देते हैं, जिसके परिणाम बरसों बाद समाज और राष्ट्रीय विप्लवों का प्रतिनिधित्व करते दिखाई पड़ते हैं। पाकिस्तानी मूल की लेखिका (नोबल पुरस्कार प्राप्त) मलाला कहती है कि एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब और एक पेन सारी दुनिया में बदलाव लाने वाले असीम शक्ति पुंज है। इसके अनेक उदाहरण हमारे इतिहास-साहित्य-अर्थशास्त्र-विज्ञान-धर्म और समाज जीवन में यथा-तथा भरे पड़े हैं। छोटे-छोटे बच्चों का अपनी बात को रखने का अन्दाज बड़ा ही प्यारा और मनमोहक होता है। वे बड़े ही सरल और सहज तरीकों से अपनी उत्सुकताओं को प्रकट करना चाहते हैं। अगर इनकी बातो को ठीक से ठण्डे दिमाग से सुना जाए तो इसमें कई बार नए आविष्कार होते दिखाई पड़ते हैं और समस्याओं का हल निकलता चला जाता है। बाल मनोवैज्ञानिक कहानीकार एवं वकालत का कोट उतारकर शिक्षक की टोपी माथे पर सजाने वाले स्व. गिरधर भाई बधे जिन्हे शिक्षा दर्शन में गिजू भाई के नाम से जाना जाता है ने अपने शिक्षा दर्शन और पुस्तकों की रचनावली में बालमन की उड़ान और सृजन शक्ति को महसूस कर बालमन की स्वतन्त्रता की जबरदस्त वकालत ही नहीं की बल्कि उन्होंने अपने शिक्षकीय जीवन के दीर्घकालीन वर्षो में अनुभव सिद्ध प्रमाण भी प्रस्तुत किए कि जिन बच्चों का बचपन अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में बीतता है, जिनको अपने प्रश्नों का जवाब सरलता और सहजता से मिलता है, जिनकी जानने की उत्सुकता का पोषण होता है, जो बचपन माता-पिता की गोद में पनपता है, अपने सहपाठियों, मित्रों, शिक्षकों से जिनको स्नेह पूर्ण सम्वाद करने के अधिकाधिक अवसर मिलते हैं; वे बच्चे ज्यादा मुखर, एकाग्र और तेज तर्रार होते हैं। इनका स्वभाव सहज मित्र भाव का होता है। वे विद्रोहीपन की लत से बच जाते हैं।

बच्चों को बचपन में माता-पिता और शिक्षक के रूप में एक हमसफर की तलाश होती है, बच्चों की सुरक्षा इनकी अहम जिम्मेदारी है। थोड़ी सी सजगता और सरलता बच्चों के भविष्य के प्लेटफार्म का निर्माण करती है जबकि थोड़ी सी लापरवाही पूर्ण व्यवहार की स्थिति अपराध की जमीन भी पैदा कर देती है। इसलिए बच्चों को अपने मन की करने, सोचने व समझने की दृष्टि देने में सामीप्य तत्व का अति महत्त्व है। यदि बच्चों को बड़ों का जीवन्त सामीप्य नहीं मिलता है तो आज के बच्चों की कोमल अंगुलियाँ, आंखें और दिलो-दिमाग नयी तकनीक से उपजे आधुनिक ज्ञान और सूचनाओं के भण्डार की तरफ बढ़ता चला जाता है। आज 10 करोड़ बच्चे ऑनलाइन स्थिति में देखे जा सकते हैं। 8-13 उम्र आयु के 73 प्रतिशत बच्चों के आज फेसबुक, व्हॉटसअप, यू ट्यूब साइटस पर अकाउण्ट हैं। बच्चे जो भी फोटो और जानकारियाँ आपस में साझा कर रहे हैं वे बड़ी चौंकाने वाली और कल्पना से परे है। इन्टरनेट की दुनिया में सब कुछ मुफ्त और सहज उपलब्ध है केवल नहीं है तो माता-पिता, भाई-बन्धु और शिक्षक का जीवन्त सामीप्य; जो बच्चे पास होते हुए भी उसे नसीब नहीं होता तो वह इनसे उदासीन हो कर अजीवन्त सामीप्य की दुनिया में झकोले खाने लगता है और यह झकोला उसे निराशा, एकांगीपन और स्वच्छन्दता की आँधी में उड़ा कर अन्धकार-अपराध-आतंक और यौन दुराचार की संकरी गलियों की झंझीरो में जकड़ देते हैं, फिर बचपन जब युवावस्था में बढ़ता है तब तक उसके जीवन की दिशा बदल जाती है। देश को सभ्य-सौम्य शिक्षक, वकील, चिकित्सक, वित्तविश्लेषक, इंजीनियर, पत्रकार, राजनेता, कृषि विशेषज्ञ, उद्योगपतियों की खेप मिलने की जगह शिक्षित निष्क्रिय बेरोजगारों की सूखी फसल मिलती है और समाज जीवन तहस नहस हो जाता है। राष्ट्रजीवन में यत्र-तत्र अव्यवस्था-अराजकता

और अशान्ति के साथ-साथ असमानता दृष्टिगोचर होती चली जाती है। बहुरंगी-बहुभाषी-बहुसंस्कृति समाज को आज सुन्दर-स्वच्छ-स्वस्थ अभिव्यक्ति वाले सुसंस्कृत मनों की अनवरत शृंखला की महती आवश्यकता है। बच्चे के प्रश्न, चुटीले सवाल, हास्य-व्यंग्य हंसी-मुस्कुराहट को सहेजने से ही उसकी जिंदगी की शान बढ़ेगी और उसके जीवन को 'जीनियस' बनने का मौका मिलेगा। इन छोटे-छोटे बच्चों को आपस में, आपसे इनसे, उनसे, बेतरीब संवाद का खुला अवसर दीजिए। इन खुले मनवाले बालमनों की नयी पीढ़ी सहृदय, संवेदनशील, दयालु-उदारमना समाज निर्माण की नींव बनकर सुदृढ़-समृद्ध-शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण का मजबूत आधार बनेगी।

अति.जि.शि.अ. (मा.), डूंगरपुर (राज.)
मो. 9414307347

मिट्टी और पत्थर

एक ऋषि के पास एक युवक ज्ञान लेने पहुँचा। ज्ञानार्जन के बाद उसने गुरु को दक्षिणा देनी चाहिए। गुरु ने कहा, 'मुझे दक्षिणा के रूप में ऐसी चीज लाकर दो जो बिल्कुल व्यर्थ हो।' शिष्य गुरु के लिए व्यर्थ की चीज की खोज में निकल पड़ा। उसने मिट्टी की तरफ हाथ बढ़ाया तो मिट्टी बोल पड़ी, 'क्या तुम्हें पता नहीं हैं कि इस दुनिया का सारा वैभव मेरे ही गर्भ से प्रकट होता है? ये विविध वनस्पतियां, ये रूप, ये रस और गंध सब कहाँ से आते हैं?' यह सुन शिष्य आगे बढ़ गया। थोड़ी दूर जाकर उसे एक पत्थर मिला। शिष्य ने सोचा, क्यों ने इस बेकार से पत्थर को ही ले चलूँ। लेकिन उसे उठाने के लिए उसने जैसे ही हाथ आगे बढ़ाया, पत्थर से आवाज आयी, 'बताओ तो, अपने भवन और अट्टलिकाएँ किससे बनाने हो? तुम्हारे मंदिरों में किसे गढ़ कर देव प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं? मेरे इतने उपयोग के बाद भी तुम मुझे व्यर्थ मान रहे हो।' यह सुनकर शिष्य ने फिर अपना हाथ खींच लिया। अब वह सोचने लगा जब मिट्टी और पत्थर तक इतने उपयोगी हैं तो फिर व्यर्थ क्या हो सकता है?' तभी उसके मन से एक आवाज आई उसने गौर से सुना। आवाज ही थी, 'सृष्टि का हर पदार्थ अपने आप में उपयोगी? वास्तव में व्यर्थ और तुच्छ तो वह है जो दूसरों को भी ऐसा ही समझता है।''

भरत छंगाणी, वरिष्ठ लिपिक
कास नदी, बारह गुवाड़, बीकानेर
मो. 9460782780

उच्च माध्यमिक स्तर पर

बधिर बालकों का शैक्षणिक पाठ्यक्रम

❐ योगेन्द्र सिंह नरुका 'फूलैता'

बधिर बालकों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़े रखना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ऐसे में समाज, प्रशासन, अभिभावक, शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वह बधिर बालकों में शैक्षणिक चेतना जाग्रत करे तभी बधिर बालक ज्ञान प्राप्त करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो सकेगा। शिक्षा व्यवस्था को उनके अनुरूप ढाला जाना चाहिए। शैक्षणिक कार्यों में सांकेतिक भाषा, होठ पठन का प्रयोग करना चाहिए जिससे कि बधिर बालक को अवबोध में किसी तरह की कोई कठिनाई नहीं आये।

वर्तमान में उच्च माध्यमिक स्तर पर आवश्यकता है कि बधिर बालकों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जो इनके लिए अवसर पैदा कर सके। बधिरों के पाठ्यक्रम को रोजगारपरक बनाना वर्तमान समय की पुकार है और आवश्यकता भी है जिसका इनके पाठ्यक्रम में समावेश होना अत्यंत आवश्यक है। बधिर बालकों को उच्च माध्यमिक स्तर पर ही कौशल विकास में दक्ष करने की कोशिश की जानी चाहिए जिससे कि यह समाज की मुख्यधारा से जुड़कर स्वाभिमान से अपना जीवनयापन कर सके। शैक्षणिक जगत में निश्चित ही यह कार्य चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए दक्ष व समर्पित शिक्षाविदों, शिक्षकों की आवश्यकता है जो इनके मनोनुकूल पाठ्यक्रम का निर्माण कर सके तथा उसके अनुरूप इनको आँख और हाथ के कौशल व आँख और बुद्धि के कौशल में निपुण बना सके।

इसके लिए बधिर बालकों के साथ शिक्षकों का निरन्तर सार्थक संवाद भी आवश्यक है, जिसमें शिक्षक व शिष्य दोनों पूरा-पूरा हिस्सा लेने वाले साथी हो।

महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा या वर्धा योजना इन बच्चों के लिए अत्यंत ही व्यावहारिक है। इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली में बचपन से ही हस्त कौशल कार्य व शारीरिक श्रम पर बल दिया जाता है, जिससे कि बालक विभिन्न कौशलों में दक्षता प्राप्त कर सके तथा भविष्य में बेरोजगारी जैसी समस्या का सामना न करना पड़े तथा अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण स्वाभिमान के साथ कर सके।

बधिर बालकों के व्यावसायिक उन्नयन के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर चित्रकला, काष्ठकला, सिलाई, गृह विज्ञान, बागवानी के साथ-साथ नवीनतम तकनीकी विषय कम्प्यूटर, ग्राफिक्स डिजाइनिंग आदि का भी समावेश किया जाना चाहिए। इसके साथ ही विज्ञान व वाणित्य के भी ऐसे कई नवीन विषय प्रारम्भ किये जा सकते है जो भविष्य में इनके लिए उपयोगी हो सके। जैसे-सामान्य मैकेनिकल कार्य, बिजली उपकरण ठीक करने का कार्य, सौर ऊर्जा के पैनल लगाने का कार्य, सी.एफ.एल., एल.ई.डी. लाईट्स बनाने का कार्य, सामान्य लेखा-बही का संधारण, कम्प्यूटर टंकण, प्रिन्टिंग आदि के कार्य भी सिखाये जा सकते है। पाठ्यक्रम में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रस्तुत शिक्षण सामग्री केवल सैद्धांतिक आधार पर ही पूर्ण न हो, उसका प्रायोगिक आधार भी महत्वपूर्ण हो। ऐसे पाठ्यक्रम के आधार पर शिक्षित बधिर बालक यदि कौशल सीखकर जीवन में सफल होता है तो वास्तव में पाठ्यक्रम की सार्थकता है और ऐसे शिक्षण व शिक्षकों की भी श्रेष्ठता सिद्ध होती है।

व्याख्याता, रा.से. आ.ला.पो. मूक बधिर
उ.मा. विद्यालय, जयपुर (राज.)
मो. 9602942594

अनुभव जो हमें सीख देते हैं

❒ मुरारी लाल कटारिया

जीवन में अनेकानेक ऐसी घटनाएँ घटती हैं, जो हमारे हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं। इस प्रकार हम अपने व्यवहार में भी परिवर्तन लाते हैं। यदि घटना हमारे साथ घटी है तो उसकी स्मृति मात्र ही हमारे चक्षु खोल देती है। घटना प्रिय हो अथवा अप्रिय, जो जीवन को उद्वेलित करती रहती है, उसे अनुभव का नाम दिया गया है। अनुभव का सामान्य अर्थ है- प्रयोगों से प्राप्त ज्ञान।

जीवन में उठते-बैठते, खाते-पीते, चलते-फिरते, नहाते-धोते, तैरते-डूबते, पढ़ते-पढ़ाते, लिखते-लिखाते अर्थात् समस्त क्रियाएँ करते अनेकानेक सच्चाइयों, कटु सत्यों, अच्छाइयों, बुराइयों, पीड़ाओं, संवेदनाओं आदि का सामना करना पड़ता है। अनुभवों के चितेरे इस प्रकार चित्र प्रस्तुत करते हैं कि वह घटना केवल उनके साथ ही नहीं घटी है, बल्कि वह जन-जन की घटना बन जाती है और कालांतर में वह लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हो जाती है।

अध्ययन व अध्यापन के दौरान अनेक ऐसी घटनाएँ घटी जिनका दिल पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा, जो आज भी जीवंत हो उठती हैं।

आत्मसीख :- अपनी पगड़ी अपने हाथ। बात बचपन की है। जब मैं दस वर्ष का था। घर से कुछ दूरी पर दूध लेने जाता था। पास में दीवारों, दुकानों से घिरा हुआ मैदान, वहाँ छुप कर जुआ होता था। मैं भी जाकर खड़ा हो जाता था। खेलने वालों ने मुझे उकसाया और मैं भी उनके संग हो लिया। कभी हार जाता तो दूध वाले से झूठ बोलता कि माँ ने आज पैसे नहीं दिए। जीत जाता तो दूध की उधारी भी चुका देता और मौज-मस्ती भी करता। एक बार बहुत अधिक जीत गया तो माँ से झूठ बोलकर छह से नौ वाली फिल्म भी देख आया। उस समय पिताजी का व्यवसाय गाँव में था। ताऊजी को देर से आने की खबर मिली तो नाराज हुए। माँ ने भी सच उगलवा लिया। रात को तो सोने दिया परन्तु सुबह होते ही घर से बाहर निकालकर मुख्य द्वार बंद कर दिया। मैं बाहर खड़ा होकर खिड़की से माँ से माफी माँगता रहा। मेरा छोटा भाई लगभग दो वर्ष का था, खिड़की की सलाखें पकड़कर बार-बार हँस रहा था। माँ ने कहा, ''देख-देख। यह भी तेरी करतूतों पर हँस रहा है।'' बात ऐसी चुभी कि फिर कभी उस ओर नहीं गया और बिना बताये कभी फिल्म भी नहीं देखी। आँखों पर बंधी पट्टी खुल गई।

कविता पाठ:- गुरु प्रेरणा। वैसे तो बचपन से गायन का शौक था। एक-दो बार प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया था। गाँव में भी जहाँ पिताजी का व्यवसाय था; उच्च प्राथमिक विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस पर 'हम लाये हैं तूफान से किश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के' गाकर प्रधानाध्यापक व उपस्थित अभिभावकों, छात्र समूह से वाहवाही लूटी थी।

परन्तु राजस्थान के जाने-माने विद्यालय की नवीं कक्षा में पढ़ते हुए अंग्रेजी के अध्यापक द्वारा अत्यधिक जोर देने पर अंग्रेजी में कविता पाठ करना पड़ा। गुरुजी के सामने अपनी घबराहट रखी। गुरुजी ने बस इतना कहा, ''सामने जो बैठे हैं, उनका ध्यान न रखकर कविता पाठ करना। जहाँ अटक जाओ, मंच छोड़ आना।'' जब मंच से मेरे नाम की घोषणा हुई, तो धड़कन पर नियंत्रण करते हुए मंच पर जा पहुँचा। माइक के सामने खड़े होकर खचाखच भरे हुए हॉल पर एक नजर डाली, हॉल के बाहर बहुत दूर प्रवेश-द्वार की ओर देखकर सम्बोधन उपरांत अंग्रेजी में 16 पंक्तियों की कविता बोलना शुरू कर दी। 12 पंक्तियाँ बोलने के बाद ऐसा लगा कि अंतिम चार पंक्तियाँ विस्मृत हो चली हैं। तेजी से मंच छोड़ आया। तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूँज उठा। मैं पसीना-पसीना होकर अग्रिम पंक्ति में जा बैठा। सब ओर से बधाइयों की बौछार हो रही थी। गुरुजी की सीख काम कर गयी। उस दिन से मंच पर खड़े होकर कविता पाठ, गीत, वाद-विवाद में भाग लेने और अध्यापन काल में शिष्यों, छात्रों और साथी अध्यापकों को भाग लेने को तैयार करने का मानस बन गया।

अप्रशिक्षित या प्रशिक्षित :- हाथ कंगन को आरसी क्या। अपने विषय (Science-Bio) में पूरे हाड़ौती क्षेत्र में (1963 में) अकेला प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णोपरांत भी घर की परिस्थितियों के आगे घुटने टेकते हुए नौकरी तलाशनी पड़ी। अप्रशिक्षित अध्यापक के रूप में नौकरी मिल भी गई। निरीक्षण के दौरान अवर निरीक्षक ने अंग्रेजी में प्रश्न किया ''Are you trained teacher'' जवाब में मैंने उन्हें बताया कि मैं अप्रशिक्षित हूँ। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि अध्यापक छात्रों से प्रश्न कर, चित्र बनाकर अध्यापन कर रहे थे। अप्रशिक्षत होते हुए भी प्रशिक्षित का कार्य देखकर मैं अत्यन्त संतुष्ट हूँ। ऐसा रिमार्क देखकर प्रधानाध्यापक ने बधाई दी और पूछ बैठे, ''यह सब तुमने कहाँ से सीखा?'' जवाब में मैंने कहा, ''गुरुजनों का अनुकरण मेरा लक्ष्य था। मुझे गुरुजनों की पाठन विधि सुगम और बोधगम्य लगती थी, तो मैं उनके अनुभवों को अपने जीवन में क्यों नहीं ढालता?'' 1966-67 में बी.एस.टी.सी. करने हेतु आदेश हुआ। आर्थिक परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थी, परंतु गुरुजनों के असीम आशीर्वाद से बी.एस.टी.सी. प्रथम श्रेणी में कर राज्य भर में दसवाँ स्थान प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान अवर निरीक्षक द्वारा दिए गए रिमार्क की स्मृति हो आयी। यदि हम ठान लें कि जो कुछ भी ज्ञान विद्यार्थियों को देना है, वह उनके माध्यम से ही उन तक पहुँचाएं तो वह सुगम और स्थायी होगा।

आदर्श-पाठ :- कर्म में आस्था। सर्व प्रथम प्राथमिक विद्यालय में नियुक्ति हुई। कुछ वर्षोपरांत प्रतिष्ठित उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक की अनुशंसा पर स्थानान्तरण हुआ। मुझे विज्ञान व अंग्रेजी विषय पढ़ाने का कार्य सौंपा गया। विज्ञान विषय में प्रयोगों को महत्त्व देते हुए प्रयोगशाला कक्ष भी स्थापित हो गया। उस समय सम्पूर्ण राज्य में उच्च माध्यमिक

विद्यालयों में आदर्श–पाठों का आयोजन किया जाता था। प्रधानाचार्य ने विज्ञान विषय में आदर्श पाठ प्रस्तुत करने हेतु मेरा चयन किया।

विषय के साथ न्याय करने हेतु पूर्व तैयारी के साथ चित्र, प्रयोग आदि को स्थान देना मेरा मूल उद्देश्य रहता था। एक बार अन्तःस्रावी ग्रंथियों से संबंधित आदर्श पाठ का चयन किया था।

श्याम पट्ट पर मानव शरीर का ढाँचा पूर्व में बनाकर पाठ के दौरान एक–एक ग्रंथि को चित्र में प्रदर्शित कर विद्यार्थियों को भी अभ्यास पुस्तिकाओं में बनाने के लिए प्रेरित किया। उस कक्ष में उच्च प्राथमिक विद्यालय के विषय अध्यापकों के अलावा उच्च माध्यमिक विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक (व्याख्याता) और प्रधानाचार्य बैठे हुए थे। पाठ समाप्ति के बाद मुझे एक ओर बैठने को कहा गया। तत्पश्चात् पाठ के बारे में राय ली गई। मैंने पाया कि मेरे पाठ प्रस्तुतीकरण में एक ही आरोप लगाया गया कि छात्रों को पूर्व में ही रटाकर आदर्श–पाठ रखा गया है। प्रधानाचार्य ने उपस्थित अध्यापकों के आरोपों का खण्डन करते हुए कहा, ''चित्र सबके सामने बनाकर प्रश्नों के माध्यम से नामांकित किया। छात्रों से चित्र बनवाया गया और जिन छात्रों से चित्र नहीं बन पा रहा था, व्यक्तिशः सहायता प्रदान की। पीयूष ग्रंथि का भार सभी बच्चों को गुलाब की पंखुड़ी देकर अनुभव कराया। तृतीय श्रेणी का अध्यापक इतनी सजगता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा से विषय के साथ न्याय कर रहा है, जबकि ऐसा अधिक वेतन पाने वाले वरिष्ठ अध्यापक भी नहीं करते।''

मेरे दिल में उत्साह का संचार हुआ और अधिक उत्साह से विषय के समर्पित रहने लगा।

1967 में उसी उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्थानान्तरण हुआ। कुछ वर्षोपरांत एक दिन जब विद्यालय जा रहा था, तो राह में पीछे से स्कूटर आगे आया, फिर समानान्तर चलने लगा। सुनाई पड़ा, ''नमस्कार गुरुजी!'' सोचा विद्यालय में प्रवेश कार्य चल रहा है। शायद युवक का भी किसी को प्रवेश दिलाने का उद्देश्य हो। वह बोला ''गुरुजी! आपने उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रयोग दिखाकर विज्ञान विषय के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर दी थी। अब मैं इंजीनियर बन गया हूँ। कभी कोई सेवा का अवसर देंगे, तो अपार खुशी होगी।'' उसे ध्यान से देखा। मन प्रसन्न हो उठा। आशीर्वाद के शब्द मुख से निकल पड़े।

सुलेख :– नेकी कर दरिया में डाल। डूबते सूरज को नमस्कार! बात प्राथमिक विद्यालय की है। सभी विषय पढ़ाने हेतु बहुत परिश्रम की आवश्यकता थी। हिन्दी में सुलेख हेतु मुलतानी मिट्टी पुती पट्टी की जरुरत पड़ती थी। फिर कॉपी पर अक्षरों की बनावट पर ध्यान दिया जाता था। बहुत कम विद्यार्थी साथ दे पाते थे। हाथ पकड़ कर अभ्यास में जुट जाना पड़ता था।

कालांतर में पेंशन उपरांत एक बैंक में बच्चों के व्यवसाय हेतु लोन लेने जाना पड़ा। अकस्मात् एक सहायक अधिकारी अपनी कुर्सी से उठा, पैर छुए, आशीर्वाद लिया। उसने उपस्थित सभी साथियों से कहा, ''मेरे मोती जैसे अक्षरों की प्रशंसा करते हो न! ऐसा इन्हीं गुरुजी की बदौलत है।''

मैं बीती यादों में खो गया। याद आया कि यह वही विद्यार्थी था, जिसने सुलेख में पुरस्कार जीता था। मैंने उसका कंधा थपथपाया, फिर सिर पर हाथ रखा। जीवन में कर्म की सार्थकता झलकी।

अनुभव हमें सिखाते हैं। अध्यापन के दौरान गुरु आदर्श प्रस्तुत कर न जाने कितनों का भविष्य संवारता है। ऐसा कहने में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं।

म.नं. 554, शास्त्री नगर,
दादाबाड़ी, कोटा (राज.) 324009

समर्पण भाव की श्रेष्ठता

महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। दान-दक्षिणा की क्या कमी थी। खूब प्रशंसा हो रही थी। यज्ञ समाप्ति पर जिसका आधा शरीर सुनहरे रंग का था, ऐसा एक नेवला आया और यज्ञ भूमि में बार-बार लोट-पोट होकर बार-बार अपना शरीर देखने लगा। लोगों ने पूछा कि तुम कौन हो? क्या कर रहे हो? नेवला बड़े निराश शब्दों में बोला-''एक भूखे ब्राह्मण परिवार को कई दिनों बाद कुछ खाने को मिला, वह भी उन्होंने एक अन्य भूखे को दे दिया। वह इतना भूखा था कि परिवार के चारों सदस्यों का भोजन वह अकेले ही खा गया। वह तो तृप्त होकर आशीर्वाद देता हुआ चला गया, किन्तु ब्राह्मण परिवार अधिक भूख सहन न होने के कारण स्वर्गवासी हुआ। मैं भी भोजन की खोज में उधर निकला था। उस भूखे द्वारा भोजन करते कुछ कण भूमि पर गिर पड़े थे। उस स्थान की मिट्टी लगने से मेरा आधा शरीर सोने का हो गया। तब से मैं स्थान-स्थान पर जाता हूँ कि कहीं मेरा शेष आधा शरीर भी सोने का हो जाए। मैं बड़ा नाम सुनकर आया था। धर्मराज के महान् यज्ञ का! किन्तु मैं देखता हूँ कि यहाँ भी मेरा शेष आधा शरीर सोने का नहीं हुआ है।'' तब सबको समझ में आया कि स्वयं कष्ट उठाकर भी अपना सब कुछ देने वाले का श्रद्धा-समर्पण ही श्रेष्ठ है।

संकलन : ज्येष्ठानन्द जीनगर
गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर, बीकानेर
मो. 9982426280

हिन्दी देश-विदेश में

❐ रामगोपाल 'राही'

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा व राज भाषा है, बावजूद इसके सरकारी शासन-प्रशासन के काम-काज में हिन्दी का दर्जा राष्ट्र भाषा हिन्दी के वर्चस्व के अनुसार देखने को नहीं मिलता है। देश के जनप्रतिनिधि भी संसद में हिन्दी के प्रति उतने निष्ठावान नहीं जितना उन्हें होना चाहिए। कई प्रतिनिधि अभी संसद में अंग्रेजी में धड़ल्ले से बोलते हैं। उनका यह आचरण हिन्दी के प्रति, उनकी अरुचि एवं अनिच्छा दर्शाता है। देश में अधिकांश हिन्दी भाषी है। दृश्य मीडिया में जन प्रतिनिधियों को अंग्रेजी में बोलता देखकर अधिकांश हिन्दी समझने वाले लोगों को निराशा होती है। वो समझ नहीं पाते कि मंत्री महोदय एवं अन्य प्रतिनिधि क्या बोल रहे हैं? हमारे यहाँ जब विदेशी शासक आते हैं वे अपनी राष्ट्रभाषा में बोलते हैं और हमारे राष्ट्र नेता, अधिकारी, प्रतिनिधि उनसे खिसिया के अंग्रेजी में बोलकर हाथ मिलाते हैं अर्थात् अपने राष्ट्र व राष्ट्र भाषा की स्वयं कद्र नहीं करते; बल्कि इज्जत घटाते प्रतीत होते हैं। इसके अलावा सरकारी पत्र-पत्रिकाओं में सरकारी आदेश अंग्रेजी में होते हैं यानी अंग्रेजी सरकारी प्रयासों से ही थोपी जा रही है। हम विदेशियों से सबक नहीं ले सकते कि वे यहाँ आगमन पर भी अपने देश की राष्ट्र भाषा में ही बात करते हैं। चाहे दुभाषियों को साथ लाना पड़े। देश में विदेशी वाणी अंग्रेजी बबूलों की तरह फैल रही है। करोड़ों अरबों हिन्दी भाषी लोगों के हृदय की वाणी हिन्दी के साथ अंग्रेजी लदी होती है। इस विडम्बना व विचित्र विसंति पर सरकार का इरादा भी निराशाजनक ही नजर आता है। हिन्दी दिवस मात्र औपचारिकता बनकर रह जाता है। हिन्दी भारतीय सभ्यता-संस्कृति की भाषा है। लोग परायी भाषा के मोह में हिन्दी के गौरव, राष्ट्र पहचान और अतीत को भूल रहे हैं। राष्ट्र पिता गाँधी ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करवाया। यह अतीत से ही देश की सम्पर्क भाषा है, सम्प्रेषण की भाषा है। देवनागरी लिपि के साथ इसे 14 सितम्बर 1949 को भारत संघ की राज भाषा बनाया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिन्दी सरकारी कामकाज की भाषा बनी, तभी से हिन्दी प्रिंट मीडिया, बाद में दृश्य मीडिया, समाचार पत्र, लोगों के व्यवहार, साहित्य व पत्र पत्रिकाओं के सहारे विकसित होती रही। अधिकांश की भाषा होने से हिन्दी के प्रचार प्रसार में सहयोग मिला। बी.बी.सी. लंदन, वाइस ऑफ अमेरिका, जर्मन रेडियो, विविध भारती, सिलोन रेडियो आदि ने हिन्दी भाषा में अपनी प्रसारण सेवाएँ प्रारंभ की। इनके द्वारा अपनाने से हिन्दी उन्नति की ओर अग्रसर होती रही है। 1975 में नागपुर में विश्व हिन्दी सम्मेलन और फिर बाद में होते रहे विश्व हिन्दी सम्मेलनों से हिन्दी का विश्व में व्यापक विस्तार हुआ है और हो भी रहा है। हिन्दी विश्व में निरंतर उत्कर्ष की ओर है। दुनिया के कई देश हिन्दी को अपना रहे हैं। अब हिन्दी को सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा का सम्मान मिलने का आभास होने लगा है। हमारे देश भारत में जिन्दगी का आगाज हिन्दी, कोटि-कोटि लोगों की आवाज हिन्दी है। देश में लोगो का मिजाज हिन्दी, रिवाज हिन्दी, हृदय और कंठ की वाणी हिन्दी है। वस्तुतः हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी विश्व की भाषा बनकर जन-जन की आवाज होगी। समझा जाता है कि हिन्दी उत्कर्ष के चलते आज हिन्दी विश्व में किसी न किसी रूप में नजर आने लगी है। मॉरीशस, फिजी ट्रिनीडाड, सूरीनाम, गयाना आदि देशों में तो हिन्दी काफी प्रचलित है। विश्व भर में हिन्दी उत्थान पर है। कई विदेशी कम्पनियों तक में हिन्दी की पहुँच है। दुनिया के बड़े देशों में हिन्दी की पहुँच भी बहुत बड़े रूप में मिलती है। अमरीका की भारत से दोस्ती बढ़ रही है, पर इस से भी ज्यादा अमरीका में हिन्दी की पहुँच व गति बढ़ी है। अमरीका द्वारा भारत वर्ष की राष्ट्र भाषा से प्यार काबिले तारीफ है। अमरीका विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था व प्रचार में काफी राशि खर्च करता है।

हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने का प्रयास भी जारी है। अभी चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश और अरबी संयुक्त राष्ट्र की भाषाएँ हैं। प्रयास व कयास है कि अब

हिन्दी भी सातवीं भाषा के रूप में इन भाषाओं के साथ होगी। इसी के साथ हिन्दी विश्व भाषा बन जाएगी। इधर हम, अब भी अंग्रेजी भाषा के मोह में उलझते जा रहे हैं। विश्व में हिन्दी उत्कर्ष और देश में हिन्दी, अंग्रेजी के साथ कुंठित सी नजर आती है। राष्ट्र भाषा का अपना महत्त्व, वर्चस्व व अहमियत है। इसी के अनुकूल राष्ट्र भाषा का दर्जा प्रशासनिक कार्यो में ऊँचा होना चाहिए। देश में कई प्रादेशिक भाषाएँ हैं, सब अपनी जगह हृदय की रानियाँ जैसी हैं, पर हिन्दी देश में व्यापक रूप से प्रचलित है, इसलिए यह भाषाओं में महारानी है। इसमें भारत की आत्मा बसती है।

हिन्दी के उद्‌भव विकास की कहानी लम्बी है। यह संस्कृत से पाली-प्राकृत, अपभ्रंश और फिर हिन्दी बनी। मुगल शासन में यह फारसी के साथ अपना दबदबा बनाए रखने में सफल रही। इसके बाद सदियों से निरन्तर विकास पथ पर है। स्वतंत्रता के दीर्घ समय बाद भी अंग्रेजी की बाधा के बावजूद निरन्तर देश-विदेश में आगे बढ़ती आई है। हिन्दी आज विश्व स्तर पर अपना स्थान बना विश्व भाषा की कड़ियों में एक कड़ी के रूप में जुड़ने वाली है। पुनः कहना चाहूँगा कि विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी को विश्वमय बना दिया है। आज हिन्दी विश्व स्तर पर समृद्ध हुई है। यह भी सच है कि हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में सरकार द्वारा अन्तरराष्ट्रीय विश्व विद्यालयों की स्थापना बहुत बड़ा प्रयास व कदम है। हमारी हिन्दी के उत्थान के प्रयास विदेशों में भी है। बताया जाता है कि मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय है। जहाँ हिन्दी प्रचार-प्रसारार्थ पत्रिका भी निकलती है। हिन्दी को गति देने व प्रचारित करने में न्यूजीलैण्ड से 'भारत दर्शन', कनाडा से 'सरस्वती', अमरीका से 'अन्यथा', 'हिन्दी परिचय' आदि पत्रिकाएँ निकलती हैं। प्रवासी टुडे, पुरवाई आदि हिन्दी पत्रिकाएँ भी विदशों से निकलती हैं। अमरीका में टैक्सास नामक जगह हिन्दी के चाहने वालों और अपनाने वालों में अव्वल है। विश्व में कई देशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी है व बढ़ती ही जा रही है। अभी हिन्दी विश्व स्तर पर तीसरी भाषा समझी जाती है। कई छोटे देशों- मॉरीशस, फिजी-त्रिनीनाद, गुयाना देशों में हिन्दी सामाजिक संपर्क की भाषा में तथा संस्कृति का हिस्सा मानी जाती है। विदेशी शिक्षाविद् हिन्दी प्रेमी, ओदोलेन स्पेकल, हिन्दी के बारे में कहते हैं, ''हिन्दी ज्ञान अमृतफल है मैं जितना पीता हूँ बार-बार पुनः उतना जीता हूँ।''

भारत के पड़ोसी बांग्लादेश, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया आदि देशों में हिन्दी जनसम्पर्क की भाषा के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक भाषा भी समझी जाती है। विश्व में कई बड़े देशों में शासन द्वारा हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है। अमरीका, इंग्लैण्ड, रूस, फ्रांस, जापान, चेकस्लोवाकिया आदि देशों में हिन्दी का अध्यापन कराया जाता है। बताया जाता है कि विश्व के 175 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाने लगी है। इनमें 45 विश्वविद्यालय अमरीका में समझे जाते हैं। वहाँ कैलीफॉर्नियां, शिकागो, टैक्सास में हिन्दी व्यापक रूप से पढ़ाई जाती है। कंबोडिया भी हिन्दी का मुख्य केन्द्र है। नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिनाद आदि देशों में हिन्दी सभ्यता-संस्कृति और भाषा के दर्शन होते हैं। भारत में एक अरब से अधिक लोग हिन्दी जानते हैं। विश्व में 1300 मिलयन से भी अधिक हिन्दी जानने वाले लोग हैं।

हमारा भारत वर्ष बहुभाषी देश है; बहु धर्म, बहु जाति, बहु सम्प्रदायों वाला देश है। इसके चलते देश में एकता व विविधता में एकता का संदेश हमारी राष्ट्र भाषा व राष्ट्र आत्मा हिन्दी ही देती रही है। यहाँ हिन्दी सब की, सारे देश की भाषा है। विश्व में हिन्दी उत्थान, उत्कर्ष व चरम पर है। हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी विश्व भाषा क्यों न बने; बननी चाहिए। यह अत्यधिक खुशी, राष्ट्र गौरव, पहचान व सम्मान की बात है। विश्व में हिन्दी उत्कर्ष को देखते हुए किसी ने ठीक ही कहा है-''जग जान रहा जग मान रहा, कर हिन्दी का सम्मान रहा, दुनियाँ के कोने-कोने में, हिन्दी रथ कर प्रयाण रहा।'' विदेश में अग्रसर हिन्दी का अपने देश में भी तो राष्ट्र के शासन प्रणाली में दर्जा, राष्ट्र भाषा के वर्चस्व के अनुसार होना चाहिए। हिन्दी हमारी राष्ट्र, राजभाषा और राष्ट्र आत्मा है, हमारा आगाज है, जन-जन की आवाज है।

इसी के चलते एक स्मरण, युग प्रवर्तक-आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक, हिन्दी के पुरोधा-भारतेन्दु हरिशचन्द्र जी ने हिन्दी भाषा के लिए लिखा ''निज भाषा उन्नति अहे-सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।'' हिन्दी राष्ट्र भाषा है मूल भाषा भी बनेगी; बावजूद इन सबके, स्वतंत्रता के दीर्घ समय उपरान्त भी, भारतवासियों के हृदय का शूल अंग्रेजी भाषा अभी भी विद्यमान है। स्वतंत्र नागरिकों के हृदय में क्या हृदयशूल का बने रहना ही नियति है। वस्तुतः हिन्दी राष्ट्र भाषा है इससे सभी को अपनत्व व प्यार होना चाहिए।

सेवानिवृत्त व्याख्याता
लाखेरी-323615
जिला-बूँदी(राज.)

सदाचरण

मगध के एक धनी व्यापारी ने काफी धन कमाया। चारों ओर उसकी समृद्धि की चर्चाएँ होने लगी। उसे अपनी सम्पन्नता पर इतना गर्व हो गया कि वह अपने घरवालों से भी स्वाभाविक मानवीय व्यवहार भूल गया। उनसे भी उद्दण्डता करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि उसके लड़के उद्दंड और अहंकारी हो गये। पिता-पुत्रों में भी ठनने लगी। घर नरक बन गया। उद्विग्न व्यापारी ने महात्मा बुद्ध की शरण ली। उसने बुद्ध से कहा-''मुझे परिवार से मुक्ति दिलवाइये। मैं भिक्षु बनना चाहता हूँ।'' बुद्ध ने थोड़ी देर तक रुक कर सोचा, फिर बोले-''वत्स, तुम जैसा संसार चाहते हो, सबसे पहले खुद उसके अनुरूप आचरण करो। कुछ समय बाद तुम पाओगे कि तुम्हारा घर स्वर्ग बन गया है।'' व्यापारी बुद्ध के कथन पर चिन्तन करता हुआ घर लौटा। उसने अगले ही दिन से अपना आचरण बदलना शुरू कर दिया। उसने अपने चरित्र में विनम्रता और सहनशीलता आदि गुण विकसित किए। उसके व्यवहार में आए परिवर्तन ने उसके घर के लोगों को भी बदल दिया। उसका घर स्वर्ग बन गया जो कभी उसे नरक दिखाई देता था।

संकलन : **लक्ष्मण डाभी**, वरिष्ठ अध्यापक
महावीर नगर, बाड़मेर
मो.- 8003890177

दुनिया में बढ़ता रुतबा हिन्दी का

❒ डॉ. कृष्णा आचार्य

'हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा' प्रसिद्ध शायर इकबाल ने ठीक ही कहा है, अर्थात् हम भारतीय हैं और भारत हमारा देश है यहाँ हिन्दी शब्द का प्रयोग भारतीय लोगों के लिए ठीक उसी प्रकार हुआ है जैसे जापान में रहने वालों को जापानी और चीन में रहने वालों को चीनी कहा जाता है। हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति मूलतः संस्कृत भाषा के सिन्धु शब्द से हुई है। संस्कृत का 'सिन्धु' शब्द फारसी में 'हिन्दु' हो गया क्योंकि संस्कृत की 'स' ध्वनि फारसी में 'ह' हो जाती है। ईरान की ओर से आने वाले लोग भारत में प्रवेश करने के लिए सिंधु नदी को पार करते थे और सिंधु नदी के आस-पास के प्रांत को वे हिन्दुस्तान कहने लगे। भाषा के रूप में हिन्दी शब्द का प्रयोग बहुत बाद में मुसलमानों के द्वारा ही किया गया। वे भारत के बहुसंख्यक लोगों की भाषा को 'हिन्दी' कहने लगे। हिन्दी उत्तर भारत एवं मध्य भारत के दस प्रान्तों में बोली जाने वाली भाषा है। हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार और झारखण्ड। यह सम्पूर्ण भू-भाग हिन्दी क्षेत्र कहा जाता है। इन राज्यों में बोली जाने वाली हिन्दी की बोलियों को विभिन्न विद्वानों ने पाँच उपभाषाओं तथा 18 बोलियों में विभाजित किया है-

उपभाषाएँ-(1) पश्चिमी हिन्दी (2) पूर्वी हिन्दी (3) बिहारी (4) राजस्थानी (5) पहाड़ी

हिन्दी की बोलियाँ-(1) **पश्चिमी हिन्दी**- इसके अन्तर्गत पाँच बोलियाँ आती हैं। 1. ब्रजभाषा 2. कन्नौजी 3. खड़ी बोली 4. बुन्देली 5. हरियाणी (बांगरू) (2) **पूर्वी हिन्दी**- इसके अन्तर्गत 1. अवधी 2. बघेली 3. छत्तीसगढ़ (3) **बिहारी हिन्दी**- इसमें 1. मैथिली 2. मगही 3. भोजपुरी बोलियाँ है। (4) **राजस्थानी हिन्दी**- इसमें 1. मेवाती 2. मालवी 3. मारवाड़ी 4. जयपुरी (5) **पहाड़ी हिन्दी**- इसमें 1. गढ़वाली 2. कुमायुँनी 3. नेपाली बोलियाँ हैं।

हिन्दी भाषा का वर्तमान स्वरूप उसके प्रारम्भिक रूप से नितांत भिन्न है। भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्रम मोटे तौर पर निम्नवत् समझा जा सकता है। संस्कृत-पाली-प्राकृत-अपभ्रंश-हिन्दी। अर्थात् हिन्दी भाषा का विकास लगभग 1000 ई. के आस-पास ही हुआ, यद्यपि 7वीं और 8वीं शती में प्रयुक्त भाषा में भी हिन्दी के अनेक शब्द दिखाई देते हैं।

भल्ला हुआ जो मारिया विछिणि म्हारा कन्तु।
लज्जेजं तु वयस्सि अहु जे भग्गा घर एंतु।।

खड़ी बोली की गणना पश्चिमी हिन्दी (जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से) की महत्त्वपूर्ण बोली मानी जाती है क्योंकि मानक हिन्दी का मूल आधार खड़ी बोली ही है। खड़ी बोली के अन्य नाम हैं- कौरवी और नागरी।

14 सितम्बर 1949 को रात 7.40 बजे भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को पूरे देश की राजभाषा मानते हुए संविधान का अनुच्छेद 343 पारित किया। अनुच्छेद 354 के तहत नौ राज्यों तथा तीन केन्द्र शासित प्रदेशों की भी राजभाषा हिन्दी है। संविधान के भाग 17 के अध्याय एक की धारा 343(1) के अनुसार, ''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

राजभाषा का शाब्दिक अर्थ है- शासन एवं प्रशासन की भाषा। जो भाषा सरकारी राजकाज के लिए संविधान द्वारा स्वीकृत की जाती है, उसे राजभाषा कहते हैं अर्थात् सरकारी कामकाज की भाषा। भारत के संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, किन्तु साथ ही यह भी प्रावधान किया कि अंग्रेजी भाषा में भी केन्द्र सरकार अपना कामकाज तब तक कर सकती है, जब तक हिन्दी पूरी तरह राजभाषा का स्वरूप धारण न कर ले।

प्रारम्भ में संविधान लागू होते समय सन् 1950 में यह समग्र सीमा 15 वर्ष के लिए थी अर्थात् अंग्रेजी का प्रयोग सरकारी कामकाज के लिए सन् 1965 तक ही हो सकता था, किन्तु बाद में संविधान संशोधन के द्वारा इस अवधि को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया गया। यही कारण है कि हिन्दी को राजभाषा घोषित किए जाने पर भी केन्द्र सरकार का अधिकांश सरकारी कामकाज अंग्रेजी में हो रहा है और वह भी वर्चस्व के साथ, पहले स्थान की बात करें तो विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या करीब एक अरब दस करोड़ तीस लाख के लगभग है, जबकि चीनी भाषा जानने वालों की सिर्फ एक अरब छः करोड़। इस तरह हिन्दी विश्व में नम्बर एक है।

मॉरिशस में हिन्दी को सर्वाधिक गरिमा प्राप्त है। मॉरिशस एक मात्र विश्व का ऐसा देश है जहाँ की संसद ने हिन्दी के वैश्विक प्रचार के लिए विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना की और करीब पाँच लाख हिन्दी भाषी हैं। रेडियो टेलीविजन पर दिन-रात हिन्दी में कार्यक्रम चलते रहते हैं।

फीजी ने भी भारतीय परंपराओं को जीवित बनाये रखा है। रामायण के साथ हमारे कई त्योहार, जैसे- रामनवमी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, दशहरा, होली, दिवाली भी धूमधाम से मनाई जाती है। कई पेड़-पौधों, शाक-सब्जियों व फलों के नाम भी भारतीय हिन्दी नाम हैं। वहाँ के बाजारों में, गलियों में भी हिन्दी स्वतंत्र रूप से बह रही है। विडम्बना तो हमारे देश में देखने को मिलती है कि दूसरे देश से लोग हमसे हिन्दी में बात करने के लिए हिन्दी सीखकर आते हैं और हम अंग्रेजी झाड़ते हैं। यह सच है कि हिन्दी का क्षेत्र विस्तृत है, इसका वर्चस्व अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया महाद्वीप तक फैला है, वहीं दूसरी ओर अपने ही देश में राष्ट्रभाषा बनने से वंचित है। यह वर्तमान चिंतन का मुख्य बिन्दु है, क्योंकि वर्तमान आर्थिक सुधारों के चलते वैश्वीकरण की जो भावना विकसित हुई है, उसने अंग्रेजी में पुनः प्राण संचार कर दिए। अब लोगों को यह लगने लगा कि कॅरियर बनाने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। अंग्रेजी बोलने वालों को नौकरी जल्दी मिल जाती है, इससे भी अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ रहा है जो कि सही नहीं है क्योंकि इसके लिए सभी देशवासी गंभीर नहीं है। हिन्दी अपने प्रयास से विश्व के कोने-कोने में पहुँची है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में टी.वी, हिन्दी

फिल्में, दूरदर्शन, समाचार, पत्रिकाएँ इत्यादि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं। हिन्दी की लोकप्रियता देखते हुए कई विदेशी चैनल अपने कार्यक्रम हिन्दी में प्रसारित करने लगे हैं जैसे डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी आदि परंतु हमारे यहाँ हिन्दी राष्ट्रभाषा की स्थिति चिंतनीय है।

गहन विचार से गौर करें तो पायेंगे कि विश्व का शायद ही कोई देश अपने नागरिकों को विदेशी भाषा में शिक्षा देता हो तो फिर हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को विज्ञान तकनीक एवं प्रबंधन आदि से जोड़ने में पीछे क्यों हैं? भारतीय भाषाओं एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी में शिक्षा को जोड़कर ही देश के जन-जन, जिसमें अमीर-गरीब सभी को आगे बढ़ाने में सफल हो पायेंगे। वर्तमान में आई.ए.एस., आई.पी.एस., में हिन्दी माध्यम अपनाया जाने लगा है। उच्च न्यायालय और जिला न्यायालय भी हिन्दी में कई कार्य करने लगे हैं।

वर्तमान में हिन्दी भाषा बाजार और जनसंचार के माध्यम से हिन्दी को नया रूप दे रहे हैं। हिन्दी के विशाल रूप को देख और समझ कर ही उसकी माँग की व्यापकता के आधार पर बाजार में ऐसे सॉफ्टवेयर भी आ गए हैं जिनके सहारे हिन्दी में ठीक उसी प्रकार कार्य कर रहे हैं जैसे अंग्रेजी में होता है।

अब शिक्षा, मनोरंजन, उद्योग, व्यापार, चिकित्सा में ही नहीं युद्ध और शांति के लिए भी भरपूर उपयोग हो रहा है जिससे सूचना-संचार क्रांति, कम्प्यूटर-इंटरनेट संक्रांति, सेटेलाइट-वेबसाइट उत्क्रांति होने से व्यक्ति की सोच में परिवर्तन आ रहा है और वे भी हिन्दी भाषा के संवर्द्धन एवं विस्तार में अपना योगदान कर रहे हैं।

यूनेस्को के एक प्रतिवेदन के अनुसार हिन्दी भाषा का प्रचलन एक सौ सैंतीस देशों में है, जबकि बाइस देशों के अस्सी करोड़ से अधिक लोग हिन्दी भाषा को अच्छी तरह समझ लेते हैं तथा बोल भी लेते हैं। अब तो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान प्रौद्योगिकी, तकनीकी क्षेत्रों में भी हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षण-प्रशिक्षण होने लगा है।

फ्रांस के गार्सा द तासी के हिन्दी साहित्य के इतिहास, जॉर्ज ग्रियर्सन के 'द वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दन इण्डिया' तीसरा इतिहास ग्रंथ, कर्नल टॉड का पृथ्वीराज रासो कृत अनुवाद उषा प्रियंवदा, सुषमा बेदी का अमेरिका में, अपर्णा क्षीर-सागर महापात्र का फ्रांस में विश्वविद्यालय से जुड़ना, अर्चना पेन्यूली का डेनमार्क में हिन्दी अध्यापन के माध्यमिक स्तर पर जुड़ना तथा जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' प्रेमचंद के 'गोदान' का विश्व की अनेक भाषाओं में रूपान्तरण हिन्दी के वैश्विक रूप धारण करने में मील के पत्थर सिद्ध हो रहे हैं।

हम भी यह संकल्प लें कि भारतीय संस्कृति साहित्य चेतना व अपनी हिन्दी भाषा को वैश्विक स्वर पर बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने का प्रयास करें।

एक मोटे अनुमान से भारत में लगभग 60 करोड़ लोग हिन्दी बोलते-समझते हैं।

वर्तमान हिन्दी में 2500 शब्द अरबी के 3500 शब्द फारसी के और लगभग 3000 शब्द अंग्रेजी भाषा के प्रचलित हैं। हिन्दी ने अपनी शक्ति को अन्य भाषाओं से प्राप्त शब्दों को पूर्णतः पचाकर एकाकार कर लिया है। यह एक जीवंत भाषा है। हिन्दी के साहित्यकार नित्य नए शब्दों का हार बना-पहनाकर सुंदर बनाने का प्रयास कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर संस्कृत से नए शब्दों का गठन कर उसमें ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं को अभिव्यक्ति दे रहे हैं। ऐसा विस्तृत शब्द भण्डार अन्य नहीं अपने विशाल शब्द भण्डार, समृद्ध साहित्य, वैज्ञानिक देवनागरी लिपि एवं राष्ट्रीय एकता में सहायक होने के कारण हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होनी चाहिए, यह हम भारतीयों का गौरव होगा क्योंकि जब तक हम हिन्दी को अपने स्वाभिमान और आत्मगौरव से नहीं जोड़ेंगे, तब तक इसका सर्वांगीण विकास नहीं हो पायेगा और यह व्यावहारिक रूप में राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा नहीं बन पायेगी। यदि हिन्दी विरोधी अपनी मनःस्थिति बना स्वार्थी भावना छोड़ दे तो हिन्दी भाषा राष्ट्रीय जीवन का आदर्श बन जाएगी। हमें बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की ये पंक्तियाँ सदैव अपनी हिन्दी भाषा के प्रति कर्तव्य बोध कराती हैं-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।

रा.बा.उ.मा.वि.
लक्ष्मीनाथ घाटी बीकानेर
मो. 9461036201

लघुकथा

क्या समझाएँ?

❒ शिवचरण मंत्री

सुकृति मुँह फुलाए और गाल लाल सुर्ख करके खड़ी रही। 'मम्मी सुनो।' मम्मी ने चाय बनाते हुए ऊँचा सिर करके पूछा- 'क्यो, क्या है?' सुकृति को लगा कि मम्मी उसकी बात क्यों नहीं सुनती है? जबकि भाई की बात तुरंत समझ जाती है।

इससे सुकृति रूठती, इठलाती मम्मी की पीठ के पीछे जाकर खड़ी हो गई और दोनों हाथों से कमर को पकड़ कर सिर मम्मी के कंधे पर लगा कर बोली, 'मम्मी....।'

सुकृति की बात सुनकर मम्मी का पारा चढ़ा। उसने सोचा अभी मेहमान जाएँगे उनके लिए खाना बनाना है और इधर यह लड़की साइकिल लेने की जिद् पर अडिग है। अतः उसको समझाते हुए कहा-'देख भाई सुकृति की साइकिल काम में ले, अगले साल तुझे नई साइकिल दिलवा दूँगी...।

माँ आगे कुछ कहती कि सुकृति गुस्सा हुई और खीझ कर माँ का हाथ पकड़ उसे जोर से झकझोरते हुए कहा-'मैं यह पहले ही जानती थी कि तुझे अपना बेटा बहुत प्यारा है। मैं तो तेरे लिए गौण हूँ।...'

'नहीं, बेटी ऐसी बात नहीं है। तू और भाई तो मेरी दो आँखें हैं। इनमें कौन...?'

माँ की बात सुनकर सुकृति की आंखों से टप-टप आँसू गिरने लगे और उसने कहा-'मैं सब समझती हूँ, मम्मी आपकी एक आँख का हीरा दो नम्बर तथा दूसरी आँख का हीरा तीन नम्बर का है अतः एक सा दिखाई कैसे दे।'

माँ, स्तब्ध होकर सुकृति को देखती रह गई... उसकी बोलती बंद हो गई। वह क्या समझाए?

श्रीनगर, अजमेर (राज.) 305025
मो. 9414981944

क्रान्ति के महान अग्रदूत : तात्या टोपे

❐ मनमोहन अभिलाषी

(राष्ट्र इस वर्ष तात्या टोपे की 200वीं जयन्ती वर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर मनाकर क्रांति के महान अग्रदूत तात्या टोपे को श्रद्धांजलि समर्पित कर रहा है। इस अवसर पर शिक्षक द्वारा छात्रों को इस महान प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सैनानी के जीवन के उपलब्ध कार्यों को प्रकाशित कर, नवीन पीढ़ी को उनकी राष्ट्रभक्ति से प्रेरणा लेने हेतु प्रकाशन एवं प्रसारण के संचार माध्यमों द्वारा प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है। इसी श्रृंखला में शिविरा के लेखक मनमोहन अभिलाषी ने शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत पाठकों को लाभान्वित करने का प्रयास किया है। - *वरिष्ठ संपादक*)

क्रांति के महान अग्रदूत तात्या टोपे का नाम सुनते ही हमारी आँखों के सम्मुख एक पराक्रमी, वीर, साहसी तथा चतुर व्यक्ति की चित्रावली अंकित हो जाती है। जिसके अन्दर गुलामी के गहन अंधकार को आशा से आलोकित करने की क्षमता के अंकुर गर्भ में ही निर्मित हो गए थे। इसीलिए तो उस महान व्यक्ति ने अपनी आलौकिक शक्ति के द्वारा भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को इतना ऊर्जावान बना दिया था कि अंग्रेजी साम्राज्य का सिंहासन हिलने लगा था। इस महान क्रांतिकारी वीर ने दो वर्ष के क्रांतिकाल में लगभग डेढ़ सौ मोर्चों पर अंग्रेजी सेना से संघर्ष कर लोहा लिया था। इससे अंग्रजी सेनानायिकों के हौंसले परास्त नजर आने लगे थे।

कैसी भी विकट स्थिति संग्राम के सम्मुख इन्हें देखनी पड़ी हो यह कभी भी पीछे नहीं मुड़े थे। इनका अदम्य साहस हमेशा अडिग रहता था। इसीलिए तो एक अंग्रेज लेखक ने इन्हें इटली के स्वातंत्र्य सेनानी गेरीबाल्डी की इन्हें उपमा दी थी। मराठी लेखकों ने तो इन्हें शिवाजी की परम्परा का अन्तिम सेनानी माना था। इसमें कोई सन्देह नहीं है सन् 1857 ई. के समरावकाश में जो दे दैदीप्यमान नक्षत्र प्रकट हुए थे उनमें तात्या टोपे की तेजस्विता अत्यन्त प्रभावशाली प्रतिभा के साथ सम्पन्न हुई थी।

मराठों की रणनीति 'गनीमी कावा' अर्थात् छापामार प्रणाली का इस महान क्रांतिकारी सेनानी ने अत्यन्त कुशलता एवं सफलता से उपयोग किया था। इतिहास में तात्या टोपे के सम्मुख छापामार प्रणाली के सभी निपुण पानी भरते नजर आते हैं। इस प्रकार तात्या टोपे के सानी का ढूँढ़ निकालना सहज सुलभ नहीं था। पराजयों का मुँह देखने के उपरान्त भी यह वीर हमेशा अजेय रहा था।

तात्या का जन्म अहमदनगर जिले के येवला नामक गाँव में एक देशस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता पाण्डुरंग 'भट' श्रुति और स्मृति के विद्वान थे। 'भट' शब्द उनके नाम के साथ जोड़ा जाता है जो महाराष्ट्र में पुरोहित का काम करते हैं। तात्या की जन्मतिथि के सम्बन्ध में कोई प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है। और न ही कोई ऐसा ऐतिहासिक आधार भी मिलता है, जिसके बल पर तात्या की जन्म-तिथि का निश्चय किया जा सके। तत्कालीन कागजात में इधर-उधर से जब कुछ ऐसी बातों का उल्लेख मिल जाता है जिसके आधार पर उनके जन्म-वर्ष का अनुमान निर्धारित किया जा सकता है। श्री निवास बालाजी हर्डोकर के अनुसार 'नाना साहब और उनके साथियों को गिरफ्तार करने के लिए सन् 1858 में अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों की एक सूची उनके हुलिया के साथ प्रकाशित की थी। जिसमें तात्या की आयु 42 वर्ष की लिखी गई थी। उसके आधार पर तात्या का जन्म वर्ष सन् 1816 होना चाहिए।'

इसी के आधार पर भारत सरकार ने तात्या टोपे की 200 वी जयंती को यह वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया है। अब आइये! 'तात्या' शब्द के सन्दर्भ में भी ज्ञान अर्जित कर ले तो अच्छा ही है। मराठी भाषा में 'तात्या' अपने से बड़ों और श्रद्धास्पद व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता है।

तात्या की माँ का नाम रूकमा बाई था। यह इनके ज्येष्ठ पुत्र थे। उनका वास्तविक नाम रामचन्द्र था। इनसे दो वर्ष छोटे गंगाधर थे। गंगाधर ही रामचन्द्र को अपने बड़े भाई होने के कारण उन्हें 'तात्या' कहकर सम्बोधित करते थे। बस तभी से यह रामन्द्र के स्थान पर 'तात्या' के नाम से विख्यात हो गए थे। तात्या के पीछे टोपे क्यों लगा इसकी भी अपनी एक कहानी है। जिसके सन्दर्भ में आगे उल्लेख किया जाएगा। उससे पूर्व यह बताना आवश्यक है कि जब बाजीराव पेशवा पूना का राज्य अंग्रेजों को सौंपकर ब्रह्मावर्त आए तो अनेक आश्रित कुटुम्ब भी उनके साथ आए थे। उनमें तात्या का परिवार भी था। बाजीराव ने ब्रह्मावर्त आते ही तात्या के पिता को अपनी यज्ञशाला तथा धार्मिक विभाग का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया था।

तात्या अपने पिता के साथ बाजीराव पेशवा के महल में जाते थे। बाजीराव के अपना कोई पुत्र नहीं होने के कारण वह बच्चों को बहुत प्यार करते थे। तात्या इसी कारण उनके अधिक लाड़ले हो गए थे। बाजीराव ने नानासाहब को गोद ले रखा था। वह तात्या से दस वर्ष बड़े थे। पर उन दोनों के मध्य अधिक घनिष्ठता हो गई थी। इसीलिए वह आपस में बालसखा के रूप में एक दूसरे के और नजदीक हो गए थे। साथ-साथ अध्ययन करना और खेलना उनकी दिनचर्या बन गई थी। जब मोरोपंत तांबे, अपने स्वामी चिमाजी, स्वामी अप्पा की मृत्यु के बाद काशी से ब्रह्मावर्त आए तो अपनी पुत्री मनु को भी साथ

लाए थे। मनु भी बाजीराव पेशवा की लाड़ली छबीली बिटिया बन गई थी। उसका भी लालन-पालन ब्रह्मावर्त के महल में नाना साहब, उनके भाइयों और तात्या के साथ-साथ ही हुआ था। यही मनु आगे चलकर इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरणा की स्त्रोत बनकर झांसी की रानी कहलाई थी।

सन् 1857 की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अग्रणी पंक्ति में यह तीनों महान क्रांतिकारी ही थे। उनमें नानासाहब, तात्या और महारानी लक्ष्मी बाई के नाम बड़ी श्रद्धा और सम्मान से लिए जाते हैं। अब जो तात्या के नाम के पीछे टोपे लगने का विगत पंक्तियों में जो बताने का उल्लख किया गया था, उसकी बात कर ली जाए तो कितना रोचक वाक्या रहेगा?

तात्या के कुटुम्ब का नाम टोपे कैसे पड़ा? इस सम्बंध में एक मनोरंजक आख्यायिका प्रचलित है। जिसका उल्लेख श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर ने अपनी पुस्तक 'तात्या टोपे' के प्रारंभिक जीवन प्रसंग में पृष्ठ 6 पर इस प्रकार किया है- 'बिठूर' स्थित टोपे कुटुम्ब का कहना है कि उनके कुल का यह कोई परम्परागत नाम नहीं है। उससे पूर्व इस कुटुम्ब को 'येवलेकर' के नाम से जाना जाता था। बाजीराव के शासन काल में ही इसे 'टोपे' नाम दिया गया था।

एक बार बाजीराव तात्या के किसी वीरता तथा साहसपूर्ण कार्य से अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे अनेक रत्नों से जड़ित एक टोपी बनाई थी। वह इनाम के तौर पर उन्होंने तात्या को दी थी। यह टोपी बिल्कुल अप्रचलित नवीन ढंग की टोपी थी। तात्या के प्राचीन चित्र में यही टोपी उनके सिर पर दिखाई देती है।

जब तात्या ने यह रत्नजड़ित टोपी पहनी तो बाजीराव बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने उसे 'टोपी' कहकर पुकारा था। तभी तात्या का कुटुम्ब 'टोपी' के नाम से जाना जाने लगा था। अंग्रेज लेखकों ने सरकारी कागजात में उसका उल्लेख 'तंतिया टोपी' के नाम से ही किया है। विष्णु पंत गौड ने जिन्होंने सन् 1857 ई. की क्रान्ति की अनेक घटनाओं को ग्वालियर, झांसी, कालपी आदि स्थानों में प्रत्यक्ष देखा था। अपने ग्रंथ 'माझा-प्रवास' में उन्हें तात्या टोपी ही लिखा है।'' ठीक इसी तरह मराठी के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो. नारायण केशव बेहरे ने सन् 1927 में प्रकाशित होने वाले अपने ग्रंथ 'सन 1857' में भी तात्या टोपी ही लिखा है। पर अब यह कुटुम्ब अपने आपको टोपे कहता है। इस प्रकार 'टोपी' से 'टोपे ' हो जाना कालक्रम की गति के अनुसार कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

पेशवा बाजीराव के परिवार से तात्या टोपे की इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि यह पेशवा कुटुम्ब के ही एक सदस्य बन गए थे। बाजीराव पेशवा उनसे बहुत स्नेह रखते थे। इसीलिए तात्या टोपे भी उन्हें अपने पिता के समान ही मानते थे। कहा जाता है कि बाजीराव पेशवा के परलोकगमन आघात से पीड़ित होकर तात्या टोपे ने आत्महत्या करने का प्रयास भी गंगा में कूदकर किया था। लेकिन ईश्वर के यहाँ से आमंत्रण था नहीं। इसलिए रुग्ण शैय्या पर पड़े रह कर उन्होंने अपनी अन्तिम साँस ली थी।

तात्या टोपे की मृत्यु के सन्दर्भ में इतिहासकार लिखते हैं कि अंग्रजों के वास्तविक साक्ष्य मिटा दिए थे। तात्या टोपे ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जोरदारी से भाग लेकर सच्ची देश भक्ति का परिचय दिया था। अंग्रेजों के दस्तावेजों के अनुसार 7 अप्रेल 1858 ई. को तात्या टोपे को गिरफ्तार किया गया, उस समय इनके पास एक घोड़ा , एक तलवार, एक खुखरी सोने के तीन कड़े तथा 118 सोने की मुहरें थी। इनमें से 21 मोहरें उन सिपाहियों को इनाम के बतौर को दी गई थी जो उनकी गिरफ्तारी के समय उपस्थित थे।

अंग्रेजों के दस्तावेजों के अनुसार 18 अप्रैल को सायंकाल 7 बजे 'तात्या' को फांसी के मैदान में लाया गया। फाँसी के चबूतरे के चारों ओर अंग्रेज सेना खड़ी थी। अंग्रेज अफसर मीड ने आरोपों को पढ़ा तथा दण्ड को सुनाया। इसके बाद उनकी बेड़ियां काट दी गईं। वह वीरता के साथ दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाते हुए फाँसी के तख्ते की सीढ़ियों पर चढ़े थे। उन्होंने स्वेच्छा से फाँसी का फंदा गले में डाला था। नीचे का तख्ता खिंचने पर थोड़ी सी तड़फन के पश्चात् उस देशभक्त वीर के शरीर से आत्मा उठ गई। निर्जीव शरीर फाँसी पर लटकाता रहा। एक स्थितप्रज्ञ की तरह उसने अत्यन्त वीरता और साहस से मृत्यु का आलिंगन किया था । अनेक अंग्रेज महिलाएँ भी फाँसी के मैदान उपस्थित थी। इस वीर पुरूष की मृत्यु से उनकी आँखो में भी आँसू आ गए थे। कुछ महिलाओं ने तो इनके बाल काटकर स्मृति-चिह्न के रूप में अपने साथ रख लिए थे।

सेना के हटते ही उपस्थित जनसमूह उठ देश भक्त की चरण रज लेने को उमड़ पड़ा था । कहा जाता है कि फाँसी के समय जो उन्होंने वस्त्र पहन रखे थे वह आज भी ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में सुरक्षित है। उनके परिचय में लिखा है भारतीय विद्रोह के नेता तात्या टोपी का कोट, इसे 18 अप्रैल 1859 ई. को फाँसी दी गई।

स्वयं तात्या टोपे के वंशज कहते है कि 18 अप्रैल 1859 ई. को शिवपुत्री में जिसे फंासी के तख्ते पर लटकाया गया था वह तात्य टोपे नही था। कोई दूसरा ही देशभक्त था। इनके वंशज आज ग्वालियर और ब्रह्मावर्त में रहते है। उनके भतीजे भी नारायण लक्ष्मण टोपे तथा भतीजी गंगुबाई का कहना है कि हम बचपन से ही कुटुम्बियो से सुनते आए है कि कथित तात्या के फाँसी चढ़ जाने के बाद भी तात्या अक्सर, विभिन्न देशों में आकर अपने परिवार जनों से मिलता रहा है।

प्रमाण के तौर पर श्री निवास बालाजी हर्डीकर अपनी पुस्तक 'तात्या टोपे' प्रकाशक नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली के प्राक्कथन पृष्ठ 9 के दूसरे गद्यांश में लिखते है कि '' लेखक को अपने बाल्यकाल में' इस क्रांति की जन्मभूमि ब्रह्मवर्त (बिठूर) में उन वृद्ध जनों से बाते सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जो उस क्रांतिकाल में जीवित थे तथा उनके स्मृति पटल पर इससे सम्बन्धित घटनाएं अंकित थी। तात्या टोपे के विदुर भ्राता विनायक पाण्डुरंग टोपे तथा सदाशिव पाण्डु रंग टोपे के दर्शन का सौभाग्य लेखक को बचपन में मिला था।

श्री निवास बालाजी हर्डीकर ने लिखा है कि 'तात्या के पिता पाण्डुरंग कथित तात्या के फाँसी चढ़ जाने के 4 महीने 7 दिनों बाद अर्थात् 27 अगस्त 1859 ई. को ग्वालियर के किले से जब नजरबन्दी के बाद मुक्त हुए जो आर्थिक स्थिति अत्यधिक खराब थी। टोपे के परिवार जनों के अनुसार इस संकटकाल में तात्या वेश बदलकर अपने पिता से मिलने आए थे। उन्हें आर्थिक सहयोग देकर भी गए थे। जिससे उनके

पिता ने रहने के लिए कच्चा मकान बनवाया था।'

सन् 1861 ई. में दुर्गा बहिन की शादी पर तथा कुछ ही माह पश्चात माता-पिता के निधन पर वह संन्यासी के वेश में उपस्थित हुए थे। ग्वालियर में निवास करने वाले श्री शंकर लक्ष्मण टोपे का कहना है कि जब वह 13 वर्ष के थे तो एक बार उनके पिता लक्ष्मण टोपे विमाता के पुत्र थे। रुग्णावस्था में उनसे मिलने साधु के वेश में आए थे। तब उनके पिता ने मुझसे कहा था कि ये तात्या है इन्हे नमस्कार करो। उस समय श्री शंकर की अवस्था 75 वर्ष की थी। उनके कथनानुसार यह घटना सन् 1895 ई. के आसपास की है। अर्थात् कथित तात्या टोपे की फाँसी के 36 वर्ष बाद की है।

तात्या टोपे फाँसी के तख्ते पर नहीं चढ़े थे। इसका समर्थन महारानी लक्ष्मीबाई के सैनिक अफसर उनके विश्वसनीय सहयोग लालू बक्षी का भी है। बक्षी के स्थान पर वक्षी लिखा जाना। इसलिए उपयुक्त है क्योंकि ये परिवार इसी तरह लिखता है।

वास्तविक तात्या टोपे को 18 अप्रैल 1959 ई. को सायंकाल 7 बजे के पश्चात् फाँसी पर शिवपुरी में लटकाया गया था या नहीं? इस सन्दर्भ में अनेक तथ्य हैं जो शब्दों की सीमा में नहीं समेटे जा सकते हैं।

अस्तुः प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की क्राति के महान अग्रदूत श्री तात्या टोपे की 200वीं जयंती वर्ष को राष्ट्र पूर्ण श्रद्धा और सम्मान के साथ राष्ट्रीय स्तर पर मना रहा है। एतदर्थ हम सभी उनके जीवन के आदर्श और देशभक्ति के गुणों को अंगीकार करें। तभी राष्ट्रीय स्तर पर इस महान् क्रांतिकारी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुप्ता-सदन
एस.बी.के.गर्ल्स हा.सै.स्कूल
के पास मंडी अटलबंद
भरतपुर (राज.) 321001
मो. 9983409454

> निर्माणों के पावन युग में
> हम चरित्र निर्माण न भूलें।
> स्वार्थ साधना की आँधी में
> वसुधा का कल्याण न भूलें।।

गोस्वामी तुलसीदास के काव्य की प्रासंगिकता

❐ **डॉ. अनुराधा पालीवाल**

गोस्वामी तुलसीदास के जीवन के विषय में अभी तक पर्याप्त विवाद बना हुआ है किन्तु अधिकांशतः तुलसी साहित्य के अन्वेषकों ने उनका जन्म संवत 1589 (सन् 1532) भादो मास, शुक्ल पक्ष एकादशी मंगलवार को चित्रकूट से 15 किलोमीटर पहले दूबे के पुरवा को माना है जो बाद में राजापुर के नाम से बांदा जनपद में विख्यात हुआ।

इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। बाल्यावस्था में ही माता-पिता का देहावसान हो जाने के कारण आश्रय विहीन तुलसी को पर्याप्त संकट भोगना पड़ा। तुलसीदास के गुरु श्री नरहरिदास ने आत्मीयता के साथ पाला पोसा और दीक्षा दी। इन्हीं की कृपा से इन्होंने श्रीराम कथा का श्रवण किया और जीवनभर पूरी निष्ठा से वे श्रीराम से जुड़े रहे। काशी की पाठशाला में ज्योतिष व वैदिक साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से उनका विवाह हुआ। किंवदन्ती है कि पत्नी के कटुवचन से आहत व्यथित तुलसी श्रीराम की भक्ति के प्रति समर्पित हुए।

पत्नी के पीहर चले जाने पर स्वयं को अकेला महसूस कर रत्नावली के पीछे-पीछे चले गए। तब रत्नावली ने कहा कि हे स्वामी जितना नेह आपने मुझ हाड माँस के शरीर से किया है उतना ही श्रीराम से किया होता तो भवसागर पार हो जाते। तुलसी ये सुनकर उल्टे पाँव लौट आए और देखिए महान कवि की उत्कृष्ट रचनाएँ जो जीवन ऊर्जा की सकारात्मकता को प्रस्तुत करती हैं। मनोविज्ञान में एक शब्द होता है लिबिडो (जैविक ऊर्जा) जिसके दो रूप होते हैं - सकारात्मक व नकारात्मक, तुलसीदास जी ने स्त्री के कथन से शक्ति प्राप्त की। यह शक्ति उनकी प्रेरणा बन गई और वास्तव में स्त्री पुरुष की सक्रियता एवं विधायी शक्ति की प्रेरणा स्रोत है, इसके अभाव में शिव भी निष्क्रिय है, माता कौशल्या, सीता, अनसुइया, सुमित्रा, शबरी, मन्दोदरी आदि मानस के ऐसे स्त्री पात्र हैं जिनसे आदर्शों की प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। भारत ही क्यों समूचे विश्व में नारी की स्थिति पुरुष के साथ सहयोगी भाव की रही है।

'जाकी रही भावना जैसी' के अनुसार किसी कि भी प्रति किसी भी क्षेत्र में हम अपनी भावना के अनुरूप ही मानव मात्र में उसके दर्शन करते हैं। जो नारी को श्रद्धा से देखता है वह सम्मान, प्रतिष्ठा के भाव से दर्शन करता है और जो अज्ञान के वशीभूत होकर उसे वासनापूर्ति व भोग्या मानता है वह अपने विनाश को स्वयं आमन्त्रित करता है। अज्ञान के वशीभूत ऐसे लोग ही आज स्त्री जाति को अपमानित कर मानवता को कलंकित कर रहे हैं। भौतिकता की चकाचौंध में नैतिकता का पतन हो रहा है। कहने को तो हम विज्ञान व संचार तकनीक के युग में है। विकास प्रक्रिया प्रगति पर है। तकनीकी उपकरणों की सुविधाओं को भोग रहे हैं। लेकिन स्त्रियों के साथ घृणित कृत्यों ने मानवता को शर्मसार कर दिया, ऐसी प्रगति से लज्जा आती है। ऐसा विकास शर्मनाक है। तब लगता है कि पशुता के लक्षणों को अपनाकर निम्न स्तर के मनुष्यों ने रावण को भी पीछे छोड़ दिया।

छलछद्म, कामी चरित्र, कुप्रवृत्तिजन्य अपराध करने वाला पुरुष हो या नारी दोनों ही निन्दनीय हैं। तुलसीदास भी ऐसे कुपात्रों के प्रति

उपेक्षा का भाव रखते हैं। रावण ने सीता का हरण किया परिणामस्वरूप रावण जैसे विद्वान की दुर्गति ही हुई है अर्थात् कुत्सित प्रवृत्तियों के परिणाम भी हानिकारक होते हैं।

दो पंक्तियों का उल्लेख सर्वत्र बार-बार होता है।

ढोल गंवार शुद्र पशु नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी।।

ये पंक्तियाँ क्या तुलसी को नारी विरोधी कहती हैं? नहीं। ये नारी विरोधी नहीं है। जब मर्यादा का उल्लंघन हो तो उस मर्यादा का उल्लंघन करने वाला कोई भी प्राणी ताड़ना का अधिकारी होता है चाहे वह पुरुष है चाहे नारी या कोई जीव। अतः जहाँ मर्यादा का उल्लंघन होता है वहाँ ताड़ना अवश्य होनी चाहिए। ताड़का और शूर्पणखा इसलिए दंडित हुई क्योंकि उन्होंने सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन किया था। तुलसी नारी विरोधी नहीं है। इन पंक्तियों पर काफी शोध, अनुसंधान हो चुके हैं। इस पर विस्तृत चर्चा करें तो शब्दों की संख्या कम ही रहेगी। तुलसी के नारी पात्रों को देखा जाए तो एक लोकदृष्टा रक्षक भाव का कवि उभर कर सामने आता है। पुरुषों की स्त्रियों के प्रति जो भोगवादी व सामंतवादी दृष्टि है उस पर अंकुश लगे और महिला का उत्थान हो उसका सशक्तीकरण हो उसके लिए मानस आज भी प्रासंगिक है। यदि रामचरितमानस को ध्यान से पढ़ा जाए और व्यवहार में लाया जाए तो आपसी कटुता को समाप्त किया जा सकता है। तुलसीदास जी एक ऐसे समाज की रचना में विश्वास रखते हैं जिसमें 'लोकादर्श' की प्रतिबद्धता की भावना से पूरा समाज जुड़ा हो। जीवन के व्यापक मूल्यों के प्रति मानव मात्र की निष्ठा- राम के संकल्प से जुड़कर हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यही गोस्वामी जी का सिद्धांत था। उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष था। लोक समन्वय की भावना में निष्ठा ताकि टूटते हुए समाज को बचाया जा सके। आज टूटते हुए परिवारों, बिखरते रिश्तों को यदि बचाना है तो घर-घर में रामचरितमानस को फिर से व्याप्त करना होगा। माता-पिता, भाई-भाई, पुत्र-पिता, पुत्र-माता, वधू-सास, पति-पत्नी, राजा-प्रजा आदि के बीच सामंजस्य, सौहार्द्र व प्रेममयी उदारता व विश्वास को गोस्वामी तुलसीदास की अमिट काव्य रचना ही पुनः जीवित कर सकते हैं। अपनी कृतियों के माध्यम से उन्होंने आजीवन मानवीय मूल्यों की रक्षा की है।

गोस्वामी तुलसीदास की श्रीराम के प्रति एक मात्र निष्ठा आजीवन बनी रही-

एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।।

तुलसी के व्यक्तित्व की यह सबसे बड़ी विशेषता थी कि स्वयं के संकट के साथ लोक संकट की मुक्ति के लिए भी वे जीवन भर स्वप्न देखते रहे। कलयुग के पतनशील समाज के समानान्तर ऐसे रामराज्य की कल्पना जहाँ कोई दरिद्र न हो, दुःखी न हो, दीन-हीन व मूर्ख न हो। तुलसी की वैकक्पिक प्रस्तावना है। '**तुलसी ममता राम सो, समता सब संसार**' तुलसी का यह भाव राम से गहरा प्रेम व कल्याणकारी राज्य का आदर्श उपस्थित करता है। गोस्वामी उत्तर भारत के सबसे बड़े लोकनायक थे जिनकी कविता में आदि से अंत तक समन्वय की विराट चेष्टा है।

तुलसी के विनय पत्रिका में राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का ही चित्रण है। समाज में सज्जन दुःखी है, सज्जनता चिंताग्रस्त है और दुर्जनों का उत्साह बेहिसाब बढ़ गया है '**सिदत साधु, साधुता सोचति, खल बिलसत, हुलसति खलाई है।**' तुलसीदास का इन विषम परिस्थितियों में अपने आराध्य से कृपा का आग्रह करना मानव मूल्यों में आस्था प्रकट करना है। जब तुलसीदास ने जीवन मूल्यों में आस्था नहीं छोड़ी तो आज हमें भी उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये। '**मानव मूल्यों को आज भी छोड़ने की जरुरत नहीं है।**'

भक्तिकाल का वह युग सभी दृष्टियों से संकटग्रस्त था। प्रजा दुःखी रही, ऐसे में गोस्वामी का रामकाव्य औषधि का कार्य कर रहा था। वर्तमान में भी समस्याएं उसी प्रकार से मुँह खोले खड़ी हैं चाहे वो भ्रष्टाचार की हो, मर्यादाओं के हनन की हो या युवाओं में असंतोष व तनाव की, समस्याओं का रूप परिवर्तित हो गया है। मूल में वही बात है, क्या हमारे राजनेता गोस्वामी के कृतित्वों का अध्ययन नहीं करते? क्या वे नीति नहीं जानते? भ्रष्टाचार इतना व्यापक हो गया- व्यापम सर्वत्र व्यापम..... नैतिकता को ताक पर रखकर आज हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। तुलसी ने अपने युग के लोक संकट का एकमात्र हल समर्पित भाव से श्रीराम भक्ति बताया और भारतीयों को जातीय, धार्मिक, स्थानीय मतभेदों को भूलकर एक होकर एक मंच पर ले जाने का अथक प्रयास किया है। लोक जीवन के विविध सम्बन्धों को लेकर आदर्श तथा निष्ठामय चरित्र निर्माण तुलसी की अनुभूति तथा अभिव्यंजना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

आज युवा वर्ग कैरियर को लेकर चिंतित रहता है। छोटी-छोटी कठिनाइयों से घबराकर उग्र हो जाते हैं। नैतिकता को समझना नहीं चाहते, स्वार्थ लाभ अधिक प्रभावी बना हुआ है, ऐसे में गोस्वामी तुलसीदास के संघर्षपूर्ण जीवन से शिक्षा लें। गोस्वामी जिन्होंने माता-पिता को खो दिया, अकेले जीवन व्यतीत किया, जीवन महामारियों से ग्रस्त था, आर्थिक तंगी को भुगता, मध्यकाल की संकटग्रस्त परिस्थितियों में रहकर भी अपने काव्य में आत्मिक छटपटाहट को व्यक्त किया। ऐसे में गोस्वामी तुलसीदास का जीवन प्रेरक बन सकता है। युवाओं को समस्याओं से घबराकर अवसाद में आने की आवश्कता नहीं है। इस महान् कवि की जीवनी को प्रेरणा पुंज बनाएं। युवा वर्ग भारतीय लोक अस्मिता की रक्षा का संकल्प ले और स्वयं के व्यक्तित्व को मजबूत बनाएं। तुलसीदास महाकवि थे। उन्होंने अपनी रचनाओं से रसात्मक साहित्य की अपूर्व श्रीवृद्धि की। उन्हें सुकवियों का सरदार कहा जाता है। उनके गौरव ग्रंथ हिन्दी साहित्य के महान रत्न है। काव्य सौन्दर्य, प्रेम, कवित्व व दर्शन का असाधारण सामंजस्य उनके साहित्य की महती विशेषता है। तभी तो कहा है '**सूर सूर तुलसी शशि उड़गन केशवदास, अबके कवि खद्योत सम जहँ तहँ करत प्रकाश**' इस प्रकार वर्तमान युग में भी तुलसी के साहित्य का अध्ययन प्रासंगिक है।

पुनः गोस्वामी तुलसीदास को कोटि-कोटि नमन।

प्रवक्ता
आर्य म. शि. प्र. महाविद्यालय
मालवीय नगर, अलवर(राज.)
मो.: 9413455461

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2016

1. **विभागीय मासिक शिविरा पत्रिका के वार्षिक अंशदान की दरों में जुलाई 2016 के अंक से संशोधन।**
2. **विशेष योग्यजनों के आरक्षण एवं बैकलॉग के संबंध में।**
3. **आर टी ई पोर्टल : करणीय कार्य एवं दायित्व।**
4. **एक ही प्रकृति के आक्षेप बार-बार दोहराए जाने की स्थिति को रोकने एवं अंकेक्षण दलों को वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाने बाबत।**
5. **महालेखाकार के अंकेक्षण दलों को वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाए जाने एवं आक्षेपों की ठोस अनुपालना भिजवाने बाबत।**
6. **शिक्षा सत्र 2016-17 में कक्षा 7 या 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के क्रम में।**
7. **कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा 2015-16 की प्रीमियम राशि के संबंध में।**
8. **सेवानिवृत्ति परिलाभों के विलम्ब से भुगतान करने पर विलम्बित अवधि पर देय ब्याज के भुगतान बाबत।**
9. **शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2016 के आयोजन में सहयोग करने बाबत।**
10. **शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2016 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।**
11. **पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में।**
12. **विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2016-17 के सम्बन्ध में निर्देश।**

1. विभागीय मासिक शिविरा पत्रिका के वार्षिक अंशदान की दरों में जुलाई 2016 के अंक से संशोधन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● आदेश ● दिनांक 11.07.2016 को अधोहस्ताक्षरकर्ता की अध्यक्षता में आयोजित बैठक के दौरान शिविरा पत्रिका (मासिक) के मुद्रण लागत में वृद्धि होने तथा वित्तीय वर्ष 2016-17 व 2017-18 हेतु जारी नवीन कार्य आदेश के कारण पूर्व में विभागीय मासिक शिविरा पत्रिका के वार्षिक अंशदान की दरों को माह जुलाई 2016 के अंक से निम्नानुसार संशोधित करने की एतद्द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाती है।

क्र. सं.	विवरण	संशोधित दरें (वार्षिक आधार प्रति कार्यालय/संस्था/व्यक्ति)
01.	समस्त राजकीय विद्यालय	150/-रु (वार्षिक अंशदान)
02.	समस्त गैर सरकारी मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय (राज. बोर्ड/सी.बी.एस.सी.)/संस्थाएँ	200/-रु (वार्षिक अंशदान)
03.	समस्त अध्यापक एवं शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारी	75/- रु (वार्षिक अंशदान)

उक्त दरें माह जुलाई 2016 से प्रभावी होगी तथा अंशदान वार्षिक आधार पर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम नकद/डिमाण्ड ड्राफ्ट/बैंकर चैक/ई.एम.ओ./पोस्टल ऑर्डर से ही मान्य होगा।

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/प्रकाशन/निविदा/5677/2015/367/ दिनांक : 28/7/2016

प्रतिलिपि-निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है-

1. निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
2. उपनिदेशक (प्रशासन), कार्यालय हाजा।
3. सहायक लेखाधिकारी, रोकड़ अनुभाग, कार्यालय हाजा।
4. अनुभाग अधिकारी, कम्प्यूटर अनुभाग को प्रेषित कर निर्देशित किया जाता है कि उक्त आदेश को विभागीय वेबसाइट पर अपलोड करें।
5. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (प्रथम/द्वितीय) को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों की संख्यानुसार समेकित वार्षिक अंशदान अविलम्ब भिजवाएँ।
6. समस्त शाला प्रधान (माध्यमिक शिक्षा) को निर्देशित किया जाता है कि पत्रिका हेतु वार्षिक शुल्क/रजिस्ट्रेशन अविलम्ब विद्यार्थी कोष से जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय में जमा करावें।

●वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकनेर

2. विशेष योग्यजनों के आरक्षण एवं बैकलॉग के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/साप्र/सी/5576/निशक्तजन/09-13// दिनांक 28/7/2016 ● समस्त उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा ● विषय : राज्य में विशेष योग्यजनों के आरक्षण एवं बैकलॉग के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत मुख्य सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग निदेशालय, विशेष योग्यजन, जयपुर के पत्रांक एफ 16(1) ( ) वि.यो./16/808, जयपुर दिनांक 25.04.2016 एवं आयुक्त विशेष योग्यजन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, न्यायालय आयुक्त विशेष योग्यजन से प्राप्त परिपत्र क्रमांक : एफ 1( ) आईडीए/आयु.वियो.जन./2016/558, जयपुर दिनांक 26.05.2016 के परिपत्रों की छायाप्रति संलग्न कर निर्देशित किया जाता है कि उक्त परिपत्र की पूर्ण पालना सुनिश्चित करावें साथ ही अपने अधीनस्थ समस्त जिला शिक्षा अधिकारीयों को भी उक्त परिपत्र की पालना सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित करें।

● अतिरिक्त शिक्षा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

● राजस्थान सरकार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, न्यायालय आयुक्त विशेष योग्यजन ● एफ1( )IDA/आयु.वियो.जन./2016/559 जयपुर, दिनांक 26/5/2016 ● विषय : राज्य में विशेष योग्यजनों के आरक्षण एवं बैकलॉग के संबंध में। ● परिपत्र

राज्य सरकार द्वारा विशेष योग्यजनों को आरक्षण हेतु निःशक्तजन (समान अवसर, अधिकार संरक्षण एवं पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 की धारा 33 में एवं राज्य सरकार द्वारा जारी निःशक्तजन (समान अवसर, अधिकार संरक्षण एवं पूर्ण भागीदारी) नियम 2011 के नियम 36 में विशेष योग्यजन को तीन प्रतिशत आरक्षण उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान है।

इस नियम में निःशक्त व्यक्तियों को देय 3 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करने हेतु रोस्टर बिन्दु (1), (34), (67) निःशक्त व्यक्तियों के लिए आरक्षित है। इस संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सिविल अपील संख्या 9096/2013 यूनियन ऑफ इण्डिया व अन्य बनाम नेशनल फेडरेशन ऑफ ब्लाइन्ड व अन्य में भी निःशक्तजन के लिए कम से कम तीन प्रतिशत पद आरक्षित किए जाने संबंधी निर्णय पारित किया गया है। अर्थात राज्य के अधीन सेवाओं में विशेष योग्यजनों हेतु चिह्नित पदों की सीधी भर्ती की सभी रिक्तियों के 3 प्रतिशत पदों पर विशेष योग्यजनों को आरक्षण प्रदान किया जावे।

राज्य सरकार द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली के उक्त निर्णय की अनुपालना किए जाने का निर्णय लिया गया है। तदनुसार राज्य के अधीन सभी नियुक्ति प्राधिकारियों को एतद् द्वारा निर्देशित किया जाता है कि वे अपने विभाग में विशेष योग्यजनों हेतु चिह्नित पदों की सीधी भर्ती की कुल रिक्तियों में उक्त संदर्भित 2011 के नियमों के नियम 36 के अनुसार कम से कम 3 प्रतिशत पदों पर विशेष योग्यजन वर्ग का आरक्षण सुनिश्चित करें। साथ ही यह भी निर्देशित किया जाता है कि यदि किसी विभाग में अभी तक रोस्टर रजिस्टर का संधारण नहीं किया हो, तो अविलम्ब इस हेतु रोस्टर रजिस्टर का संधारण कर उसके आधार पर ही विशेष योग्यजनों हेतु आरक्षण योग्य पदों की गणना करावें एवं बैकलॉग की पूर्ति करावें।

इन निर्देशों की कठोरता से पालन सुनिश्चित की जावे। किसी भी प्रकार की कोताही को गंभीरता से लिया जाएगा।

● (धन्नाराम पुरोहित) आयुक्त विशेष योग्यजन राजस्थान ● क्रमांक : एफ1( )IDA/आयु.नि.जन/12/559-758 जयपुर, दिनांक 26/5/2016

● राजस्थान सरकार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग निदेशालय विशेष योग्यजन ● क्रमांक : एफ 16(1)()वि.यो./16/808 जयपुर दिनांकः 25/04/2016 ● विषयः राज्य में विशेष योग्यजनों के आरक्षण के संबंध में ●परिपत्र

राज्य सरकार द्वारा विशेष योग्यजनों को आरक्षण हेतु राजस्थान निःशक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) नियम, 2011 अधिसूचित किए हुए हैं। उक्त नियमों के नियम 36 में निम्नानुसार प्रावधान हैः-

Reservation for persons with Disabilities :-

In every establishment three percent of the vacancies shall be reserved for persons of class of persons with Disabilities of Which one percent each shall be reserved for persons suffering from :-

(iv) Blindness or low vision;

(v) Hearing impairment;

(vi) Locomotor disability or cerebral palsy.

In the posts identified for each disability by the Goverment of India under section 32 and such reservation shall be treated as horizontal reservation :

Provided that where the nomenclature of any post in the State Government is different from the post in Government of India or any post in the State Government does not exist in any department of the Government of India, the matter shall be referred to the commitee constituted under rule 38 for Identification of the equivalent post in the State Government. The committee shall identify the equivalent post on the basis of nature of job and responsibility of each post.

इस संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली द्वारा सिविल रिटपीटिशन संख्या 9096/2013 यूनियन ऑफ इण्डिया बनाम नेशनल फैडरेशन ऑफ ब्लाइण्ड एवं अन्य में दिनांक 08.10.2013 को निर्णय पारित किया है जिसके निष्कर्षात्मक अंश निम्नानुसार है :-

"Thus, after thoughtful consideration, we are of the view that the computation of reservation for persons with disabilities has to be computed in case of Group A, B, C, and D posts in an indentical manner viz, computing 3% reservation on total number of vacancies the cadre strength which is the intention of the legislature."

अर्थात् राज्य के अधीन सेवाओं से विशेष योग्यजनों हेतु चिह्नित पदों को सीधी भर्ती की सभी रिक्तियों के 3 प्रतिशत पदों पर विशेष योग्यजनों को आरक्षण प्रदान किया जाए।

राज्य सरकार द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली के उक्त निर्णय की अनुपालना किए जाने का निर्णय लिया गया है। तदनुसार, राज्य के अधीन सभी नियुक्ति प्राधिकारियों को एतद् द्वारा निर्देशित किया जाता है कि वे अपने विभाग में विशेष योग्यजनों हेतु चिह्नित पदों की सीधी भर्ती की कुल रिक्तियों में उक्त संदर्भित 2011 के नियमों के नियम 36 के अनुसार, कम से कम 3 प्रतिशत पदों पर विशेष योग्यजन वर्ग का आरक्षण सुनिश्चित करें। साथ ही यह भी निर्देशित किया जाता है कि यदि किसी विभाग ने अभी तक रोस्टर रजिस्टर का संधारण नहीं किया हो, तो अविलम्ब इस हेतु रोस्टर रजिस्टर का संधारण कर, उसके आधार पर ही विशेष योग्यजनों हेतु आरक्षण योग्य पदों की गणना करावें।

इन निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित की जावे। किसी भी प्रकार की कोताही को गंभीरता से लिया जाएगा।

● (सी.एस. राजन) मुख्य सचिव ● क्रमांक : एफ 16(1)( ) वि.यो./16/809+919 जयपुर, दिनांक : 25-04-2016

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित हैः-

1. अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/शासन सचिव/विशिष्ट शासन सचिव...........को प्रेषित कर निवेदन है कि कृपया उक्त निर्देशों की माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय के प्रकाश में शीघ्रताशीघ्र आपके अधीन सभी नियुक्ति प्राधिकारियों (सभी विभाग, बोर्ड, निगम एवं सार्वजनिक उपक्रम) से पालना करवाए।
2. सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग/राजस्थान अधीनस्थ सेवा बोर्ड।

3. सचिव, राजस्थान विधानसभा सचिवालय/मंत्रिमण्डल सविचालय/राज्यपाल सचिवालय/मुख्यमंत्री कार्यालय।
4. आयुक्त, विशेष योग्यजन आयुक्तालय, जयपुर।

● (सुदर्शन सेठी) प्रमुख शासन सचिव

3. आर टी ई पोर्टल : करणीय कार्य एवं दायित्व।

● कार्यालय निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● परिपत्र

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 12(1)(ग) के अन्तर्गत राज्य में प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एवं ऐसे माध्यमिक/उच्च माध्यमिक गैर सरकारी विद्यालय (जिनमें कक्षा 1 से 8 तक संचालित है) में दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह के बालकों को विद्यालय की एन्ट्री लेवल कक्षा में कुल प्रवेशित बालकों की 25 प्रतिशत सीमा तक निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेश दिया जा रहा है। इस संबंध में प्रवेश प्रक्रिया, भौतिक सत्यापन कार्य एवं गैर सरकारी विद्यालयों को पुनर्भरण राशि के भुगतान कार्य में पूर्ण पारदर्शिता लाने एवं कार्य को सुगमतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु NIC केन्द्र जयपुर के सहयोग से 29 जुलाई 2013 से आरटीई वेब पोर्टल rte.raj.nic.in पर गैर सरकारी विद्यालयों/बीईईओ/जिशिअ प्राशि/माशि (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा ऑनलाइन प्रक्रिया से कार्य किया जा रहा है।

आरटीई पोर्टल पर FLOW BASE (चरणबद्ध रूप से) आधार पर कार्य किया जाता है। अर्थात् पोर्टल पर एक चरण (step) का कार्य पूर्ण होने के बाद ही अगले चरण (step) का कार्य किया जा सकता है। आरटीई वेब पोर्टल पर संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों/बीईईओ/जिशिअ प्राशि/माशि (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा चरणबद्ध तरीके से (step by step) राज्य सरकार/प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर/ राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद जयपुर द्वारा समय-समय पर जारी टाइम फ्रेम के अनुसार कार्य पूर्ण करने पर ही निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशकार्य/भौतिक सत्यापन कार्य/पुनर्भरण कार्य समय पर संपादित किया जा सकता है तथा निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित एवं सत्यापित समस्त बालकों के संबंध में पुनर्भरण राशि का भुगतान संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में किया जा सकता है। इसके लिए संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों/बीईईओ/जिशिअ (प्राशि/माशि)/उपनिदेशक (प्राशि/माशि) के कार्यालयों को नियमित रूप से आरटीई पोर्टल पर राज्य सरकार/विभाग द्वारा निर्धारित टाइम फ्रेम एवं समय-समय पर जारी आदेश/निर्देशों के अनुसार कार्य करने एवं प्रभावी मॉनिटरिंग व्यवस्था करना आवश्यक है।

आरटीई वेब पोर्टल rte.raj.nic.in के होम पेज पर निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009, राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम-2011, राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी अधिसूचनाएँ, प्रवेश, भौतिक सत्यापन एवं पुनर्भरण के संबंध में जारी आदेश/दिशा-निर्देश तथा प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर/राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद जयपुर द्वारा समय-समय पर जारी आदेश/निर्देश आर.टी.ई. पोर्टल पर अपलोड किए जाते हैं। अतः समस्त प्रा/उप्रा./मा./उमा. गैर सरकारी विद्यालय तथा समस्त बीईईओ/जिशिअ प्रा. शिक्षा/मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय)/उपनिदेशक प्रा./मा. शिक्षा कार्यालयों को निर्देशित किया जाता है कि उपर्युक्त समस्त की हार्ड कॉपी आर.टी.ई. पोर्टल से डाउनलोड करके पत्रावली में संधारित कर लेवें जिससे कार्य नियमानुसार सही व समय पर संपादित किया जा सके।

राज्य सरकार ने पत्रांकः-प 9 (1)/शि-5/10 पार्ट/ दिनांक 24.09.2013 के द्वारा माध्यमिक शिक्षा सेट अप में आरटीई अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा अनुभूत की जाने वाली कठिनाइयों के समाधान करने हेतु माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर, समस्त उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा कार्यालयों एवं समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा कार्यालयों में आरटीई प्रकोष्ठ का गठन करने तथा प्रभारी अधिकारी घोषित करने के आदेश जारी किए हैं जिसकी पालना में माध्यमिक शिक्षा सेट अप के उक्त समस्त कार्यालयों द्वारा कार्य संपादित किया जा रहा है। अतः माध्यमिक शिक्षा सेट अप के विद्यालयों एवं जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा कार्यालयों द्वारा आरटीई अधिनियम के क्रियान्वयन एवं आरटीई पोर्टल पर कार्य करने में अनुभूत की जाने वाली समस्याओं के समाधन हेतु निदेशालय माध्यमिक शिक्षा बीकानेर, उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं जिशिअ माध्यमिक शिक्षा कार्यालयों से पत्र व्यवहार किया जाना चाहिए।

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर के आरटीई अनुभाग द्वारा आरटीई पोर्टल पर प्रदर्शित विभिन्न रिपोटर्स को डाउनलोड कर समीक्षा की जाती है। समीक्षा उपरान्त पाया गया कि कुछ प्रा./उप्रा./मा./उमा. गैर सरकारी विद्यालयों एवं संबन्धित बीईईओ/जि.शि.अ. प्रा.शिक्षा/मा.शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा आरटीई पोर्टल पर राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार कार्य सम्पादित नहीं करने अथवा धीमी गति से कार्य करने की स्थितियाँ प्रकट हो रही है, जिसके कारण गैर सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित एवं सत्यापित समस्त बालकों की पुनर्भरण राशि का विद्यालयों को किश्तवार भुगतान (प्रथम/द्वितीय) करने में अनावश्यक विलम्ब होता है अथवा विद्यालय पुनर्भरण राशि के भुगतान से वंचित रह जाते हैं तथा नया शैक्षिक सत्र प्रारम्भ हो जाने पर पूर्व शैक्षिक सत्र में कुछ गैर सरकारी विद्यालयों के पुनर्भरण से वंचित रहने की प्रतिकूल परिस्थितियाँ बन जाती है। इस संबंध में राज्य सरकार एवं विभाग द्वारा समय-समय पर जारी आदेश/निर्देशों एवं प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा जारी समसंख्यक परिपत्र क्रमांकः-शिविरा/आरटीई/बी/सॉफ्टवेयर/18894/14-15/150 दिनांक 10.03.2015 के अतिक्रमण में निर्देशित किया जाता है कि-

(अ) प्रा/उप्रा एवं ऐसे मा/उमा गैर सरकारी विद्यालयों (जिनमें कक्षा 1 से 8 तक संचालित है) द्वारा आरटीई पोर्टल पर करणीय कार्य एवं दायित्व-

1. यदि किसी गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय को शिक्षा विभाग द्वारा माध्यमिक विद्यालय के लिए क्रमोन्नति आदेश जारी किये जाते हैं तो संबंधित उच्च प्राथमिक गैर सरकारी विद्यालय का दायित्व

होगा की वह तत्काल माध्यमिक स्तर की क्रमोन्नति आदेश संलग्न करते हुए विद्यालय के स्तर में परिवर्तन करने बाबत संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा को प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करेगा। संबंधित जिशिअ प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय द्वारा जिशिअ माध्यमिक शिक्षा से पुष्टि करने के बाद जिशिअ प्रारंभिक शिक्षा के लॉगईन से संबंधित विद्यालय के उच्च प्राथमिक से माध्यमिक विद्यालय में परिवर्तन करेगा, जिससे वह विद्यालय माध्यमिक शिक्षा सेटअप में दिखाई देने लगेगा। इस संबंध में विद्यालय जिशिअ माध्यमिक शिक्षा को भी प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर सूचित करेगा। आरटीई से संबंधित आगामी समस्त कार्यवाही जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय द्वारा संपादित की जाएगी। यदि किसी गैर सरकारी विद्यालय द्वारा माध्यमिक स्तर में क्रमोन्नति के पश्चात तत्काल उपर्युक्तानुसार प्रार्थना पत्र संबंधित जिशिअ प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय में प्रस्तुत नहीं करने के कारण भुगतान कार्य में किसी भी प्रकार की प्रतिकूल परिस्थिति के उत्पन्न होने/भुगतान नहीं होने पर विद्यालय स्वयं उत्तरदायी होगा।

2. यदि किसी गैर सरकारी विद्यालय का शाला भवन परिवर्तन/माध्यम परिवर्तन (हिन्दी/अंग्रेजी)/विद्यालय का नाम परिवर्तन करने/क्रमोन्नति के आदेश विभाग द्वारा जारी किए जाते हैं अथवा विद्यालय के ब्लॉक में परिवर्तन/वार्ड संख्या में परिवर्तन/विद्यालय द्वारा बैंक खाता संख्या में परिवर्तन किया जाता है तो राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार निर्धारित समय में ही आरटीई पोर्टल पर नियमानुसार संशोधन किया जा सकेगा।
3. राज्य सरकार/राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद जयपुर/प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा समय-समय पर जारी टाइम फ्रेम के अनुसार निर्धारित समयावधि में निःशुल्क शिक्षा प्रवेश प्रक्रिया सम्बन्धी कार्य पूर्ण करना/स्कूल प्रोफाइल अपडेट करना/एंट्री लेवल कक्षा में निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित 25 प्रतिशत बालकों एवं शेष 75 प्रतिशत प्रवेशित बालकों की सूचना आर.टी.ई. पोर्टल पर अपलोड कर लॉक करना।
4. निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित 25 प्रतिशत बालकों का भौतिक सत्यापन होने पर उसी दिनांक को भौतिक सत्यापन दल से सत्यापन रिपोर्ट प्राप्त कर आगामी 03 दिवस में सत्यापन रिपोर्ट को आर.टी.ई. पोर्टल पर अनिवार्य रूप से सही-सही अपलोड कर लॉक करना।
5. संबंधित बीईईओ/जिशिअ (प्राशि/माशि) कार्यालय द्वारा भौतिक सत्यापन रिपोर्ट को आर.टी.ई. पोर्टल पर ऑनलाइन मिलाने करने पर लगाये गये आक्षेप की 03 दिवस में नियमानुसार ऑनलाइन पूर्ति कर अनिवार्य रूप से पुनः लॉक करना।
6. संबंधित बीईईओ/जिशिअ (प्राशि/माशि) कार्यालय द्वारा भौतिक सत्यापन रिपोर्ट को आर.टी.ई. पोर्टल पर ऑनलाइन मिलान करने पर सही पाए जाने पर Verified करने के 03 दिवस में प्रथम किश्त के भुगतान हेतु क्लेम बिल (दावा प्रपत्र) जनरेट कर उसकी हार्ड कॉपी पोर्टल से डाउनलोड कर (अध्यक्ष/सचिव से हस्ताक्षरित) हार्ड कॉपी रजिस्टर्ड (एडी) डाक से संबंधित बीईईओ/जिशिअ प्राशि/ माशि (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय को राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार निर्धारित अवधि से पूर्व अनिवार्य रूप से प्रेषित करना।
7. शैक्षिक सत्र में द्वितीय किश्त के भुगतान हेतु क्लेम बिल (दावा प्रपत्र) जनरेट कर उसकी हार्ड कॉपी पोर्टल से डाउनलोड कर (अध्यक्ष/सचिव से हस्ताक्षरित) हार्ड कॉपी रजिस्टर्ड (एडी) डाक से संबंधित बीईईओ/जिशिअ प्रा. शिक्षा/मा.शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय को राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार निर्धारित अवधि से पूर्व अनिवार्य रूप से प्रेषित करना।
8. आर.टी.ई. एक्ट 2009 के प्रावधानान्तर्गत 25 प्रतिशत निःशुल्क प्रवेशित बालकों को प्रवेश के समय पाठ्यसामग्री निःशुल्क उपलब्ध करवाना।
9. गैर सरकारी विद्यालय द्वारा आर.टी.ई. वेब पोर्टल rte.raj.nic.in से नियमित रूप से पोर्टल से आदेश/निर्देश डाउनलोड कर अद्यतन जानकारी प्राप्त करना।
10. आर.टी.ई. एक्ट 2009 के प्रावधानान्तर्गत 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह के बालकों के संबंध में आवश्यक समस्त अभिलेख/दस्तावेज (प्रमाण पत्र, प्रवेश आवेदन पत्र, भौतिक सत्यापन रिपोर्ट, क्लेम बिल आदि की प्रति) विद्यालय में सुरक्षित रखना।
11. यदि किसी भी प्रा/उप्रा/मा/उमा गैर सरकारी विद्यालय की स्वयं की लापरवाही/शिथिलता के कारण आर.टी.ई. पोर्टल पर राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार निर्धारित समय में कार्य संपादित नहीं करने की स्थिति में (आर.टी.ई. पोर्टल बंद हो जाने पर) कोई भी गैर सरकारी विद्यालय पुनर्भरण की प्रथम/द्वितीय किश्त के भुगतान से वंचित रहता है तो संबंधित विद्यालय इसके लिए उत्तरदायी होगा तथा निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे बालकों से किसी भी प्रकार का शुल्क प्राप्त नहीं कर सकेगा और ना ही बालकों को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने अथवा शाला से निष्कासन की कार्यवाही नहीं कर सकेगा तथा उन बालकों की निःशुल्क प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करवाने का उत्तरदायी होगा।

(ब) बीईईओ/जिशिअ प्रा. शिक्षा/मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर करणीय कार्य एवं दायित्व–

1. राज्य सरकार/राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद, जयपुर/निदेशालय स्तर से समय-समय पर जारी टाइम फ्रेम के अनुसार निर्धारित समय में गैर सरकारी विद्यालयों द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर की जाने वाली कार्यवाही के संबंध में कार्यालय में कार्यरत एपीसी आर.टी.ई./आर.टी.ई. प्रभारी अधिकारी की देखरेख में आर.टी.ई. सेल का गठन कर नियमित रूप से प्रभावी मोनेटरिंग करते हुए समय पर कार्यों को पूर्ण करवाया जाना सुनिश्चित करना।

2. राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार प्रा./उप्रा. गैर सरकारी विद्यालयों का संबंधित बीईईओ/जिशिअ प्रा. शिक्षा तथा माध्यमिक/उ.मा. गैर सरकारी विद्यालयों का संबंधित जिशिअ मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) द्वारा निर्देशानुसार भौतिक सत्यापन करवाने हेतु आवश्यकतानुसार सत्यापन दलों का गठन करना, भौतिक सत्यापन दलों का प्रशिक्षण करवाना, ब्लॉक/जिले में शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त ऐसे समस्त प्रा./उप्रा./मा./उमा. गैर सरकारी विद्यालय जिनमें 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित एवं पूर्व शैक्षिक सत्रों के क्रमोन्नत समस्त बालकों का भौतिक सत्यापन निर्धारित टाइम फ्रेम के अनुसार पूर्ण करवाना।
3. भौतिक सत्यापन/निरीक्षण रिपोर्ट कार्यालय स्तर पर अनुभवी कार्मिक/अधिकारी से जांच करवाकर समस्त बिन्दुओं की पूर्ति एवं पुनर्भरण की स्पष्ट अनुशंसा सहित (कोई कॉलम खाली न हो) सत्यापन करने की तिथि से 03 दिवस में भौतिक सत्यापन दल के अध्यक्ष से संबंधित कार्यालय में भौतिक सत्यापन रिपोर्ट प्राप्त किया जाना सुनिश्चित करना।
4. ब्लॉक/जिले में भौतिक सत्यापन करवाये गये प्रा./उप्रा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालयों की संख्या एवं भौतिक सत्यापन रिपोर्ट कार्यालय में प्राप्त होने की संख्या आरटीई पोर्टल पर संबंधित कार्यालय द्वारा नियमित रूप से अपलोड करना।
5. ब्लॉक/जिले में संचालित ऐसे प्रा./उप्रा./मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालय जो शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त है परन्तु आर.टी.ई. पोर्टल पर रजिस्टर्ड नहीं है उनको आर.टी.ई. पोर्टल पर रजिस्टर्ड करवाना।
6. ब्लॉक/जिले में संचालित ऐसे प्रा./उप्रा./मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालय जिन्हें आर.टी.ई. एक्ट 2009 की पालना से छूट प्राप्त है, को छोड़कर ऐसे समस्त प्रा./उप्रा. गैर सरकारी विद्यालयों एवं ऐसे मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालयों (जिनमें कक्षा 1 से 8 तक संचालित है) में आर.टी.ई. एक्ट 2009 के अन्तर्गत दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह के 25 प्रतिशत बालकों के निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेश सुनिश्चित करना।
7. ब्लॉक/जिले में संचालित ऐसे समस्त प्रा./उप्रा./मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालय जिनका भौतिक सत्यापन करवा दिया है उन समस्त विद्यालयों से भौतिक सत्यापन रिपोर्ट सत्यापन करने के 03 दिवस में आर.टी.ई. पोर्टल पर अपलोड कर लॉक करवाना तथा उन समस्त विद्यालयों की भौतिक सत्यापन रिपोर्ट को आगामी 03 दिवस में ऑनलाइन मिलान कर verified करना।
8. ब्लॉक/जिले में संचालित ऐसे समस्त प्रा./उप्रा./मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालय जिनकी भौतिक सत्यापन रिपोर्ट ऑनलाइन मिलान करने पर कार्यालय द्वारा आक्षेप लगाये गये है उन आक्षेपों की पूर्ति संबंधित प्रा./उप्रा./मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालयों से आगामी 03 दिवस में करवाना।
9. ब्लॉक/जिले में संचालित ऐसे समसत प्रा./उप्रा./मा./उ.मा गैर सरकारी विद्यालय जिनकी भौतिक सत्यापन रिपोर्ट आर.टी.ई. पोर्टल पर संबंधित कार्यालय द्वारा ऑनलाइन verified कर दी है। उन विद्यालयों से राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार प्रथम किश्त का क्लेम बिल (दावा प्रपत्र) की (अध्यक्ष/सचिव से हस्ताक्षरित) हार्ड कॉपी रजिस्टर्ड (एडी) डाक से प्राप्त करना व तत्संबंधी रजिस्टर संधारित करना।
10. शैक्षिक सत्र में प्रथम किश्त के भुगतान हेतु सत्यापन रिपोर्ट verified करने के बाद आगामी 03 दिवस में ऑनलाइन प्रक्रिया के द्वारा बजट डिमाण्ड जनरेट करना।
11. प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा प्रथम किश्त के लिए ऑनलाइन बजट डिमाण्ड के आधार पर जारी बजट राशि में से संबंधित प्रा./उप्रा. गैर सरकारी विद्यालयों तथा माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा प्रथम किश्त के लिए ऑनलाइन बजट डिमाण्ड के आधार पर जारी बजट राशि में से संबंधित मा./उ.मा./ गैर सरकारी विद्यालयों को राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार पुनर्भरण करने हेतु संबंधित बीईईओ/जिशिअ प्रा.शिक्षा/मा.शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा नियमानुसार पास आर्डर (भुगतान आदेश) आर.टी.ई. पोर्टल से ऑनलाइन जारी कर बिल बनाकर कोषालय (ट्रेजरी) प्रेषित करते हुए संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में पुनर्भरण राशि अंतरित करवाना।
12. शैक्षिक सत्र में द्वितीय किश्त (अंतिम प्रतिपूर्ति) के भुगतान से पूर्व प्रा./उ.प्रा. गैर सरकारी विद्यालयों का संबंधित बीईईओ/जिशिअ प्रा.शिक्षा तथा मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालयों का संबंधित जिशिअ मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) द्वारा 01 अप्रैल से पूर्व छात्र नामांकन का verification करवाना।
13. शैक्षिक सत्र में द्वितीय किश्त के भुगतान हेतु राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों से क्लेम बिल (दावा प्रपत्र) की (अध्यक्ष/सचिव के हस्ताक्षरित) हार्ड कॉपी रजिस्टर्ड (एडी) डाक से प्राप्त करना व तत्संबंधी रजिस्टर संधारित करना।
14. प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा निदेशालय से प्राप्त बजट राशि के अनुसार राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार द्वितीय किश्त के भुगतान हेतु नियमानुसार पास आर्डर (भुगतान आदेश) आर.टी.ई. पोर्टल से ऑनलाइन जारी कर बिल बनाकर कोषालय (ट्रेजरी) प्रेषित करते हुए पुनर्भरण राशि संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में अंतरित करवाना।
15. बीईईओ/जिशिअ प्रा.शिक्षा/मा.शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर नियमित रूप से प्रभावी मोनिटरिंग करते हुए पोर्टल से आदेश/निर्देशों को डाउनलोड करना, पोर्टल पर वांछित सूचनाओं को कार्यालय स्तर पर अपलोड करवाना, ब्लॉक/जिले में संचालित ऐसे समस्त प्रा./उप्रा./मा./उ.मा. गैर सरकारी विद्यालय जो निर्धारित टाइम फ्रेम के अनुसार आर.टी.ई. पोर्टल पर कार्य नहीं कर रहे हैं उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही करना तथा ऐसे गैर सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा हेतु

प्रवेशित बालकों की निःशुल्क प्रारंभिक शिक्षा निर्बाध रूप से पूर्ण हो इसकी व्यवस्था करना।

16. जिशिअ प्रा. शिक्षा कार्यालय में कार्यरत एपीसी आरटीई/शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी तथा बीईईओ कार्यालय में कार्यरत एबीईओ (आर.टी.ई. प्रभारी अधिकारी) की देखरेख में आर.टी.ई. पोर्टल पर संपादित होने वाले विभिन्न कार्यों की प्रभावी मोनिटरिंग सुनिश्चित करना।
17. जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय द्वारा राज्य सरकार के पत्रांक प.9 (1)/शि-5/10 पार्ट दिनांक 24.9.2013 के अनुसरण में कार्यालय में कार्यरत शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी को आर.टी.ई. प्रभारी अधिकारी घोषित कर आर.टी.ई. पोर्टल पर संपादित होने वाले विभिन्न कार्यों की प्रभावी मोनिटरिंग सुनिश्चित करना।
18. बीईईओ/जिशिअ प्रा.शि./मा.शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय में आर.टी.ई. से संबंधित समस्त अभिलेख (भौतिक सत्यापन रिपोर्ट, क्लेम बिल की प्रति, ओदश/निर्देश की पत्रावली) सुरक्षित रखना।
19. प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर के पत्र दिनांक 27.05.14 एवं पत्रांक शिविरा/प्रारं./आरटीई/सी/ऑडिट/18871/14-15/75 दिनांक 03.02.15 की पालना में संबंधित उप निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा/माध्यमिक शिक्षा के अंकेक्षण दल (ऑडिट पार्टी) का वांछित अभिलेख उपलबध करवाया जाना सुनिश्चित करना।
20. बीईईओ/जिशिअ प्रा. शि/मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालय में आरटीई संबंधी कार्य संपादन हेतु पूर्णकालिक मंत्रालिक संवर्ग के कार्मिक को दायित्व सौंपना।
21. राज्य सरकार/विभाग द्वारा जारी टाइम फ्रेम के अनुसार बीईईओ/जिशिअ प्रा. शिक्षा/मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा समय पर आर.टी.ई. पोर्टल पर कार्य सम्पादन नहीं करने के कारण यदि गैर सरकारी विद्यालय पुनर्भरण की प्रथम/द्वितीय किश्त के भुगतान से वंचित रहता है तो संबंधित उपनिदेशक प्रा. शिक्षा/मा. शिक्षा कार्यालय द्वारा प्रकरण की जांच कर जाँच रिपोर्ट के आधार पर संबंधित अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनिक कार्यवाही की जावेगी।

(स) उपनिदेशक प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा कार्यालय द्वारा आरटीई पोर्टल से संबंधित करणीय कार्य एवं दायित्व :-

1. उपनिदेशक प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालय में कार्यरत सहायक निदेशक/उपनिदेशक (कनिष्ट) को आर.टी.ई. प्रभारी अधिकारी घोषित कर आरटीई सैल का गठन किया जाकर मण्डल के अधीन बीईईओ/जिशिअ प्रा. शिक्षा कर्यालयों द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर किए जाने वाले कार्यों की प्रभावी मोनेटरिंग करना।
2. उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा कार्यालय में राज्य सरकार के पत्रांक प.9(1)शिक्षा-5/10 पार्ट दिनांक 24.09.13 के अनुसरण में कार्यालय में कार्यरत सहायक निदेशक/उप निदेशक (कनिष्ट) को आर.टी.ई. प्रभारी अधिकारी घोषित कर आर.टी.ई. सेल का गठन किया जाकर मण्डल के अधीन जिशिअ मा. शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर किए जाने वाले कार्यों की प्रभावी मोनेटरिंग करना।
3. उपनिदेशक प्रारम्भिक शिक्षा/माध्यमिक शिक्षा कार्यालय में आर.टी.ई. सैल द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर मण्डल के नियंत्रणाधीन समस्त बीईईओ/जिशिअ प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा आर.टी.ई. संबंधी किए जाने वाले कार्यों की प्रगति की पाक्षिक समीक्षा कर संबंधित कार्यालयों को तत्संबंधी निर्देश प्रदान करना तथा पाक्षिक प्रगति रिपोर्ट की सूचना प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर को प्रेषित करना।
4. बीईईओ/जिशिअ प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) कार्यालयों द्वारा आर.टी.ई. पोर्टल पर किये जाने वाले कार्यों के संबंध में लापरवाही/शिथिलता पायी जाने की स्थिति में प्रकरण की जाँच कर जाँच रिपोर्ट के विश्लेषण के आधार पर संबंधित अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनिक कार्यवाही करना/अनुशासनिक कार्यवाही के प्रस्ताव प्रारम्भिक शिक्षा/माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर को प्रेषित करना।

उक्त परिपत्र में दिये गये निर्देश विद्यालय/अभिभावक/बालक/कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों/अधिकारियों के कार्य करने में सुविधा की दृष्टि से प्रसारित किये जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि मूल रूप में आर.टी.ई. के संबंध में आर.टी.ई. एक्त 2009, राज्य नियम 2011 एवं राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देश/दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य किया जाना है।

● (जगदीश चन्द्र पुरोहित) आई.ए.एस., निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4. एक ही प्रकृति के आक्षेप बार-बार दोहराए जाने की स्थिति को रोकने एवं अंकेक्षण दलों को वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/ऑडिट/ए.जी.-4/16-17/पैरा/ दिनांक 03.08.16 ● उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा ....। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा प्रथम/द्वितीय.............। ● विषय : एक ही प्रकृति के आक्षेप बार-बार दोहराये जाने की स्थिति को रोकने एवं अंकेक्षण दलों को वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाने बाबत। ● प्रसंग : वित्त विभाग (अंकेक्षण अनुभाग) राजस्थान सरकार का पत्रांक प.4 (134) वित्त/अंकेक्षण /91 दिनांक 30.06.2016 एवं स्कूल शिक्षा (ग्रुप-5) राजस्थान, जयपुर का पत्रांक प.6(9)शि-5/2004 पार्ट-।। दिनांक 25.07.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत दिनांक 17.05.2016 को माननीय अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा के वैश्म में प्रधान महालेखाकार, महालेखाकार एवं निदेशक, स्थानीय निधि अंकेक्षण विभाग के साथ आयोजित बैठक में हुए विवेचन के क्रम में प्रासंगिक पत्रानुसार निर्देशित किया जाता है किः-

1. महालेखाकार कार्यालय के अंकेक्षण दलों को अंकेक्षण हेतु वांछित

सही सूचनाएं एवं अभिलेख उपलब्ध नहीं करवाया जाता है जिससे संबंधित कार्यालय के लेखों की पूर्ण जाँच नहीं हो पाती है। अतः जैसे ही महालेखाकार अंकेक्षण दल का अंकेक्षण कार्यक्रम प्राप्त हो अंकेक्षण अवधि से संबंधित समस्त रिकॉर्ड एवं सूचनाएँ उपलब्ध करवाने हेतु अपने अधीनस्थ कार्मिकों को पाबंद करें।

2. अंकेक्षण दल को समय पर वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाएँ यदि कोई कर्मचारी द्वारा जानबूझ कर अभिलेख उपलब्ध करवाने में कोताही बरती जाती है तो उसके विरुद्ध कार्यवाही करते हुए वांछित अभिलेख उपलब्ध करवावें। उल्लेखनीय है कि ऐसे मामलों में दोषी अधिकारियों/कर्मचारियों से अंकेक्षण दल के वेतन भत्तों पर हुए निष्फल व्यय की वसूली करने पर भी विचार किया जा सकता है।
3. अंकेक्षण के समय महालेखाकार कार्यालय के अंकेक्षण दल द्वारा किसी भी प्रकरण में ज्ञापन दिए जाने की स्थिति में तुरन्त उस प्रकरण सम्पूर्ण रिकॉर्ड के आधार पर ज्ञापन का प्रति उत्तर प्रस्तुत करें ताकि उसी समय अंकेक्षण दल द्वारा उस पर विवेचन किया जा सके ताकि अनावश्यक आक्षेप नहीं बने।
4. अंकेक्षण के पश्चात् महालेखाकार कार्यालय द्वारा जारी निरीक्षण प्रतिवेदन प्राप्त होते ही तुरन्त पश्चात् आक्षेपों की अनुपालना दो प्रतियों में मय वांछित अभिलेखों सहित अपने नियंत्रण अधिकारी के माध्यम से इस कार्यालय को प्रस्तुत करें ताकि उस पर टिप्पणी अंकित कर महालेखाकार कार्यालय को समय पर भिजवाया जा सके।
5. महालेखाकार कार्यालय ने अवगत करवाया है कि माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों का अंकेक्षण करते समय एक ही प्रकृति के आक्षेप बार-बार दोहराए जाते हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि विभाग की कार्य प्रणाली में कोई न कोई कमी है जिसमें सुधार की आवश्यकता है। एक ही प्रकार के अग्रलिखित आक्षेप बने हैं जिसका विवेचन इस प्रकार है :-

(1) **बजट आवंटन से अधिक व्यय :-** किसी भी स्थिति में बजट आवंटन से अधिक व्यय नहीं किया जावे ताकि इस प्रकार आक्षेप गठित नहीं हो।

(2) **उपयोगिता प्रमाण-पत्रों की प्राप्ति का अभाव :-** आपके कार्यालय को राज्य सरकार स्तर से/जिला स्तर से/अन्य किसी विभाग से छात्र उपयोगी किसी भी मद में राशि का आवंटन/ड्रफ्ट के माध्यम से राशि प्राप्त हो तो तुरंत नियमानुसार व्यय कर उसका उपयोगिता प्रमाण-पत्र संबंधित विभाग को भिजवाना सुनिश्चित करें साथ ही निदेशालय स्तर से प्राप्त होने वाली छात्रवृत्ति राशि का समुचित उपयोग कर उपयोगिता प्रमाण पत्र संबंधित विद्यालय से प्राप्त कार्यालय रिकॉर्ड में सुरक्षित रखें।

(3) **विद्यार्थी कोष मद से कार्यालय मद पर अनियमित व्यय :-** प्रायः यह देखा जाता है कि विद्यालयों में कार्यालय व्यय मद पर हुए व्यय को विद्यार्थी कोष मद से भुगतान कर दिया जाता है जो कि किसी भी स्थिति में उचित नहीं है विद्यार्थी कोष मद से केवल मात्र राज्य सरकार के निर्देशानुसार दिये गये मदों पर ही व्यय किया जावे।

(4) **अनुपयोगी सामग्री के निस्तारण का अभाव :-** कार्यालय/विद्यालयों में अनुपयोगी सामग्री के वर्षवार निस्तारण के अभाव में संबंधित विद्यालयों में पड़ी सामग्री समय अनुसार नष्ट/छीजत के कारण नीलामी से कम राशि वसूल हो पाती है साथ ही सामग्री द्वारा घेरे गए स्थान का समुचित उपयोग नहीं हो जाता है जो कि राजकीय हित में नहीं है। अतः अनुपयोगी सामग्री का निस्तारण करवाकर प्राप्त राशि राजकोष में जमा करवावें।

(5) **सूचना एवं अभिलेख उपलब्ध करवाने का अभाव :-** अंकेक्षण दल को वांछित रिकॉर्ड एवं सूचनाएं तुरन्त उपलब्ध करवावें। यदि किसी कारणवश कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं करवाया जाता हो तो दल को उसकी वस्तुस्थिति मय तथ्यात्मक कारण के अवगत करवावें ताकि उसी समय दल उसका विवेचन कर सके।

उक्त निर्देशों की अपने अधीनस्थ कार्यालय एवं विद्यालयों को भिजवाते हुए इनकी ठोस पालना करने हेतु पाबंद करें। इसे सर्वोच्य प्राथमिकता देवें।

नोटः-वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र दिनांक 30.06.2016 को वित्त विभाग की वेबसाइट डाउनलोड कर अवलोकन करें।

●वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

5. महालेखाकार के अंकेक्षण दलों को वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाए जाने एवं आक्षेपों की ठोस अनुपालना भिजवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/ऑडिट/ए.जी.-4/16-17/पैरा/ दिनांक : 03.08.2016 ● उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा.....। ● विषय : महालेखाकर के अंकेक्षण दलों को वांछित अभिलेख उपलब्ध करवाए जाने एवं आक्षेपों की ठोस अनुपालना भिजवाने बाबत्। ●प्रसंग : 1. वित्त विभाग (अंकेक्षण अनुभाग) राजस्थान सरकार का पत्रांक प. 4(134) वित्त/अंकेक्षण/91 दिनांक 17.02.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखा परीक्षा) राजस्थान, जयपुर द्वारा अवगत करवाया गया है कि महालेखाकार कार्यालय के अंकेक्षण दलों को अंकेक्षण हेतु वांछित सही सूचनाएं एवं अभिलेख उपलब्ध नहीं करवाया जाता है जिससे संबंधित कार्यालय के लेखों की पूर्ण जांच नहीं हो पाती है। अतः निर्देशित किया जाता है किः-

1. जैसे ही महालेखाकार अंकेक्षण दल का अंकेक्षण कार्यक्रम प्राप्त हो अंकेक्षण अवधि से संबंधित समस्त रिकॉर्ड एवं सूचनाएँ उपलब्ध करवाने हेतु अपने अधीनस्थ कार्मिकों को पाबंद करें।
2. अंकेक्षण दल को समय पर वांछित अभिलेख उपलब्ध करवावें यदि किसी कर्मचारी द्वारा जानबूझ कर अभिलेख उपलब्ध करवाने में कोताही बरती जाती है तो उसके विरुद्ध कार्यवाही करते हुए वांछित अभिलेख उपलब्ध करवावें। उल्लेखनीय है कि ऐसे मामलों में दोषी अधिकारियों/कर्मचारियों से अंकेक्षण दल के वेतन भत्तों पर हुए निष्फल व्यय की वसूली करने पर भी विचार किया जा सकता है।

3. अंकेक्षण के समय महालेखाकार कार्यालय के अंकेक्षण दल द्वारा किसी भी प्रकरण में ज्ञापन दिए जाने की स्थिति में तुरन्त उस प्रकरण सम्पूर्ण रिकॉर्ड के आधार पर ज्ञापन का प्रति उत्तर प्रस्तुत करें ताकि उसी समय अंकेक्षण दल द्वारा उस पर विवेचन किया जा सके ताकि अनावश्यक आक्षेप नहीं बने।
4. अंकेक्षण के पश्चात् महालेखाकार कार्यालय द्वारा जारी निरीक्षण प्रतिवेदन प्राप्त हाते ही तुरन्त पश्चात् आक्षेपों की अनुपालना दो प्रतियों में मय वांछित अभिलेखों सहित अपने नियंत्रण अधिकारी के माध्यम से इस कार्यालय को प्रस्तुत करें ताकि उस पर टिप्पणी अंकित कर महालेखाकार कार्यालय को समय पर भिजवाया जा सके।

उक्त निर्देशों की अपने अधीनस्थ कार्यालय एवं विद्यालयों को भिजवाते हुए इनकी ठोस पालना करने हेतु पाबंद करें। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देवें।

●वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. शिक्षा सत्र 2016-17 में कक्षा 7 या 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के क्रम में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी-एफ/3664/सीएम घोषणा/शैक्षिक भ्रमण/ 2016-17/9 दिनांक : 05-08-2016 ● (1) उपनिदेशक प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा (समस्त) (2) जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक/ माध्यमिक शिक्षा (समस्त) ●विषय : शिक्षा सत्र 2016-17 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण के क्रम में।

उपर्युक्त विषर्यान्तर्गत विद्यार्थियों के लिये शैक्षिक भ्रमण के संबंध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक प 1 (17) 9 शिक्षा-1/प्राशि/2010 दिनांक 01.09.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया। इसकी पालना में सत्र 2016-17 के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का टाइम फ्रेम जारी किया जा रहा है। योजना के अनुसार राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 में विद्यार्थियों के लिए अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2016-17 में अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए प्रति जिला 86,100/- रुपये की राशि स्वीकृत हुई है जो अलग से जारी की जा रही है। अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा तथा सर्किल ऑर्गनाईजर सीओ स्काउट एवं गाइड (नोडल अधिकारी) को दिया जाता है। कार्यक्रम की क्रियान्विति निम्नानुसार की जानी है :-

क्र.सं.	कार्यक्रम	तिथि/अवधि
01	जिशिअ प्रारं शिक्षा कार्यालय में संस्था प्रधान के माध्यम से छात्र-छात्राओं के आवेदन प्राप्त करना	31.08.2016
02	जिशिअ प्राशि द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों में से वरीयता के आधार पर निर्धारित संख्या में छात्र-छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचित करना	26.09.2016
03	उपनिदेशक द्वारा अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का अनुमोदन करना	08.10.2016
04	पाँच दिवसीय अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि	23.10.2016 से27.10.2016

योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करावें। इसी क्रम में अतिरिक्त आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् जयपुर के पत्रांक : राप्राशिप/जय/औशि/2014-15/8519 दिनांक 20.08.2014 के द्वारा छात्र-छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 28 जुलाई 2014 को जारी किए गए दिशा-निर्देश (छाया प्रति संलग्न) भी प्रसारित किए जाने हैं, जिनमें संलग्न पत्र के अनुसार Standard Safety measures के बिन्दु लिखे हैं। उक्त दिशा-निर्देशों की पालना में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जावे। समय-समय पर कार्यक्रम की प्रगति के बारे में इस कार्यालय को अवगत करवाया जावे तथा शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या आगामी कार्यदिवस में इस कार्यालय को विभाग की ई-मेल आई.डी.-shakshikcelledu@gmail.com पर उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करावे।

●संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(अजीत सिंह)** अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान-बीकानेर

शिक्षा सत्र 2016-17 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु छात्र/छात्रा आवेदन पत्र

(शैक्षिक सत्र 2015-16 की उपलब्धि के आधार पर)

1. छात्र/छात्रा का नाम..............................
2. पिता का नाम....................................
3. जन्म तिथि......................................
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत हैं)....................
5. विद्यालय का नाम...............................
6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक................

[फोटा प्रमाणित संस्था प्रधान द्वारा]

7. घर/पत्र व्यवहार का पता...
   ....
8. घर का फोन नम्बर......................मो......................
9. शैक्षिक सत्र 2015-16 में उत्तीर्ण परीक्षा का विवरण-

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 6 (कक्षा 7 में अध्ययनरत)			
कक्षा 7 (कक्षा 8 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2015-16 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें):-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्र स्तर		
2. राज्य स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2015-16 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्र स्तर		
2. राज्य स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं नाम..................... अपने पुत्र/पुत्री नाम............... को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ। मेरा पुत्र/पुत्री यात्रा हेतु पूर्णतया स्वस्थ है तथा किसी गंभीर रोग से ग्रसित नहीं है।

हस्ताक्षर

नाम अभिभावक

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती है।

(हस्ताक्षर संस्था प्रधान मय मोहर)

● प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ राज्य के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है, इस हेतु योजना निम्नानुसार है:-

1. उद्देश्य

1. राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित करवाना।
2. स्थापत्यकला की जानकारी कराना।
3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से ओतप्रोत करना।
5. विद्यार्थियों में पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।

2. शैक्षिक भ्रमण :-

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यता

1. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष दीपावली अवकाश में राज्य के अन्य जिले में 5 दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जायेगा।

2. योग्यता :-

- राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा कक्षा 6 व 7 में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक/साहित्यिक/खेलकूद/स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हो।

3. विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्या:-

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण-प्रत्येक जिले के 24 विद्यार्थी (कक्षा 7 के 12 व कक्षा 8 के 12) एवं अध्यापक।

4. मेरिट का निर्धारण

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः वस्तुनिष्ठ प्रणाली (Objective pattern) के आधार पर निम्नानुसार किया जाएगा।

(अ) प्रतिभावान (Scholor) के आधार पर जिले की वरीयता से प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के 6+6=12 (प्रथम एवं द्वितीय तथा तृतीय) का चयन होगा।

(ब) गतिविधियाँ (Activities) राज्य पुरस्कार/तृतीय सोपान प्राप्त स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिताओं में सहभागिता के आधार पर 12 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। कुल 24 विद्यार्थियों का दल होगा। चयन हेतु छात्र-छात्रा द्वारा गत परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर गणना की जाएगी।

5. विद्यार्थियों से आवेदन प्राप्त करना एवं चयन प्रक्रिया:- अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण- जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा द्वारा जिले में संस्था प्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियों को दीपावली अवकाश के समय राज्य के अन्य जिलों के लिए ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर 5 दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जाएगा।

6. यात्रा व्यय- विद्यार्थियों की यात्रा का सम्पूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आवंटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का संपूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से देय होगा। यह विद्यार्थियों के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत् संधारित करते हुए व्यय विवरण सहायक लेखाधिकारी योजना एवं लेखाधिकारी बजट प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर को नियमानुसार यथासमय प्रस्तुत करेंगे।

7. नोडल अधिकारी – अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण- जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा तथा सर्किल ऑर्गनाइजर स्काउट/गाइड भ्रमण

की योजना का निर्माण किया जाएगा तथा अपने जिले में आने वाले दल के भ्रमण तथा आवास आदि की व्यवस्था की जावेगी।

8. प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में अनुमानित व्यय का विवरण–

(अ) विभिन्न मदों में अनुमानित व्यय हेतु विवरण प्रति विद्यार्थी प्रस्तावित व्यय (रुपयों में)

किराया–1500/–भोजन–600 अल्पाहार–300/आवास 500/ स्टेशनरी–200/– अन्य व्यय–186 कुल प्रति विद्यार्थी 3286/–

(ब) प्रतियोगिताओं में प्रथम से तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि निम्नानुसार देय होगीः–

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 350/–
द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 250/–
तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 200/–

9. भ्रमण के दौरान समस्त संभागी विद्यार्थी एवं एस्कोट शिक्षक जिला मुख्यालय पर स्थित स्काउट हैड क्वार्टर पर ठहरेंगे।
10. अध्यापक का चयन–स्काउट/गाइड अध्यापक को प्राथमिकता दी जाएगी।
11. संभाग स्तर पर शिक्षा उपनिदेशक प्रारंभिक तथा सहायक राज्य संगठन आयुक्त (ए–एस–ओ–सी) यात्राओं का अनुमोदन तथा उनके परिक्षेत्र में आने वाले दलों की यात्रा एवं व्यवस्था का परिवीक्षण करेंगे। व्यय का संपूर्ण समायोजन कर अपने कार्यालय के सहायक लेखाधिकारी से जांचोपरान्त प्रेषित करेंगे। एक जिले के दल व भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारण संबंधित संभाग के उपनिदेशक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त द्वारा किया जाएगा।
12. भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की कुछ प्रतियोगिताएं यथा–भ्रमण आलेख, क्विज, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आदि भी आयोजित की जावे तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण भी किया जाएगा।
13. प्रतिवेदनः– अन्तर्जिला दर्शन हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी विधिवत् यात्रा वृत्तान्त लिखेंगे, इस हेतु उन्होंने एक डायरी एवं एक बॉलपैन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी अध्यापक संभागियों में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक (Chief Reporter) यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरान्त सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्राप्त कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

● (अजीत सिंह) अतिरिक्त निदेशक, (प्रशासन) प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की तिथि में परिवर्तन के संबंध में।

● राजस्थान सरकार प्रारंभिक शिक्षा (आयोजना) विभाग ● क्रमांक : प.1 (17)प्राशि/आयो/2014 जयपुर दिनांक : 1/3/2016 ● निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषयः शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की तिथि में परिवर्तन के संबंध में। ● संदर्भः शिविरा /प्रारं/शैक्षिक/सी–एफ/3664/शैक्षिक भ्रमण/सीएम घोषणा/ 2015–16/39 दिनांक 24.1.2016 ●

उपर्युक्त विषयान्तर्गत संदर्भित पत्र के क्रम में निर्देशानुसार लेख है कि शैक्षिक भ्रमण योजनान्तर्गत कक्षा 7 एवं 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों का अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम प्रतिवर्ष शीतकालीन अवकाश में आयोजित किए जाने के स्थान पर दीपावली अवकाश में आयोजित किए जाने की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

● (सुनील कुमार शर्मा) संयुक्त शासन सचिव

● छात्र–छात्राओं के शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में।

● राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद् ● क्रमांक : राप्राशिप/ जय/औ. शि./ 2014–15/8519 दिनांक : 20/08/2014 ● निदेशक, प्रारंभिक/ माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषय :छात्र–छात्राओं के शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में। ● संदर्भः संयुक्त शासन सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली अ.शा.पत्रांक : 32–5/2014&RMSA=I dated 28th July 2014 एवं संयुक्त शासन सचिव महोदय के पत्रांक : प.21(15)प्राशि/आयो/ 2014 दिनांक 08–08–2014

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि राजस्थान राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक भ्रमण के संबंध में भारत सरकार के पत्र में की गई सिफारिशों के संबंध में दिए गए सुरक्षा के तथ्यों के अनुक्रम में समस्त संस्था प्रधानों को दिशा–निर्देश जारी करवाने का श्रम करें। जारी किए गए दिशा निर्देशों की एक प्रति परिषद् कार्यालय को भी उपलब्ध करवाने का श्रम करें।

● संलग्न : संदर्भित पत्र ● अतिरिक्त आयुक्त

● कार्यालय प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर ● D.O.No.32-5/2014-RMSA-1 July 28,2014

Dear

Recent tragedy involving students on study tour has once again underlined the need for putting in place a set of standard safety measures by the institutions that undertaken such tours.

2. States have been organising study tours for its students and teachers in schools under various schemes of the States as well as Government of India such as the SSA, RMSA etc. There is need to ensure basic safety measures before a school embarks on such tours.

3. States are requested to kindly Issue appropriate guidelines so that necessary safety measures are in place across all schools. Please find enclosed a set of recommendations on the subject that you may like to consider while formulating the State guidelines.

● Yours sincerely (Radha Chouhan)

Standard safety measures

(i) The Head of the Institution should ensure that the tour undertaken is required for the benefit of students and is related to the curriculum of the course in which such

students are enrolled.

(ii) The Head of the Institution should ensure issuing security i-cards to all such students and maintain a separate data base of the personal details like guardian/local guardian, home address mobile, email. etc. of such students and the same is carried by the students on his person.

(iii) The Head of the Institution should ensure that written permission of one of the parents of the local guardian is submitted on behalf of every such. student wanting to participate in an educational tour.

(iv) The Head of the Institution should ensure that there is a senior teacher accompanying the students on such an educational tour, Further a senior lady teacher should accompany if there are girl students participating in the educational tour.

(v) The Head of the Institution should ensure that prior permisson of the organisation is obtained in advance such educational tours are undertaken.

(vi) If the tours is undertaken to public places, dam cities, power plants, sea beaches etc. a written communicated must be made to the district magistrate of concerned authorities

(vii) In the educational tour has more than 10 participants it is necessary to hire a local tour operator who is well aware of the local conditions and can advise accordingly.

(viii) The Head of the Institution should ensure that an undertaking is taken from every participating students that they would abide by all the rules and also that they have submitted the permisson by their parents of local guardian before they participate in the educational tour.

(ix) The Head of the Institution should also certify in the form of an undertaking that the institute will provide all necessary help in case of emergency or otherwise to all such students who are part of the educational tour.

7. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा 2015-16 की प्रीमियम राशि के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा/स/22403/बी.यो./11-12 दिनांक 10/08/2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक प्रथम/द्वितीय) ● विषय : कंक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा 2015-16 की प्रीमियम राशि के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों की बीमा राशि एक लाख रुपये कर दी गई है। वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए इसकी प्रीमियम राशि एक मुश्त राज्य सरकार के द्वारा जमा करवाई जाएगी। राज्य सरकार के पत्रांकः प.16(11)शिक्षा-I/95 जयपुर दिनांक 07.07.2011 के द्वारा यह निर्देश दिए गए हैं कि ''माध्यमिक शिक्षा के छात्र-छात्राओं से विद्यार्थी सुरक्षा बीमा योजनान्तर्गत अंशदान राशि पूर्वानुसार यथावत वसूल की जाकर विभाग के राजस्व मद में जमा करवाई जाएगी।'' यह स्वीकृति वित्त विभाग की आई.डी. संख्या 131100578 दिनांक 06.07.2011 के अनुसरण में की गई है। इसी क्रम में निर्देशानुसार लेख है कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से 12 तक के प्रत्येक छात्र से 10 रुपये एवं प्रत्येक छात्रा से 5 रुपये प्रीमियम (अंशदान) पूर्वानुसार वसूल की जाए। राशि विद्यालय द्वारा अपने स्तर पर विभाग के निम्न राजस्व मद में जमा करवाई जानी है।

0202- शिक्षा, खेलकूद, कला संस्कृति, 01-सामान्य शिक्षा, 102-माध्यमिक शिक्षा, (03)-अन्य प्राप्तियाँ, (01)-विविध

अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों को निर्देशित करें कि उक्तानुसार छात्र/छात्रा से अंशदान वसूल कर विभाग के राजस्व मद में जमा करावें तथा चालान की प्रति संस्थाप्रधान अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखें। चालान की प्रति निदेशालय को प्रेषित नहीं की जाए।

● उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

8. सेवानिवृत्ति परिलाभों के विलम्ब से भुगतान करने पर विलम्बित अवधि पर देय ब्याज के भुगतान बाबत।

● राजस्थान सरकार वित्त (नियम) विभाग ● क्रमांकः एफ.12 (2) वित्त/नियम/ 2012 जयपुर दिनांक 29.07.2016 ● परिपत्र ● विषयः- सेवानिवृत्ति परिलाभों के विलम्ब से भुगतान करने पर विलम्बित अवधि पर देय ब्याज के भुगतान बाबत।

सेवानिवृत्ति परिलाभों के भुगतान में विलम्ब पर विलम्ब अवधि के लिए ब्याज के भुगतान के सम्बन्ध में राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम-1996 के नियम-89 में आवश्यक प्रावधान किए गए हैं। यदि सेवानिवृत्ति परिलाभों का भुगतान उस तारीख से जिसको इसका भुगतान देय हो 60 दिन के पश्चात् प्राधिकृत किया गया है, और यह सिद्ध हो जाता है कि भुगतान में विलम्ब सरकारी कर्मचारी की ओर से इन नियमों में अन्यत्र अधिकृत प्रक्रिया का पालन करने में असफल रहने के कारण नहीं हुआ था, तो सेवानिवृत्ति परिलाभों के देय होने की तारीख से उस माह, जिसमें सेवानिवृत्ति परिलाभ प्राधिकृत किए गए हैं, के पूर्ववर्ती माह के अन्त तक 09 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय होगा।

नियमानुसार सेवानिवृत्ति परिलाभों का विलम्ब से भुगतान करने के प्रत्येक प्रकरण का कार्यालयाध्यक्ष द्वारा स्वतः परीक्षण किया जाएगा और उसे विभागाध्यक्ष के माध्यम से प्रशासनिक विभाग को अग्रेषित किया जाएगा तथा जहाँ प्रशासनिक विभाग को यह समाधान हो जाए कि सेवानिवृत्ति परिलाभों के भुगतान में विलम्ब प्रशासनिक कमियों या निष्क्रियता के कारण हुआ है तो सम्बन्धित प्रशासनिक विभाग ब्याज के भुगतान के लिए निदेशक, पेंशन एवं पेंशनर्स कल्याण विभाग को स्वीकृति जारी करेगा।

ऐसे सभी प्रकरणों में जिनमें ब्याज का भुगतान प्रशासनिक कमियों या निष्क्रियता के कारण प्रावधित हुआ है, सम्बन्धित प्रशासनिक विभाग उत्तरदायित्व निर्धारित करेगा और उस सरकारी कर्मचारी/ अधिकारी के विरुद्ध जो सेवानिवृत्ति परिलाभों के भुगतान में विलम्ब के लिए उत्तरदायी है/ उत्तरदायी पाए गए है, राजस्थान सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम-1958 के अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाही करेगा और

पेंशनर के ब्याज का भुगतान करने के कारण सरकार को हुई हानि की वसूली उत्तरदायी ठहराये गए सरकारी अधिकारी/ कर्मचारी से करेगा।

ब्याज के भुगतान के आदेश में, प्रशासनिक विभाग विलम्ब के लिए उत्तरदायी सरकारी अधिकारी/कर्मचारी के नाम और उनसे वसूलनीय ब्याज की रकम का भी उल्लेख करेगा। यदि विलम्ब पेंशन विभाग के स्तर पर किया जाता है तो ऐसे विलम्ब के लिये पेंशन विभाग के अधिकारी/कर्मचारी का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा और पेंशनर को भुगतान किए गए ब्याज की वसूली करने हेतु दोषी सरकारी अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध उपर्युक्त कार्यवाही की जाएगी।

यह भी ध्यान में आया है कि प्रशासनिक विभाग द्वारा सेवानिवृत्ति परिलाभों के विलम्ब से भुगतान पर देय ब्याज के भुगतान की स्वीकृति हेतु प्रकरण अनावश्यक रूप से वित्त विभाग को भिजवाए जा रहे हैं। इसी के साथ प्रशासनिक विभाग स्तर पर ऐसे प्रकरणों में सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों के उत्तरदायित्व निर्धारण में विलम्ब होने पर ब्याज के भुगतान में अधिक विलम्ब होने की स्थिति में पेंशनर माननीय न्यायालय में याचिका दायर करता है। जिसके कारण अनावश्यक न्यायिक वाद उत्पन्न होते हैं।

उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर सभी प्रशासनिक विभागों से यह अपेक्षा है कि विलम्ब से प्रदाय किए गए पेंशनरी परिलाभों पर देय ब्याज हेतु राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम-1996 के नियम-89 के प्रावधानानुसार कार्यवाही सम्पादित कर अविलम्ब ब्याज के भुगतान की स्वीकृति जारी करे। इस कार्यवाही के लिए वित्त विभाग की सहमति की आवश्यकता नहीं है। नियम-89 के प्रावधानानुसार सरकारी अधिकारी/कर्मचारी का उत्तरदायित्व निर्धारण करे तथा जारी किए जाने वाले स्वीकृति आदेश में दोषी सरकारी अधिकारी/कर्मचारी के नाम एवं उनसे वसूलनीय ब्याज की राशि का स्पष्ट रूप से उल्लेख आवश्यक रूप से करावें ताकि ऐसे प्रकरणों में अनावश्यक विलम्ब नहीं हो, पेंशनर को सेवानिवृत्ति परिलाभों का विलम्ब से भुगतान होने पर नियमानुसार देय ब्याज का समय पर भुगतान हो एवं अनावश्यक न्यायिक वादों से बचा जा सके।

जिन प्रकरणों में सेवानिवृत्ति परिलाभों विलम्ब से भुगतान करने पर ब्याज का भुगतान किया जाना निश्चित हो गया है, ऐसे सभी प्रकरणों में प्रशासनिक विभाग द्वारा सरकारी अधिकारी/कर्मचारियों के उत्तरदायित्व निर्धारण में अनावश्यक विलम्ब किया जाता है तो इस विलम्ब अवधि के लिए भी ब्याज की स्वीकृति जारी किए जाने के पश्चात् दोषी सरकारी अधिकारी/कर्मचारी का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए विलम्ब अवधि के ब्याज की वसूली के कार्यवाही के साथ उत्तरदायी सरकारी अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध राजस्थान सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम-1958 के अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाही प्रस्तावित की जावे।

प्रशासनिक विभाग के स्तर पर पेंशनरी परिलाभों के विलम्ब से हुए भुगतान के परिणाम स्वरूप किए जाने वाले ब्याज के भुगतान बाबत एक रजिस्टर संधारित करते हुए सभी स्वीकृतियों का पूर्ण विवरण अंकित किया जावे तथा प्रशासनिक विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/शासन सचिव स्तर पर आयोजित विभागीय बैठकों एवं ऑडिट समिति की बैठकों में इन प्रकरणों की समीक्षा की जावे। विभागाध्यक्ष स्तर पर भी इन प्रकरणों को संधारण किया जावे तथा महालेखाकार की लेखा परीक्षा एवं निरीक्षण विभाग के अंकेक्षण के समय भी इन प्रकरणों की जाँच की जावे व वसूली योग्य राशि का प्रकरणवार उल्लेख सम्बन्धित अंकेक्षण प्रतिवेदनों में किया जावे।

● (नवीन महाजन) शासन सचिव, वित्त(बजट) ● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा/माध्य/पेंशन-अ/34928/09 दिनांकः 16.08.2016

प्रतिलिपि निम्नलिखित को प्रेषित कर लेख है कि राज्य सरकार के वित्त विभाग के उक्त परिपत्र क्रमांक एफ 12(2) वित्त/नियम/2012 जयपुर दिनांक 29.07.2016 में दिए गए निर्देशों की कठोरता से पालना से सुनिश्चित करें। उक्त आदेशों की पालना में किसी प्रकार के विलम्ब व लापरवाही के लिए आप व्यक्तिगत रूप से जिम्मेवार होंगेः-

1. समस्त उप निदेशक
2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी
3. सामान्य प्रशासन अनुभाग/विधि अनुभाग/कार्यालयाध्यक्ष एवं आहरण वितरण अधिकारी
4. संस्थापन ए-बी अनुभाग
5. संस्थापन 'सी' अनुभाग
6. संस्थापन 'एफ' अनुभाग
7. प्राचार्य, टी.टी. कॉलेज, बीकानेर/अजमेर
8. प्राचार्य, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर।

●लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

9. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2016 के आयोजन में सहयोग करने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/4175/स्कूली प्रतियोगिता/2012/241 दिनांक : 17/8/2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारं. शिक्षा ● विषय : शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2016 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत ● प्रसंगः 1. राज्य सरकार का पत्रांक : प. 16 (36) शिक्षा-6/2004 जयपुर दिनांक 26.5.2014 2. जिला सचिव, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ बीकानेर का पत्रांक भा.सं.ज्ञा.प./2016/03 दिनांक 24.7.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार द्वारा प्रासंगिक पत्र में पूर्व प्रदत्त निर्देशों के क्रम में शांतिकुंज द्वारा अवगत करवाया गया है कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2016 का आयोजन 27 सितंबर, 2016 (मंगलवार) को दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक किया जाएगा जिसमें कक्षा-5 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।

शासन के प्रासंगिक निर्देशों के क्रम में लेख है कि अधीनस्थ संस्था प्रधानों को विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उक्त परीक्षा का सुचारू संचालन करने हेतु आयोजकों को वाँछित सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित करें।

●अतिरिक्त निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

10. शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2016 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/राशिकप्र/31582/2016-17 दिनांक : 4/7/2016 ● 1. समस्त उप निदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) 3. समस्त ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी 4. सम्पादक, शिविरा पत्रिका। ● विषयः शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2016 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

महोदय/महोदया,

माननीय सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन्, भूतपूर्व राष्ट्रपति की जन्म तिथि 05 सितम्बर 2016 को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने, समस्त शिक्षक समुदाय के प्रति समुचित आदर एवं सम्मान व्यक्त करने तथा शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह करने के लिए देश के समस्त नगरों, ग्रामों, ग्राम खण्डों, पंचायत समितियों एवं उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों (राजकीय/गैरराजकीय) के स्तर पर शिक्षक दिवस को उल्लास एवं शालीनता से पूर्व की भाँति मनाया जावे। इस सम्बन्ध में कृपया निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें।

1. **झण्डियों के जिलेवार लक्ष्य के अनुसार धनराशि संग्रहः-** शिक्षक वर्ग के कल्याणार्थ विभिन्न योजनाओं का राष्ट्रीय स्तर पर संचालन करने हेतु झण्डियों की बिक्री से धन राशि एकत्रित की जानी होती है। तद्विषयक शिक्षकों के कल्याणार्थ 36.00 लाख रुपये की धन राशि संग्रह किए जाने का जिलेवार संलग्न विवरणानुसार लक्ष्य निर्धारित किया हुआ है। शिक्षक कल्याण कोष में धन-संग्रह पूर्ण मनोयोग एवं सम्पूर्ण प्रयास से एक अभियान के रूप में शिक्षक दिवस 05 सितम्बर से झण्डियों की बिक्री का शुभारंभ कर 30.09.2016 तक शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह किया जाना है। तत्पश्चात् एकत्रित धन राशि सचिव कोषाध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर को एकत्रित धन राशि का बैंक ड्राफ्ट भेजा जावे।
2. **धन संग्रह हेतु शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक वर्ग व अन्य का सहयोगः-** लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षा जगत के समस्त वर्ग के अधिकारी, व्याख्याता, अध्यापक, कर्मचारी एवं पंचायत समितियों के अधीन कार्यरत विद्यालयों के शिक्षकों (राजकीय/गैरराजकीय) छात्र/छात्रा से इस कार्य को सम्पन्न कराने, दानस्वरूप धन एकत्रित करने एवं अपना सम्पूर्ण योगदान करने हेतु निवेदन किया जावे ताकि धन संग्रह अधिकाधिक हो सके एवं लक्ष्य की प्राप्ति संभव होकर शिक्षकों के कल्याणार्थ अनेक अन्य योजनाएं प्रारम्भ हो सके।
3. **धन संग्रह हेतु अन्य सुप्रसिद्ध संस्थाओं एवं दानदाताओं का सहयोगः-**

i. योजना की सफलता के लिए स्थानीय निकाय, चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, जर्नलिस्ट एसोसिएशन, शिक्षक संघों, पत्रकार बन्धुओं एवं संघों, अन्य विशिष्ट जन-समुदाय एवं व्यक्तियों से शिक्षकों के कल्याणार्थ धन-संग्रह के लिए सहयोग प्राप्ति हेतु बैठकों का आयोजन कर निवेदन किया जावे ताकि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके एवं इन्हें इस अवसर की उपादेयता तथा कार्यक्रमों की जानकारी हो सके।

ii. स्वेच्छा से चन्दा एवं दानदाताओं से दान स्वरूप धन-संग्रह हेतु औद्योगिक प्रतिष्ठानों/उद्योगपतियों को कार्यक्रमों की जानकारी सहित उदारता से सहयोग करने हेतु व्यक्तिशः एवं इनके संगठनों से निवेदन करना। दान की कोई सीमा नहीं है। दानदाताओं का नाम, पता एवं राशि के उल्लेख सहित अलग से पत्र प्रेषित करें ताकि धन्यवाद का पत्र प्रेषित किया जा सके।

4. **योजना की सफलता हेतु कार्यक्रमों का आयोजनः-** धन संग्रह हेतु इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाना आवश्यक है ताकि समाज में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका की जानकारी परिलक्षित हो सके। ऐसे कार्यक्रमों में किसी भी सम्माननीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्ति को आमंत्रित किया जा सकता है।
5. **धन संग्रह हेतु प्रचार, प्रसार, सांस्कृतिक तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजनः-** जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) अपने जिले में एवं संस्था प्रधान उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/ उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों में उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी निम्नानुसार आयोजित करें।

i. विशिष्ट स्थानों पर वर्णनात्मक पोस्टरों, सिनेमा स्लाइडों, दूरदर्शन, टेलिविजन, अखिल भारतीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करवाना।

ii. केन्द्र सरकार से प्राप्त पोस्टर्स का वितरण करना, पोस्टर को उचित स्थान पर लगाया जावे।

iii. सिनेमा मालिकों/प्रदर्शकों से 05 सितम्बर को एक शो की आय राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के लिए दान करने का अनुरोध करना।

iv. राजकीय/गैर राजकीय शिक्षण संस्थाओं सहित विभिन्न संगठनों, शिक्षकों द्वारा उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने पर उन्हें सम्मानित करने जैसे विशेष समारोह आयोजित किए जा सकते हैं। शिक्षकों को भावी पीढ़ी के निर्माता के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके जीवनवृत्त, योगदान तथा दृष्टिकोणों पर वाद-विवाद प्रतियोगिताओं एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया जावे।

v. सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, संगोष्ठियाँ, खेल-कूद प्रतियोगिताएँ, मैत्रीपूर्ण क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल-टेनिस, टेनिस, बैडमिंटन, खो-खो आदि कार्यक्रमों का आयोजन।

vi. सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षक संघों, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से शिक्षक दिवस से एक या दो दिन पूर्व विशेष मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित करवाकर कोष के लिए धन संग्रह करवाना।

6. **शिक्षकों के कल्याणार्थ प्रतिष्ठान के लिए धन-संग्रह हेतु उत्तरदायित्वः-** समस्त उप निदेशक (माध्यमिक एवं प्रारंभिक

शिक्षा), समस्त जिलों के शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा, राजकीय/गैर राजकीय विद्यालयों में झण्डियों का वितरण करवाकर शिक्षकों के कल्याणार्थ शिक्षक दिवस दिनांक 05.09.2016 को झण्डियों की बिक्री कर शुभारंभ कर धन-संग्रह करवाना। धन संग्रह किए जाने एवं शिक्षक दिवस 05 सितंबर के समस्त कार्यक्रमों को शालीनता एवं पूर्ण उत्साह से सम्पन्न कराए जाने तथा प्रतिष्ठान के लिए अपना सम्पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने की कार्यवाही करना।

7. झण्डियों का मूल्य, वितरण व्यवस्था एवं लक्ष्य अनुसार धन संग्रहः-

i. झण्डियों की बिक्री मूल्य 2/- (दो रुपये) निर्धारित की गई है।

ii. राज्य में जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-द्वितीय, जयपुर द्वारा सीधे ही जिलों के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) को झण्डियों का वितरण किया जावेगा।

iii. जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अपने अधीनस्थ राजकीय/गैरराजकीय उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में झण्डियों का वितरण करेंगे तथा निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार मार्गदर्शन एवं धन-संग्रह करवाएँगे। झण्डियों के विक्रय से विद्यालयों द्वारा संग्रहित धनराशि संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वारा एकत्रित की जावेगी तथा उस धनराशि का एक ही ड्राफ्ट निदेशालय में भिजवावें। ध्यान रखें कि विद्यालय स्तर से सीधे ही निदेशालय को ड्राफ्ट नहीं भिजवावें।

iv. जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा) अपने अधीनस्थ ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को/प्रा./उप्रा. (राजकीय/गैरराजकीय) विद्यालयों से धन-संग्रह हेतु मार्गदर्शन देंगे तथा धन संग्रह करवाएँगे एवं झण्डियों के विक्रय से एकत्रित राशि का समेकित बैंक ड्राफ्ट निदेशालय को भेजेंगे।

8. झण्डियों की बिक्री से प्राप्त राशि कहाँ से और किसको कैसे भेजी जावेः-

कृपया झण्डियों की बिक्री एवं अन्य आयोजनीय कार्यक्रमों से प्राप्त धनराशि का बैंक ड्राफ्ट राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर (NATIONAL FOUNDATION FOR TEACHERS WELFARE FUND SEC. EDU. RAJ. BIKANER) के नाम बनाकर प्रेषित करें।

अतः हम समस्त का उत्तरदायित्व है कि 05 सितम्बर शिक्षक दिवस को पूर्ण शालीनता एवं उत्साहपूर्वक मनावें एवं इस कल्याणकारी योजना में अधिक से अधिक झण्डियों की बिक्री कर (राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं से) धनराशि जुटाने हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

नोटः-1. जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा जो झण्डियाँ विद्यालयों में विक्रय हेतु वितरण की जाती है उस विक्रय से प्राप्त राशि के बैंक ड्राफ्ट विद्यालयों द्वारा सीधे ही निदेशालय भेजे जाते थे, के क्रम में निर्देशित किया जाता है कि अब उक्त एकत्रित धन राशि निदेशालय को विद्यालयों द्वारा सीधे न भेजी जाकर जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर संग्रहित कर जिले का एक ही बैंक ड्राफ्ट बनाकर निदेशालय को प्रेषित किया जावे। 2. बैंक ड्राफ्ट भिजवाने हेतु पताः- सचिव कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

● (हरि प्रकाश डेन्डोर) उप निदेशक (प्रशासन), राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

11. पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/साप्र/बी-।/पारपत्र/विविध/15-16/03 दिनांक : 13/8/2016 ●समस्त उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (प्रथम-द्वितीय) माध्यमिक शिक्षा ● विषयः पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में। ● प्रसंगः एफ-3 (ख)(एस-436/88) अलेसे-।।/28981 दिनांक : 11.3.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक आदेश के क्रम में लेख है कि अतिरिक्त निदेशक (कार्मिक-।।) राज. जयपुर ने अपने पत्र के साथ विदेश मंत्रालय भारत सरकार के आदेश दिनांक 26.05.2015 की प्रति संलग्न कर पासपोर्ट जारी करने की प्रक्रिया को सरलीकरण करते हुए पासपोर्ट आवेदन की Prior Intimation की सुविधा लागू की है। इसके अनुसार अब अधिकारियों/कर्मचारियों को पासपोर्ट हेतु सीधे ही पासपोर्ट कार्यालय को आवेदन कर आवेदक द्वारा इस विभाग को Annexure-N में सूचित करना पर्याप्त है।

विदेश मंत्रालय भारत सरकार के आदेशानुसार पासपोर्ट आवेदन पत्र के साथ Annexure-B या Annexure-M संलग्न किया जाना अनिवार्य नहीं बताया है।

अतः इस पत्र के साथ राज्य सरकार व भारत सरकार का आदेश की प्रति संलग्न है। जिसके अनुसार विभागीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी करने की आवश्यकता नहीं है। शासन द्वारा जारी आदेशानुसार कार्यवाही करें तथा अनापत्ति प्रमाण-पत्र हेतु आवेदन पत्र निदेशालय, बीकानेर को नहीं भेजे।

●संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(जगदीशचन्द्र पुरोहित)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

●राजस्थान सरकार निदेशालय कोष एवं लेखा, राजस्थान जयपुर ●क्रमांक : एफ.3(ख) (एस-436/88)/अलेसे-।।/28981 दिनांक : 11/03/2016 ●समस्त अधिकारी/ कर्मचारी राजस्थान अधीनस्थ लेखा सेवा संवर्ग ● विषयः पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण पत्र(Annexure-B/Annexure-M) जारी किये जाने के संबंध में।

विभाग के अधीन कार्यरत विभिन्न अधीनस्थ लेखा सेवा अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा समय-समय पर पासपोर्ट के लिए आवेदन करने हेतु इस विभाग से पहचान-पत्र/अनापत्ति प्रमाण-पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी करने का अनुरोध किया जाता है तथा विभाग की ओर से जारी किए गए प्रमाण-पत्र के आधार पर

पासपोर्ट प्राप्त किया जाता है।

इस संबंध में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को यह सूचित किया जाता है कि विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने आदेश दिनांक (26.05.2015) (संलग्न) से Minimum Government Maximum Governance के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए पासपोर्ट जारी करने की प्रक्रिया का सरलीकरण करते हुए पासपोर्ट आवेदन की ' Prior-intimation' सुविधा लागू की है। इसके अनुसार अब पासपोर्ट हेतु सीधे ही पासपोर्ट कार्यालय को आवेदन कर आवेदक द्वारा इस विभाग को Annexure-N में सूचित करना ही पर्याप्त है।

विदेश मंत्रालय के इस आदेश के अनुसार पासपोर्ट आवेदन के साथ Annexure-B या Annexure-M संलग्न किया जाना अनिवार्य नहीं रहा है। अतः अधीनस्थ लेखा सेवा के सभी अधिकारी/कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि भारत सरकार द्वारा पासपोर्ट जारी करने की सरलीकृत सुविधा का लाभ उठाएँ।

● (डॉ. मनीष शुक्ला) अतिरिक्त निदेशक (कार्मिक-।।)

12. विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2016-17 के सम्बन्ध में निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा/स/22461/14-15 दिनांक : 13-08-2016 ● (1) समस्त उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग (2) समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथम ● विषय : विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा 2016-17 के संबंध में निर्देश।

विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा के संबंध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक प.17(2) शिक्षा-1/2011/ दिनांक 22.1.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया। इसकी पालना में सत्र 2016-17 के निर्देश निम्नानुसार है। योजनानुसार राजकीय विद्यालयों के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए अन्तर जिला एवं कक्षा 11 व 12 के लिए अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए अन्तर जिला और अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण के लिए जो राशि स्वीकृत हुई है उसे अलग से जारी किया जा रहा है।

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/माध्यमिक-प्रथम) को नोडल अधिकारी बनाया जाता है। अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, अजमेर को नोडल अधिकारी बनाया जाता है। ये नोडल अधिकारी निम्नांकित कार्यक्रम के अनुसार क्रमशः अन्तर जिला और अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण की क्रियान्विति करेंगे।

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण निर्धारित कार्यक्रम (कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के लिए)

क्र.सं.	कार्यक्रम	तिथि/अवधि
01	छात्र/छात्राओं द्वारा संस्था प्रधान के माध्यम से जिशिअ(मा) प्रथम को आवेदन प्रस्तुत करना।	30.09.16
02	जिशिअ(मा)प्रथम द्वारा वरीयता से छात्र/छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचना करना	10.10.16
03	पाँच दिवसीय अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि	20.10.16 से 29.10.16 के मध्य

अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण निर्धारित कार्यक्रम (कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों के लिए)

01	छात्र/छात्राओं द्वारा संस्था प्रधान के माध्यम से जिशिअ(मा)प्रथम को आवेदन प्रस्तुत करना	30.08.16
02	जिशिअ(मा) प्रथम द्वारा वरीयता से छात्र/छात्राओं का चयन कर परिक्षेत्र के उपनिदेशक (मा) को नाम व आवेदन भेजना	15.09.16
03	परिक्षेत्र के उपनिदेशक(मा) द्वारा जिलों से प्राप्त छात्र/छात्राओं के नाम व दल प्रभारी के रूप में एक शिक्षक का नाम नोडल अधिकारी को प्रेषित करना	30.09.16
04	नोडल अधिकारी द्वारा निदेशालय से शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की अनुमति प्राप्त करना।	10.10.16
05	दस दिवसीय अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण की अवधि।	20.10.16 से 29.10.16 के मध्य

योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करें। शैक्षिक भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की सुरक्षा व उचित देखभाल को ध्यान में रखते हुए यथोचित व्यवस्था सुनिश्चित करें। इसी क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 28.7.2014 के पत्र की छायाप्रति संलग्न करते हुए लेख है कि उक्त पत्र में वर्णित मानक सुरक्षा मानदण्डों की पालना सुनिश्चित की जाए तथा इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(जगदीश चन्द्र पुरोहित) आई.ए.एस.**, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक राजस्थान, बीकानेर ● माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भारत/राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ राज्य एवं देश के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस हेतु योजना इस प्रकार हैः-

1. **उद्देश्य**
1. देश/राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित करवाना।
2. स्थापत्यकला की जानकारी करवाना।
3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से जोड़ना।
5. विद्यार्थियों के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।

2. **शैक्षिक भ्रमण :–**

(अ) अंतर–जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यता

1. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर राज्य के अन्य जिले में 5 दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।
2. **योग्यता :–**

- राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा (कक्षा 8 व 9) में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक/साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हों।

(ब) अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यता

1. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर अन्य राज्य में 10 दिवसीय भारत दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।
2. **योग्यता**

- राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा (कक्षा 10 व 11) में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हों।

3. **विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्याः–**

(अ) अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमणः– प्रत्येक जिले के 20 विद्यार्थी (कक्षा 9 के 10 एवं कक्षा 10 के 10) एवं 2 अध्यापक।

(ब) अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः– अधिकतम 66 विद्यार्थी (प्रत्येक जिले से कक्षा 11 का 01 एवं कक्षा 12 का 01 विद्यार्थी) एवं 07 अध्यापक (प्रत्येक मण्डल से 01)

4. मेरिट का निर्धारण :– अन्तर जिला/अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः वस्तुनिष्ठ प्रणाली (Objective Pattern) के आधार पर किया जाएगा। छात्र–छात्रा द्वारा गत वर्ष की परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत को 80 प्रतिशत श्रेयांस Weightage दिया जाएगा तथा राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर खेलकूद, सांस्कृतिक/साहित्यिक प्रतियोगिताओं में सहभागिता (Participation) के लिए खेलकूद के 15 अंक (राष्ट्रीय स्तर 15, राज्य स्तर 10), सांस्कृतिक/साहित्यिक के 05 अंक (राष्ट्रीय स्तर 05, राज्य स्तर 03 अंक) दिए जाएँगे।

5. विद्यार्थियों से आवेदन प्राप्त करना एवं चयन प्रक्रियाः–
(अ) अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमणः– जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम) द्वारा जिले में संस्था प्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियों को निर्धारित समय पर राज्य के अन्य जिलों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थानों पर 05 दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जाएगा।

(ब)अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः– राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपने संस्था प्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम) को आवेदन किया जा सकता है। जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम) द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों की जाँच कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा कक्षा 11 का 01 एवं कक्षा 12 का 01 विद्यार्थी का चयन किया जाएगा तथा चयनित विद्यार्थियों के नाम एवं आवेदन पत्र की प्रति मय पूर्ण विवरण अपने परिक्षेत्र के उप निदेशक (मा) को भेजेंगे। उप निदेशक (माध्यमिक) द्वारा जिलों से प्राप्त चयनित छात्र/छात्राओं के नाम, आवेदन पत्र की प्रति मय पूर्ण विवरण सहित एवं प्रभारी के रूप में 01 अध्यापक का नाम उप निदेशक (मा) अजमेर (नोडल अधिकारी) को भेजेंगे। नोडल अधिकारी द्वारा समस्त जिलों से प्राप्त चयनित विद्यार्थियों को अन्य राज्यों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर विभाग द्वारा निर्धारित समय पर 10 दिवसीय यात्रा पर भेजा जाएगा। यात्रा दल के साथ एक संस्था प्रधान (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) को दल प्रभारी के रूप में नोडल अधिकारी द्वारा लगाया जाएगा। नोडल अधिकारी समस्त कार्यक्रम तैयार कर पूर्व अनुमति निदेशक, माध्यमिक शिक्षा से प्राप्त करेंगे।

6. यात्रा व्यय– विद्यार्थियों की यात्रा का सम्पूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आवंटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का संपूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से देय होगा। यह विद्यार्थियों के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत् संधारित करते हुए व्यय विवरण उप निदेशक (योजना) एवं लेखाधिकारी (बजट) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर को नियमानुसार यथासमय प्रस्तुत करेंगे।

7. नोडल अधिकारी –

(अ) अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमणः– जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम)

(ब) अन्तर राज्य शैक्षिक भ्रमणः– उप निदेशक (माध्यमिक), शिक्षा विभाग, अजमेर

8. प्रतिवेदनः–अन्तर जिला एवं अन्तर राज्य दर्शन हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी एवं अध्यापक

विधिवत यात्रा वृतान्त लिखेंगे। इस हेतु उन्हें एक डायरी एवं बॉल पेन उपलब्ध करवाया जाएगा। सभी अध्यापक संभागीय में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरान्त सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्राप्त कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

● **(जगदीश चन्द्र पुरोहित)** आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

आवेदन पत्र

राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा

हेतु छात्र/छात्रा आवेदन

(अन्तर जिला)

प्रमाणित फोटो

1. छात्र/छात्रा का नाम...............................
2. पिता का नाम....................................
3. जन्म तिथि......................................
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है).....................
5. विद्यालय का नाम...............................
6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक................
7. घर/पत्र व्यवहार का पता...
8. घर का फोन नम्बर......................मो. नं....................
9. शैक्षिक सत्र 2015-16 में उत्तीर्ण परीक्षा का विवरण-

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 8 (कक्षा 9 में अध्ययनरत)			
कक्षा 9 (कक्षा 10 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2015-16 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रति संलग्न करें):-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राज्य स्तर		
2. राष्ट्र स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2015-16 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक/ सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राज्य स्तर		
2. राष्ट्र स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अंतर जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं नाम..................... अपने पुत्र/पुत्री नाम................ को विभाग द्वारा आयोजित अंतर जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर

(नाम अभिभावक)

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अंतर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती है।

(हस्ताक्षर संस्था प्रधान मय मोहर)

आवेदन पत्र

भारत दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु

छात्र/छात्रा हेतु आवेदन

(अन्तर राज्य)

प्रमाणित फोटो

1. छात्र/छात्रा का नाम..............................
2. पिता का नाम...................................
3. जन्म तिथि......................................
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है)....................
5. विद्यालय का नाम...............................
6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक................
7. घर/पत्र व्यवहार का पता...
....
8. घर का फोन नम्बर......................मो. नं....................
9. शैक्षिक सत्र 2015-16 में उत्तीर्ण परीक्षा का विवरण-

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 10 (कक्षा 11 में अध्ययनरत)			
कक्षा 11 (कक्षा 12 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2015-16 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रति संलग्न करें):-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
राज्य स्तर		
राष्ट्र स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2015-16 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक/सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
राज्य स्तर		
राष्ट्र स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण पत्र संलग्न कर दिए गए हैं। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य हैं। मैं अंतर राज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं नाम..................... अपने पुत्र/पुत्री नाम................ को विभाग द्वारा आयोजित अंतरराज्य शैक्षिक भ्रमण हेतु दस दिवसीय भारत दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर

नाम अभिभावक

संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अंतर राज्य शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती है।

हस्ताक्षर

(संस्था प्रधान मय मोहर)

● कार्यालय प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर ● D.O.No.32-5/2014-RMSA-1 July 28, 2014 (देखें आदेश क्र. 6 में)

माह : सितम्बर, 2016 | **विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम** | **प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.9.2016	गुरुवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	3	भारत में राष्ट्रवाद
2.9.2016	शुक्रवार	जयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	6	गीतामृतम्
3.9.2016	शनिवार	उदयपुर	12	हिन्दी	4	कैमरे में बंद अपाहिज
5.9.2016	सोमवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम		शिक्षक दिवस-उत्सव
6.9.2016	मंगलवार	उदयपुर	9	विज्ञान	5	जीवन की अवधारणा
7.9.2016	बुधवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	7	वृक्षों की महिमा
8.9.2016	गुरुवार	उदयपुर	4	हिन्दी	7	वीर बालक अभिमन्यु
13.9.2016	मंगलवार	जयपुर	10	विज्ञान	7	नियंत्रण एवं समन्वय
14.9.2016	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हिन्दी दिवस-उत्सव
15.9.2016	गुरुवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	7	मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया
16.9.2016	शुक्रवार	उदयपुर	5	हिन्दी	6	स्वस्थ तन सुखी जीवन
17.9.2016	शनिवार	जयपुर	11	अनिवार्य हिन्दी प्रथम	7	सुमित्रानन्दन पंत-पर्वत प्रदेश में पावस
19.9.2016	सोमवार	उदयपुर	7	हिन्दी	6	मित्रता
20.9.2016	मंगलवार	जयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	8	जल ही जीवन का आधार
21.9.2016	बुधवार	उदयपुर	9	हिन्दी	5	पद-परिचय
22.9.2016	गुरुवार	जयपुर	6	विज्ञान	8	सूक्ष्मजीव
23.9.2016	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		किशोर जागृति दिवस-सामान्य जानकारी
24.9.2016	शनिवार	जयपुर	8	विज्ञान	8	हमारा स्वास्थ्य, बीमारियाँ एवं बचाव
26.9.2016	सोमवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	7	राजस्थान के गौरव
27.9.2016	मंगलवार	जयपुर	4	हिन्दी	10	कूड़ेदान की कहानी अपनी जुबानी
28.9.2016	बुधवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	4	कृषि
29.9.2016	गुरुवार	जयपुर	5	हिन्दी	11	नीति के दोहे
30.9.2016	शुक्रवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	10	पानी और हम

निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

संकट में इंसान की परीक्षा

❒ प्रकाशचन्द टेलर

जब हमारे जीवन में संकट आता है तो अक्सर हम घबरा जाते हैं। मगर हम गलती यहीं कर बैठते हैं। असलीयत तो यह है कि संकट ही हमारी वास्तविक शक्ति है। यह हमें सच का सामना करवाता है। यदि हम संकट के समय धीरज का साथ लेकर कार्य करें तो संकट के बादल दूर हो सकते हैं।

हर व्यक्ति के जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं। कुछ लोग घबराकर हार मान जाते हैं, तो कुछ इस परिस्थिति का सामना कर लेते हैं और जीत हासिल करते हैं। समस्या के समय घबरा जाने से कुछ भी हासिल नहीं हो सकता। यदि संकट के समय आप हार जाते हैं, तो मानों आपकी आधी शक्ति नष्ट हो गई। आप सही निर्णय नहीं कर पाते। गलत निर्णय से संकट और बढ़ जाता है। इसलिए संकट की घड़ी को एक अवसर की तरह देखना चाहिए।

संकट काल में आपको अपने स्वविवेक का इस्तेमाल करना चाहिए। परेशानी के हर पहलू को सोचना चाहिए। ऐसी कोई समस्या नहीं होती, जिसका हल न निकलता हो, समस्या कठिन जरूर हो सकती है, असम्भव नहीं। संकट की घड़ी की गंभीरता को समझकर सही फैसला लेने वाला इंसान ही सफलता की नई कहानी लिखता है।

हर दिन के बाद रात आती है व हर रात के बाद दिन। दुःख के बाद सुख एवं सुख के बाद दुःख आता है। यह प्रकृति का नियम है। आपा नहीं खोना चाहिए, शान्ति से मौन रखकर समस्या का हल निकालना चाहिए। समस्याएँ एवं बाधाएँ क्षणिक ही हुआ करती हैं, आती हैं और वापस चली जाती हैं। संकट एक प्रकार का मेहमान होता है, कुछ दिन अपनी आवभगत करवाता है और चला जाता है।

कुछ इंसान संकट एवं बाधाओं को अपना दोस्त ही मान लेते हैं। कहते हैं कि किसी इंसान पर परेशानी नहीं आई, वह इंसान ही क्या? जिसने संकट का द्वार ही न देखा हो, उसे जीवन में किसी कमी का अहसास ही कैसे होगा? इसलिए हर व्यक्ति की सफलता हेतु संकट का आना अनिवार्य है।

संकट के समय हड़बड़ाहट नहीं करनी चाहिए और घुटने टेकने की बजाय उसका सामना साहस से करना चाहिए क्योंकि भागने से काम नहीं चलेगा, भोगने से सही निदान होगा। कई बार संकट दूर से विकराल दिखाई देता है। जब हम उसके निकट जाते हैं तो वह छोटा होता जाता है। इससे हमारा उत्साह व हिम्मत बढ़ती जाती है। समस्याग्रस्त व्यक्ति में उस घड़ी में संघर्ष करने की क्षमता विकसित होती है।

रोजाना किए जाने वाले कार्यों में हम एक निश्चित सीमा में हो जाते हैं और जब कोई समस्या या बाधा अचानक आ जाती है, हमारी विचार प्रक्रिया में बदलाव हो जाता है। संकट आना जीवन में सफलता का द्योतक होता है। संकट के समय दूसरों से मदद की आशा छोड़ देनी चाहिए। मैं स्वयं इस संकट से गुजर चुका हूँ। संकट के समय कोई किसी का नहीं होता है। तन का कपड़ा भी शत्रु बन जाता है और जिसे हम अपना मानते हैं उसकी भी वास्तविकता का पता चल जाता है। संकट के समय हमें केवल परमात्मा का सहारा लेना चाहिए, वो ही हमारा कर्त्ता-धर्ता है। उसको याद करते रहना चाहिए। क्योंकि किसी ने सही कहा है कि-

''न दौलत काम आती है,
न बेटे साथ देते हैं।
सहारे टूट जाने पर,
इबादत काम आती है।।''

संकट में इंसान को स्वयं को ही जूझना पड़ता है। यह एक ऐसा वायरस है जो इंसान के हौसले, साहस व आत्मविश्वास की परीक्षा लेता है। जो इंसान इस परीक्षा में निकल जाता है, वह अपनी मंजिल पा लेता है। मगर कभी-कभी मंजिल पर पहुँचने से दो कदम दूरी पर ऐसे संकट खड़े हो जाते हैं जब सारी हिम्मत जवाब देने लग जाती है। लगता है, जीती बाजी हार जाएँगे। ऐसे समय में भी आत्मविश्वास को नहीं डिगने देना चाहिए, तब मंजिल आपको अवश्य ही मिल जाएगी।

संकट में व्यक्ति को उस परमात्मा का ध्यान करके सारी बागडोर उसी के हवाले कर देनी चाहिए। यह कहकर कि ''तू जाने तेरा काम जाने, तू ही बिगाड़े तू ही संवारे, इस जग के सारे काज। हे राम, हे राम!''

संकट के दौर में आशा नहीं छोड़नी चाहिए। अपनी सोच को सकारात्मक रखकर धैर्य से उसका सामना करना चाहिए। इसी सोच के साथ कि-

मंजिल मिले ना मिले,
इसका को गम नहीं।
मगर इस जुस्तजू की आरजू में,
मेरा कारवाँ तो है

मंजिल अवश्य मिलेगी, कार्य करते रहो, आशावादी रहो। साहस, आत्मविश्वास, ईमानदारी, वफादारी, जवाबदारी, फर्जदारी जैसे गुणों को साथ लेकर चलो। मैं कहता हूँ कि आपके जीवन में कभी संकट आ ही नहीं सकता। यदि आ भी जाए तो वह यह कह कर चला जाएगा कि उपर्युक्त शक्तियों से मेरा सामना नहीं हो सकता। उसे हार माननी पड़ेगी। संकट आपके सामने घुटने टेक देगा, फिर विजय बस आपकी ही होगी।

चैम्पियन स्कूल के पास, पारीक कॉलोनी,
कुचामन सिटी, नागौर-341508
मो. 8233790476

कन्या-भ्रूण हत्या-जघन्य अपराध

❒ उम्मेद सिंह भाटी 'सूरज'

प्रकृत्ति में नर व नारी दोनों का विशेष महत्त्व है। प्रकृत्ति दोनों का समान रूप से पोषण करती है। दोनों ही समस्त प्राणियों में मानव की श्रेष्ठ संतान है।

प्रकृत्ति व ईश्वर की दृष्टि में नर व नारी समान है। नर और नारी दोनों के संसर्ग से ही भावी संतान का जन्म होता है तथा सृष्टि की प्रक्रिया आगे बढ़ती है।

समाज में फिर भी न जाने क्यों नर व नारी में भेद रखकर कन्या के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखा जाता है तथा दुनिया में आने से पूर्व ही कन्या को मां की कोख में ही भ्रूणावस्था में मार दिया जाता है।

हमारे देश में कन्या-भ्रूण हत्या आज अमानवीय कृत्य बन गया है जो कि चिंतनीय विषय और इंसानियत पर कलंक है।

संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य अपनी बुद्धि व भावनाओं के कारण श्रेष्ठ माना जाता है लेकिन जब अपनी तुच्छ भावनाओं व संकीर्ण सोच और अन्धविश्वास के कारण लड़का व लड़की में भेद समझता है तो यह एक विडम्बना ही है। इस वैज्ञानिक युग व शिक्षित तथा विकसित होते समाज में आज भी कन्या को भारस्वरूप माना जाता है। भारतीय समाज में अज्ञानता, अशिक्षा, रुढ़िवादिता व अन्धविश्वास के कारण कन्या को पराया धन मानते हैं जबकि पुत्र को वंश-परम्परा की वृद्धि करने वाला। माता-पिता अपनी वृद्धावस्था का सहारा मानकर पुत्र को ही ज्यादा महत्त्व देते हैं और कन्या (पुत्री) का जन्म नहीं चाहते हैं जो कि समाज की एक दकियानूसी सोच है।

समाज में लोगों की संकीर्ण सोच के कारण ऐसी मिथ्या धारणा बनी हुई है कि पिता की मृत्यु पर पुत्र ही अर्थी के कंधा देता है तथा पुत्र ही दाह-संस्कार की क्रिया करके अपने हाथों से उनका श्राद्ध व तर्पण आदि करता है जिससे पिता (जीव) की मुक्ति होती है अन्यथा नहीं। ऐसा करना पुत्री (कन्या) के लिए वर्जित बताया गया है जबकि ऐसा नहीं है।

हम देखते हैं कि कुछ माता-पिता जिनके केवल पुत्रियाँ हैं अपने माता-पिता की मृत्यु पर अर्थी के कंधा देकर दाह संस्कार की क्रिया से लेकर श्राद्ध-तर्पण सभी कुछ करती हैं।

आधुनिक युग में बेटियाँ किसी भी क्षेत्र में बेटों (पुत्रों) से पीछे नहीं है। केवल समाज में संकीर्ण सोच वाले लोग उन्हें कमजोर व अबला, लाज-शर्म की पुतली मात्र मानते हैं जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त समाज में लड़कियों के प्रति असुरक्षा की भावना, सुरसा के मुँह की तरह बढ़ते दहेज की मांग आदि कुछ अन्य कारण हैं जिससे कुछ संकीर्ण सोच वाला समाज कन्या-जन्म नहीं चाहता है।

उपर्युक्त कारणों से, पहले कुछ क्षेत्रों अथवा जातियों में कन्या के जन्म लेते ही उसे गला-घोंट कर मार दिया जाता था। आज के वैज्ञानिक व यांत्रिक युग में अब गर्भपात (भ्रूणहत्या) के द्वारा कन्या जन्म को पहले ही रोक दिया जाता है।

वर्तमान में अल्ट्रासाउण्ड मशीन कन्या-भ्रूण हत्या का हथियार बन गया है। लोग इस मशीन की सहायता से मां के गर्भ में पल रहे शिशु का लिंग ज्ञात कर कन्या होने पर कन्या-भ्रूण को गर्भपात करवाकर नष्ट कर देते हैं।

हमारे देश में प्रतिदिन हजारों कन्या-भ्रूणों की हत्या की जाती रही है जिसके कारण लिंगानुपात का संतुलन बिगड़ गया है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में अधिक व अन्य राज्यों में कमोबेश लिंगानुपात बिगड़ रहा है। जिससे सुयोग्य युवकों से शादी के लिए लड़कियाँ नहीं मिल पाती हैं।

दकियानूसी सोच से लोगों में लिंग चयन का मनोरोग निरन्तर विकृत होकर उभर रहा है।

भारत सरकार ने कन्या-भ्रूण हत्या को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए अल्ट्रासाउण्ड मशीनों से लिंग की जानकारी पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है। इसके अन्तर्गत अवैध रूप से लिंग-जाँच करवाने पर कठोर दण्ड का प्रावधान रखा गया है।

इसके साथ ही नारी सशक्तीकरण, बालिका निःशुल्क शिक्षा, पैतृक उत्तराधिकार, समानता का अधिकार, दहेज विरोधी कानून आदि अनेक उपाय सरकार द्वारा किए गए हैं।

यदि भारतीय समाज में शिक्षा का प्रसार हो, पुरुषों की सोच में परिवर्तन हो तथा कन्या को शक्ति का अवतार मानकर और पुत्र व पुत्री में भेद नहीं मानें तो निश्चित रूप से कन्या भ्रूण-हत्या पर प्रतिबन्ध लग सकता है।

परम श्रद्धेय श्री रामसुख दासजी महाराज इस संबंध में कहा करते थे कि-'कन्या-भ्रूण एक जघन्य अपराध है जो अक्षम्य है। एक असहाय, मूक व निर्दोष जीव की निर्मम हत्या है जो इस संसार में आया ही नहीं उससे पूर्व ही माँ के गर्भ में बेरहमी से जिसे औजारों से काट-काट कर गर्भपात द्वारा नष्ट किया जाता है, यह एक भयंकर पाप है। अतः ईश्वर ऐसे लोगों को कभी माफ नहीं करता है और उन्हें अपने कर्मों का फल आज नहीं तो कल इहलोक या परलोक में भोगना ही पड़ता है।'

सृष्टि की सृजनकर्त्ता व रचयिता एक माँ ही होती है तथा संस्कार व शक्ति की प्रतीक कन्या जो बड़ी होकर अन्ततः माँ बनती है, जो सभी नरों (पुरुषों) की जन्मदात्री बनती है, उसे ही पुरुष बेरहमी से जन्म से पूर्व ही नष्ट कर देते हैं।

यह कैसी विडम्बना है कि कन्या-भ्रूण को गिराने व नष्ट करने में एक माँ की भी अहम् भूमिका होती है अर्थात औरत ही औरत की दुश्मन बनकर कन्या-भ्रूण हत्या जैसे कुकृत्य में पुरुष की सहयोगी बनती है।

निःसंदेह कन्या-भ्रूण हत्या एक अमानवीय कृत्य है तथा समस्त विश्व में कन्या संरक्षण हेतु चिन्तन किया जा रहा है।

भारत सरकार ने लिंगानुपात को मध्य नजर रखते हुए कन्या-भ्रूण हत्या पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया है। यह एक जघन्य अपराध है अतः इस कुकृत्य को समूल समाप्त करने में ही मानव जाति की भलाई है।

व्याख्याता
रा. आदर्श उ.मा.वि., मेड़तारोड (नागौर)
मो. 9414673660

नारी शक्ति

❒ डॉ. कृष्णा माहेश्वरी

नारी सशक्तीकरण का नारा जब से नेताओं ने दिया है, समाचार पत्रों के पृष्ठ इन नारों से भरे हुए हैं। ऐसा लगता है कि भारतीय नारी कभी सशक्त रही ही नहीं थी। यदि नारी सशक्त नहीं होती तो जीजाबाई से शिवाजी और शकुन्तला से भरत जैसे पुत्र रत्न भारत को कैसे मिलते? ऐसे निडर भरत ने मात्र छह वर्ष की उम्र में शेर का मुँह खोल उसके दाँत गिन लिए विश्व जिस हिन्दुस्तान को जानता है उसका एक नाम भारतवर्ष भी है। यह नाम उसी निडर भरत के नाम पर पड़ा है। शिवाजी जिनके नाम से अकबर भी डरता था; अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ ही शत्रुओं को अपने ऊपर कभी भारी नहीं होने देते थे। और तो और हमारी सभी देवियाँ शक्ति सम्पन्न हैं। प्रत्येक देवी अपना आयुध लेकर ही समर जीतने के लिए निकलती है। हर वर्ष में दो बार नवरात्र महोत्सव पर दुर्गाजी के नौ रूपों की उपासना की जाती है। ऐसी ही नारी सशक्तीकरण का नवीनतम जीवन्त उदाहरण है किरन मोहता।

किरन दिल्ली में अपनी माँ, पिताजी, बड़ी बहन व बड़े भाई के साथ रहती थी। वह जब भी अलीगढ़ अपने दादा-दादी के पास मिलने आती सबकी सेवा करती और अपने दादाजी के पास बैठकर वीरों की कहानियाँ अवश्य सुनती। किरण इकहरे बदन, कजरारी आँखे, गौर वर्ण, मृदुभाषी, किसी कार्य को करने में कोताही न बरतने वाली, बड़ों की आज्ञाकारिणी बेटी थी तो छोटों की लाडली दीदी या मौसी थी। इसके चेहरे पर सदैव मुस्कान रहती थी। गृह कार्य में तो दक्ष थी ही; अध्ययन में भी सदैव प्रथम ही रहती थी। एक बार उसने बातों ही बातों में मुझसे कहा था- जीजी! गणतंत्र दिवस की परेड में, मैं भी कुछ कर दिखाऊँ तो कैसा लगेगा? मैं तो बारह वर्ष की बालिका का बड़ा सपना सुन कर मुँह ताकती रह गई। जब वह एम.ए. की विद्यार्थी थी तब ही उसका विवाह निश्चित हो गया और साधारण लड़की की भाँति वह विदा होकर ससुराल चली गई पर...

ससुराल में प्रथम बार जब उसने पति का चेहरा देखा तो वह हक्की बक्की रह गई; कारण

उसका पति उसे शक की निगाहों से देख रहा था और अचानक चीखने की आवाज में बोला ''मुन्ना तेरा क्या लगता है? बता जल्दी बता नहीं तो...''। किरन ने धीमी आवाज में कहा- ''मेरे ताऊजी का लड़का, छोटा भैया है। उसके पति ने धमकाया 'झूठ बोलती है, झूठ बोलते शरम नहीं आती'; किरन की आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे और रोते-रोते उसका गला अवरुद्ध हो गया। उसी समय वह पलंग से उठकर समीप रखी कुर्सी पर बैठ गई और बैठे-बैठे रात निकाल दी।

दो दिन वह ससुराल में रही। उसने किसी से न कुछ कहा, न खाया, न पिया। उसको विदा कराने उसका भाई विनोद ताऊ का लड़का मुन्ना एवं अखिल और अविनाश पहुँचे। किरन तैयार होकर भाइयों के साथ मायके आ गई। मायके आते ही अध्ययन में जुट गई। साथ ही एन.सी.सी. की ट्रेनिंग की। ट्रेनिंग में अपनी अध्यापिका की प्रिय छात्रा होने के कारण शीघ्र ही नौकरी पा गई। जब उसने अपना नियुक्ति पत्र अपनी माँ व पिताजी को दिखाया तो वे आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने आश्चर्य से पूछा-''किरन! क्या तेरे ससुराल वाले तेरी नौकरी पसन्द करेंगे''? तब उसने बताया ''माँ! फेरे लेने का नाम ही यदि शादी है तो मेरी शादी हो गई और अब मुझसे कभी इस विषय पर बात नहीं करोगी। मैंने पूरी तरह से देश, समाज और आपकी सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया है।'' और वही किरन जिसे हमने रंग बिरंगी फ्रॉक पहने, दादाजी के पास बैठी या कभी मौसी बनकर बच्चों के साथ खेलती, प्यार करते देखा था, उसने इतनी गम्भीरता से इतना बड़ा निर्णय लेकर सबको अचम्भे में डाल दिया और आज छब्बीस जनवरी की परेड में उसे देखा तो मन इतना प्रसन्न हुआ कि उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। ऊपर से हँसती खिलखिलाती किरन का इतना बड़ा और फौलादी दिल कि फिर कभी न उसने विगत को देखा और न किसी प्रकार की किसी से शिकायत की; सिर्फ अपने कर्तव्य की ओर ही ध्यान केन्द्रित किया और आज ईमानदारी, कर्मठता और लगन से इस पद पर पहुँच गई कि उसके सम्मुख हम सब बौने नजर आते हैं।

उसने अपनी माँ व पिताजी से सविनय निवेदन किया कि वे कभी भी ससुराल वालों से किसी भी प्रकार की औपचारिक, अनौपचारिक बात न करें। उन्हें जो दिया उसके लिए वे समझ लें कि इतने रुपयों की हानि हो गई। उसकी इस बात को माता पिता ने तो निभाया ही पूरे परिवार ने भी निभाया। पूरे परिवार ने उसकी शादी को बुरा सपना समझ कर भुला दिया। पर कहते हैं व्यक्ति के कर्म अच्छे हो या बुरे कभी पीछा नहीं छोड़ते। उस लड़के ने किरन पर झूठा लांछन लगा कर उसके जीवन में जहर घोलने की कोशिश की थी और अपनी प्रेमिका के साथ परिवार की सहमति से पति पत्नी की तरह जीवनयापन करने की योजना को कार्यान्वित कर आराम से जीवन व्यतीत करने लगा, पर जब उसे किरन की नौकरी लगने का पता चला, नौकरी में निरंतर ऊँचे पद पर पहुँचने का पता लगा तो वह उसकी नौकरी से हटवाने के प्रयत्न करता रहा पर किरन का कुछ भी नहीं बिगाड़ सका बल्कि उसका स्वयं का सुख चैन ही चला गया; जिसकी नींव उसने झूठ और धोखे पर खड़ी की थी। धीरे धीरे परिवार बढ़ा पर आय सीमित। प्रतिदिन क्लेश होने लगा और एक दिन पत्नी अपने बच्चों, और किरन के दहेज के जेवर आदि को लेकर सदा के लिए उसे छोड़ गई। माँ-बाप पहले ही स्वर्ग सिधार गए थे, भाई-बहिनों के परिवार ने भी उससे मुख मोड़ लिया। उसकी

लापरवाही ने उसकी नौकरी भी समाप्त कर दी। चारों तरफ से रास्ते बन्द देख कर वे महाशय किरन के ऑफिस पहुँचे। उन महाशय ने सोचा किरन से अपनी सेवा कराऊँगा। यदि उसने मेरी सेवा करने में आनाकानी की तो उसे बदनाम कर दूँगा जिससे वह कहीं मुँह भी नहीं दिखा सकेगी। दरबान से उसने किरन के पास अपने नाम की पर्ची अपने पूरे पते के साथ भेज दी। पर्ची को देखते ही किरन को अपनी शादी की सम्पूर्ण बातें याद आ गई और सोचने लगी कि अगर कोई दूसरे व्यक्ति के लिए गड्ढ़ा खोदता है, तो दूसरा व्यक्ति तो ऊँचे पायदानों पर चढ़ता जाता है, यश पाता है और गड्ढ़ा खोदने वाला स्वयं उसी गड्ढ़े में गिर जाता है। उसने उसी पर्ची पर अपने निवास का पता लिख कर एक माह के पश्चात् सायंकाल पाँच बजे के बाद आने को लिखकर पर्ची वापिस भेज दी।

दरबान ने उस पर्ची को उस व्यक्ति को देकर कहा, आप जाइए। इस बीच किरन ने आगरा के वृद्धाश्रम के व्यवस्थापक से एक व्यक्ति के रहने, खाने-पीने के शुल्क का पता कर लिया। किरन ने उन महाशय को आश्रम का पता देकर वहीं रहने का आदेश दिया और फिर कभी इधर न आने का आदेश भिजवा दिया। साथ ही उस आश्रम के व्यवस्थापक को दायित्व भी सौंप दिया कि इसकी बीमारी आदि का खर्चा वह वहन करेगी पर आप उसके हाथ में कभी रुपया नहीं देंगे।

जब वे महाशय उस आश्रम में पहुँचे तो व्यवस्थापक को देखकर दंग रह गए। उस आश्रम का व्यवस्थापक उसके बचपन का दोस्त व पड़ोसी था। वह उसकी प्रत्येक गतिविधि का ज्ञाता था। वह यह भी जानता था कि उसने प्रेमिका को पाने के लिए किरन को बलि का बकरा बनाकर उसके दहेज से स्वयं को अमीर बनाकर आनन्द किया और अब बुरे दिनों में किसी ने साथ नहीं दिया तो फिर उसी देवी के चरणों में पहुँचा जिसको उसने पैरों तले कुचलने का अथक प्रयास किया था। आज उसी देवी ने उसके जीवनपर्यन्त सम्मान सहित रोटी, कपड़ा, निवास और स्वस्थ रहने में सहयोग दिया। उसने स्वयं को उसके सामने भी नहीं आने दिया जिससे वह अपने किए की माफी माँग सके।

किरन ने अपने समाज सेवा के उपक्रम में उस व्यक्ति की सेवा को भी जोड़ दिया और प्रतिदिन के कार्यों में व्यस्त हो गई; पर अब उस व्यक्ति को अपने जीवन में की गई सभी बुराइयाँ एक के बाद एक याद आने लगीं। अब न तो वह ठीक से खा पाता न पी पाता, उसकी नींद तो एक दम से उड़ गई। न किसी से बात करता न किसी की सुनता। उसकी आँखें एकदम शून्य में कुछ देखती, क्या देखती यह कोई नहीं जानता। एक दिन व्यवस्थापक से उसने एक कापी व पैन मांगा। व्यवस्थापक ने उसको कॉपी पैन दे दिया। अब वह लिखता क्या था कोई नहीं जानता। जब भी व्यवस्थापक उसके कमरे की ओर जाता वह लिखता सा मिलता या दीवार पर टकटकी लगाकर देखता मिलता। कभी-कभी खाना उसकी थाली में ज्यों का त्यों रखा रह जाता। धीरे-धीरे उसकी भूख खत्म हो गई। एक दिन जब भोजनशाला का कर्मचारी उसको खाना खाने के लिए बुलाने गया तब पता चला कि वह इस लोक को छोड़ गया।

पता चलते ही व्यवस्थापक ने चिकित्सक को बुलाया; चिकित्सक ने उसे देखकर मृत घोषित कर दिया। किरन ने उसकी ठीक प्रकार से अंतिम क्रिया करने का आदेश दिया।

जब उसके कमरे को साफ किया गया तो व्यवस्थापक ने उसकी कापी मंगा कर देखी तो उसमें लिखी मिली-मैंने अकारण ही किरन को दुःख पर दुःख दिए पर उसने मेरी किसी से कोई शिकायत नहीं की, न ही मेरा समाज में किसी भी प्रकार से अपमान किया पर मेरी बदी का बदला उसने इस प्रकार दिया। न तो मैं ठीक से जीवन जी पा रहा हूँ और न ही मर पा रहा हूँ। क्या करूँ? मेरे मन की शान्ति ही नष्ट हो गई। मैंने जिसको पत्नी बनाकर सभी सुख दिए वह बच्चों को लेकर चली गई। बच्चों की मैंने सभी इच्छाएँ पूरी की, वह भी माँ के साथ चले गए।

मैंने सोचा मेरे भाई, बहिन, मेरा परिवार सब मेरे हैं पर आज पता चला मैं निपट अकेला....। मुझे क्या मिला? किरन को भाई-बहिन, माता-पिता सभी का भरपूर प्यार, सहयोग मिला। अच्छा पद, समाज में यश सभी कुछ मिला पर मुझे.....।

पूर्व प्राचार्या
बी-186, आर.के. कॉलोनी
भीलवाड़ा(राज.)

ग़ज़ल

❒ डॉ. भँवर कसाना

अजनबी पदचिह्न देखे झोपड़ी के पास।
सवालिए निशान देखे खोपड़ी के पास।।

यह अजूबा देख अपने होश उड़ गए।
मेमेने मिमियाते देखे लोमड़ी के पास।।

बहलियों ने दाँव हम पे कुछ यूं चला।
बैठे थे वे चुग्गा रखे हथकड़ी के पास।।

ढक के रखी बातें जबसे मोबाइल हुई।
खुसफुसाते स्वर सुने टेकड़ी के पास।।

आजकल हम कुछ यों आधुनिक हुए।
कैक्टस सज्जा के रखे खेजड़ी के पास।।

संस्कृतियों के मेल का यह मामला भँवर।
चप्पलें-खड़ाऊ रखे मोजड़ी के पास।।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि., खुनखुना (नागौर)
मो. 9828735395

❒ सुशील व्यास

किसी को तो अपने मुताबिक ढाल प्यारे
पंछी को पिंजरे से निकाल प्यारे।

बजाना हो गर क्रांति का बिगुल
तो फिर ले हाथ में मशाल प्यारे।।

तलाशना है गर जीवन का अर्थ
दिखलादे करके कुछ कमाल प्यारे।

अन्धेरे में जब पड़ चुके हों पाँव
बदल डाल अपनी पुरानी चाल प्यारे।।

बेसाखियों के सहारे कब तक जीओगे
गिर-उठते ही खुदको संभाल प्यारे।

तकदीर को पलटने की ख्वाहिश कर
सिक्के को हवा में उछाल प्यारे!

जयनाराण व्यास कॉलोनी चौका,
चाँदपोल, जोधपुर-342001
मो. 9460551628

जहाँ चाह वहाँ राह

❒ सुभाष चन्द्र कस्वां

हर मानव का जीवन चाहतों से भरा हुआ होता है। बहुत से ऐसे लोग भी होते हैं जो अपने प्रयासों व शक्ति को पहचान मन मुताबिक पा लेते हैं। ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है जो चाह को लेकर कदम तो बढ़ाते हैं पर राह को कंटीली देखकर उनके कदम डगमगाने लगते हैं जिससे वे तीन कदम आगे बढ़ पाँच कदम पीछे हट जाते हैं। इस दौरान उन्हें यह भी पता नहीं होता कि वास्तव में वे चाह के कितने करीब थे। इस प्रकार के लोग अपनी तमन्ना कभी भी पूरी नहीं कर पाते। आदिमानव से लेकर आधुनिक मानव तक पहुँचने का सफर कांटों से भरा हुआ था। हर युग की अपनी चाह रही है, इस चाह को पूरा करने के लिए राह की बाधाओं को हर युग ने ललकारा है। इसी का नतीजा है कि आज हम जिस समाज में रह रहे हैं उसमें यदि सौ साल पूर्व का व्यक्ति जिंदा होकर लौटता है तब उसे विश्वास ही नहीं होगा कि यह समाज व धरा वही है जिसमें कभी वह रहा था। युगीन परिवर्तनों में चाह के किरदार की भूमिका ने हमें 'वाह-वाह' कहने के लिए हमारे होठों को खोला है। सामाजिक परिवर्तन की राह इतनी कठिन नहीं है जितनी सामाजिक व्यवस्था में बदलाव की। विश्व में जाति, धर्म, लिंग, संप्रदाय व ऊँच-नीच आधारित व्यवहार में जो कमी आई है वह इस दिशा में जन्मी चाह की वजह से ही संभव हुआ है। यदि व्यक्ति वासना व भौतिक लालसा की चाह को ही पालता है तब चाह की शक्ति में हमेशा क्षीणता ही रहेगी। चाह पूरी हो भी जाती है तब यह हमेशा उबाऊ व परेशानी में डालने वाली ही साबित होगी। जन कल्याण के लिए उठी चाह विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर शक्ति पाती जाती है। धार्मिक अंधविश्वास, बेतुकी सामाजिक रूढ़ियाँ व आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की चाह रखने वाले व्यक्ति इसी शक्ति से प्रेरित थे। चाह की सुन्दरता ने महान कार्यों के अवतरण में हमेशा सहायता व साहस का आशीर्वाद व्यक्ति पर बनाए रखा है। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता में माखनलाल चतुर्वेदी तुच्छ अभिलाषा के बारे में

पुष्प से यही कहलवाते नजर आते हैं-

''चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूंथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।''

पुष्प की चाह में निजी खुशी के लिए कोई जगह नहीं है। वह तो मातृभूमि को अपने से बड़ा मानता है। इस प्रकार पुष्प की भाँति जो चाह लिए हुए होते हैं उनकी चाह की राह पुष्प की भाँति सदैव खुशबू लिए होती है। राह का हर कठिन मोड़ व्यक्ति में जवान जोश भरने की होड़ में लगा रहता है। यही वजह थी देश को मुगल शासन से मुक्त करवाने के लिए महाराणा प्रताप की छोटी सी सेना पग-पग पर मुगलों को डराती रही। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु, सुभाष चन्द्र बोस, भगतसिंह व वीर सावरकर ने अंग्रेजों को भारत से भगाने की मुहिम रची अन्ततः उन्हें सफलता मिली। अमेरिका पर 9/11 का आतंकी हमला पूरी मानवता का दिल दहलाने वाला घिनौना कुकृत्य था। अमेरिका ने उसी दिन सौगंध खाई थी जब तक आतंकी सरगना ओसामा बिन लादेन को 'तोड़ेंगे नहीं तब तक इस मुहिम को छोड़ेंगे नहीं'। अमेरिका की इस मुहिम ने असर दिखाया। पाकिस्तान में आखिर इस आतंकवादी को धराशायी कर डाला। चाह मजबूत थी, खुफिया एजेंसी ने राह सरल कर दी। टर्की के शासन की बागडोर जब अब्दुल कलाम पाशा के पास आई तब उनकी पहली ख्वाहिश टर्की में स्वदेशी शिक्षा लागू करने की रही। शिक्षा शास्त्रियों व अधिकारियों की पंचायत बैठाई, पंचायत ने अपने फैसले में चार साल की छूट यह कह कर मांगी कि पाठ्यक्रम में बदलाव तथा टाइप राइटर के फोंट बदलने में कम से कम इतना समय तो लग ही जाएगा। अब्दुल कलाम पाशा को फैसला सुनकर हैरत हुई और अगले ही क्षण उन्होंने घोषणा कर दी- टर्की में आज से ही स्वदेशी शिक्षा लागू है। जिस काम को शुरू करने में चार साल चाहिए वह कार्य चंद क्षणों में ही हो गया। इस कार्य की वजह साफ है वह है-चाह।

फिल्म निर्देशक केतन मेहता की फिल्म 'मांझी-द माउंटेन मैन' जो सितम्बर 2015 को फिल्मी पर्दे पर आई भी हमें यही संदेश देती नजर आती है कि चाह प्रबल हो तो मुश्किलें भी ढाल बन जाती हैं। सच्ची घटना पर आधारित कथा-वस्तु जिसमें दशरथ मांझी की धुन व हौसले का परिचय यह फिल्म हमें करवाती है। दरअसल जब दशरथ मांझी की पत्नी गर्भवती थी तब पहाड़ से गिर गई। बिहार के गहलौर और वजीरगंज के बीच फैले पहाड़ की वजह से दशरथ को उसे अस्पताल पहुँचाने में देरी हो गई। बच्चा जनने के बाद पत्नी की मौत हो गई। दशरथ मांझी ने उसी समय कसम खा ली थी कि पहाड़ की कठिनाई की वजह से अब अस्पताल ले जाते वक्त किसी की मौत नहीं होगी। हाथ में कुदाल लिया और लग गए पहाड़ को ढाने। लोगों ने पहले इसे पागलपन समझा। जब चाह व जुनून करिश्मा दिखाने लगा तब गाँव के आदमी, औरत व बच्चे सभी हाथों में कुदाल, छैनी, हथौड़े लेकर दशरथ मांझी के साथ लग लिए। चाह हार मानने को तैयार नहीं थी। पहाड़ की अवरोधक चोटियों को तोड़ डाला। गहलौर और वजीरगंज के फासले को चालीस मील से चार मील कर डाला। आज वह रास्ता 'दशरथ मांझी पथ' कहलाता है। दशरथ मांझी की कुदाल हाथौड़ा व कुश जब पहाड़ पर प्रहार करते दिखते हैं। यही धुन निकलती नजर आती है कि 'हमें

भगवान भरोसे नहीं बैठना चाहिए, क्या पता भगवान हमारे भरोसे बैठे हों।'

जिन्होंने किंवदंतियां गढ़ी हैं, सफलता की पगड़ी ओढ़ी है। यह सब कार्य उनकी चाह के बलबूते पर ही हुए हैं। राह इंतजार में बेचैन थी। राहें आगे की राह दिखाती गईं। उन लोगों के चमत्कार की क्या बात की जाए जिनकी राहों को कुदरत ने शुरूआती दौर में ही डरावनी बना डाला था। फिर भी चाह को पूरी करने की राह से हटे नहीं, डटे रहे। 2015 की भारतीय प्रशासनिक परीक्षा में सम्पूर्ण वर्ग में प्रथम रहने वाली सुश्री इरा सिंघल(62 प्रतिशत शारीरिक अक्षमता) की शानदार सफलता जो शारीरिक रूप से सक्षम हैं उनको भी ललकारती है। चाह भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने की थी पर पहुँची उस मुकाम पर जहाँ सिर्फ एक ही आदमी पहुँचता है। रवीन्द्र जैन (71 वर्षीय) जिनकी 9 अक्टूबर 2015 को मृत्यु हो गई। उन्होंने दृष्टिबाधित होने के उपरान्त भी बॉलीवुड में संगीत के क्षेत्र में वह स्थान बनाया कि उनकी मृत्यु के बाद जिसकी भरपाई अब असंभव सी प्रतीत होती है। संगीत से रिश्ता जोड़ा। चाह बनी कुछ कर के दिखाऊं। बंद आँखों से लिखे गीत, दिया संगीत और आवाज देकर अमर हो गए। यही बात सूरदास के साथ थी। कृष्ण की किसी छवि को आँखों से देख नहीं पाए पर कृष्ण की लीलाओं को जिस सजीवता से शब्दों के जरिए गढ़ा उससे लगता है यह लीला हमारे सामने ही हो रही है। कृष्ण प्रेम में कठिन राह आसान राह में तब्दील स्वतः होती गई। जो जिसे चाहता है वह आखिर उसे मिल ही जाता है। जरूरत इस बात की है कि उसे हम अपने आस-पास तलाशें। कबीर भी इसके बड़े हिमायती नजर आते हैं इसलिए उन्होंने कहा है-

जल में बसे कुमोदिनी, चंदा बसे आकास।
जो जाहीं को भावता, सो ताहीं के पास।।

कुमोदिनी पृथ्वी पर जल में निवास करती है। चन्द्रमा दूर आकाश में बसता है। चाँदनी रात में जब कुमोदिनी चन्द्रमा को देखती है तब खिल उठती है। कुमोदिनी की खुशी व चाह के आगे राह की दूरी कोई मायने नहीं रखती।

दुनिया के जितने भी महान कार्य हुए हैं उनमें हमेशा चाह की प्रबलता व प्रधानता ही रही है। ऐवरेस्ट विजय की चाह के समय तेनजिंग व एडमण्ड हिलेरी के सामने ऐवरेस्ट की ऊँचाई इतनी राह में बाधा नहीं डाल रही थी जितनी मस्तिष्क की निचाई। मस्तिष्क की ऊँचाई को बढ़ाते रहे जिससे ऐवरेस्ट की ऊँचाई गिरती रही। बल्ब आविष्कार की चाह में एडीसन सर हजार बार की विफलता से निराश नहीं हुए। अपनी चाह की राह पर बने रहे। एक हजार एकवां प्रयोग उनकी चाह को कामयाब बना गया। जेम्सवॉट अग्नि पर रखे पात्र के ढक्कन का बार-बार ऊपर-नीचे होते देख उस रहस्य का पता करने में लग गए और वाष्प शक्ति का पता लगा लिया। देखते-देखते वाष्प इंजन का आविष्कार कर डाला। महान साम्राज्यों व महान क्रांतियों का उदय चाह की बदौलत ही हुआ है। राहों के अवरोधों को अनदेखा किया। नंद वंश से अपमानित होने पर नंद वंश के विनाश की चाह चाणक्य ने बना डाली। घूमते-घूमते इस कार्य के लिए चन्द्रगुप्त नामक प्रतिभावान युवक राह में मिल गया। चाणक्य की चाह ने नंद वंश का समूल विनाश कर चन्द्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में मौर्य साम्राज्य की स्थापना कर दी। फ्रांस के भ्रष्ट व निरंकुश राजतंत्र को समाप्त करने के लिए उठी चाह ने लुई सोलहवें को फांसी के तख्ते पर पहुँचा दिया। यद्यपि क्रांतिकारियों को पता था कि यह राह सुगम नहीं है पर उन्हें यह आभास जरूर कराना था कि उस शासन से छुटकारा पाया जा सकता है।

एकलव्य बड़ा धनुर्धर बनना चाहता था। उसकी चाह पर वज्रघात तब हुआ जब गुरु द्रोणाचार्य ने उसे यह कह कर मना कर दिया कि मैं तो सिर्फ उच्च कुल के बालकों को ही यह विद्या सिखाता हूँ। एकलव्य की चाह कुछ भी करने को तैयार थी। चाह, श्रद्धा व विश्वास ने गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी निर्मित प्रतिमा ने वह धनुर्विद्या के सारे गुर सीखा डाले जो द्रोणाचार्य स्वयं अपने शिष्यों को नहीं सिखा पाए। लकड़हारे के बेटे अब्राहम लिंकन ने जब उधार ली हुई जार्ज वाशिंगटन की जीवनी पढ़ी तब उनकी इच्छा भी अमेरिका के राष्ट्रपति बनने की हुई। राह बड़ी दुरूह थी फिर भी हिम्मत, मनोबल व विश्वास के साथ आगे बढ़ते गए व इस पद पर पहुँच गए। चाह की प्राप्ति के संबंध में एक बात हमें हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि जब भी चाह का कोई विचार मन में उठे उसकी प्राप्ति की तैयारी में तुरन्त ही लग जाना चाहिए, क्योंकि सम्भव है कि बाद में समय, संसाधन व अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में वह चाह पूरी करना असंभव हो जाए। चाह प्राप्ति के लिए इन लोगों ने ऐसा ही किया था।

चाह प्राप्ति में विश्वास, परिश्रम, उमंग व जोश का होना जरूरी है। यदि ऐसा होता है तो राह व्यक्ति के स्वागत के लिए हरदम बाहें फैलाती तैयार मिलेगी। महान अंग्रेजी कवि जॉन ड्राइडन ने इस संबंध में कहा है-''For they conquer who believe they can'' अर्थात् वही जीतते हैं जो यह विश्वास करते हैं कि वे ऐसा कर सकते हैं। साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, धार्मिक व कला के क्षेत्र में जो प्रगति आज हुई है, उसकी पायदान हमेशा चाहत ही रही है। हमारी चाह दरअसल लिफाफे पर चिपकी हुई डाक टिकिट की भांति होनी चाहिए जो गंतव्य स्थान पर पहुँचे पहले लिफाफे से उतरे नहीं।

प्राध्यापक (अंग्रेजी)
रा.आ.उ.मा.वि., नूआँ
जिला-झुंझुनूं (राज.)-333041
मो. 9460841575

अनुगूँज

❒ **रामचन्द्र संतवाणी**

विद्यालय में सभी कक्षाओं की टूटी खिड़कियों, दरवाजों को एक अनपढ़ मजदूर ठीक कर रहा था। प्राचार्य महोदय बीच-बीच में घूम-फिरकर काम का जायजा ले रहे थे। वे मरम्मत कर रहे मजदूरों से बोले, देखो! सब काम ठीक से करना। एक भी दरवाजा, खिड़की खराब नहीं होना चाहिए।' तभी एक अनपढ़ मजदूर तपाक से बोल पड़ा, 'प्राचार्य महोदय! क्या आपके द्वारा पढ़ाए गए सभी बच्चे परीक्षा में पास होते हैं?' प्राचार्य महोदय सेवानिवृत्ति तक उस सवाल का जवाब नहीं दे सके। उनके जेहन में जीवनपर्यन्त उस अनपढ़ मजदूर का प्रश्न बराबर गूँजता रहा।

अध्यापक
गंगापुर का खेड़ा
पं.स. भवानीमण्डी, जिला-झालावाड़
मो. 9460094343

राजस्थान में जल संरक्षण

❐ सतीश कुमार गुप्ता

जल ही जीवन है। प्राचीन समय के महापुरुषों ने जल के संरक्षण को आध्यात्मिक दृष्टि से जोड़कर वरुण देवता के रूप में पूजनीय माना था। जल की प्रत्येक बूँद के महत्व का आकलन बार-बार समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन द्वारा आमजन को बताया जा रहा है।

जल संरक्षण आज की प्रमुख आवश्यकता है। भविष्य वक्ताओं की माने तो अगला विश्वयुद्ध जल के लिए ही होगा। जल स्रोतों के अत्यधिक दोहन ने भविष्य के लिए भयावह स्थिति पैदा कर दी है। जल संसाधन एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिस पर केवल मानव ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीव जगत निर्भर है राजस्थान जैसे राज्य के लिए जल संरक्षण और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इसका आधे से अधिक भाग शुष्क और अर्द्ध शुष्क है। यहाँ वर्षा का औसत 25 से.मी. से भी कम है।

राजस्थान में सतही जल संसाधनों में नदियाँ, झीलें व तालाब बहुत ही कम संख्या में है। सदियों से हम इस स्रोतों का अन्धाधुंध दोहन करते आ रहे हैं। केवल दोहन हो रहा है। वापस उसकी पूर्ति नहीं हो रही है। जिसका प्रमुख कारण वर्षा का कम होना, नगरीकरण व औद्योगीकरण हैं।

भूजल उपलब्धता एवं जल स्तर के आधार पर राजस्थान को 595 खण्डों में विभक्त किया है इसमें से 206 ब्लॉकों में स्थिति भयावह है। जल संरक्षण हेतु राजस्थान में निम्न उपाय कारगर सिद्ध होंगे।

1. सिंचाई के नवीन पद्धतियों जैसे फव्वारा, बूँद बूँद सिंचाई पद्धति अपनाना।
2. जल को दोहन न कर उचित उपयोग करना।
3. वर्षा जल का संचयन अर्थात् रेन वाटर हार्वेस्टिंग अपनाया जावे। इस हेतु राजस्थान सरकार ने शहरों में 300 मीटर से बड़े भूखण्डों में यह सिस्टम लगाने की अनिवार्यता कर दी है।
4. अपशिष्ट जल का शोधन कर पुनः उपयोग करना।

5. कृषि पद्धति में 'शुष्क कृषि' अपनाना।
6. बाँध, तालाब व एनिकटों का अधिकाधिक निर्माण।
7. जर्जर नहरी तंत्र को सुदृढ़ करना।
8. परम्परागत नाड़ी, बावड़ी, टोबा, खड़ीन, टाँका, कुई आदि स्रोतों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार।
9. झील संरक्षण योजना आदि उपाय किए जाने चाहिए।
10. शुष्क शौचालयों की योजना भी देश में चलाई जा रही है।
11. इस तरह उपर्युक्त उपाय जहाँ-जहाँ जिस-जिस क्षेत्र में सम्भव है। वहाँ जल स्रोतों को संरक्षित करने की प्रमुख आवश्यकता है। जल संरक्षण आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए मूल्यवान धरोहर साबित होगा। वरना आने वाली पीढ़ियाँ नदी और झीलों को केवल नेट साहित्य में ही देख सकेंगी। राजस्थान में नहीं वरन् पूरे देश में यदि नदियों को आपस में जोड़ दिया जावे तो बिहार जैसे राज्यों में बाढ़ की समस्या का हल हो जाएगा और राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेशों को पर्याप्त जल उपलब्ध हो सकेगा। जल है तो कल है-उक्ति इसकी सार्थकता को सिद्ध करती है।

प्रधानाध्यापक
राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय,
नारायणपुर, अलवर

बीज को गढ़ना होगा

❐ कान्ता चाडा

वृक्ष बनने के लिए
बीज को
धरती में गढ़ना होगा।
सूरज सा चमकने के लिए
तुझे सूरज जैसे
जलना होगा।
माँ बनने के लिए तुझे
प्रसव-पीड़ा को
सहना ही होगा।
गर छूना है आसमान तो
हौंसलों के पँख लगाए
परिन्दे जैसे उड़ना होगा।
जो बिखराना चाहता तूँ
इस जगत में रोशनी
तो तुझे दीपक की तरह
अंधेरों से लड़ना होगा।
कृष्ण को पाने के लिए
तुझे राधा जैसे
तड़पना होगा
जब जब बसन्त आएगा
तब इन पीले पत्तों को
शाख से झड़ना होगा।
गौ मुख से बहती
गंगा को भी
सागर में मिल जाना होगा।
इस जग में फैलाएगा तूँ
अमन-शान्ति के संदेश
तो अपनी ही लौ में लीन
तुझे बुद्ध की तरह चलना होगा।

अध्यापिका
'इन्द्रलोक' नगर निगम के सामने
हनुमानहत्था, बीकानेर (राज.)
मो. 9983047070

यात्रा वृत्तांत

नैमिषारण्य से रामेश्वरम् की ओर

❒ जेठनाथ गोस्वामी

अवतारों का देश भारत—हिमालय जिसका शिखर है और गंगा जिसकी संस्कृति। विश्व गुरु रहे हमारे मनीषियों ने प्रकृति के एकान्त में अध्यात्म को ढूँढ़ा तो पश्चिम ने उस प्राकृतिक एकान्त में भोग का सुख खोजा- यही शाश्वत सत्य है। इसी सत्यस्वरूप सच्चिदानन्दघन परमेश्वर के एकाधिक विग्रहों के दर्शन करने और उसकी लीलास्थली रहे धामों की रज तिलक की लालसा लिए हमारे यात्रा संघ ने पशुपति नाथ से गंगासागर तक की यात्रा के लिए प्रस्थान किया।

'सांच नै आंच आवै ऐड़ो करीजे ना-धरम री नावड़ी तिरे रे तिरे...' गुजराती बहिनों द्वारा समवेत स्वर में गाए गए इस भजन के लालित्य में निमज्जन कर हमने राजस्थान की धरती से उत्तर प्रदेश में प्रवेश किया। मथुरा, औरंगाबाद हाथरस होते हुए हमारी यात्रा बस तुलसी के जन्म स्थान सौंरों से भी गुजरी तो जरूर मगर कहीं भी तुलसी के साहित्यिक व्यक्तित्व की ऊँचाई प्रथमदृष्ट्या प्रतीत नहीं हुई। सुदूर दृष्टि तक परसे श्यामल धानी आँचल ओढ़े खेतों में पछुआ की बहती हाड़ कंपाती ठिठुरन भरती सरदी में अल सुबह अलसाये एक बुजुर्ग को सूखी आम की पत्तियों के अलाव के सामने तापते हुक्का गुड़गुड़ाते देखकर प्रेम चंद के गोदान का होरी और पूस की रात की कहानी का नायक फिर से जीवन्त हो उठा। इसी मार्ग पर हम नेमिषारण्य की ओर आगे बढ़ रहे थे। नेमिषारण्य का वह चक्र कुण्ड जहाँ महर्षि दधीचि ने अस्थिदान किया, महर्षि की वह व्यास तपोपीठ जहाँ ब्रह्मा की नोमि स्थिर हुई और नेमिषारण्य के उस बीहड़ वन में अठ्यासी हजार ऋषियों ने यज्ञ की आहुतियाँ दीं। जहाँ अनेकानेक पुराण और व्रत कथाओं का आविर्भाव हुआ, उस तपोधरा पर पहुँच कर हमने पाँडवों के वनवास स्थल के खण्डहर और दक्षिणेश्वर महाबली हनुमान की राम लक्ष्मण को कंधे पर उठाए विशाल स्वप्रकट प्रतिमा के दर्शन करके स्वयं को धन्य किया। भारतीय वाङ्मय का लिखित दस्तावेज वेद, उपनिषद् पुराणों की रचना और विस्तार इसी नेमिषारण्य में हुआ। मनु शतरूपा की तपोभूमि नेमिषारण्य, जहाँ स्वयं प्रभु ने उनके पुत्र रूप में जन्म लेने का वरदान दिया। सीता का धरती प्रवेश भी इसी नेमिषारण्य में हुआ बताते हैं। जहाँ सुभाष बोस ने भी अपने अज्ञात वास का समय बिताया, आज उपेक्षित सा अभिशापित प्रतीत होता है। सरयू का तट और तीखी सर्द हवा। आज मोक्षदा एकादशी होने से देव नदी में स्थान माहात्म्य की लालसा ने हमें उस ठिठुरन में भी सरयू स्नान का पुण्य कमाने से बाँधे रखा और सपत्नीक स्नान लाभ उपरान्त शरीर में एक स्फूर्ति आभासित हुई। राजा दिलीप द्वारा कामधेनु को चराते विचरते जहाँ जहाँ उसकी दुग्ध धारा गिरी वहीं तीर्थ मन्दिर बनते गए। गुलाबी नगरी जयपुर के रेलवे स्टेशन को धता बताता गोरखपुर जंक्शन का धवालाभा लिए विस्तीर्ण रेल्वे स्टेशन बिल्डिंग बाहर से बड़ा मनोहारी दिख रहा था। जहाँ स्वाधीनता के पुजारी महाराणा प्रताप की अश्वारुढ़ प्रतिमा हमें राजस्थान में ही होने का भ्रम पैदा कर रही थी। विशाल स्वच्छ परिसर में श्वेताभा ओढ़े भारत प्रसिद्ध नाथ पीठ भगवान् गोरक्षनाथ मंदिर की सुषमा देखते ही बनती थी। विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियों के मंदिर गवाक्षों के ठीक मध्य में विशाल मण्डप में प्रतिष्ठापित भगवान् गोरखनाथ की चित्ताकर्षक मूर्ति के दर्शन कर यह नाथजीवन धन्य हो गया। मंदिर में स्वच्छता और सुघड़ता अतुल्य कही जा सकती है।

यहाँ विशाल पुस्तकालय का पता तो चला लेकिन नाथ संकेतों की उपलब्धता के बारे में मंदिर के कनिष्ठ पुजारी मौन ही रहे।

चौड़े राजमार्ग पर लंबे खड़े चीड़ देवदार के पेड़ सिर ताने खड़े थे तो उस पर्वत उपत्यका में लंबी दूरी तक मिडवे ढाबों की बहुतायत भी देखी गयी। जो भी नगर काठमाण्डु राजमार्ग पर आये वे विस्तीर्ण चौराहों वाले खूबसूरत बसावट वाले शहर पाए गए। यूपी का आम नगर तो विपन्नता का संकेत दे रहे थे।

सड़क के दूसरी ओर त्रिशूली नदी कहीं कल कल करती तो कहीं मंथर गति की जलधारा हमारा साथ बराबर निभा रही थी। उस कुहासी रात की मद्यम चंद्रिका में पर्वतों की यह अविस्मरणीय सौर अद्भुत रोमांच भर रही थी। वागमती नदी का पावन तट और पशुपति नाथ मंदिर का प्रवेश द्वार दोनों आमने सामने। भगवान् पशुपति नाथ के दर्शन लाभ से पहले ही तीर्थ यात्री को जीवन के अंतिम सत्य से रूबरू कराती वागमती तट पर एक साथ जलती एकाधिक चिताओं के चबूतरों पर पार्थिव देहों की होती अन्त्येष्टियाँ। नेपाल नरेश द्वारा निर्मित पीढ़ियों पुराने उस हिन्दू संस्कृति की शैव आस्था के गौर व स्थल पशुपतिनाथ का मंदिर लकड़ी और पत्थर की सुघड़ कारीगरी का मुँह बोलता देवस्थल। आकाश को उठता लंबवत् त्रिशूल डमरू का स्तम्भ तो विराट स्वर्णमंडित नदी की भगवान् शिव को अभिनंदन करती जीवंत मूर्ति। मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ का रेला तो रुद्री करते ब्राह्मणों के उच्च स्वर घोष। निज मंदिर की छतों और दीवारों पर रजत मंडित उत्कीर्ण शिव गणों वाली दीवारें। गगन चुंबी स्वर्ण जड़ित कलशों पर नेपाल नरेश का यशोगान करती धर्म-ध्वजाएं। गर्भगृह में काले पत्थर की त्रिमूर्ति शिवलिंग का आदम कद विग्रह। पौष मास का सोमवार और रुद्री पाठ का संयोग। अंग्रेजी परिधानों में भी भारतीय महिलाओं द्वारा पूजन अर्चन इस बात को तो बल देता ही है कि हमारी सभ्यता बदल सकती है लेकिन संस्कृति नहीं।

पूरे मुजफ्फरपुर क्षेत्र में घने कोहरे को चीरते हुए हमारी यात्रा संघ की बस पटना की ओर बढ़ी जहाँ महात्मा गाँधी सेतु पुल(ब्रह्मपुत्र) नदी पर कोई 7 कि.मी. लम्बा पुल बना है। एशिया के बड़े पुलों में इसकी गिनती है।

गयासुर को अपने एक ही पदाघात से मोक्ष कर देने वाले मोक्षतीर्थ विष्णु पाद धाम पित्तरों के पिण्डदान एवं उनकी सद्गति हो जाने का माहात्म्य लिए है। गंगा यहाँ गुप्त रूप में बहकर फाल्गुनी नाम से चर्चित है। जहाँ श्री हरि विष्णु के काले पत्थर का स्तम्भ शैली में बना मन्दिर इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई होल्कर के हाथों से 4 मण चाँदी और सवामणी स्वर्ण-कलश से शोभित है। बोध गया तिब्बती बौद्ध संस्कृति का बिहार प्रांत में जग जाना क्षेत्र है। वह तपो भूमि जहाँ माँ वागेश्वरी ने तथा गौतम बुद्ध को कैवल्य ज्ञान प्राप्ति का मार्ग बताया। अनिमेष स्थली जहाँ तथागत ने निरंतर दूसरे दिन तक अपलक नेत्रों से उस दिव्य मोक्ष ज्योति के दर्शन किए। प्राचीन बौद्ध स्तूपों (छोटी त्रिभुजाकार झोंपड़ियाँ) आज भी तपोबल की दिव्यता दर्शाती हैं। नेपाल, तिब्बत से दर्शनार्थी और बुद्ध भक्तों की पूजा पद्धति से हम और विदेशी दोनों रूबरू

हो रहे थे। सम्राट अशोक की मगध भूमि और पाटली पुत्र से कलिंग रणक्षेत्र तक की यात्रा मार्ग। बौद्ध धर्म प्रवर्तन एवं प्रसार का आज भी साक्षी है। म्यांमार(बर्मा), चीन, तिब्बत, नेपाल सभी बौद्ध क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते सम्पन्नता के द्योतक बौद्ध मंदिर दिल को बहुत सुकून दे रहे थे। बोध गया से आगे सायं ढलते-ढलते घनी वन कटी और ऊँचे वृक्षों से पटी धरती जहाँ पूर्व में पहाड़ और पश्चिम में गहराई लिए हरी धरती के हजारी बाग जिले का चम्पारन क्षेत्र बड़ा नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

नांदिड़ जिले से निकलकर आंध्रप्रदेश का पहला गाँव जोगी पेठ में पुरानी ऊँची काली चारदिवारी के बारह मस्जिद के ठीक सामने विशालकाय हनुमान प्रतिभा धार्मिक समन्वय की सौगात सिद्ध कर रही थी। महाभारत के भीष्म के पौत्र घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक को जब भगवान श्रीकृष्ण ने पूछा कि वह किस ओर से लड़ेगा तो महाबली ने एक ही बात कही कि हारने वाले के पक्ष में। बस इसी बात को श्रीकृष्ण ने महाभारत के आरम्भ में उसकी बलि मांगकर पाँडवों का पक्ष मजबूत कर दिया। पर यह आशीर्वचन भी दिया कि तेरी पूजा श्री श्याम नाम से ही होगी। यही है खाटू श्याम जी। श्री सेलम् के मल्लिकार्जुन महादेव लाल भूरे पत्थर के बने मोटे आकार के अलंकृत स्तंभों पर टिके इस ज्योतिर्लिंग का गर्भ गृह बहुत छोटा एवं गहराई सी लिए हुए है। विशाल नदी के पार्श्व में माँ जगदम्बा के भ्रामरी रूप की भव्य प्रतिमा अपलक आकर्षण को बाध्य कर देती है। सवेरे चाह कर भी देवदर्शन का उपक्रम असफल ही रहा। अपने वनवास में अर्जुन ने घोर तपस्या कर महादेव जी से पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था लेकिन उससे पहले उन्होंने भील आखेटक के रूप में उसे खरी कसौटी पर परखा। यही माहात्म्य यह स्थान लिए हुए है। जब आतयायी राक्षस ने यह वरदान पा लिया कि वह न तो दो पैरों वाले से मारा जाएगा और न चार पैरों वाले से तब माँ जगदम्बा ने छः पैरों वाले भ्रमर का रूपधारण कर आतयायी का नाश किया और भ्रामरी नाम से विख्यात हुई। आज सुबह श्रीशैलम के मुख्य द्वार से ही भगवान आशुतोष को नमस्कार कर हम तिरुपति के पाँच सौ कि.मी. लम्बे मार्ग पर निकल पड़े।

से.नि.प्रधानाचार्य,
रा.उ.मा.वि. बालोतरा, बाड़मेर
मो. 9828926826

संस्मरण

मुख्य अतिथि

❐ उषा रानी स्वामी

कल मैं पुस्तकालय में समाचार पत्र पढ़ रही थी, तभी दिगम्बर चन्द प्रभु हॉयर सैकण्डरी विद्यालय के शिक्षक ने पुस्तकालय में आकर मुझे लिफाफा थमा दिया और बड़े विनीत स्वर में बोले-'आपको अवश्य आना है, वादा करो, ना नहीं करोगे।' मैंने सहमति में हाँ कर दी। मैंने लिफाफा खोला। देखा, विदाई समारोह का निमन्त्रण पत्र था। मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था। 'मैं' और मुख्य अतिथि! मैं इस पद के योग्य कहाँ? मुझमें ऐसा कुछ भी तो नहीं कि इस पद की भूमिका निभा सकूँ। न मेरा ऐसा व्यक्तित्व है और न ही पद। उन लोगों ने मुझमें ऐसा क्या देखा। मेरी समझ से बाहर था।

विचारों की चलती उधेड़बुन के मध्य अन्तर्मन ने कहा-आखिर उन्होंने तुममें कुछ तो देखा है, तभी तो बुलावा भेजा है। घबरा मत! आत्मविश्वास रख और हो जा तैयार भूमिका निभाने को। 25 फरवरी का दिन था। मैं ठीक समय पर समारोह में पहुँची। चाल में कुछ बदलाव कर शालीनता भरी। चेहरे पर मुस्कान बिखेरी। हाथ जोड़कर, थोड़ा झुककर सभी का अभिवादन स्वीकार किया। माँ शारदे का पूजन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। प्रधानाचार्य ने मुझे तिलक लगा, माला पहनाई। ऊँची सी, सुन्दर सी कुर्सी पर बैठाया। सामने टेबल पर गुलदस्ते सजाए। मेरे सामने नेम प्लेट थी-'मुख्य अतिथि' समारोह में पूरे समय, यह नेम प्लेट। अहसास कराती रही कि मैं इस समय मुख्य अतिथि की भूमिका निभा रही हूँ।

सभी मेरी ओर देख रहे थे। कभी में दर्शकों से आँखे चुराती तो कभी छात्राओं की ओर मुस्कुराकर देखती। मेरे दिल की धड़कन, सामान्य से कुछ ज्यादा ही चल रही थी क्योंकि जीवन में प्रथम बार ऐसा अवसर मिला था। समस्त विद्यालय परिवार द्वारा भावभीना स्वागत व आदर सम्मान पाकर भी, मैं हृदय से यह सब स्वीकार नहीं कर पा रही थी। मेरे मन में हर पल यही विचार उठ रहा था कि मैं इस सम्मान के योग्य नहीं। कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। छात्राओं ने रूपरेखानुसार कार्यक्रम का संचालन किया एवं अनेक सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम के मध्य में मुझे भी दो शब्द बोलने के लिए बुलाया गया। मैं मंच पर पहुँची। सभी को आभार प्रदर्शित किया। विद्यार्थी को कैसा होना चाहिए इस पर चन्द पंक्तियाँ सुनाई। सभी मेरी बात ध्यान से सुन रहे थे। मुझे लगा, मैं जो कुछ बोल रही हूँ, शायद सभी को अच्छा लग रहा है। मैंने हिम्मत जुटाई और सुना दी 'मेरी अभिलाषा'। अभिलाषा कविता सुनकर पाण्डाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। सभी एक स्वर में कह उठे-'बहुत अच्छा! बहुत सुन्दर! वेरीगुड। ऐक्सीलेन्ट। विद्यालय के प्रधानाचार्य खड़े होकर मंच पर पहुँच गए और कहने लगे-''वर्तमान में देश को आप जैसे लोगों की आवश्यकता है जो छात्रों का उत्साहवर्द्धन करें। समाज को नई दिशा दे। हम धन्य हुए आप जैसी विदुषी महिला को मुख्य अतिथि बनाकर। ऐसा विदाई समारोह विद्यालय में प्रथम बार आयोजित हुआ है। धन्य है आपके माता-पिता जिन्होंने आप जैसी संतान को जन्म दिया।'' प्रशंसा की अतिशयोक्ति में मेरा सिर सभी के आभार हेतु झुक गया। हाथ स्वतः ही जुड़ गए।

विचारों की शृंखला में फिर एक विचार उभरा। आदमी अकेले में रहकर कहाँ जान पाता है अपने आप को; जब तक उसका सामना समूह से न हो। लोगों से मिलकर, बोलकर, सुनकर, हम जान पाते है कि हम जीवन में कितना उठ पाए हैं। हममें क्या अच्छाई है, क्या बुराई है। आइए, हम सभी मनन करें। कुछ नया सोचें। कुछ नया करें। हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र को नित नया देकर अच्छे से अच्छा बनाएँ।

जीवन दिया है ईश्वर ने,
कुछ करने के वास्ते।
फिर क्यूँ ना हो हर सास
निछावर मेरे हिन्द के वास्ते।
मेरे हिन्द के वास्ते।

व. पुस्तकालयाध्यक्ष
रा.बा.उ.मा.वि., निवाई (टोंक)-304021
मो. 9875076899

मायड़ भाषा का अविस्मरणीय सपूत : ओम पुरोहित 'कागद'

❒ डॉ. नीरज दइया

हिंदी और राजस्थानी भाषा के प्रख्यात कवि-लेखक ओम पुरोहित 'कागद' के असमायिक निधन से भाषा-आंदोलन को गहरा आघात लगा है। उनका सड़क दुर्घटना में 12 अगस्त, 2016 को निधन होना साहित्य के इतिहास में अपूरणीय क्षति के रूप में दर्ज होगा।

राजस्थानी भाषा की मान्यता का सुनहरा सपना देखने वाले 'कागद' जीवनपर्यंत एक योद्धा की भांति विविध क्षेत्रों में जी-जान से जुटे थे। उन्हें आधुनिक युग का कबीर कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे आजीवन कबीर की भांति लोकजीवन और संस्कृति में उन्नयन के लिए खोए रहे। साहित्यकार 'कागद' एक ऐसे विरल रचनाकार थे जिन्होंने जीवन के कटुसत्य को अत्यंत निकटता से देखा-परखा था। युवा पुत्र को सड़क दुर्घटना में खो देने के बाद भी भाषा, साहित्य, संस्कृति तीनों मोर्चों को एक साथ संभाल कर खुद को खुदी से भुला देना चाहते थे। अपने दुःख-दर्द को भुलाकर जैसे वे इस लोक में खो गए थे। उनकी इसी भावना और कार्यों के कारण वे न केवल अपनी रचनाओं से वरन पूरे साहित्य जगत से जुड़े अद्वितीय, सभी के लिए आत्मीय रचनाकार बने हुए थे।

कबीर के शब्दों में- 'मैं कहता हूँ आखिन देखी, / तू कहता कागद की लेखी।' की परंपरा में वे आंखों की देखी को कागद पर लिखते हुए जैसे अपना 'कागद' उपनाम सार्थक कर रहे थे। 'कागद' की लेखी में अनुभव की गहराई, शिल्प का बांकपन और जीवन की जटिलता आदि बहुआयामी यथार्थ देख सकते हैं। ओम पुरोहित 'कागद' का जन्म 5 जुलाई 1957 को श्रीगंगानगर के केसरीसिंहपुर में हुआ था। राजस्थान शिक्षा विभाग में उन्होंने एक चित्रकला-शिक्षक के रूप में सेवाएं करते हुए, शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी पद तक का सफर तय किया। वे जीवन के अंतिम वर्षों में हनुमानगढ़ जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा कार्यलय में सेवारत थे।

ओम पुरोहित 'कागद' को राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के अलवा अनेक मान-सम्मान और पुरस्कार मिले। वे पुरस्कारों से बड़े रचनाकार थे। यह उनकी रचनात्मकता का सम्मान था कि वे उदयपुर और बीकानेर अकादमी में लंबे समय तक सदस्य के रूप में जुड़े रहे। उन्होंने लगभग दो वर्ष तक राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की मुख्य मासिक पत्रिका जागती जोत का संपादन किया था। 'कागद' ऐसे लेखक थे जिन्हें केवल लिखने और छपने तक में विश्वास नहीं था। उनका मानना था कि साहित्य का पढ़ा जाना और युवाओं को साहित्य से जोड़ा जाना बेहद जरूरी है। मुझे याद आता है कि उन्होंने 'जागती जोत' के संपादक पद पर रहते हुए, अपने अथक प्रयासों से पत्रिका की ग्राहक संख्या को चरम तक पहुँचा दिया। वे एक आदमी के रूप में बेहतर इंसान और उच्च कोटि के रचनाकार थे। वे जहाँ जिस क्षेत्र में रहे उन्होंने अपनी कार्य-क्षमता और दक्षता से अपना स्थान अग्रिम पंक्ति में स्वयं प्रमाणित किया।

'कागद' राजस्थानी भाषा मान्यता आन्दोलन के हरावल हस्ताक्षर के साथ भाषा, साहित्य, संस्कृति से ही नहीं जन आंदोलनों में शिक्षा-साक्षरता या किसी दूसरे कार्य में भी कभी पीछे नहीं रहे। उन्होंने हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर के साथ ही संपूर्ण राजस्थान के लिए साक्षरता एवं सतत शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रवेशिका लेखन हो या नवसाक्षरों के लिए साहित्य लेखन उनका नाम अकसर चर्चा में रहता था। अनेक बार राज्य संदर्भ केंद्र में उनसे मिलने का मुझे सौभाग्य मिला। वे संदर्भ व्यक्ति के रूप में जिस जिस के साथ रहे, उसे उन्होंने अपना बना लिया। उनके हृदय में आत्मीयता और प्रेम की अविरल धारा थी। वे सहकर्मियों और पूरे समाज के लिए स्नेह और भाईचारा के अज्स्र स्रोत वरदान के रूप में लाए थे। वे जन चेतना और आखर की अलख जगाने वाले सिपाही थे।

ओम पुरोहित 'कागद' के प्रकाशित कविता संग्रहों में प्रमुख है- बात तो ही, आँख भर चितराम, थिरकती है तृष्णा, आदमी नहीं आदि। इन के अतिरिक्त राजस्थानी में भाषा-विमर्श पर उनकी पुस्तक 'मायड़ भाषा' बेहद चर्चित रही। बहुप्रतीक्षित पुस्तक 'सुरंगी संस्कृति' हाल ही में प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक से जान सकते हैं कि वे किस कदर भाषा और संस्कृति के गहन अध्येता थे। इस पुस्तक में उनके विविध विषयों पर छोटे-मध्यम आकार के सारगर्भित पठनीय 34 मौलिक आलेख संकलित हैं।

ओम पुरोहित 'कागद' ने राजस्थानी के अप्रकाशित कवियों की संभावना को देखते हुए अज्ञेय की भांति राजस्थानी भाषा में सप्तक परंपरा का आगाज किया। उनके महत्त्वपूर्ण कार्यों में थार सप्तक के सात खण्ड याद किए जाएँगे। इनमें उन्होंने राजस्थानी के 49 कवियों की कविताओं का संपादन-प्रकाशन कर एक ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनका यह कार्य कविता के इतिहास में याद किया जाता रहेगा। वे कवि-लेखक के साथ रंग और रेखाओं के भी गहरे जानकार थे। उन्होंने अनेक स्कैच और पेंटिंग से अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। एक संपूर्ण कलाकार की आत्मा उनमें बसती थी। स्वयं दुख और कष्ट सहकर भी दूसरों की मदद करते रहना उनकी इंसानित थी। वे अच्छे गद्यकार भी थे। उन्होंने अनेक पुस्तकों की समीक्षाएँ लिखी तथा शिक्षा विभाग के पांच सितम्बर को प्रतिवर्ष प्रकाशित विविध विभागीय प्रकाशनों में अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ दी। उनकी काफी कहानियाँ भी प्रकाशित हुई थी। मुझे लग रहा था कि साहित्यकार के रूप में उनके कहानीकार रूप को जांचा-परखा जाना शेष है। किंतु यह काम होता उससे पहले समय ने जल्दबाजी में एक बड़ी गलती कर दी। असमय हम सबके प्रिय और आदरणीय कागद जी चले गए। समय की इस गलती की अब कोई भरपाई नहीं है। वे सदा प्रेरक थे और प्रेरक रहेंगे। 'मायड़ भाषा' के ऐसे अविस्मरणीय सपूत को शत-शत नमन।

सी-107, वल्लभ गार्डन,
पवनपुरी, बीकानेर-334003

कहानी

अमावस की चाँदनी

❒ शकुन्तला सोनी

हिमानी और सजल की तू-तू, मैं-मैं इतनी बढ़ गई थी कि सजल रात को ग्यारह बजे भी घर से बाहर निकल कर अकारण ही चौक में इधर-उधर भटकने लगा। सर्दी के कारण बैचेनी तथा भूख भी सता रही थी। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे? किसी मित्र के यहाँ जाना भी उचित नहीं लगा। वह भारी मन से घर की ओर बढ़ा ही था कि हिमानी का तेज स्वर कानों में पिघले शीशे की तरह उतरने लगा। ''माँ, मैं अब और सहन नहीं कर सकती। जब देखो तब, यह नहीं किया, वह नहीं किया, भोजन ठण्डा है आदि। मैं क्या उसकी सेविका हूँ जो आगे-पीछे फिरती रहूँ। कमाती हूँ। मुझे भी अपना जीवन, अपने ढंग से जीने का अधिकार तो है ही। कार्यालय में देर हो जाए या किसी आयोजन में जाऊँ तो झगड़ा। अब क्या करुँ?'' हिमानी दूरभाष पर बोलती रही और सजल चादर ओढ़ कर सो गया। उसकी आँखें अविरल बहने लगी। सब कुछ स्मरण हो आया माँ के हाथ का गरम भोजन, पिता की लाड़ भरी बातें, मेरे स्वास्थ्य का ध्यान आदि। काश! मैं माता-पिता से इतनी दूर नहीं आता। वे कितना दुःखी रहते हैं। बढ़ती आयु से माँ से काम नहीं हो पाता। पिताजी भी थक गए हैं, परन्तु यहाँ उन दोनों का मन नहीं लगता। माँ ने बहू को लेकर कितने सपने संजोए थे। हिमानी को पाकर माँ फूली नहीं समाई थी। परन्तु उसकी प्रसन्नता ताश के पत्तों की तरह शीघ्र बिखर गई। नौकरी पर तो हमें जाना ही था। माँ-पिताजी दोनों ने ही हमें भारी मन से विदा किया। मैं सोचने लगा, न जाने दोनों मेरे बिना कैसे रहते होंगे? उन्होंने अपना दुःख मुझसे कभी प्रकट नहीं किया। यही तो है माता-पिता की महानता। संतान की प्रसन्नता में ही अपना सुख ढूँढ़ लेते हैं। इसी चिंतन में आँख लग गई। प्रातः जब उठा तो सिर भारी था। यह सोचकर शांति मिली कि आज कार्यालय का अवकाश है। चाय के लिए हिमानी को पुकारा। कोई उत्तर न पाकर उठा तो टेबल पर एक पर्ची पड़ी मिली- ''सजल। आज कार्यालय में नई परियोजना का आरम्भ है। विदेशी कम्पनी के अधिकारी आए हुए हैं। मेरा जाना अनिवार्य है। मध्याह्न का भोजन वहीं होगा। तुम बाहर खा लेना''- हिमानी।

आज सजल को अपने निर्णय पर पश्चाताप हो रहा था क्योंकि माँ ने कहा था, बेटा यह महानगर की नौकरी और विवाह दोनों की कैसे पार लगेगी। न तो समय की सीमा और न ही तुम्हारा ध्यान रखने वाला।'' पर उस समय बड़े उत्साह में कहा था ''माँ, तुम भी ना..... हजारों लड़के-लड़कियाँ नौकरी कर रहे हैं और आप हैं कि....। माँ ठण्डी श्वास भर कर रह गई थी। इतना ही कहा, 'जैसी तुम्हारी इच्छा''।

माँ ने ठीक ही कहा था। हम दोनों ही एक दूसरे का ध्यान नहीं रख पा रहे हैं। हिमानी का भी क्या दोष? माँ को समझाना सरल था परन्तु यथार्थ की धरती पर पाँव रखा तो अपने ही शब्द खोखले प्रतीत हो रहे थे। अब यह पीड़ा किससे बाँटू? हिमानी के साथ बैठ कर बात किए एक अवधि हो गई। प्रातः जैसे-तैसे दूध बिस्किट खाकर भागना, मध्याह्न भोजन अपने-अपने कार्यालय में... और रात्रि भोजन नाम का। छुट्‌टी के दिन देर से उठना, फिर भोजन बनाने की बात करने पर महाभारत हो जाता। ''नहीं होगा मुझसे यह सब। यह ही करवाना था तो ले आते कोई अनपढ़ गंवार जो प्रतिदिन गरम भोजन खिलाती।'' सच्चाई तो यही है कि अब तो कुछ भी कहने से डर लगता है। कैसे कटेगा यह जीवन? कल को बच्चे होंगे... बच्चों की बात पर स्मरण आया- हिमानी ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था- ''पाँच साल तक बच्चों का नाम भी मत लेना। मैं अपनी प्रगति चौपट नहीं होने दूँगी।''

इधर माँ प्रतिदिन दूरभाष पर दादी बनने की गुहार करती 'शुभ समाचार कब सुना रहे हो, इधर हिमानी चिढ़ती-दाँत पीसती। 'क्या है, तुम्हारी माँ को और कोई काम नहीं है।' मैं क्या बोलता? इसी प्रकार दिन निकलते रहे। एक दिन एक पुराना मित्र मिल गया, मानों सूखते पेड़ को पानी। कुछ आशा जगी। एक ही कार्यालय में होने से अच्छा लग रहा था। वह प्रतिदिन कहता- ''घर कब बुला रहा है, भाभी से कब मिलवा रहा है?'' हिमानी को तो समय था ही नहीं। मेरी उलझन भाँप कर उसने ही एक दिन अपने घर आने का निमन्त्रण दे दिया। हिमानी ने भी सहज रूप से हाँ कर दी।

सार्थक ने बड़े उत्साह से हमारा स्वागत किया। उसकी पत्नी सरिता बड़ी सलीके वाली लगी। सुसज्जित घर, बच्चे की किलकारी, खिलौने और दोनों का एक दूसरे के प्रति समर्पण, मेरे हृदय में टीस सी उत्पन्न करने लगे। इतना प्यार! भोजन भी स्वादिष्ट। वार्तालाप से ज्ञात हुआ कि सरिता भी किसी अच्छी कम्पनी में नौकरी करती थी परन्तु बाद में त्यागपत्र दे दिया। सरिता ने स्पष्ट किया ''नौकरी हमें आर्थिक सम्बल तो दे रही थी परन्तु सार्थक और समीर(पुत्र) की परेशानी बढ़ रही थी। सार्थक तनाव में रहने लगे, दोनों के बीच की दूरियाँ बढ़ने लगीं। फिर समीर को हम अकेले नौकर के भरोसे नहीं छोड़ना चाहते थे।''

हिमानी ने उत्तेजित होकर कहा, ''नौकरी

छोड़ने पर इतनी पढ़ाई तो व्यर्थ ही गई ना। फिर हम ही समर्पण क्यों करें? हमारे माता-पिता ने इतना धन लगाया, पढ़ाया-लिखाया वह सब व्यर्थ गया।'' तीनों व्यक्ति अवाक् उसका मुख देखने लगे। एक पल तो चुप्पी सी छा गई। स्थिति को भाँपते हुए सरिता ने चुप्पी तोड़ी-''अरे! इसमें समर्पण कैसा और पैसा बिगड़ने की क्या बात है? यह आवश्यक तो नहीं कि हर स्त्री पढ़-लिख कर नौकरी कर ले और मैं आवश्यकतानुसार ही काम करना पसंद करती हूँ। अभी मेरे पति और बच्चे को धन से अधिक मेरी आवश्यकता है।'' सार्थक अपनी पत्नी को गर्व से देख रहा था, वहीं सजल उसकी बुद्धिमता की मन ही मन प्रशंसा करने लगा। हिमानी से तो कुछ कहते ही नहीं बना। उसके अन्तःकरण में द्वन्द्व आरम्भ हो गया। कभी कार्य की प्रगति, कभी बच्चा तो कभी पति सब कुछ उलट-पुलट होने लगा। वह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि मैं सही हूँ अथवा सरिता।

सजल मन ही मन प्रसन्न था कि जो बात वह हिमानी को इतने लम्बे समय में नहीं समझा सका उसे सरिता नें कुछ ही शब्दों में समझा दिया। हिमानी ने अगले अवकाश पर सार्थक को बच्चे सहित अपने घर आने का निमंत्रण दे दिया। सजल को सुखद आश्चर्य हुआ। इस परिवर्तन से वह बहुत हर्षित था कि पहली बार हिमानी ने उसके किसी मित्र को सपरिवार घर बुलाया।

यह अवकाश का दिन, सजल के जीवन का विशेष दिन बन गया। स्वादिष्ट भोजन, उत्साह से मित्र के परिवार का स्वागत, हँसते-खेलते तथा प्रेमपूर्वक वार्तालाप में समय कैसे कट गया, पता ही नहीं लगा। समीर के साथ खेलते समय हिमानी के मुखमण्डल पर विशेष आभा झलक रही थी। उन सबके जाने के पश्चात् हिमानी को देखकर सजल को आभास हो रहा था कि हिमानी के मन में मातृत्व का झरना प्रवाहित करने की भावनाएँ प्रबल हो रही हैं, दूरियाँ समाप्त हो रही हैं एवं निराशा आशा में बदल रही है। लगने लगा कि उनके जीवन की अमावस्या में चाँदनी प्रस्फुटित होने लगी है।

15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स
हिरण मगरी, सेक्टर-4, वैशाली अपार्टमेन्ट
के आगे, मनवा खेड़ा रोड
उदयपुर(राज.)
मो. 9983300220

कहानी

अन्तराल के बाद

❒ शीला व्यास

16 जून, 2016 को सुमि ने बड़े भैया बिनू और नमिता के साथ जब आसाम की धरती पर पहली बार कदम रखा तो उनके सामने सुखद आश्चर्य था। डिब्रूगढ़ एयर पोर्ट से बाहर निकलने पर जिन हाथों ने उनके पैरों को स्पर्श किया था। वे हाथ उसके सबसे छोटे भैया मनु के थे। उनका नेह भरा स्वागत करने के लिए और घर ले जाने के लिए जो गाड़ी लेकर आया था वह सबसे छोटा भाई मनु ही था।

जिस मनु को उसने अपनी गोद में खिलाया था, जिसके हाथ पैरों को दबोचकर कभी बोतल से और कभी चम्मच से दूध पिलाया था, जिसके आगे-पीछे वो चक्कर घिन्नी की तरह दिनभर घूमा करती थी, जिसे हल्का सा भी सर्दी जुकाम होने पर गोद में उठाकर वह बी.एच.यू. हॉस्पिटल दौड़ जाया करती थी और जिसके बड़े होने पर ऊँगली पकड़कर स्कूल में पहली बार प्रवेश दिलाने के लिए वही ले गई थी, वही मनु लम्बा चौड़ा सुदृढ़ व्यक्तित्व का स्वामी असम में सोनारी स्थित टी इस्टेट के मैनेजर के रूप में उनके समक्ष खड़ा था, जिसके दिशा निर्देश पर चार हजार मजदूर दिन रात चाय बगान में काम करते थे।

पाँच वर्ष का लंबा अंतराल उनके बीच पसरा पड़ा था। पाँच साल पहले बड़े भैया के बेटे जीत की शादी में वह सपरिवार शामिल हुआ था, पर व्यस्तता के कारण बहुत कम समय ही उनके साथ रह पाया था, उस समय उसने बार-बार यही आग्रह किया था-''आप और जीजाजी कभी आसाम आने का प्रोग्राम बनाइए ना, वहाँ आकर आप लोगों को बहुत अच्छा लगेगा, आकर देखिए ना हम कितनी चुनौतियों के बीच वहाँ काम कर रहे है।''

इसके पश्चात न जाने कितनी बार आसाम जाने की प्लानिंग की गई पर सदा कोई न कोई बाधा सामने आ जाती। सुमि और उसके पति सुकान्त ने भी कितनी बार सोचा था कि वे गर्मियों में आसाम जाएँगे, कुछ दिन मनु के परिवार के साथ रहेंगे। पर जीवन की भाग-दौड़ और आपाधापी में समय कब पंख लगाकर चल दिया था इसका पता किसी को भी नहीं चल पाया था। सुमि की तन्द्रा तब भंग हुई जब मनु ने कहा, ''अरे भैया गर्मी बहुत है, आप लोग जल्दी से गाड़ी में बैठिए, फिर घर चल कर ढेर सारी बातें होंगी।''

लगातार वर्षा होने के कारण रास्ता बहुत उबड़-खाबड़ हो गया था, जगह-जगह सड़क पर गड्ढ़े खुदे पड़े थे। भैया से पूछने पर पता चला कि घर पहुँचने पर कम से कम तीन घंटे तो लग ही जाएँगे, बैठे बैठे थकने लगी सुमि और अतीत की स्मृतियाँ उसे फिर से व्याकुल करने लगीं। पाँच वर्ष पहले जब जीत के विवाह समारोह में सब लोग शामिल हुए थे, उस समय सुमि भी अपने पति सुकान्त के साथ कोलकाता आई थी, पर आज सुमि यहाँ पर अकेली ही आई है, सुकान्त तो इस बीच इस असार संसार में उसे अकेला छोड़कर अनन्त यात्रा पर चल दिए थे, जहाँ से कोई लौटकर नहीं आता। कितना उत्साह था उन्हें आसाम आने का, पर काल की क्रूरगति के समक्ष हम सब विवश हैं। सुमि को आज पहली बार आसाम अकेले ही आना पड़ा है, पर फिर सोचती है, अकेली कहाँ है वह, उसके साथ है, नमिता, बड़े भैया की बेटी, जो कोलकाता में एक ख्याति प्राप्त डॉक्टर है। उसके साथ है, बड़े भैया जिन्होंने बाबूजी के जाने के बाद सदा उसका ध्यान रखा है, सुकान्त के न रहने पर नमिता ने सदा बेटी बनकर सुख दुख में उसका साथ दिया है। ससुराल में लम्बा चौड़ा परिवार है उसका और सब उसके सुख-दुख के सहभागी रहे हैं, लेकिन जैसे ही गर्मी की छुट्टियाँ होती बड़े भैया संदेश भेजते-

''अरे सुमि इतनी गर्मी में वहाँ रेगिस्तान में बैठी क्या कर रही है इधर ही चली आ, कम से कम धूल भरी आँधियों से राहत तो मिलेगी।''

अगर सुमि जरा भी हील हवाला करती तो उसका रिजर्वेशन करवा कर मोबाइल पर संदेश कर दिया जाता इस बार जब सुमि कोलकाता आ रही थी, उसी समय बड़े भैया ने उसके साथ जाने का प्रोग्राम पहले से तय कर रखा था। जैसे ही सुमि कोलकाता स्थित भैया के

घर पहुँची तो भैया बोल पड़े थे, ''सुमि हमें आसाम जाना पड़ेगा, मनु की बहू तुम्हारी इषी भाभी गंभीर अवस्था से गुजर रही है और उन्हें हॉस्पिटल में एडमिट कर लिया गया है।'' उसकी बीमारी का समाचार सुनकर हम अपने आप को रोक नहीं सके और हम सबने वहाँ जाने का मानस बना लिया है।

परिवार एक सम्पूर्ण इकाई है और जब परिवार का कोई सदस्य गंभीर रूप से बीमार होकर अस्पताल में एडमिट हो जाए तो उस समय सभी का मानस आकुल व्याकुल हो उठता है; धैर्य का बाँध अपनी चरम सीमाओं को तोड़कर विगलित होने लगता है, उसी की परिणति थी कि नमिता ने आसाम जाने का टिकट करा लिया था और आज वे लोग आसाम की धरती पर आकर कार में बैठकर घर की ओर प्रस्थान कर रहे थे। एकाएक गड्ढ़े में पानी जमा होने पर जब कार उछली तो सुमि झटके से विचारों के भंवरजाल से उबरी और मनु से पूछ बैठी ''क्या भैया ढाई घंटे हो गए बैठे-बैठे, थक गए, अब तक घर नहीं आया।''

बस कुछ देर और सब्र रखो वो देखो सामने चाय बगान दिख रहा है। कुछ देर में पहुँच जाएँगे। दोनों ओर चाय बगान ही तो थे। जिधर देखो उधर चाय बगान उनके बीच से ही तो कार जा रही थी। मनु भैया की बात सुनकर वर्षों पहले बाबू जी के संग गाँव की यात्रा सुमि की स्मृतियों में कौंध उठती है, जब गाँव की पगडण्डी पर चलते-चलते सुमि थक गई तो बाबूजी से पूछ बैठी -बाबू जी गाँव अब कितना दूर है, चलते चलते पैर दुखने लगे। बाबूजी झट से बोल पड़े थे ''थोड़ा सबर करा,ऊ का समनवां लौकत है।''

आज बाबूजी और माँ दोनों ही इस संसार से विदा ले चुके हैं, पर भाइयों ने कभी उनकी कमी का अनुभव नहीं होने दिया। सात फेरे दिलाकर जिनके सुदृढ़ हाथों में सौंपा था, वे भी पाँच वर्ष पूर्व उसे रोता-बिलखता छोड़कर अनन्त यात्रा पर चल दिए थे पर तब भी भैया ने उसे कभी रिक्तता का अनुभव नहीं होने दिया। यह सच है कि अपने कार्यक्षेत्र अलग होने के कारण कोई वाराणसी, कोई आसाम तथा किसी को कोलकाता दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ा है, पर उनका स्नेह भरा आमंत्रण उसे हर समय मिलता रहता है। होली, दीवाली, रक्षाबन्धन कोई भी त्योहार हो वे उसकी कुशलक्षेम जानने को सदा उत्सुक रहते हैं। बड़े भैया तो यहाँ तक कहते हैं कि, ''अगर ससुराल में मन न लगे, किसी प्रकार के दुःख कष्ट का अनुभव हो तो सीधे मायके चली आना, इस घर का द्वार तेरे लिए हर समय खुला है और सदा खुला रहेगा।''

पर सुमि इस बात को अच्छी तरह जानती है कि वह श्वसुर कुल को छोड़कर नहीं जा सकती क्योंकि उसके नेह की डोर उनसे भी सुदृढ़ रूप से बंधी हुई है। परिवार के प्रत्येक सदस्य का उससे आत्मीय जुड़ाव है और यही बात उसे संतोष से भर देती है।

एकाएक सुमि को विचार को झटका लगा उसने देखा कि वह मनु के आवास के सामने खड़ी थी और मनु कह रहा था, ''उतरिए भैया जीजी उतरियो घर आ गया है। गुलाबों से लदी डालियाँ जैसे स्वागत कर रही थी केले, लीची के पेड़ कतारों में खड़े थे। चारों ओर पसरा चाय बगान, नारियल, अमरूद, नींबू के पेड़ों से घिरा अमराइयों से सुशोभित चारों ओर फल फूल लताओं से आच्छादित मनु भैया का विशाल क्वार्टर जैसे तपोवन का आभास करा रहा है। उस सुन्दर मनोरम स्थान को देखकर रास्ते की सारी थकान जाती रही। घर में घुसते ही जैसे ही इषि भाभी ने उनके चरणों को स्पर्श किया तो उनको गले लगाते ही यह सुखद अनुभूति हुई कि उनकी हालत में सुधार हो रहा है। तन-मन आह्लादित हो उठा। एक दूसरे से बाते करने पर अतीत की स्मृतियों को जीवन्त करते हुए बहुत वर्षों के पश्चात् एक साथ बैठकर हँसी ठहाके लगाने में समय कब बीत गया ज्ञात ही नहीं हुआ। सब लोग बहुत ही खुश होकर एक दूसरे के प्रति स्नेहिल आत्मीयता से वे सराबोर थे। मन का सारा विषाद धुल पुँछ कर जैसे साफ हो गया था। उसकी प्रसन्नता में जैसे प्रकृति भी समाविष्ट हो गई थी। हल्की-हल्की वर्षा की बौछारे तन-मन को भिगो रही थीं, प्रकृति इस स्थान पर उन्मुक्त होकर वर्षा नृत्य कर रही थी, पक्षियों का सुन्दर कलरव भी उनकी हँसी में सम्मिलित होने का प्रयास कर रहा था। इस सुरम्य रंग स्थली को देखकर कामामनी की ये पंक्तियाँ मन में कौंधने लगी थी-

निकल रही थी मर्म वेदना
करुणा, विकल कहानी सी
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही
हँसती सी पहचानी सी

सुमि जो राजस्थान की भीषण गर्मी से आकुल व्याकुल थी, यहाँ आकर उसके मानस को विश्रान्ति का अनुभव हुआ था, इतने वर्षों से उदासी की जो धूसर परत उसके मन मस्तिष्क में पसरी पड़ी थी, वह जैसे धीरे-धीरे छंटती जा रही थी, प्रकृति की इस अपूर्व लीला स्थली ने एवं आत्मीयजनों के स्नेहिल संवाद ने जैसे उसकी कल्पना को नये पंख लगा दिए थे, उसे लगा था इतने लम्बे अन्तराल के पश्चात उसकी सृजन धर्मिता को यहाँ आकर एक नया माध्यम मिला है। जो कुछ छूट गया है, वह उन क्षणों को अपनी लेखनी में आबद्ध करेगी। जो लेखनी इतने वर्षों से मौन रही थी आज वह मुखर हो उठी थी और वह जुट गई थी अपने नये रचना संसार में, नया कीर्तिमान स्थापित करने के लिए। असम की सुरम्य मन मोहक रंग स्थली ने उसे एक नयी प्रेरणा और चेतना से अनुप्राणित जो कर दिया था।

सेवानिवृत्त अध्यापिका
शीला सदन, भट्टड़ स्कूल के पास, सारडा
चौक, पुरानी लेन, गंगाशहर
(बीकानेर)-334401

राष्ट्रीय अनुशासन

स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के साथ राष्ट्रपति भवन में उनकी भगिनी भगवती देवी भी रहती थी, जो दमे की रोगिणी थी। दुर्भाग्यवश गणतन्त्र दिवस की पूर्व-रात्रि अर्थात् 25 जनवरी की रात्रि को उनकी मृत्यु हो गई। राष्ट्रपति ने अपनी बहिन का शव एक कमरे में बन्द कर दिया और 26 जनवरी के उत्सव में बाधा न पड़े, इसके लिए यह समाचार किसी को नहीं बताया। अगले दिन प्रातः काल 26 जनवरी के समारोह में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने हर वर्ष की भाँति भाग लिया। समारोह समाप्त होने के दो घन्टे बाद ही लोगों ने देखा कि राष्ट्रपति अपनी बहिन की अर्थी के साथ सड़क पर श्मशान घाट की ओर जा रहे थे। इस प्रकार 26 जनवरी के सायंकाल सारे संसार को इस घटनाक्रम का पता चला। 'इतने बड़े पद पर आसीन होने के बाद भी जीवन में राष्ट्रीय अनुशासन को दृढ़ता से अपनाने का इससे बड़ा उदाहरण शायद ही मिले।'

जुगल किशोर राठौड़
अध्यापक, सदर बाजार पोकरण (जैसलमेर)

कहानी

पुरस्कार

❐ डॉ. आशा शर्मा

प्रशांत जी इस बार फिर संस्थान के सर्वाधिक लोकप्रिय शिक्षक के रूप में मालाओं से लाद दिए गए थे। छात्र छात्राओं में घिरे हुए प्रशांत जी की ओर स्टाफ के कुछ लोगों की नजरें प्रशंसा के भाव लिए उठ रही थी तो कुछ निगाहें ईर्ष्या के चुभते काँटे भी बिखेर रही थी। इन सबसे निर्लिप्त प्रशांत जी अपनी चिरपरिचित बाल सुलभ सरल मुस्कुराहट अधरों पर समेटे विद्यार्थियों के उत्साह का आनन्द ले रहे थे। आज विद्यार्थियों को रोजाना की दिनचर्या व अनुशासन से छूट थी, शिक्षक दिवस जो था।

संस्थान में वर्षो से एक परम्परा स्थापित हो गई थी कि विद्यार्थी अपने सभी शिक्षक गणों की वन्दना करके उन्हें कोई उपहार देकर गुरु दक्षिणा की प्राचीन गुरुकुल परम्परा का निर्वाह करते थे साथ ही उस दिन अपने सर्वाधिक प्रिय शिक्षक का चयन कर उनका विशेष सम्मान करते थे। पिछले कुछ सालों से तो प्रशांत जी ही हर सत्र में लगातार छात्रों के प्रिय शिक्षक का यह मान पाते आ रहे थे दरअसल उनका प्रिय होना स्वाभाविक ही था, अपने कालांशों के अतिरिक्त भी वे हर समय विद्यार्थियों से घिरे ही रहते थे। छात्रों की कठिनाइयाँ दूर करने के अलावा शैक्षिक, विद्यालयी और यहाँ तक कि निजी समस्याओं का समाधान भी वे पूर्ण स्नेह और आत्मीयता के साथ करते थे। कमाल तो यह था कि विद्यार्थी उन्हें अपना परम आत्मीय मित्र मानते थे और फिर भी उनकी कक्षा में इतने शांत और अनुशासित रहते थे कि सभी को आश्चर्य होता था। ब्रजभूषण जी, दुबे जी और परिमल जी तो उन्हें जादूगर कहने लगे थे, वे तो मजाक-मजाक में यहाँ तक कहने लगे थे कि जरुर छात्रों को हिप्नोटाइज़ करने की कोई विधि जानते हैं वरना एक हम हैं कि सख्त अध्यापक की छवि होने के बावजूद विद्यार्थी बद्तमीजी कर ही जाते हैं। प्रशांत जी कक्षा में जब पढ़ाते हैं तो छात्रों पर मानो मोहिनी सी छा जाती है। वे पुस्तकीय ज्ञान को इतना मौलिक बना कर प्रस्तुत करते थे कि छात्र एक-एक शब्द मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। उनमें एक और खास बात थी उनकी रचनात्मकता। उनके काव्य संग्रहों, कथा संग्रहों और अन्य रचनाओं के छात्र-छात्राएं प्रशंसक ही नहीं दीवाने हो उठते थे। वैसी ही रचनाशीलता प्रशांत जी अपने विद्यार्थियों में भी लाने की कोशिश करते थे। वे विद्यार्थियों को अच्छे व प्रभावशाली लेखन की कला सिखाने के साथ उनकी अनगढ़ रचनाओं को परिष्कृत-प्रांजल बना कर साहित्यिक संस्थाओं व पत्रिकाओं में भिजवाने में भी रुचि लेते थे। लेखकीय रुचि वाले बहुत से विद्यार्थियों की रचनाओं के प्रकाशन से उनका आत्मविश्वास व अभिरुचियाँ बढ़ी थीं।

यही नहीं कमजोर छात्रों की विषयगत कमजोरी दूर करने के मामले में उन्होंने कभी भेदभाव नहीं किया, हर प्रकार के छात्र की क्षमताओं को वे पूर्ण मनोयोग से संवारने की कोशिश में लगे रहते थे। विद्यार्थियों से उनका स्नेह मैत्रीपूर्ण था आधिपत्यपूर्ण नहीं, उनके सुख-दुःख परेशानियों और अभावों की प्रशांत जी ने कभी अनदेखी नहीं की फिर ऐसे सरल, स्नेही, प्रतिभाशाली शिक्षक को विद्यार्थियों का इतना प्यार मिलना स्वाभाविक ही था। इस बार संस्थान में एक नई गहमा-गहमी थी दरअसल संस्थान को भी इस वर्ष शिक्षा विभाग द्वारा उत्कृष्ट शिक्षकों को दिए जाने वाले सम्मान की सूची में शामिल कर लिया गया था क्योंकि इस वर्ष से इसे पूर्णतः सरकारी क्षेत्र में शामिल कर लिया गया था। विभाग से निर्देश आए थे कि संस्थान से उत्कृष्ट शिक्षक का चयन कर नाम भिजवाया जाए। इस हेतु लगभग वही मापदण्ड निर्धारित थे जो एक शिक्षक को छात्र हित में उपयोगी और लोकप्रिय बनाते हैं। चयनित शिक्षक के लिए बहुत सी आर्थिक, सामाजिक व अन्य अनेकानेक विशिष्ट सुविधाएं तय थी जो हर शिक्षक को उसके प्रति लालायित व महत्त्वाकांक्षी बना सकती हैं।

हालांकि संस्थान का प्रत्येक व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा से यह जानता और मानता था कि इस पुरस्कार के लिए सर्वाधिक उपयुक्त दावेदार कोई है तो प्रशांत जी हैं, यही छात्रमत का भी मान है लेकिन फिर भी निहित स्वार्थो के चलते संस्थान में अन्दरुनी राजनीति की गहमा-गहमी शुरू हो गई थी। अतिमहत्त्वाकांक्षी परन्तु धूर्त रजनीश जी जो खुद डायरेक्टर के नजदीकी रिश्तेदार थे, यह किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि यह मलाईदार पुरस्कार उनके अलावा किसी और को मिल जाए जबकि राजनीति करने के अलावा संस्थान में उनका कोई सार्थक योगदान नहीं था। कक्षाओं में पढ़ाना तो दूर छात्र उन्हें ठीक से जानते तक न थे। स्टाफ में उन्हें एकाध खुराफाती या गुंडा किस्म के कर्मचारियों के अतिरिक्त और कोई पसन्द नहीं करता था। वहीं रजनीश जी आजकल अचानक बहुत सक्रिय और तत्पर हो उठे थे प्रशांत जी को इस पुरस्कार की दावेदारी से वंचित करने कि लिए जबकि अभी तक खुद प्रशांत जी को इस पुरस्कार से कोई सरोकार ही न था न ही वे इस तरह के पुरस्कारों को बहुत महत्त्व ही देते थे। लेकिन जब सुगबुगाहट हुई कि प्रशांत जी के खिलाफ छात्र शुल्क के रजिस्टर में किसी गड़बड़ी को लेकर चार्जशीट की फाइल चलाई जा रही है तो स्वाभिमानी व ईमानदार प्रशांत जी द्वारा अन्याय का प्रतिरोध किया जाना स्वाभाविक ही था उन्होंने तुरन्त अपना पक्ष सच्चाई के साथ रखते हुए एक ओजस्वी पत्र कॉलेज शिक्षा निदेशालय एवं मंत्री जी के नाम लिख भेजा जिसमें स्पष्ट था कि उन्हें पुरस्कार की लालसा नहीं है लेकिन वे किसी भी प्रकार का अन्याय बर्दाश्त नहीं करेंगे।

छात्रों को यद्यपि प्रशांत जी ने कुछ भी संकेत नहीं दिया फिर भी उन्हें इस प्रकरण की भनक लगी तो वे तत्काल ही अपने प्रिय अध्यापक के बचाव की मुद्रा में आ गए। आनन-फानन में विद्यार्थियों की बैठक हुई और वे मंत्रालय के समक्ष प्रशांत जी की विद्वता, लोकप्रियता व निष्ठा का जीता जागता गवाह बन कर खुद पहुँच गए। उन्होंने लगभग चेतावनी दे दी कि वे अपने प्रिय अध्यापक का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। यदि दोषियों के विरुद्ध तुरन्त कोई कार्रवाई नहीं की गई तो माहौल उग्र व हिंसक हो सकता था यह भाँपकर मंत्री जी ने तुरन्त निर्देश दिए कि प्रशांत जी ही पुरस्कार के लिए उपयुक्त पात्र हैं और यह उन्हीं को मिलेगा।

संस्थान में छात्रों के लिए जश्न का सा माहौल बन गया। मंत्री जी से लताड़ खाए हुए डायरेक्टर ने खुद प्रशांत जी को अपने चैम्बर में बुलवाया और विनम्रता दिखाकर कहा कि पुरस्कार उन्हीं को मिलेगा, वे छात्रों को शांत

करें। प्रशांत जी के मुख पर अब भी वही निर्मल मुस्कान थी। उन्होंने कहा, ''मुझे पुरस्कार नहीं चाहिए, मेरा काम, मेरी संतुष्टि और मेरे विद्यार्थियों का प्यार ही मेरे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है'' कहकर प्रशांत जी बाहर आ गए।

अपने छात्रों को लगन व स्नेह से पूर्ववत् पढ़ाते हुए प्रशांत जी के महीने दर महीने यूँ ही गुजरते गए और नियत तिथि पर प्रशांत जी को पुरस्कार दिए जाने की घोषणा हुई।

प्रशांत जी के नाम उद्घोषणा होते ही हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। जगमगाते हुए मंच की ओर प्रशांत जी सधे कदमों से बढ़ रहे थे। मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, राज्यपाल, निदेशक और अनेक विभूतियाँ सम्मानित होने वाले शिक्षक के सम्मान में पुरस्कार हाथ में लिए तत्पर खड़े थे मगर यह क्या? प्रशांत जी उधर न जाकर माइक की ओर बढ़ चुके थे। एक विनम्र स्वाभिमान से युक्त ओजमयी वाणी गूंज रही थी ''...सभी आदरणीय जन एवं प्रिय विद्यार्थियों! आप लोगों का अत्यधिक आग्रह मुझे मंच तक लाया है पुरस्कार पाने की लालसा नहीं। मैं नहीं चाहता था कि किसी भी तरह का मलाल या गलतफहमी आप लोगों के मन में रहे इसीलिये मैं यहाँ तक आया हूँ। मैं हृदय से कहता हूँ कि पुरस्कार की मुझे कोई चाह नहीं है लेकिन जिस तरह से इसे लेकर राजनीति की जाती है यह वाकई अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं किसी हठधर्मिता, दुराग्रह या दुर्भावना की वजह से नहीं वरन् इस वजह से इस पुरस्कार को लेने से विनम्र इन्कार करता हूँ क्योंकि मेरे लिए सच्चा पुरस्कार मेरे विद्यार्थियों की वह आस्था, श्रद्धा और प्यार है जिसकी वजह से आज मैं यहाँ आपके सामने हूँ। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे और उन तमाम शिक्षकजनों को पुरस्कारों की लालसा से मुक्त रखे जिन्हें अपने निष्ठा से किए गए कार्यों के बदले आत्मसंतुष्टि रूपी पुरस्कार सतत स्वतः प्राप्त होता रहता है और इस निष्ठा के पीछे-पीछे संसार के सारे पुरस्कार स्वमेव खिंचे चले आते हैं

धन्यवाद देकर प्रशांत जी मंच से उतर आए। पुरस्कार उन देने वाली विभूतियों के हाथों में ही श्रीहीन से रखे रह गए थे और हॉल तालियों से गूँज रहा था।

1/196 मालवीय नगर
जयपुर-302017 (राज.)
मो.: 9414446269

वीर गाथा

बलजी-भूरजी

❒ जगदीश कुमार

मुगलों के दीर्घ कालीन दमन और शोषण के कारण शक्तिहीन होकर राजपूताना के रजवाड़े निष्प्राण से हो गए थे। इसके उपरान्त आपसी फूट का घुन उन्हें खाए जा रहा था। ऐसी स्थिति में मराठा शक्ति का अभ्युदय इन रजवाड़ों के लिए कोढ़ में खाज के समान सिद्ध हुआ। अंग्रेज तो इस ताक में थे ही। विदेशी सत्ता का विरोध करते हुए राजस्थान के जिन वीरों ने अपना जीवन न्योछावर किया उनमें शेखावाटी के दो वीर प्रसिद्ध हैं- बलजी और भूरजी। राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानियों में डूंगजी जवार जी की तीसरी पीढ़ी में दो योद्धा उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपने पूर्व पुरुषों का अनुसरण कर 'महाजनो येन गतः सः पंथाः' की उक्ति को चरितार्थ किया।

राजस्थान के रजवाड़े तो सुरक्षा संधियाँ कर अपना भार विदेशी सत्ता के हाथों में सौंप कर निश्चिंत हो गए किंतु अंग्रेजों ने धीरे-धीरे रियासतों के आंतरिक मामलों में दखल देना प्रारंभ कर दिया। राजस्थान के कुछ स्वतंत्रता चेत्ता रजवाड़ों को यह स्थिति सहन नहीं हुई। उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध खुली बगावत प्रारंभ कर दी। डूंगजी जवार जी भी इसी विचारधारा के सूत्रधार बने। हालांकि ब्रिटिश सत्ता की तुलना में इनकी कोई संगठित शक्ति नहीं थी, न कोई पीछे बल परन्तु उनके दिलों में जो स्वतंत्रता की भावना थी, उसके लिए ये लोग मर मिटे।

अपने दादा डूंगरजी जवारजी की तरह बलजी-भूरजी ने एक संगठित दल बनाकर अंग्रेजी राज्य में लूटपाट शुरू कर दी। हालांकि इनके आक्रमण का प्रमुख लक्ष्य ब्रिटिश शासित क्षेत्र ही होता था। इन्होंने भी अंग्रेजों को तंग करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मुठभेड़ों में इन्होंने उच्च अंग्रेज अधिकारियों को मारते हुए अद्भुत वीरता का परिचय दिया। इन स्वतंत्रता सेनानियों को डाकू की संज्ञा देकर बदनाम करना ब्रिटिश सरकार का एक घिनौना षड्यंत्र मात्र था। यदि बलजी-भूरजी का उद्देश्य अर्थोपार्जन ही होता तो ये सीधे अंग्रेज छावनियों पर आक्रमण कर अपनी जान जोखिम में क्यों डालते? अन्ततः जयपुर, जोधपुर राज्य की सैनिक टुकड़ियों और अंग्रेजी सेना ने सामूहिक आक्रमण कर इन्हें एक दुर्गम स्थान पर घेर लिया।

इन स्वतंत्रता सेनानियों के दल में झुंझनू जिले के तारापुर गाँव निवासी भैरू सिंह नामक युवक भी था। 18 जून 1928 को अंग्रेजी सेना द्वारा की गयी घेराबंदी में भैरु सिंह वीरगति को प्राप्त हुआ। उदयपुरवाटी के शेखावतों को जब यह ज्ञात हुआ तो वे भड़क उठे। अंग्रेज सेना पर आकस्मिक आक्रमण कर उन्होंने स्वतंत्रता प्रेमी भैरूसिंह की मृत देह छीन ली और पूरे सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार किया।

नीचो गाँव गिरावड़ी, भाखर बहुत उत्तंग।
भैरू भारथ मांडियो, रंग लाड़ला रंग।।
बीकाणे भड़ सज्जिया दल बादल ले संग।
हेकड़मल हुंकारियो रंग लाडाणी रंग।।

बहुत कड़ा मुकाबला हुआ। मुट्ठीभर स्वतंत्रता सेनानियों ने बलजी-भूरजी के नेतृत्व में शत्रु सेना का सफाया कर डाला और अन्त में अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन करते हुए बलजी-भूरजी वीर गति को प्राप्त हुए।

अनेक कवियों ने इस युद्ध को अपने काव्य का विषय बनाया है। बलजी-भूरजी के शौर्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की-

हुय हल्ला तोपां हले गज टल्ला लग गाह।
बलजी थांनै उणवखत घणा रंग कछवाह।।
तूटे सिर, उठे तुरंत वीर वकार वकार।
कायर मन भय कंपवे रंग भूरा तिणवार।।
सिंधां थह सिंध ही हुवै, कुलवट तजे न कार।
क्यों करमां पोचा करे, दादो डूंग जवार।।
सात घड़ी सिर बिन जुध सझियों
सत्रुवां घर मचियों घण सोक
जेसराज सुत जोधा लेयगी वर,
अपसरा सुरलोक।।

बलजी-भूरजी जैसे स्वातंत्र्य प्रेमी शूरवीरों की बदौलत ही रणबंके राजस्थान के हर रजवाड़े में आजादी की ललक और चमक इसी तरह दमकती रही, चमकती रही, पुनर्जीवित होती रही-

म्हैं जाण्यो धवलो मुओ, सूनो हुयग्यो बग्ग।
बाड़ै उणीज बाछड़ा, फेर तड़ुक्कण लग्ग।।
जय जय राजस्थान!

रा.उ.मा.वि
जसोल(बाड़मेर)

कहानी

जग्गू

❑ जगदीश मिश्र

जग्गू एक गरीब घर का लड़का था। गाँव में रहता था। पिता का स्वर्गवास हो चुका था। माँ दयालु, धार्मिक महिला थी। जग्गू ने भाई की देख-रेख में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

अप्रैल का महीना, तेज धूप। जग्गू का बी. एड. का परीक्षा केन्द्र शहर में आया है। जग्गू पहली बार शहर में जाएगा। शहर में रुकने की कोई व्यवस्था नहीं है। इस बात को लेकर जग्गू एवं उसके भाई चिन्तित हैं।

उस समय गाँव में सभी खुले वातावरण में शौच करते थे। पक्के शौचालय केवल शहरों में होते थे। जग्गू ने कभी शौचालय देखा ही न था। शौचालय में शौच करना, जग्गू के वश की बात नहीं थी। शौचालय में मौसम बनता ही न था। जग्गू बार-बार शौचालय में जाता और बगैर शौच किए लौट आता था।

संध्या हो गई। जग्गू शौच के लिए सड़क पर आया। गाँव की तरह एकांत स्थान खोजने लगा। भीड़-भाड़ शहर में एकान्त जगह मिलना कठिन था। सहसा सड़क के किनारे एक ऐसा स्थान दिखाई दिया, जहाँ बिलायती आँकड़े उगे थे। जग्गू प्रसन्न हो गया।

जग्गू शौच के लिए आँकड़े की तरफ गया। वहाँ अँधेरा था। कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। जग्गू झटपट शौच के लिए तैयार हो गया। वह ज्यों ही बैठने लगा, एक आदमी ने उसके पुट्‌ठे पर जोर से मारा और कहा, साले! मेरे ऊपर करेगा क्या? जग्गू के होश उड़ गए। उसका शौच का मौसम गायब हो गया।

आज जग्गू का बी.एड. का प्रथम पेपर है। रातभर सो नहीं पाया है। वह परीक्षा केन्द्र देखा नहीं है। सुबह से चिन्ता लगी है। कैसे जाऊँ? कोई सहपाठी भी आस-पास नहीं रह रहा है।

जग्गू दूसरी मंजिल पर रह रहा है। कमरे में लाइट नहीं है। एक आदमी नीचे से कमरे में आता है। वह पूछता है 'प्रकाश है क्या?' जग्गू जवाब देता है 'नहीं'। थोड़ी देर बाद वह आदमी दुबारा आता है। पूछता है 'प्रकाश है क्या?' जग्गू कहता है 'नहीं'।

जग्गू के कमरे में ही एक आदमी सो रहा है। जग्गू को पता नहीं था कि इस आदमी का नाम क्या है? वह सोते हुए आदमी को जानता नहीं था। तीसरी बार वही आदमी फिर आया। वही सवाल किया, जवाब भी वही पहले जैसा। नीचे से कमरे में आया आदमी खाट के पास गया, चादर उठाया और कहा 'यह देख! यह है प्रकाश।' जग्गू लज्जित हो गया और वे दोनो हँसने लगे जग्गू प्रकाश का मतलब लाइट (बिजली) से समझता था।

दिन के बारह बज गए। जग्गू का मन लग नहीं रहा था। वह परीक्षा केन्द्र पर जाने कि लिए निकल पड़ा। लोगों से परीक्षा केन्द्र की दिशा मालूम की और उसी ओर चल पड़ा। बिल्कुल अनजान।

मध्य दोपहरी, तेज धूप और सूनसान सड़क। सड़क के किनारे खड़े पेड़ उसकी धूप से रक्षा कर रहे थे। जग्गू अपनी धुन में चला जा रहा था। धूप के कारण चेहरा लाल हो गया था।

एक आदमी उसके पास से निकला। दुबला-पतला। उम्र लगभग 65 वर्ष। चूड़ीदार पजामा और कुर्ता पहना था। दाढ़ी रखा था। वह बार-बार मुड़ कर जग्गू को देखता था। उसके बार-बार मुड़ कर देखने से जग्गू घबरा रहा था।

एकाएक वह आदमी साइकिल से उतर गया, खड़े होकर जग्गू का अपने पास आने का इंतजार करने लगा। जग्गू घबरा गया। फिर भी साहस करके यात्रा जारी रखी। थोड़ी देर में उस आदमी के पास पहुँच गया। आदमी ने पूछा 'बेटा! कहाँ जाना है?' जग्गू ने कॉलेज का नाम बताया। आदमी ने कहा 'बेटा! कॉलेज तो यहाँ से 7 मील दूर है। यहाँ से जाने का कोई साधन नहीं है। परीक्षा समय पर कैसे पहुँचोगे? बेटा! तुझे साइकिल पर बैठा कर कॉलेज तक पहुँचा देता, परन्तु मैं तीन दिन से रोटी नहीं खाया हूँ। मैं होटल में बना भोजन नहीं करता हूँ। मेरा रोजा चल रहा है। अगर तुम साइकिल चला सकते हो, तो मेरी साइकिल से चलो'।

जग्गू समझ गया कि जाति का मुसलमान है। आज दिन तक मुसलमनों के विषय में जो कुछ सुना था, वह सब उसे याद आने लगा।

कॉलेज दिखाई देने लगा। मुसलमान बाबा ने बताया कि बेटा वह कॉलेज है, जिसमें तुम्हे परीक्षा देनी है। यह है मेरा बगीचा। आओ, यहाँ थोड़ा आराम कर लो, पानी पी लो। अभी समय है।

परीक्षा शुरू होने में एक घंटा का समय था। जग्गू मुसलमान बाबा की बात ठुकरा नहीं पाया। वह बगीचे में गया। वहाँ कुर्सी पर बैठ गया।

मुसलमान बाबा के चार-पाँच नौकर थे, जो बगीचे की रखवाली करते थे। बाबा ने एक नौकर का नाम लेकर बुलाया और कहा,? 'बेटा, ब्राह्मण का लड़का है। चेहरे से अच्छे खानदान का मालूम होता है। जाकर बर्तन साफ कर लो। साफ बर्तन में पानी लाओ और हाँ एक साफ बाल्टी में पानी भर कर अच्छे, मीठे, पके हुए आम लाओ।'

नौकर आज्ञा पाते ही बाल्टी में पानी के साथ पके आम लाया। जग्गू ने बड़े चाव से आम चूसा। अपनी इच्छानुसार खुले में शौच गया।

मुसलमान बाबा जग्गू को साथ ले कर कॉलेज गए। प्राचार्य जी से निवेदन किए कि यदि परीक्षा समय में बच्चे को कोई परेशानी हो जावे तो मुझे तुरन्त सूचित करने की कृपा करना। जग्गू सब कुछ सुन रहा था। आज तक जो सुना था, वह सब अपने आप झूठ साबित हो रहा था।

परीक्षा का चौथा पेपर है। जग्गू आज सीधे परीक्षा देने चला गया। वह बाबा से नहीं मिला। बाबा जग्गू के न मिलने से परेशान हैं। उन्हें चिंता है 'जग्गू आज बगीचे में क्यों नहीं आया?' बाबा ने कॉलेज में अपना आदमी भेजा। आदमी ने प्राचार्य जी से मिलकर पता लगाया। जग्गू परीक्षा देने आया था। बाबा को यह जानकर खुशी हुई कि जग्गू परीक्षा दे रहा है।

परीक्षा समाप्त होने में अभी एक घंटा बाकी है। कॉलेज से एक चपड़ासी आते हुए दिखाई दिया। बाबा का दिल धक-धक करने लगा। हुआ वही, जिसकी शंका थी। चपड़ासी ने बाबा को बताया कि प्रिंसिपल साहब भेजे हैं।

जग्गू की तबियत खराब हो गई है। डॉक्टर को दिखाना जरुरी है।

बाबा ने लुंगी और बनियान में ही अपनी कार की स्टेरिंग संभाल ली। पलभर में डॉक्टर के पास पहँचे। डॉक्टर को लेकर प्राचार्य जी के कक्ष में उपस्थित हुए। प्राचार्य के कक्ष में जग्गू बेहोश पड़ा था। डॉक्टर ने दवा का इन्जेक्शन लगाया। थोड़ी देर में जग्गू को होश आ गया। प्रिंसिपल ने अपने ही कक्ष में बैठाकर शेष समय में परीक्षा ली। शेष समय वहाँ पर मुसलमान बाबा भी बैठे रहे थे। अब वे जग्गू के लिए 'बाबा' थे और जग्गू बाबा के लिए 'बेटा'।

न हिन्दु न मुसलमान हुआ करता है।
इंसान के रूप में भगवान हुआ करता है।।

से.नि. व्याख्याता
जय सियाराम कॉलोनी, दौसा
मो.न. 9414032993

सौदा

❐ सूर्य प्रकाश जीनगर

सत्य!
बिकता नहीं बाजार में
हाट पर तुलता है वह
एक मात्र
अन्तर्मन की तुला पर
जहाँ पाई-पाई का होता है हिसाब
सूद सहित
चाहिए चुकाने वाला....
ऐसा साहस!!
दृढ़ संकल्प भरी तुला में
रखे नेकनीयत रूपी
बाट के साथ
तौलते हुए
आता है, सामने
अपनी पूरी ताकत के साथ....
जीवन की हर नई
परीक्षा की घड़ी में
करेंगे सौदा....??

253-ए, हरि सदन,
इन्दिरा कॉलोनी, फलौदी
(जोधपुर)-342301
मो. 9413966175

एकांकी

जागृति

❐ भोगीलाल पाटीदार

पात्र-रघु, गोपाल, रामदीन, सविता, चंपा।

पहला दृश्य

गोपाल के घर शाम को रघु आता है।

रघु- गोपाल भाई! ओ गोपाल भाई।

गोपाल- (घर में से) अरे! रघु आओ। कैसे आना हुआ? खाट पर बैठो।

रघु- (खाट पर बैठकर) स्कूल वाले परेशान करते हैं।

गोपाल- क्या हुआ? ढाणी में स्कूल वाले क्यों परेशान करते हैं?

रघु- आप तो गाँव में रहते हो इसलिए बताए बिना कैसे जानो? मेरी लड़की के अभी सात वर्ष पूरे हुए हैं। स्कूल वाले कहते हैं, पढ़ने भेजो। आप उनको थोड़ा समझा दो। मैं गरीब हूँ। लड़की को पढ़ाने के लिए कहाँ से रुपये लाऊँ।

गोपाल- देख रघु सभी माता-पिता को अपने लड़के लड़की को आठवीं कक्षा तक पढ़ाना है। यह कानून बना दिया है। रुपये तो कहीं नहीं देने पड़ते हैं। पुस्तकें और दोपहर का भोजन भी मुफ्त मिलता है। लड़कियों ने पढ़ाई की है, तभी तो अपने गाँव की स्कूल में शिक्षिका है।

रघु- हमारी ढाणी में लड़कियों को कोई नहीं पढ़ाता है। घर पर काम कराते या फिर बड़ी हो तो गुजरात मजदूरी पर भेज देते हैं। लड़की पराये घर जाएगी।

गोपाल- तुझे शादी किए पाँच वर्ष बीत गए, लेकिन संतान सुख नहीं मिला। मंदिरों में जाकर मन्नतें मांगी। एक दिन मंदिर के पास तू मिला और बात कर रहा था। तभी झाड़ियों में कपड़े में लपेटी लड़की के रोने की आवाज सुनी। मैंने लाकर तुझे देकर कहा था, ये लक्ष्मी है। अपनी बेटी बना ले। मेरी बात मानकर तुम ने उसे रख ली। दो साल बाद तेरे लड़का हुआ। वह लड़की नहीं लक्ष्मी है। इसलिए उसका अच्छा लालन-पालन करो और पढ़ाई कराओ। लड़की दो परिवारों का उद्धार करती है।

रघु- (हाथ जोड़कर) आपकी बात सर आँखों पर लेकिन लड़कियों का पढ़ाना जोखिम वाला काम है। उनके प्रति बुरी बातें सुनकर दिल काँप जाता है।

गोपाल- बुरे काम के जिम्मेदार भी तो हम पुरुष हैं। एक लड़का होते ही ऑपरेशन करा देते हैं। लड़की को पेट में ही मार देते हैं। यदि जन्म लिया तो मरने हेतु झाड़ियों में रख देते हैं। कई जातियों में लड़कियों की कमी हो गई है। इसी तरह लड़कियों की कमी होती रही तो लड़के कुंवारे रहेंगे। सामाजिक ढाँचा चरमरा जाएगा।

रघु- आपकी बात सत्य है। अब मैं लड़की को पढ़ने भेजूंगा।
(रघु जाता है। परदा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

गोपाल टीवी पर क्रिकेट मैच देख रहा है। सविता आती है।

सविता- समाचार का समय हो गया है। समाचार लगाओ।

गोपाल- ये छक्का। बॉल दर्शकों के बीच गिरी।

सविता- (झुंझलाकर) मधु पढ़ती है उस शहर में कर्फ्यु लगा है। समाचार लगाओ।

गोपाल- (चौंककर)-अभी लगाता हूँ (समाचार आए कि महिला उत्पीड़न विरोध में महिलाएँ शान्तिपूर्ण प्रदर्शन कर रही थी। असामाजिक तत्वों ने आकर तोड़-फोड़ किया। हिंसा का रूप लेने से अशोक नगर इलाके में कर्फ्यु लगा दिया है। हालात काबू में हैं।

सविता- (चिंता करती हुई)- अपनी मधु उसी इलाके में रहती है।

गोपाल- वह तो हॉस्टल में रहती है। फोन करके पूछ ले।

सविता- (क्रोध कर)- उसके पास फोन कहाँ है। मैंने कहा था लेकिन आपने मना कर दिया। लड़कियों को मोबाइल की

जरुरत कहाँ पड़ती है? वे उसका दुरुपयोग करती हैं। हाय राम! मधु तो पहली बार शहर गई है।

गोपाल– (सोचकर)– चिन्ता मत कर। हॉस्टल वार्डन को फोन करता हूँ। (फोन किया तो वार्डन ने कहा 'सभी लड़कियां सुरक्षित हैं चिंता मत करना।')

सविता– मैं कहती हूँ कि उसको मोबाइल दे दो। कहीं मुसीबत में फँस जाए तो फोन तो कर सकती है। शहरी माहौल आए दिन खराब रहता है। डॉक्टर ने तो कहा था लड़की है। माँ भी चाहती थी लेकिन आप नहीं माने। आए दिन औरतों पर अत्याचार हो रहे हैं। लड़कियों के साथ दुराचार हो रहे हैं।

गोपाल– (सिर हिलाता हुआ)– तेरी बात सच है लेकिन बाद में लड़का हो तो गया। यदि कुख खराब हो जाती तो निःसन्तान रहना पड़ता। तुम्हारे अधिकांश व्रत गौरी माँ के हैं। माँ भी औरत का रूप है। फिर लड़के की इतनी अधिक चाहना क्यों? तुम तो महिला जागृति की सदस्य हो और विचारों में बदलाव नहीं।

सविता– लड़का बुढ़ापे का सहारा है। बेटे से ही समाज में महिला का सम्मान होता है।

गोपाल– बहुत कम बेटे बुढ़ापे की लाठी बनते हैं। अपने गाँव में रामजी काका की दशा तो देखी है। एक बेटा विदेश दूसरा बैंगलोर। पानी पिलाने वाला भी कोई नहीं था। दाह संस्कार भी बेटी ने किया। तुम अपनी माँ को बार–बार मिलने क्यों जाती हो?

सविता– माँ की याद आ जाती है।

गोपाल– (क्रोध करके)– अब समझी? माता–पिता के प्रति जितनी बेटी दया करती है, उतना बेटा नहीं करता। बेटा आग है बेटी बाग, बेटा संस्कार है तो बेटी संस्कृति। (सविता चुपचाप चली जाती है।)

(परदा गिरता है)

सुबह का समय गोपाल खाट पर बैठकर चाय पीता है। तभी रामदीन आता है।

रामदीन– राम राम! गोपाल भाई।

गोपाल– राम राम! आओ रामदीन। सुबह में कैसे आना हुआ? (खाट पर बैठाकर चाय लाकर देता है)

रामदीन– (चाय पीते हुए)– आप तो मेरी बेटी चंपा को जानते ही हैं।

गोपाल– हां! मेरी बेटी मधु ने बताया था। दो साल पहले उसकी शादी कराई थी। उसका गौना होने के पहले ही विधवा हो गई। किस्मत की बात है उसका कोई दोष नहीं है।

रामदीन– (चिन्तामय होकर)– मेरी बेटी ने अभी संसार भी नहीं देखा है। मुझे उसके जीवन की बहुत चिन्ता है।

गोपाल– (उसका हाथ पकड़ते हुए)– चिंता मत कर। चम्पा कहाँ तक पढ़ी लिखी है?

रामदीन– बारहवीं तक पढ़ी है। फिर उसकी शादी करवा दी थी।

गोपाल– कोई बात नहीं। बारहवीं तक पढ़े लिखों के लिए भी सरकारी नौकरियों में अच्छे अवसर हैं। विधवा कोटे से उसकी कहीं नौकरी लग जाएगी। जब रिक्त पदों की भर्ती हेतु आवेदन निकले तो भर देना। अभी चम्पा कहाँ है?

रामदीन– (उदास होते हुए)– उसके ससुराल वालों ने मारपीट कर घर से निकाल दी है। वह अभी मेरे पास थी। एक दिन उसके मामा आए तो उनके साथ शहर ले गए हैं।

गोपाल– ये तो अच्छी बात है। पढ़ी लिखी है तो नौकरी पर लगा देंगे। वह अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी।

रामदीन– (रूंआसा होकर)– यही बात बताने आया हूँ। उसकी नौकरी शिक्षिका में हो गई है। कल उसका फोन आया था। मुझे यह चिन्ता है कि अभी तो वह बीस बरस की है। वह अकेली जीवन कैसे कैसे बिताएगी? आजकल का वातावरण तो आप जानते हैं।

गोपाल– (समझाते हुए)– अब तो विधवा विवाह हो रहे हैं। चिंता मत कर। नौकरी वाली लड़की को अच्छा लड़का मिल जाएगा। चम्पा का घर मैं बंधवा दूंगा।

रामदीन– (उठकर)– यही आशा लेकर आया था। इतना काम कर दो तो मैं आपका जीवन भर आभारी रहूँगा। (जाता है।)

परदा गिरता है।

चौथा दृश्य

रामदीन के घर के सामने गाँव के लोगों की भीड़ है। शोरगुल सुनकर गोपाल भी आता है।

रामदीन– (रोता हुआ)– गोपाल भाई मैं कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहा। लोग कहते हैं कि चंपा के साथ बुरा व्यवहार हुआ है।

गोपाल– चंपा के साथ ऐसा नहीं हो सकता। पहले पूरा पता करते हैं।

रामदीन– (आँसू पोंछता हुआ)– ये गाँव के लोग कह रहे हैं। अखबार में नाम आया है। गाँव का नाम भी है।

गोपाल– अपने गाँव के नाम पर दूसरे गाँवों के भी नाम हैं। चंपा की तो नौकरी लग गई है। उसके साथ ऐसा नहीं हो सकता।

रघु– (बीच में)– आपकी बात का भरोसा कैसे करें? सारा गाँव बदनाम हुआ।

गोपाल– (शान्त करते हुए)– आपको गाँव की पड़ी है, चंपा और उसके बाप की नहीं। बुरा हुआ होता तो उसके पिताजी पर फोन आ जाता, इसलिए धैर्य रखो। फोन लगाकर पता करते है। (तभी चंपा आती है।)

चंपा– (गोपाल के चरण स्पर्शकर)– क्या बात है गोपाल काका। गाँव के लोग क्यों आये हैं?

गोपाल– इनका कहना है कि अखबार में समाचार छपा है कि तेरे साथ बुरा व्यवहार हुआ है। मैं मना कर रहा हूँ तो मेरी बात मानते नहीं हैं।

चंपा– (शान्त करके)– सुनो! गाँव के सभी सम्मानित सज्जन। यह बात जिसने सुनी वह अधूरी सुनी। लड़की का नाम चंपा नहीं चंदा है। चंदा के साथ ऐसा हुआ नहीं है। ऐसा प्रयास करने वाले बदमाशों को उसने अपनी सूझबूझ से पुलिस के हवाले कर दिया है। चंदा के साथ ऐसा वैसा कुछ भी नहीं हुआ है।

रघु- बेटी लड़कियों के असुरक्षा के बारे में सुनकर दिल दहल जाता है।

चंपा- काका आप बताओ। बेटा-बेटी में भेदभाव कौन करता है? समाज में पुरुषों का दबदबा है। बदनामी का दाग महिला को लगता है। मैं पढ़ती थी तो इसी गाँव के लड़के सीटी बजाकर भद्दी बातें सुनाते। विधवा हुई तो लड़के ही नहीं बड़े पुरुषों ने अश्लील हरकतें की। क्या किसी लड़की ने कोई हरकत की हो ऐसा कभी हुआ है? या सुना है?

रघु- कुछ बदमाश लोग अबला का जीवन बदनाम कर रहे हैं।

गोपाल- लड़की अबला नहीं सबला है तभी तो कष्ट सहन कर संतान को जन्म देती है लड़की का जन्म होते ही हम बंधन में बांध देते है। टीवी और फिल्मों में भी फूहड़पण के दृश्य परोस रहे हैं। लेकिन अब नारी में जागृति आ गई है। हर क्षेत्र में वह पुरुषों के समान काम कर रही हैं। अपने हक के लिए लड़ाई लड़ रही हैं।

रघु- नारी हित के कानून तो लागू हो रहे हैं, लेकिन पालन क्यों नहीं हो रहा है?

चंपा- कानून तो बना हुआ है लेकिन कानून अकेला क्या कर सकता है। अपराध रोकने के लिए समाज को भी सहयोग देना पड़ेगा। बच्चों को अच्छे संस्कार, नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देने से बहुत कुछ बदलाव आएगा। अच्छी शिक्षा से अच्छा समाज बनता है। पढ़ाई से ही मुझे शिक्षिका की नौकरी मिली है। गाँव का नाम बदनाम नहीं अपितु सम्मानित किया है। अब नारी जाग उठी है। वह पुरुष की अर्द्धांगिनी है। (थोड़ी देर लोगों में सन्नाटा छा गया। फिर बोले हाँ बेटी तुझ पर हमें नाज़ है। हम अपनी बेटियों को पढ़ाएंगे।)

रघु- (लोगों के सामने देखते हुए)- हाँ! चंपा बेटी जिस जागृति की बात कर रही है वह हम जरुर अपने समाज में लाएंगे। (परदा गिरता है।)

से.नि.प्रधानाचार्य,
किशनपुरा रोड, सीमलवाड़ा, डूंगरपुर-314403
मो. 9783371267

पिता

❒ विद्यानिधि त्रिवेदी

कर्म के दीपक आप
पिताजी हरदम रहे जलाते।
स्नेह के झिलमिल प्रकाश
में सदा रहे मुस्काते।।
बहुत ताकत सी होती है,
जब तुम साथ होते हो।
मेरे मन ताप के लिए,
स्मित बरसात होते हो।
मेरी राहों के प्रशस्तक बन,
कांटे रहे हटाते।
स्नेह के झिलमिल प्रकाश में
सदा रहे मुस्काते।।
कहीं बातों में चुप्पी तो,
चुप्पी में बात होते हो।
चलाते हल, लगाते बाड़,
हजारों हाथ होते हो।
तुम्हारी पर्वत सी बाहों में हम
नदियाँ-से इठलाते।
स्नेह के झिलमिल प्रकाश में
सदा रहे मुस्काते।।
आसमां से ऊँचा कौन?
यक्ष का उत्तर आप हैं।
कहीं आराधना के पल,
त्याग का जाप आप हैं।
स्वयं की खोज में खोकर
वो मुझको रहे पाते।
स्नेह के झिलमिल प्रकाश में
सदा रहे मुस्काते।।
धूप हो या छांव हो,
लक्ष्य उनसे ही फलते हैं।
दुर्गम कठिन रास्तों में,
दुआ बन साथ चलते हैं।
खुद को जला मेरी किस्मत में
रोशनी लिखना चाहते,
स्नेह के झिलमिल प्रकाश में
सदा रहे मुस्काते।।

68, प्रताप नगर,
मुरलीपुरा, जयपुर
मो. 9928133322

तो कोई बात बने

❒ सैयद अहमद शाह अली

नफरतों के चरागों को बुझाओ
तो कोई बात बने,
मुहब्बत के चरागों को जलाओ
तो कोई बात बने।।
अंधेरों में जो भटक रहे हैं,
उनको राह दिखाओं तो कोई बात बने।।
उजड़े हुए चमन को अब मत देखो,
उससे बेहतर नया बसाओ
तो कोई बात बने।।
यतीमों, गरीबों, बेवाओं के
अश्कों को पूंछकर,
उन्हें गले से लगाओ
तो कोई बात बने।।
शेखो, ब्राह्मण जातियों और
महजब की दीवारें हैं,
इन सरहदों को अब मिलाओ
तो कोई बात बने।।
सियासत ओ-दौलत का
नशा बहुत बुरा है यारों,
ऐ नादानों जरा होश में आओ
तो कोई बात बने।।
नफरतों की आग में खूब जलते हैं जहाँ में,
मुहब्बत की बरसात बरसाओ
तो कोई बात बने।।
दुःख दर्द से भरा है जमाना यारों,
तकलीफ में किसी के काम आओ
तो कोई बात बने।।
नफरतों के जहर से बेकुसूर मौत
के आगोश में चले जाते हैं,
मौत के काफिलों से बचाओ
तो कोई बात बने।।
मेरा वतन 'शाह' उस्ताद रहा है सदियों से,
इसकी शान और बढ़ाओ
तो कोई बात बने।।

से.नि.अध्यापक
गोपेश्वर बस्ती गंगाशहर
बीकानेर, 334401
मो. 9024931012

कविता

शिक्षक कर्म

❐ लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्णकली'

शिक्षण ही शिक्षक का
कर्म होना चाहिए
बालक गीत गुनगुनाए
भ्रमर की तरह
ऐसा आनन्ददायी
शिक्षण होना चाहिए।

शिक्षक को ज्ञान के भण्डार का
विषय के संसार का
नींव की आधार का
संप्रेषण के संचार का
सफल हथियार होना चाहिए।
शिक्षक को फ्रोबेल वाटसन होना चाहिए।।

शिक्षक ज्ञान ऐसा दे कि
उसके शिष्यों को
राजा के राम का
दयानन्द के सरस्वती का
ईश्वर के सागर का
विवेकानन्द के ओज का
अभिमान होना चाहिए।
शिक्षक को गाँधी, सुभाष होना चाहिए।।

संज्ञा को सर्वनाम का
संधि को समास का
विलोम को पर्याय का
अलंकार होना चाहिए।
शिक्षक को प्रेमचन्द, निराला होना चाहिए।।

बिन्दु को रेखा का
वृत्त को परिधि का
आयत को परिमाप का
ज्यामिती की सीमाओं का
संसार होना चाहिए।
शिक्षक को आर्यभट्ट रामानुजन होना चाहिए।।

टी से टेन्स का
एम से मॉडल का
एल से लेंग्वेंज का
फिंगर टिप्स पर ग्रामर का
कमांड होना चाहिए।
शिक्षक को शेक्सपियर जॉन मिल्टन होना चाहिए।।

वेदों के वैदिक ज्ञान का
कुरान के ईल्म ईमान का
बाइबिल के गुणज्ञान का
माँ भारती की महिमा का
बखान बारम्बार होना चाहिए।
शिक्षक को महावीर बुद्ध होना चाहिए।।

शिक्षक का शिक्षण प्रभावी
हो ऐसा कि
बीज के अंकुरण का
कोशिका श्वसन का
परमाणु की संरचना का
न्यूटन के नियमों का
दैनिक जीवन में सीधा
मेल होना चाहिए।
शिक्षक को चन्द्रशेखर बसु होना चाहिए।।

अक्ष के अक्षांश का
देश के देशान्तर का
कर्क रेखा के विस्तार का
महाद्वीपों महासागरों के फैलाव का
भौगोलिक अनुमान होना चाहिए।
शिक्षक को वेगनर कॉपेन होना चाहिए।।

संविधान की प्रस्तावना का
मूल अधिकार-कर्तव्य के संतुलन का
निर्वाचन प्रणाली का
केन्द्र राज्य संबंधों का
कानून आना चाहिए।
शिक्षक को अम्बेडकर, पटेल होना चाहिए।।

झाँसी की लक्ष्मीबाई का
शिवाजी की जीजाबाई का
कलकत्ता की मदर टेरेसा का
जवाहर की इन्दिरा का
शौर्य गान होना चाहिए।
शिक्षिका को मीरा माणिक होना चाहिए।।

शिक्षक प्रेरणा दे ऐसी कि
विद्यार्थियों के मन में
कन्या की भ्रूण हत्या का
समाज की बुराइयों का
साम्प्रदायिक तनाव का
विरोध होना चाहिए।
शिक्षक के मन में सर्व धर्म समभाव होना चाहिए।।

गुरु हो दूइशेन सा
डार्विन के संघर्ष सा
चाणक्य के संकल्प सा
'पहला अध्यापक' बनने का
सद्प्रयास होना चाहिए।
शिक्षक को द्रोणाचार्य रामदास होना चाहिए।।

गुरुदेव की रचना सा
महात्मा की अहिंसा सा
सर्वपल्ली के दर्शन सा
समावेश शिक्षण में होना चाहिए।
हर विद्यार्थी अर्जुन शिवाजी बने
ऐसा समर्पण भाव अध्यापन में होना चाहिए।।

शिक्षण ही शिक्षक का कर्म होना चाहिए
जिसमें चिंतन मनन का मर्म होना चाहिए।
ज्ञान की प्यास जगाए ऐसा अधिगम
रोज होना चाहिए।
शिक्षण ही शिक्षक का कर्म होना चाहिए।।

42/27, शिव कॉलोनी,
बदनपुरा मौहल्ला, चौमूं,
जयपुर-303702
मो. 9784132269

बात करते रहना

❒ बालकृष्ण शर्मा

अभी गुंजाइश है, दिल की मिट्‌टी नम है
स्नेह का अंकुर फूट सकता है
क्योंकि तुमने एक पहल की है
मैं भी एक ईमानदार पहल करूं
दिल को तर करने की
बशर्त है कि तुम कोई शर्त न रखो
एक दूसरे के अहंकार को टूटने दो
खण्ड खण्ड करने दो भ्रांतियों को
एक स्नेह का पादप पुष्पित व पल्लवित हो
पर हाय! किसी की बुरी नजर है तुम पर
दूर दृष्टि से देखता है ये एक न बन जाए
अदृश्य लकीरें हमारे बीच खींच दी गई
आज खण्डित कर दो उन्हें
पुनः मिल कर प्रयास करो आगे बढ़ो
परिणाम सुफल ही होगा
हर घर परिवार में अदृश्य अवली है
उसे तोड़ दो, प्यार भरी मीठी बात हो
चाहे मन झुकने को तैयार नहीं
पर तन को झुकाने का प्रयास तो करो
वक्त बदल जाएगा,
एक शांति की अनुभूति होगी
कई दिनों बाद बंजर धरती महक उठेगी
फिर कोई चाल चलेगा, तुम्हें अलग करने की
पर दृढ़ता से रहना, बात करते रहना
शक की कोई गुंजाइश न हो।

पूर्व जि.शि.अ.
'प्रकाश-दीप' शिक्षक कोलोनी
मु.पो. शाहपुरा (भीलवाड़ा) 311404
मो. 9414615821

माँ

❒ कृपानिधि त्रिवेदी

सब कुछ अपना देती आई,
फटे नेह पर की तुरपाई।
हर-एक को अपना कर भी,
सब से हुई पराई माँ।।

मौसम गर्म हुआ जब घर का,
माँ ने नाम लिया ईश्वर का।
प्रेम का पानी भर आँखों में,
बादल जैसी छाई माँ।।

बिगड़ी व्याकरण जब भी घर की,
अवलम्ब बनी दीवारों-दर की।
जहाँ विग्रह की बात हुई वहाँ,
संधि जैसी आई माँ।।

खुद को सब में बाँट दिया है,
जीवन अपना काट लिया है।
बच्चों को जब बटते देखा,
पीड़ा झेल न पाई माँ।।

बेटी जब थी हुई पराई,
नई बहु फिर घर में आई।
बेटे ने जब आँखें फेरी,
छिप-छिप कितना रोई माँ।।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. खोराश्यामदास (जयपुर)
मो. 9694083767

महाशिव रात्रि

❒ जीवाराम मेघवाल 'पूरण'

पाताल लोक को छोड़ आए, भोले शिव शंकर।
भू लोक में हुआ आलोक, प्रकट भये नर वर।।
महादेव के ताण्डव से, कम्पित नभ धर।
व्याकुल देव कुल, आकुल थल चर।।
द्यू लोक भी कम्पित सा, तरंगित रत्नाकर।
हुए शंभू विकराल, दिग्गज पछाड़कर।।
नागराज भी आधीन हुए, गरल तज कर।
भई प्रकट महाशिव रात्रि, दिवा अस्त कर।।

व्याख्याता
आदर्श रा.उ.मा.वि., मालवाड़ा, जालोर(राज.)
मो. 9461444618

समय

❒ देवेन्द्र पण्ड्या

समय
होता है रू-ब-रू आदमी से
और उसकी आदमीयत से
अनगिन तस्वीरों से,
उसके सभी पहलुओं से
वह साक्षी है
उन सभी का जो गुजरा है
वह सहज है और निर्पेक्ष भी
वह करता है आदमी को
आगाह और सावधान।
दिखाता है अपनी मार को
और करता है इशारा
तेज करने उसके
चाकू की धार को
कहता है समझले
प्यार के भार को
और जानले, बनाले
उसको आधार
टिका हुआ है जिस पर
उसका, सबका वजूद
वह पढ़ता नहीं
पर उसे पढ़ते हैं सब
खुलती हैं तब
एक के बाद एक
नई नई परतें।
इसने ही बनाया है इतिहास
जिसका कभी
नहीं होता परिहास
इसे पहचानें
और अपना बनाले
नई पीढ़ी
जिसको चढ़ना है
ऊँची सीढ़ी
जानना है उसे
समाज की हद
देश की सरहद
और आदमी का
...कद।

से.नि. प्रधानाचार्य
सिविल लाइन्स, गढ़ी
(बाँसवाड़ा)-327022
मो. 9413015905

कितना सुहाना

❒ गणपतसिंह 'मुग्धेश'

कितना सुहाना, यह भ्रमण है
मन मन का मन, बनता कण है।
पुलकित अपना, अंग अंग है
आनन्द भरा, हर इक क्षण है।

परिचय सुभग, प्रकृति का पाया
जितना पाया, थोड़ा लगता।
ईश्वर की, अद्‌भुत लीला का
ओर छोर, ना पाता थकता।

खड़े पर्वत, ऊँचे बहुत से
इच्छा छूने की, अम्बर को।
कलकल करती, बहती सरिता
ना रुकती, जाती सागर को।

ऊँचाई से, गिरते झरने
गिर कर भी, जग को सुख देते।
फैली झीलें, लम्बी चौड़ी
कृषि आशा, जन नावें खेते।

फल फूल विविध, जगत लुभाते
सब के नाम, न कोई जाने।
हरि की शोभा, यह हरियाली
भावत नयन, लगे मन गाने।

पशु पक्षी, जीव जन्तु इतने
देखत गिन गिन, भूलत जायें।
परम तेरी, कला महिमा का
कभी ना कोई, पार पाए।

दूर नज़र तक, फैले मैदां
लहलहाते, हरियाले खेत।
ओस कणों की, चादर ओढ़े
करते मुदित, उपजाते हेत।

विशालता का, धनी उदधि है
बड़ गहराई, विस्तार लिए।
लहरों का यह, उठना गिरना
जीवन का सारा, सार लिए।

कहीं बर्फ, कहीं कोहरे से
जमी ढकी, यह धरती माता।
कहीं घने वन, कहीं मरुस्थल
कहीं सून, कहीं भीड़ दाता।

बादल वर्षा, सज इन्द्रधनुष
सावन का प्रिय, सुखद नजारा।
ऋतु बसंत, फूलों का खिलना
दर्शन प्रकृति है, सुख हमारा।

कुदरत तेरा, पार न पाया
जीव-जगत की, अनुपम माया।
ना कलुषित कर, इसको मानव
इसके बिना, काल की छाया।

सेदरिया-ब्यावर (अजमेर)
पिन-305901
मो. 09460708360

माँ के स्वरूप

❒ मीता व्यास

स्त्री को मिलता है मातृत्व का वरदान,
शिशु को पहनाती है संस्कारों का परिधान।
हर कष्ट सहती है माँ अपने अंश के लिए,
अपने नवाकुंर को पोषण देती है जीवन जीने के लिए।
डाँट व दुलार से जीवन के रणक्षेत्र के लिए
बनाती है योद्धा,
जिससे वह जीवन के हर क्षेत्र में बने पुरोधा।
शिशु होता है खालिस कैनवास,
उस पर उकेरती है रंगों के कई आयाम।
स्नेह, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति,
अनगढ़ शिशु को बनाती है पूर्ण कृति।
मांझी बनकर खेती है उसके जीवन की नैया,
समझाती है उसे जीवन है एक भूल भूलैया।
संवारती है अपनी कृति का चरित्र,
तभी तो 'माँ' के रूप है बड़े विचित्र।

वरिष्ठ अध्यापक
पुत्री/श्री योगेशचन्द्र व्यास
गुजराती मौहल्ला, केकड़ी, अजमेर
मो. 9252189338

लो चलो दीपक...

❒ हिम्मतराज शर्मा

उठ रही भीषण तरंगें,
जलधि उद्वेलित हुआ है।
डूब जाएँगे? बचेंगे?
सोच, मन कम्पित हुआ है।
भयाकुल मन को चलो
विश्वास का तिनका थमा दें।
छा गया है तिमिर गहरा,
लो चलो दीपक जला दें।

ढल गया है आस का सूरज,
निराशा आ गई है।
वेदना अवसाद बन कर
संसृति पर छा गई है।
दुखों से आतप्त मन पर
स्नेह का चन्दन लगा दें।
छा गया है तिमिर गहरा,
लो चलो दीपक जला दें।

दिवस का उत्ताप ढल कर,
शान्त, शीतल हो गया है।
सकल कोलाहल सिमट कर
मौन हो कर सो गया है।
सज गए तारे गगन में,
नीड़ अपना भी सजा दें।
छा गया है तिमिर गहरा
लो चलो दीपक जला दें।

सो गए हैं धरा, अम्बर,
सो गई सारी दिशाएँ।
शान्त हो कर सो गई हैं
सिमट कर चंचल हवाएँ।
मधुर स्मृतियों को संजोकर,
गीत कोई गुनगुना दें।
छा गया है तिमिर गहरा
लो चलो दीपक जला दें।

सेवानिवृत प्रधानाचार्य
पंचवटी कॉलोनी, पेट्रोल पम्प के पास
सोजत रोड (पाली)
मो. 9929602057

कच्चा चूल्हा

❐ डॉ. दयाराम

लाल अंगारे
धुएँ से करते
आँख मिचोली
लकड़ी के चूल्हे में
जीवन-रस पकता?
कुछ रंधता है
कच्चे चूल्हे में।

सुख-दुःख के विविध पहलू
घर की दीवारों के मध्य
रिश्ता रखते हैं
चूल्हे के जलने बुझने में
लकड़ी का चूल्हा
जीवन का चूल्हा है
जिसमें रिश्तों के मीठे पकवान पकते हैं।

जंग छिड़ी है अब इसकी
नयी पीढ़ी के नये गैस-चूल्हे के साथ
जो अचानक जलता है
जल्दी-जल्दी उस पर सब पकता है
लेकिन उस पकने में कहीं न कहीं
कुछ बिखरता है
इस बिखराव को
कच्चा चूल्हा ही जीवन देता है।

जमाना बदल गया
फैशन की दुनिया है
जिसमें धुआँ सबको अखरता है
लेकिन इतना याद रखो
धुएँ से डरने वालों
धुआँ ही कच्चे को पक्का करता है।

जिस घर को पक्का करके
कच्चे को बाहर फेंकते हो
वही चूल्हा जहाँ जलता है
जीवन-रस वहीं पकता है
उसी के धुएँ से
युगों तक रिश्तों में गर्माहट रहती है
और जीवन का पहिया
रफ्ता-रफ्ता चलता है।

कच्चे चूल्हे के लाल अंगारों में
रोटी की सौंधी महक
महकती है
दुनिया की मौज मस्ती
सुखों का कोश वहीं मिलता हैं
कच्चा चूल्हा धुएँ के साथ
ठाठ से जहाँ जलता है।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि., गोलूवाला (हनुमानगढ़)
मो. 9462205441

दीपक

❐ हरिकृष्ण सहारण

अदना दीपक हूँ, माना छोटा है दायरा,
जिद है मेरी जद में, सदा रोशन रहूँगा।
ना मिल सके उजाला, यह अंधेरे में कहाँ दम,
खातिर अंधेरा जीतने, हर दम जलूँगा।
जब तलक साथ देगी, तेल से तर बाती,
तब तलक यह सिलसिला, कायम रखूँगा।
जलना सीखा है मैंने, तम रोशन करने को,
सामना कर मुश्किलों का, मैं इसी राह चलूँगा।
माना घना है अंधेरा, पर हौसला कम नहीं मेरा,
जद के आखरी जर्रे को, रोशन कर दम लूँगा।

प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक, विद्यालय बस्सी (नागौर) **मो. 9784406503**

पगडंडी

❐ दिनेश विजयवर्गीय

जंगल के झाड़-झंझाड़ के बीच से गुजरती है
गाँव को जाने वाली टेड़ी-मेढ़ी पगडंडी
वह लंबी दूरी को,
कम कदमों से जल्द पूरा करने के लिए
आज भी लोगों के दिलों में रची-बसी है
लोगों को जोड़े रखती है वह अपनी माटी से
उसे नहीं है चाह,
डामर और सीमेण्ट की सड़क की तरह
चिकनी व सपाट बनने की
वह तो खुश है जन-जन से
जिन के गतिशील कदमों ने उसका सृजन कर
उसकी उपयोगिता को लोकप्रिय पहचान दी।
वह आनन्दित होती है
स्कूल जाते बच्चों और
मेहनत-मजदूरी के लिए जाती
महिलाओं के उत्साही कदमों से,
वह खिलखिलाने लगती है
जब सर्दी की अलसाई धूप में
सरसों के मनभावन पीले खेतों के बीच से गुजरती है
वह लोगों को बचाती है
फोरलेन से गुजरने वाले वाहनों की
रफ्तार के कहर से
चिंघाड़ती आवाज और उड़ते धूलमाटी से।
वह तो लोगों को जोड़े रखती है
हरी-भरी प्रकृति और पर्यावरण से
सचमुच अपनेपन की मिठास से
जन-जन की यात्रा को
मंगलमय कर देती है पगडंडी।

215, मार्ग-4 रजतकॉलोनी
बून्दी-323001 (राज.)
मो. 9413128514

हे गुरुदेव नमन!

❒ डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा

आशीर्वाद आपका पाकर
धन्य हुआ जीवन,
हे गुरुदेव नमन!
सदा आपसे मिली प्रेरणा
जागी नई लगन
मार्ग सफलता देने वाले
खुलते गए कई।
नई शक्ति उभरी तन-मन में,
कैसे टिके दमन?
हे गुरुदेव नमन!
था अनगढ़ व्यक्तित्व हमारा
देकर उसे सहारा,
छीला और तराशा लेकिन
अच्छी तरह संवारा।
रौनक बढ़ी, खिली बगियासी
जीवन हुआ चमन,
हे गुरुदेव नमन!
आती रही हमारे आगे
पग-पग पर कठिनाई,
सीख आपने जो दी उससे
विजय सभी पर पाई
हुए उतार-चढ़ाव पराजित,
निखर गया चिंतन,
हे गुरुदेव नमन!
नए ज्ञान के स्वागत में हम
जागरूक-तत्पर हैं,
सम्बल है स्वाध्याय हमारा,
तभी आत्मनिर्भर हैं।
विषय सरल बन गया सहज ही
जो भी रहा गहन,
हे गुरुदेव नमन!
हे गुरुदेव! आपका अनुग्रह
हम पर बना रहे,
स्नेह हमारे लिए आपका
उर्वर बना रहे।
अभिनंदन गुरुदेव आपका
सादर अभिवादन,
हे गुरुदेव नमन!

सेवानिवृत्त प्राचार्य,
ग्राम-गिलूंड(राजसमन्द)-313207
मो. 8094461105

पौधारोपण

❒ जगदीश प्रसाद त्रिवेदी

अपनी ही पृथ्वी को बच्चों।
प्रदूषण से अवश्य बचाएँ।।
पौधारोपण कर धरती पर।
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ।।

पौधे ही जब पेड़ बनेंगे।
राहगीर को छाया देंगे।।
पुर-बस्ती के डगर सहारे।
पादप-पौधे हरे लगाएँ।।

उद्यानों में पुष्प खिलेंगे।
कंद, मूल, फल सदा फलेंगे।।
जड़ी-बूटियाँ औषधि बनकर।
तन-मन को नीरोग बनाएँ।।

भूमि-क्षरण को तरु रोकेंगे।
रेगिस्तान न बनने देंगे।।
वन-उपवन की प्रकृति निराली।
हरियाली में कदम बढ़ाएँ।।

अशुद्ध वायु को तरुवर लेंगे।
प्राण वायु फिर हमको देंगे।।
नगर-ग्राम की खुली धरा पर।
हम मौसम में पौध लगाएँ।।

बंजर को उपजाऊ करेंगे।
वृक्ष प्रदूषण दूर करेंगे।।
वर्षा को आकर्षित कर ये।
सुन्दर पर्यावरण बनाएँ।।

पूर्व प्राध्यापक
2 ख 17, दादाबाड़ी, कोटा-324009
फोन : 0744-2503486

बदरा

❒ किशन गोपाल व्यास

कड़ी धूप के कहर पर
बदरा की छटा छाने आ गई।
दिन गर्म दौड़ता चला, नीरस सा,
तो सांझ बदरा बरसने आ गई।
गमों के बीच खुशी की,
एक किरण सी नजर आ गई।
कड़ी धूप के कहर पर,
बदरा की छटा छाने आ गई।
तन्हा तपते पलों के साये में,
बजती शहनाई जैसे आ गई।
एक पल में खुशियाँ आकर,
सारे दुःखों को हटाने आ गई।
गमों से जले नीरस इन्सानों को,
रसिक जीवन जीना सिखा गई।
कड़ी धूप के कहर पर,
बदरा की छटा छाने आ गई।
कल तक जो छाई थी खामोशी,
शहर में, हुड़दंगी टोलियाँ आ गई।
तम की अन्धियारी रातों में,
चंचल बिजलियाँ चमकने आ गई।
चेहरे मुरझाये थे, हर आँख में सावन नम था,
इक क्षण में कृष्ण बदरा छा गई।
कड़ी धूप के कहर पर,
बदरा की छटा छाने आ गई।
था क्रूर ताण्डव सूर्य का धरा पर,
आशाओं के उजाले दिखा गई।
बिखरे थे सारे सपने सूखे पत्ते से,
इक बून्द बरखा की जिया गई।
आहट से भी डरता था दिल जिसके,
वो लू की आँधी तो ना आ गई।
आई जो बरखा धूप में,
जगा नये सपने, जीवन रंगीन बना गई।
कड़ी धूप के कहर पर,
बदरा की छटा छाने आ गई।
दिन गर्म दौड़ता चला, नीरस सा,
तो सांझ बदरा बरसने आ गई।
.....वो सांझ बदरा बरसने आ गई।

एफ-742, बाबा रामदेव जी मंदिर के पास,
मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राज.)
मो. 9414147499

पीपल की छाँव

❒ कमलेश कुमार नाहैलिया

पीपल की शीतल छाँव तले,
एक थकी हारी माँ,
पसीने से लथपथ,
सिर का बोझ रखकर,
नन्हे गोपाल को दुलारती,
ममता की धारा बहने लगती,
सच! पीपल खिल उठता,
छाँव सजीव हो उठती,
एक सुरीला स्वर-
धरा के रोम-रोम में समा जाता।
छाया घनीभूत हो नाच उठती।
पत्नी बाजरे की रोटी,
प्याज के टुकड़े परोसती,
ठण्डक चेहरे पर छा जाती,
धरती प्रेम से भीग जाती,
स्नेह का समन्दर-
हिलोरे मारने लगता,
सच, पीपल झूम उठता।
भटकते मुसाफिर थकान उतारते,
दर्द सुकून में बदल जाता,
मजदूर तलाशते पत्थरों में
एक भव्य देवता स्वरूप को।
अनगढ़ आकृति बन जाती देव,
और जीवन्त हो उठते पत्थर।
सच, पीपल स्वयं-
शिव बन ताण्डव करता।
बच्चे खिलखिलाकर,
हँसी को सार्थक करते,
बच्चियाँ गुड्डियाँ खेलकर,
उसमें जिन्दगी के मायने ढूँढ़ती,
दादा-दादी प्रभु स्मरण करते,
बड़े बुजुर्ग कहानियाँ सुनाते,
एक ठण्डी हवा का झौंका,
सबके दिलों को छू जाता।
लेकिन, अब नहीं रहा पीपल।
सज चुकी है,
अहंकार में डूबी,
एक आलीशान इमारत।
जहाँ दबी है रोटी की महक,
थकान का पसीना,
पत्थरों की टंकार,
किलकारियों की गूंज,
कहानी की कोमलता,
भक्ति की बजती वीणा,
दम तोड़ चुकी गुड्डियाँ,
और किस्सों में सिमट गया,
स्वयं पीपल।।

इन्द्रा कॉलोनी, नागौर रोड,
फलौदी-जोधपुर
मो. 9784644968

माँ

❒ नगेन्द्र कुमार मेहता

अजनबी दुनिया में
खोली थी जब पलके
बहुत डर लगता
होश संभालते हुए माँ।
ममतामयी हाथों का स्पर्श
एक सुकून देता
सुरक्षित महसूस करता
तुम्हारे आँचल में
मुँह छिपाकर सुन लेता
मीठी-मीठी लोरी
हौले-हौले थपथपी
मेरा घुटनों के बल चलना
खड़ा होना, दौड़ना
लट्टू फिराना, कंचे खेलना
पतंग उड़ाना, साईकल चलाना
पढ़ना-लिखना, होशियारी संभालना
कितना भाया था तुम्हे
परीक्षाओं में अव्वल आना
प्रतियोगिताओं में ईनाम जीतना
अच्छी नौकरी मिलने पर
प्रसाद बाँटकर तुम्ही ने दी दुहाई थी
हौसलों को उड़ान देकर
जीवन मीत मिलाकर फूली नहीं समाई थी
सशक्त मुझे बनाकर चली गई औचक
मायावी मर्त्यलोक से लेकिन
तुम्हारी मधुर स्मृतियाँ
कोमल अहसास, यथार्थ कल्पनाएँ
जिन्दा है मेरे जेहन में
जग को जन्नत बनाने के लिए।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि. पड़ासली
जिला-राजसमंद

प्यारी सी बिटिया ने

❒ रतन लाल जाट

प्यारी-सी बिटिया ने,
पढ़-लिखकर ऐसा नाम किया है।
पापा कहते हैं मुन्नी से,
बड़ा ही प्यारा काम किया है।
घर-आँगन में लौट आयी थी खुशियाँ
जब छपा था अखबार में नाम उसका
लायी है गुडिया मैरिट में स्थान पहला
आज पहली बार खुशी के आँसू आये हैं।
प्यारी-सी बिटिया ने,
पढ़-लिखकर ऐसा नाम किया है।
हर रोज सुबह जाती थी वो पढ़ने
बड़े का सम्मान करती तन-मन से
नित उठकर छूती है, चरण मम्मी-पापा के
हाथ जोड़कर वो ईश-वन्दना करती है।
प्यारी-सी बिटिया ने,
पढ़-लिखकर ऐसा नाम किया है।
माता-पिता और गुरु,
सब उसको है प्यारे
साहस उसका,
तोड़ दे नभ के तारे।
प्रेम उसका है सच्चा,
मानो धरती का अम्बर से।
प्यारी-सी बिटिया ने,
पढ़-लिखकर ऐसा नाम किया है।
फूल-सी कोमल उसकी काया
खुशबू की तरह शील समाया
शर्म के मारे वो,
धीरे-से अपनी बात कहे
जैसे कि हंस हो,
इस तरह वो चले।
मानो एक परी हो,
कोयल-सी वाणी बोले वो
रोशन करती घर-आँगन
जैसे कि एक चाँद है।
प्यारी-सी बिटिया ने,
पढ़-लिखकर ऐसा नाम किया है।
भैया उसको कहता,
अपनी प्यारी बहिना
मम्मी-पापा की आँखों का,
जैसे कि हैं एक तारा
सहचरी बनके साथ निभाएगी।
पतिव्रता वो बच्चों को नया पाठ पढ़ाएगी।
सबके साथ उसका,
दिल से एक रिश्ता है
प्यारी-सी बिटिया ने
पढ़-लिखकर ऐसा नाम किया है।
पापा कहते हैं मुन्नी ने,
बड़ा ही प्यारा काम किया है।

लाखो का खेड़ा, पो.-भट्टों
का बामनिया, तह.-कपासन
(चित्तौड़गढ़)-312202
मो. 9636961409

हिन्दी

❒ राजेन्द्र कुमार टेलर 'राही'

अपने वतन की आन है हिन्दी,
सबके लबों की शान है हिन्दी।
मीरा के प्यारे मनमोहन की,
मीठी मुरलिया तान है हिन्दी।
गागर में सागर भरती रहती,
क्या खूब वर्ण विधान है हिन्दी।
कबिरा के पद तुलसी चौपाई,
रस बरसाये रसखान है हिन्दी।
भारत मेरा खिलता गुलशन है,
हम बुलबुलें सहगान है हिन्दी।
गर्व मुझे है अपने भारत पर,
औं भारत का अभिमान है हिन्दी।
सारी दुनिया में परचम फहरे,
आज ये ही अरमान है हिन्दी।

प्रधानाचार्य, राआउमावि, रायपुर पाटन (सीकर), पिन-332718, **मो. 9680183886**

राष्ट्र की खातिर

❒ मोहन लाल जांगिड़

राष्ट्र नमन हो पहले पहले,
फिर नमन भगवान।
धर्म से पहले मानवता हो,
समता प्रेम सम्मान।
राष्ट्र की खातिर जीना,
राष्ट्र की खातिर मरना।
निज उन्नति से पहले सोचें,
सबके हित में करना।
अपना अपना काम करें सब,
पूरा ध्यान लगाकर।
मीनमेख दूजे की मतकर,
खुद की कमी भुलाकर।
समय कीमती मिला तुम्हें,
पल पल कर उपयोग।
बीत गया फिर न वापस,
करता रह तू उद्योग।
धरती माँ तो देती हर दम,
पानी हवा और अन्न।
राष्ट्र की समृद्धि इससे है,
सब सुरक्षित रहे प्रसन्न।
राष्ट्र की रक्षा करने खातिर,
तप करता है जवान।
किसान सब के खातिर खपता,
बोता है अनाज।
मजदूर बहुत ही पेट काट,
करता है नव निर्माण।
शिक्षक डॉक्टर इंजीनियर,
कर्म का चलाते बाण।
कुतर्क विवाद न शोभा देते,
बढ़ते इन से झगड़े।
भाई भाई में दूरी बढ़ती,
और बढ़ते जाते रगड़े।
बातों से ना पेट भरता,
तू नाहक मत उलझा।
मेहनतकश विवेकी बनकर,
'मोहन' सत्य समझा।

4-ई-238 जयनारायण व्यास नगर
बीकानेर-334003
मो. 9414147270

खुशी, विकास और समृद्धि

❒ पुष्पलता कश्यप

झोंपड़पट्टी में रहने वाले
हर हाल में खुश रहते हैं
विराट मध्यम वर्ग की खुशी में
हमेशा रंज की छाया होती है
हर गम में सदैव खुशी की सँभावना छुपी रहती है
इस वर्ग की दुविधा, विरोधाभास
और विसंगतियाँ हरदम कायम रहने वाली हैं।
कैंपाकोला के अमीर का दर्द तो दर्द है
और झोंपड़पट्टी का ढोंग
जब कि दोनों ही पक्ष अवैध जगह रह रहे हैं
गोया भारत में गुनाह और दंड
सभी वर्गों के लिए समान नहीं है
खेल तमाशे के आँसू व्यावसायिक आवयकता है
पर रिश्तों के नकली आँसू
सांस्कृतिक खोखलापन है
विदेशी शीतल पेय क्रिकेट और सिनेमा के लिए
सबसे बड़े प्रायोजक हैं
ये ऐसे मुर्गे हैं जो बाँग न दे तो
सत्य का सूर्य मानो उदय ही न हो
बाजार केंद्रित दुनिया मनुष्य को
भावविहीन बनाने में लगी रहती है परन्तु
सदियों का अनुभवी आम आदमी
उसे सँजोये रखता है
जीवन हमारे अपने अनुभवों का
जमा-तोड़ ही तो है
इस विकास और समृद्धि में रमे लोग
वहाँ पहुँच जाते हैं
जहाँ उन तक उनकी आवाज भी नहीं पहुँच पाती
लोकप्रिय परिभाषाएँ प्रायः
अँधी गली में ले जाती हैं
तमाम ऊँची बातों के चक्कर में
हमने आम जिंदगी से
उसकी सहज दार्शनिकता को ही
खारिज कर दिया है
सारे समझौते व्यावहारिकता के नाम पर
किये जाते हैं
दरअसल व्यावहारिकता वह टोपी है
जिसे दलबदलू पहनते हैं
वह ऐसा दरवेश नहीं है जो मोहब्बत की सराय
या सराय की मोहब्बत में गिरफ्त होकर
अपना सफर खत्म कर दे
अफसाने हकीकत से ज्यादा अहमियत रखते हैं।

पुष्पांजलि भवन, पुराने डाकघर के पीछे,
लक्ष्मीनगर, जोधपुर-342006
मो. 09460106401

तेरी जय हो भारतमाता

❒ शेरसिंह बाहरठ

तुझे शत-शत नमन मैं करता हूँ,
तेरी जय हो भारत माता।
तू जन्म भूमि भारत की है,
तेरे श्रद्धा से गुण गाता।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई हैं,
सचमुच तेरी ही सन्तान।
नहीं भेदभाव है किसी महजब का,
सब पूर्ण करते अपने अरमान।
यहाँ दिवस-निशा में सद्भावों
का सागर है लहराता।।1।।
भव्य भवन और तुंग गिरि,
सब पाते हैं तेरा ही सहारा।
नदियाँ सागर तुझ पर बहते हैं,
उनका अपना दिव्य नजारा।
सुरभि पाकर पुष्पों की
मन्द पवन अपना हर्ष दर्शाता।।2।।
शस्य श्यामला है तेरी भूमि,
नव अन्न धान उपजाती है।
है ममतामय धनी आँचल तेरा,
तू सबकी भूख मिटाती है।
तेरे पादप, पुष्पों की उच्च शिखा
पर बैठकर खग इठलाता।।3।।
माँ के गर्भ से जन्म लेकर,
हर शिशु किलकारी भरता है।
सब गतिविधियाँ निज जीवन की
तेरे सीने पर ही करता है।
मृत्यु पाकर हर मानव,
तेरी गोद में ही अवलम्ब पाता।।4।।
ज्वालामुखी पर्वत तेरे धरातल पर,
अपनी अनल उगलते हैं।
माँ आतंकवादी रक्त बहाकर
तेरा आँचल धूमिल करते हैं।
अनुपम है तेरी सहिष्णुता
मैं तेरे चरणों में शीश झुकाता।।5।।
तेरा मुकुट हिमालय अति सुन्दर है,
उसे कोई झुका नहीं पाएगा।
तेरी रक्षा करने हेतु,
हर सैनिक अपना लहू बहाएगा।
तू वीर प्रसविनी भूमि है,
इतिहास हमें बतलाता।।6।।

पूर्व व्याख्याता
'करणी कुंज' हरिओम कॉलोनी, सांभरलेक, जयपुर
मो. 9460501741

पतझड़

❐ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

चहक उठे सारे पक्षी
क्यों पतझड़ आया है?
नष्ट हो गए नीड़ हमारे
हरि की यह कैसी माया है?
पक्षियों की व्यथा सुन,
कोयल ने संगीत सुनाया है।
अज्ञानी क्यों बन रहे साथियों,
परिवर्तन ही प्रकृति की माया है।
अपने मधुर गीत से उसने,
सुख-दुःख को बताया जीवन के अंग।
जो सर्वदा चलते है, सृष्टि के संग।
जिसने इनको समझ कर,
अपने गले लगाया है।
समझो उसने अपना जीवन,
पूर्णतः सफल बनाया है।
देहावसान पर निर्वस्त्र होता मानव,
यह भी तो पतझड़ की एक निशानी है।
देह होती पंचतत्व में लीन,
जहाँ बहता पावन गंगा का पानी है।
पतझड़ जीवन का ध्रुव सत्य,
कोयल ने कही अपनी जुबानी।
तो सारे पक्षी समझ गए,
सृष्टि की सत्य कहानी।

वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.वि. जवासिया
पो.-गिलूण्ड, राजसमन्द
मो. 8003264828

अंधेरा मिटाता है तू

❐ डॉ. रेणुका व्यास

जीवन का अंधेरा मिटाता है तू,
गिरता हूँ सौ बार, तो सौ बार उठाता है तू।
जब मिटने लगती है हस्ती मेरी,
मुझे सहलाता, संवारता, बनाता है तू।।

हक के लिये लड़ना सिखाता है तू,
सच के लिये अड़ना सिखाता है तू।
जब खोने लगती है, जिंदगी की राहें सारी,
फिर से उठकर चलना सिखाता है तू।।

बहता दरिया है तू, अवरोध नहीं पहचानता,
उड़ता परिंदा है तू, कोई हद नहीं मानता।
तुझे देखकर हौंसलों को मिलते है पंख,
तू बाधाओं के बीच रुकना नहीं जानता।।

आग जलाती ही नहीं, तमस मिटाती भी है,
आग तपाती ही नहीं, राह दिखाती भी है।
समय-समय पर रूप बदलता है तू,
तेरी शह हस्ती मिटाती ही नहीं, बनाती भी है।।

तू जो रुख बदले, वक्त के धारे बदल जाते हैं,
तू जो नजर बदले, नजारे बदल जाते हैं।
तेरी रज़ा से ही जन्मते हैं शहंशाह,
तेरे चाहने से कौम के सितारे बदल जाते हैं।।

तू रहा रहनुमा तो मंजिल पा ही जाँगें,
तेरे पीछे रहे तो साहिल आ ही जाएँगे।
तेरे साथ खड़े हो सकने की औकात नहीं है मेरी,
तेरे पीछे चलकर हम दो जहाँन पा ही जाएँगे।।

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा. विद्यालय,
लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर
मो. 9414035688

युवाओं का हौसला

❐ सावित्री कुमारी

सुहानी नींद में उड़ता एक सपना,
सुनती हूँ मैं पुकारा हिन्दुस्तान ने।
मानो एक टूटा-सा,
हारा-सा,
हिन्दुस्तान कहने लगा-
हे वीर वतन के जवानो,
कहाँ गया वो हौसला,
जिसने,
असत्य, हिंसा और अधर्म को मारा।
गर्व होता मुझे अगर ऐसे ही,
आगे बढ़ता यह सिलसिला....
पर भ्रष्ट आचरण, भ्रष्टाचार में,
तू भी डूब चुका है।
तेरे अन्दर वो शक्ति है,
वो ताकत है,
वो हौसला है।
जो बदल सकता है,
इस देश के आचरण को।
अपने से शुरुआत कर।
अपनों के खिलाफ अपनों को खड़ा कर,
पहले खुद को बदल।
फिर देख हिन्दुस्तान की शक्ल।

पुत्री/श्री मोहनलाल कुमावत
मु. गुडाइन्द्रपुरा, पो. रोड़सा,
तह. आहोर (जालोर)-307030

सुन्दर अर्थ दो

❐ डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

बात कितनी योजना
प्रायोजना की हम करें
नित नये प्रयोग से
शिक्षा-जगत को हम भरें।
किंतु बालक मांगता कुछ और-
यह स्मरण रहे।
सुलभ शिक्षा हो सभी को
सरल स्रोत-सी बन बहे
भाषणों के दौर से
मिटती क्षुधा नहीं पेट की।

योजनाओं की अवधि में
रुकती गति नहीं उम्र की।
आज युवा मन त्रस्त है
कुंठा-गरल से ग्रस्त है
लगता ज्यों सूरज अस्त है
उठो सचेतक ओ अन्वेषक!

चाहते हो देश की पीढ़ी-
सदा चैतन्य हो।
स्वस्थ मन कर्मठ बने
गरिमामयी स्व-धन्य हो।
शिक्षा-दीक्षा कर्म की
चेतन-क्रिया समर्थ दो
जीवन क्रिया से जुड़ चले
'शिक्षा'-को सुंदर अर्थ दो।

22, ब्रज विहार पुलाँ
उदयपुर (राजस्थान)
मो. 09351549041

जीवण चितराम

भक्ति आकास रौ चमकतो सितारौ मीराँ

❒ उर्मिला नागर

इणं धरती माथै जितरा ई कृष्ण भक्त व्हैया, मीराँ वण में सर्वश्रेष्ठ है। वा आपरा प्रियतम रा विरह मांयै घणंकारी डुबियोड़ी रैवती। करूँणां री साक्षात् मूरत 'मीराँ', 'प्रेम पंथ'री ऐड़ी जोगणं ही, जिणं रै रोम-रोम माँयै हरबगत, कृष्णं भक्ति रा भाव रमियोड़ा रैवता। कृष्ण चन्दरमा है तो मीराँ चान्दणीं/कृष्ण सूरज है तो मीराँ किरण/वणं रौ ऐड़ौ समरपण भाव, सरावणं जोग है।

वा आपरा माता-पिता री अकेली सन्तान ही। वणं रौ जलम् आखा तीज रै दिन, मिहिर कुल माँयै होणैं रै कारण, 'मिहिरा' नाम राखियौ गयौ। बाद में 'मिहिरा' शब्द लोक भासा 'मीराँ' माँयै परिवर्तित व्हैयग्यौ। आ बात भी साँची हैकै, कोई भाई-बैण नीं होणैं रै कारण, वणं रौ अेकलो जीवन उकताय ग्यौ। सायद इणीं कारण मीराँ रौ झुकाव कृष्ण भक्ति कानि व्हैयौ। वणं रा पति री मिरतु रौ विवरण, रामदान लालस री पोथी' भीम-प्रकास- अर् दूजा ग्रंथा मांयै भी मिलै।

मीराँ सगुणोपासनां री 'माधुरी भक्ति' ने अपणांई/वणं री रचनावां माँयैं ओलवो/लीलावर्णन/ विरहवेदनां पीड़ा अर् प्रियतम रै आणैं री कलपणां मिलै। वा मरुधरां री पैली कवयित्री ही। नारी सुतन्तरता री पक्षधर होणैं रे कारण, नारी सुतन्तरता रौ अलख जगायौ। 'जहर रौ प्यालौ' पीवणौं वणं री, घणंकरी सहिष्णुता रौ उदाहरण है।

अपार आत्म बल री धणीं मीराँ, विश्व साहित्य मांयैं, मेवाड़ अर् नारी जाति रौ मान बढ़ायौ। वणं रौ सगळौ साहित्यं नारी जाति नैं, प्रेरणां देऊंण वालौ है। मीराँ रा संघर्ष-सील जीवण सूँ, आज री नारी जाति नैं प्रेरणां लेवणीं चाइजै। लोकं गीता मांयै एक वरग 'भक्ति विषयक' गीताँ रौ है। इण रौ दूजौ नाँव 'भजन' या 'हरजस' है। केई गीत भक्तां री कथावां सूँ मैल खाता है। मीरां रा भक्ति पद राजस्थानी/गुजराती अर् ब्रजभाषा मिश्रित है। कैणाँत है के जठै मीराँ रा पद गाया जावै, बठै मीराँ खुद आवै। वणं रा पद इमरत रा झरणां है/ दया-करुणां रा कुण्ड है। मीराँ खुद रा हिरदारी पीड़, खुद मेहसूस करती। वा भक्ति रूपी ज्ञान री गहराई रौ समंदर ही। कुड़की गाँव माँयैं जलमी थकी मीरां, राजस्थान अर भारत री ई नीं, पूरी दुनियाँ री, नीं भूलण जोग अभूत पूर्व थाती है। वणं रौ कोई पंथ नीं हो। जठैतांई वा जीवती रै ई, आपरी आत्मारा उद्धार तांई, भक्ति पदां रौ-'उजास' लुटावती। मीराँ जोधपुर संस्थापक राव जोधा जी री पड़पौती/मेड़ता नरेस राव दूदा जी री पौती अर् राव रतन सिंह जी री बेटी ही।

एक दिन विक्रमादित 'मीरा सूँ कह्यौ- 'तूँ कुँण सूँ बाताँ करै?' वा कह्यौ, गिरधर गोपाल सूँ। गिरधर गोपाल म्हारै सामीं क्यूँ नीं आवै? आ केय'र, वौ ज्यूँई कृष्ण री मूरत सामीं देखियौ तो, 'कृष्ण रा विकराल रूप सूँ डरतौ थकौ, पाछौ चलेयग्यौ।'

राव दूदा रा वंशज मेड़तिया राठौड़ कैवीजे। धीराँ-धीराँ मीराँ रौ व्यक्तित्व इतरौ विकसित होयग्यौ कै, केई सम्प्रदाय वणं सूँ सम्बन्ध जोड़णौं सरू करिया। वणं री वचना री एक लाईणं-'जोगियां बिन रह्यौं न जाय' रै कारण, मगरा गाँव रा जोगी, वणंनैं आपरा समुदाय री मानैं। जम्भौजी री वाणीं मांयै-'सोऽम् विष्णु' सबद मिळै। मीराँ रा पदां मांयै भी किणीं-किणीं जागां-'सोऽम् विष्णु' सबद आयौ है। इणं कारण जम्भौ जी सम्प्रदाय वाळा वणंनै, आपरा सम्प्रदाय री कैवे। मीराँ वृन्दावन माँयै केई पदां री रचना करी। बाद में द्वारका चलेयगी। द्वारका मांयै धीरां-धीरां वणं रौ मन रमणौं सरू व्हैयौ। उदयसिंह जी महाराणां बणंताई, 'मीराँ', नैं मेवाड़ लाणैं सारूँ रथभेजियौ। पणं मीरां, आणैंताई मना कर दियौ। अपणैं-आप नैं दुविधाजनक स्थिति माँयै देखनैं, भाव विह्वल व्हैय'र मीराँ 'सजन सुध ज्यूँ जाणैं त्यूँ लीजै' पद गायौ। वणीं टैम द्वारकाधीस री मूरत सूँ एक ज्यौत निकली। वणं 'ज्योत' मांयै वा आपरी 'ज्योत' मिळाय दी। वणं टैम मीराँ री चून्दड़ी रौ एक पल्लो बचग्यौ। बठै उपस्थित मिनख वणंनै जल्दी सूँ झपट लियौ। जो आज दिन ताँई दरसनार्थियाँ रै दरसणां सारूं रखियोड़ौ है। कैवणियाँ आ भी कैवे कै, जिणं दिन मीराँ कृष्ण रीं मूरत माँयै, ज्यौत सूँ ज्यौत मिलायी'-वणं दिन वा पूरौ सिणगार करियौ।

अध्यापिका
रा.उ.मा.वि. केसरपुरा
अजमेर (राज.)

जुगां तांई जीवैला दयालदास रा सबद

❐ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

राजस्थानी संस्कृति जित्ती सुरंगी है इणरो साहित्य बित्तो ई सांवठो। लगै-टगै अेक हजार बरस लाम्बी जातरा में राजस्थानी साहित्य में आपां मौलिक लेखन सागै बीजै विषयां माथै ई सांगोपांग रचाव देख सकां। जीयाजूण रा चूकता रंग अठै रै साहित्य में पूरी ओपमा सागै उतर्‌या है। इणरो जस बां लूंठा कलमकारां नै दिरीज सकै जकां सबद साधना में आपरी आखी उमर खपा दी। राजस्थानी डिंगल साहित्य में राजस्थानी समाज रा संस्कार, परम्परावां अर जूझ रो भरोसेमंद अंकन हुयो है। इतियास जैड़ा महताऊ विषय माथै ई राजस्थानी में मोकळो काम हुयो है। आ सामग्री गद्‌य और पद्‌य दोनूं रूपां मांय मिळे। गद्‌य में ख्यात, वात, विगत, पीढ़ी अर वंशावळी रै रूप में तो पद्‌य में रासौ, प्रकास, विलास, रूपक, वचनिका आद चरित्र नायकां रै नांव माथै का नीसाणी, झूलणा, वेल, झमाल, गीत, कवित्त, दूहा आद छन्दां रै नांव माथै इतियास री अंवेर करीजी है। छप्पय अर गीत आद फुटकर कवितावां रै रूप में ई राजस्थानी साहित्य में इतियास री साख भरीजी है।

इण रचाव में आपां वीर राजावां रै जस बखाण सकां तो जुद्धां रो आंख्यां देख्यो वरणन ई बांच सकां। इतियास री अैड़ी हजारूं महताऊ घटनावां इण साहित्य में सुरक्षित है जकी इतियासकारां री निजरां कोनी चढ़ी, का जाण'र टाळीजी।

इण दीठ सू विचार करां तो मध्यकाल रै इतियास नै पूरसल ढंग सूं जाणणै-समझण पेटै डिंगल साहित्य पूरक सामग्री है, जिणनै फिरोळयां बिना इण काळ रै इतियास रो ज्ञान अधूरो ई रैवेला।

बीकानेर राज्य रै कूबिया गांव में जलम्या दयालदास अेड़ा ई अेक तपसी साधक हा जका आपरी ख्यात री मारफत बीकानेर राज्य रै इतियास पेटै महताऊ काम कर'र मोटी कमी पूरी। दयालदास अेक लूंठा ख्यातकार तो हा ई, इणरै सागै अेक सुकवि अर साहित्य मर्मज्ञ हा। गद्‌य अर पद्‌य दोनूं रूपां में डेढ़ दर्जन सूं बेसी छपी-अणछपी पोथ्यां री ठाढ़ी विरासत बां रो जस बखाणै।

डिंगल री काव्य परम्परा में चारणी शैली रो साहित्य घणो महताऊ मानीजै। वीरता रै बखाण सागै चारणी शैली में सिणगार, भगति अर रीति परम्परा रो ओपतो मेळ दीसै। इण परम्परा नै पोखणियां घणखरा कवीसर चारण जाति रा हा पण इणरै सागै बीजी जातां रा लिखारा ई चारणी शैली नै अंगेज'र इण धारा नै आगै बधाई। दयालदास रो जलम कूबिया रै पिता खेतसी अर मा किसना रै घरै वि.सं. 1855 रै ओळ-दोळै हुयो। बै सिंढायच शाखा रा चारण हा, जका नरसिंह भांचळिया रा वंशज मानीजै। दयालदास रै भणाई-लिखाई, बालपणै आद बाबत कोई पुखता जाणकारी कोनी मिलै क्यूंकै प्राचीन अर मध्यकालीन लिखारां में 'खुदू-बिड़द' रो जाबक इ चाव कोनी हो। इणरै बावजूद इणमें दोराय कोनी कै दयालदास लूंठा विद्वान अर कर्मठ व्यक्ति हा। बां रै ख्यात-साहित्य में काम लिरीज्या संदर्भ इणरी साख भरै। दयालदास बीकानेर राज्य रै महाराजा सूरतसिंह (1787-1828 ई.) महाराजा रतनसिंह (1828-1851 ई.) महाराजा सरदारसिंह (1851-1872 ई.) अर महाराजा डूंगरसिंह (1872-1887 ई.) रै राज में आपरी साधना करी। महाराजा गंगासिंह जी रै बगत में 1891 ई. में तिराणवें बरसां री उमर में बां रो सुरगवास हुयो।

मायड़ भासा में ख्यात लेखण री अेक लूंठी परम्परा है। मुगल दरबार रै देखादेखी राजपुताणै राजावां ई आपरै कुळ रो इतियास लिखावण री तजबीज करी। राजकीय संरक्षण में लिखीजी आं ख्यातां में 'नैणसी री ख्यात' अर 'बांकीदास री ख्यात' घणी महताऊ मानीजै। दयालदास गद्‌य में तीन ख्यातां लिखी। 'राठौड़ां री ख्यात' बां री चावी रचना है जकी 'दयालदास री ख्यात' रै नांव सूं ई ओळखीजै। आ ख्यात दो भागां में है। इणरी रचना बीकानेर रा महाराज सरदार सिंह रै हुकम सूं करीजी। इण ख्यात रो रचनाकाल 1852 ई. मानीजै। अेल.पी. टैस्सीटोरी इण ख्यात नै साम्हीं ल्याया। इण ग्रंथ नै चारण बीठ लिपिबद्ध करयो।

।। श्री गणेशाय नमः श्री करनीजी सहाय श्री सरसत्ये नमः।। अथ ख्यात राठोड़ां री खुलासा याददास्ति श्री श्री 108 श्री श्री हजूर सा हुकम सूं सिंढायच दयालदास लिखाई बीठ चांवडै लिषि।। इण ग्रंथ रै पैलै भाग में राठौड़ां री उत्पति सूं लेय'र राव कल्याणमल अर दूजै भाग में राजा रामसिंह सूं महाराजा रतनसिंह तांई रो वर्णन मिलै। राठौड़ां री उत्पत्ति अर बीकानेर राज्य री थरपणा पेटै दयालदास महताऊ जाणकारी साम्हीं राखी। मारवाड़ी लिपि में लिख्योड़ो इण ख्यात में केई अैड़ी घटनावां अर सूचनावां दिरीजी है जकी कर्नल जेम्स टॉड समेत बीजा इतियासकारां सूं छानी रैयगी।

दयालदास री दूजी महताऊ रचना 'ख्यात देशदर्पण' मानीजै। इणरी रचना बीकानेर महाराज सरदारसिंघ रै बगत में वैद महता राव जसवंतसिंघ रै हुकम सूं करीजी। इण ग्रन्थ रो संपादित रूप राजस्थान राज्य अभिलेखागार सूं 1989 में छप चुक्यो है। इण ख्यात में राठौड़ां री उत्पत्ति सूं लेय'र महाराजा रतनसिंघ रै तांई बीकानेर राज्य रौ इतियास मांडीज्यो है। इणनै लिपिबद्ध करणै रो जस रिद्धकरण न दिरीजै। दयालदास नै 'दयालदास री ख्यात' लिख्यां पछै 'देशदर्पण' ग्रंथ लिखण री जरूरत क्यूं पड़ी? इण बाबत नांवी समालोचक डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा रो कैवणो है कै ''इण ग्रन्थ नै लिखणै रै लार अेक मोटी बात आय हुय सकै कै दयालदास अनेक बातां अर घटनावां रो उल्लेख आपरी ख्यात में नीं कर सक्या हा, उण रो उल्लेख इण ग्रंथ मांय करियो। पण इणरै अलावा कोई दूजा कारण इण ग्रंथ री रचना रा हेतु हुय सकै।'' इण ग्रंथ में 'बीकानेर रै पट्टा रै गांवां री विगत' घणी महताऊ है, जिणमें अधिराजियै महाजन समेत खांपवार अर पुण्यार्थ कामां सारू रियोड़ा गांवां री सूची शामिल है। ओ ग्रन्थ सामंती राज व्यवस्था री रीत-नीत माथै सांगोपांग उजास न्हाखै।

बीकानेर महाराजा डूंगरसिंह रै हुकम सूं रचीजै दयालदास रै तीजै ग्रंथ 'आर्याख्यान कल्पद्रुम' रो रचनाकाल 1934 वि.सं. हो। इण ग्रंथ में दयालदास समूची भारत भौम रो इतियास लिखणै रो बीड़ो उठायो। ग्रंथ रै सरू में दिरीजी सूचना मुजब इण ग्रंथ नै तीन भागां में लिखणै री योजना ही, पण बा पूरी कोनी हुई। इण ग्रंथ में राठौड़ा री वंशावली, जैचन्द सूं लेय'र मारवाड़ महाराजा विजयसिंघ अर बीका सूं सरदारसिंघ तांई रो इतियास बांचण नै मिलै। इण ग्रंथ में पैलां

लिख्योड़ा दोनूं ग्रंथा सूं खासा सामग्री रो दुरसाव है तो केई नवी बातां ई है।

'पंवार वंश दर्पण' अर 'पंवार वंशावली' पद्य में लिख्योड़ो इतियास है जिणरी रचना नारसरे ठाकुर अजीतसिंघ रै हुकम सूं करीजी। आं रो रचनाकाल वि.सं. 1921 मानीजै। दूहा अर कवित्त में लिखीज्यै 'पंवार वंश दर्पण' रो 'पंवार वंशावली' में भावानुवाद कर्‌यो गयो अर कीं नवा अंश ई है। आं ग्रंथा में पंवार वश री उत्पत्ति वंशावली अर बां रै पट्टां रा गांवां रो वर्णन है।

दयालदास अेक लूंठा ख्यातकार रै सागै कवि सिद्ध कवि ई हा। आशु कवि रै रूप में बां री घणी ख्याति ही। बां री कविता री बानगी जोवो–

''करण प्रथी इक राह, पतसाह आरंभ करै
कूत कर हलै दरकूंच काबा।
अटक असुराण रा कटक सब ऊतरै
रहै नत वार हिंदवांण राजा।।1।।
वंस षटतीश मिळ बात यह विचारी,
जो र ओरंग पड़ सोर जाडौ।
सूर रो सूर केवांण भुज साहीयां
आभ पड़ंता हुवौ भूप आडौ।।2।।
कुहाड़ा मार जिहाज बटका करै,
ओर सारां घरे मोट धोको।
करां षंग तोल मुख बोल कहोयो करन,
जितै ऊभौ इतै नहीं जोषो।।3।।
करन वषांण दुनियांण धिन धिन कहै,
धरम षत्रियांण भुज हिंदवाण आयौ उरड़
मुरड़ पतसाह बीकांण मारू।।4।।

दयालदास कविता रा गुण वाहक अर रसिक पाठक ई हा। बां आपरी ख्यात में दुरसा आढा समेत बीजा कवियां रै गीतां–दूहा आद रो उपयोग ई कर्‌यो है। दयालदास री अप्रकाशित पद्य पोथ्यां में 'जस रत्नाकर, अजस इक्कीसी, सुजस बावनी, वैर हिन्दूमल रा गीत, दूहा श्री हजूर साहिबां रा, कूरम सरण राख्या जिण मुद्दे रा दोहा, दोहा जोधपुर रा धणी राजा तख्तसिंघ जी रा हरजस, राव राजा बनेसिंघ जी रा कवित्त, नवरतनां रा नव कवितां री टीका अर श्री करणी चरित्र रो उल्लेख कर्‌यो जावै। आं ग्रंथां में दयालदास रो सबळो कवि रूप जोयो जा सकै। आं ग्रंथा रै प्रकाशन अर शोध री मारफत ई बां रै कवि कौशल रो सांचो मूल्यांकन हुय सकैला।

दयालदास कविराजा री उपाधि हासल करी। इण री साख भरतो अेक मनरूप मोतीसर बणायो। ठाकुर मुकनसिंघ राठौड़ इण गीत रो उल्लेख करयो है–

''लगी झूल जरतार हाथ्यां कुंनण झालरी,
तांन सिणगार तोखार ताजा।
तवां वणि भोर दातार दयाला तनै,
रीझ भुज पूज सिरदार राजा।।''
''जबर समाज साजां सझे जलेबां,
वाज कोतल भड़ां लेर बहियो
विद्यासिंध राज खैतलतणा वैखतां,
कमधजां धीख कविराज कहियो।''

दयालदास रै रचना संसार नै जद कूंत ताकड़ो तोलां तो आपां न लखावै कै बांरी ख्यात में बीका राठौड़ा रो बिड़द बखाण बेसी है अर इण कारण कई कारण कई ठौड़ अेतिहासिक तथ्यां सागै छेड़छाड़ ई हुई है। बांरी रचनावां में शासक वर्ग री कहाणी है पण आम जन रै हरख–दुख रो पड़बिम्ब कोनी दीसै। पण अै कमियां फगत दयालदास री कोनी, आखै दरबारी साहित्य री है। डॉ. घनश्याम देवड़ा रै सबदां में कैवां तो 'दयालदास तो अपने युग की देन था। अपनी सीमाओं के बार वह कभी नहीं निकला तो उसने इस प्रकार का दावा भी प्रस्तुत नहीं किया। अतः उसके कार्यों का सही मूल्यांकन उसकी निष्ठा, उसके वातावरण व उसकी सीमाओं के अन्तर्गत ही होना चाहिए।

कैवण री दरकार कोनी कै दयालदास राजस्थानी साहित्य नै सिमरध बणावणै पेटै जस जोग काम करयो है। बां बापरी ख्यात अर बीजी रचनावां सारू उपलब्ध जूनी सामग्री नै सोध'र उणरो सांतरो उपयोग कर्‌यो। राजस्थान रै राठौड़ां रै। इतियास खासकर बीकानेर राज्य रै इतियास नै जाणणै–समझणै सारू दयालदास रो साहित्य अेक भरोसेमंद दस्तावेज है। अेक लूंठै ख्यातकार अर सुकवि रै रूप में बांरो जस अखूट है। बां आपरी सबद साधनां सूं आपरै कुळ अर मांयड़ भौम रो मान बधायो। दयालदास रै समग्र साहित्य रै अकठ प्रकाशन री दरकार अवस लिखावै जिणसूं शोधार्थियां अर पाठकां नै सुभोतो हुवै। इण काम सूं बां रै काम री खरी कूंत हुय सकैला बठै ई इतियास रा नवा पानां ई साम्हीं आवैला।

144, लढ़ा निवास, महाजन
(बीकानेर)–334604
मो. 9982502969

माया रूंखां री

❒ जगदीश सिंह राव 'विश्वास लोक'

माया रूंखां री ओऽऽ माया रूंखां री
मानख रूंखां नै मत काटो
पड़सी काळ आकरो ठाढ़ो
होसी जीव-जगत नै घाटो
माया रूंखां री ओऽऽ.....

लटकी रूंखां पर तलवार
थोड़ो! कर मानख विचार
रूंख जीवण रो आधार
माया रूंखां री ओऽऽ.....

रूंख धरती री है छाया
जंगळ-जीव मोकळी माया
सगळी दुनिया रा है सांया
माया रूंखा री ओऽऽ....

जद चौमासो आ जावै
सबनै रूंख रोपणो चावै
ओ तो पुन धनभागी पावै
माया रूंखा री ओऽऽ....

जाम्भोजी रो हो ओ कहणो
चाहे सिर भी साटे देणो
हर्‌यो रूंख कदै नी कटणो
माया रूंखा री ओऽऽ....

रूंखां में देवां रो वासो
इणमें जड़ी-बूटी रो तासो-तासीर
तो भी मानख प्राण रो प्यासो
माया रूंखा री ओऽऽ....

रूंख बड़ा ही त्यागी
मानो आनै सांचा योगी
अे तो जीवनदाता जोगी
माया रूंखा री ओऽऽ....

चंगेड़ी रोड–फतहनगर
उदयपुर
पिन– 313205

रू-ब-रू

❒ नरसिंह सोढ़ा

भणाई-गुणाई रै बिना मिनख सींग अर पूंछ बारो डांगर मानीजै। इलम ई ज मिनख मांय सूतोडे राम नै जगावै अर जाग्योड़े रावण रौ नास करै। चेतीज्योड़ो मिनखचारो सिखसा सूं इ मुखर हुवै। जिण री अभिव्यक्ति रौ साहित रै रूप मांय सरजण हुवै। साहित उण देश, काळ, हालात अर परिस्थिति रौ दरपण हुया करै है। इण माथै आ चिरजा जगचावी है कै जिण देस रौ साहित जितरौ उजळो हुवै। वो देस उणीं 'ज भांत मान मरजाद अर संस्कृति सूं सिरमौर अर सवायौ होया करै। बी रै खजाने मांय अकूंत संस्कारां री हेमाणी अर ऊंचा आदरसां रौ इतिहास सौरम दिया करै है।

घणकरा इतियासकारां रा विचार रैया है कै किणी देश, सभ्यता, समाज, संस्कृति नै मिटावणी हुवै तो सै सूं सोरो काम है उण रा साहित नै जळा दियौ जावै। अर आण वाली पीढ़ी नै तोड़ मरोड़ अर इतियास पढ़ायौ जावै तो बै सभ्यता बिना खूनी गदर रै आपो-आप मिट जावैला।

इतरो घण महताऊ विषय साहित नै आज रै बखत मांय पढ़णौ, पढ़ावणौ, अर सरजण करणौ नीरस सौ होय ग्यो है। समाज कानि सूं किणी भांत नूवी पीढ़ी सारूं कोई सद साहित पढ़ण खातर नी दियो जा रैयौ है। आज देश रो मोट्यार डाक्टर, इंजीनियर, बणणै रै बतोळियै मांय चकरघिन्नी बणयौड़ो है जद पछै देश री संस्कृति नै बचावण री समाज मांय ऊंचा आदरसा नै घसणा वीणै री जिमेवारी आखिर किण री रह जावैला। इण सवाल रौ पडूतर छेवट तो ढूंढ़णो इ पड़ैला। जूनो भारत रो साहित संस्कृति, इतियास, अध्यात्म, धर्म, राजनीति, रै सागै-सागै मिनखाचारै रै मूल्यां रो सागर अर कीरत रै कमठाणां रौ हेमाळो रैयौ है भारत रै साहित मायं राजस्थानी (डिंगल-पिंगल) भासा रौ साहित आखी दुनिया मायं आपरी अलग ही मठोठ राखै है।

राजस्थानी साहित रौ पठण-पाठण अर उण नै स्कूलां अर कालेजां रै पाठ्यक्रम मांय स्थाण देवणै री महताऊ जरूरत है जिण सूं भारत रौ भविस तरुण वरग आपरी जगचावी सुरंगी संस्कृति सूं रू ब रू हो सकेला।

राजस्थानी भासा रौ साहित घणनामी विसेसतावां, बोहळी विधावां, रुड़ा रसां-रागां, भगती, नीति आद जीवण रा मूल्यां सूं झिलमिळतौ झळूका देती जिण रै ओजस मांय को ई पण बिना चमक्यौ नीं रह सकै। इण भातं रौ राजस्थानी साहित अपारां दिल अर दिमाग मांय सकारातमक सोच रौ संचार करै। मोट्यारां मांय राष्ट्रीय अेकता अर अखण्डता रा भाव भरै। समाज रै सगळा वरगां मांय समरसता रो सरगम सजावै। इण खातर आगळ आवेळ दाखळां नै जाण आपां अेक पण डग चालग्या तो समझयौ जावैला कै हकीकत मायं आपां आपां री मायड़ संस्कृति सूं रू ब रू हो ग्या। राजस्थानी साहित रै काव्यं मायं सद्‌गुणां नै सरावण खातर कवेसरा आपरी कलम री कारीगरी रा कमठाण थरपीया जिण री थोड़ी स क झलक इण संकलन रै मुजब है। जिका मायड़ भासा रै साहित सूं रू ब रू करावण जोग हो सकेला।

धरम

पहेलो नाम परमेसर रो जिण जग मंडयो जोय।
नर मूरख समझे नहीं हरि करे सो होय।।
गो कोटि दानं गृहणे च कासि,
मकरे प्रयागे तू कल्प वासी।
यग्ये च मेरु सम हेम दानं तो हि
न तुल्यं गोविन्द नाम समानम।।

भगति

राम नाम रटता रहो आठो पोअर अखण्ड।
समरण सम सोढ़ा नहीं नर देखो नवखण्ड।।
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर पर मोर मुकुट है मेरे पति सोई।।

मायड़ भौम भगति

इला न देणी आपणी हालरिये हुलराय।
पूत सिखावै पालणै मरण बड़ाई माय।।
पाळयौ हेली पूत नूं सोमल थण लिपटाय।
अचरज अतरे जीवियो क्यों न मरे अब जाय।।

नेकी

बात साची भली पोथी बाची भली।
देह साजी भली बहू लाजी भली।।
जोबन जोड़ी भली कच्छी घोड़ी भली।
मौत मोड़ी भली मंसा थोड़ी भली।।

सगुन

श्वास कान फड़ फड़ करै अथवा बैठो खाट।
असौ देखन चालिये आगे करे उचाट।।
नीम्बोळी सूखे नीम्ब पर पड़ै न नीचै आय।
अन्न न नीपजै अेक कण काळ पड़ैगो आय।।

अध्यात्म

नारायण हूँ तुझ नमू इण कारण हरि आज।
जिण दिन आ जग छडणौ तिण दिन तो सूं काज।।
हंस माअला मूढ़ रै कर हरि सें विसराम।
मर मर पर घर फिर मती उर धर गिरधर नाम।।

प्रकृति

सीयाळै खाटू भली ऊनाळै अजमेर।
नागाणौ नित रौ भलो सावण बीकानेर।।
सांळ बखाणै सिघड़ी मूंग मण्डोवर देस।
झींणो कपड़ो मालबै माडू मुरधर देस।।

लोकाचार

भोजाई रो बोल खोटो रिपिया रौ कौल खोटो
वाणियै रो आसो खोटो जेल रो वासो खोटो
मौसर री रीत भूंडी दासी सूं प्रीत भूंडी।
पाड़ोसी सूं राड़ भूंडी कांटा बाड़ भूंडी।।

संत मीमांसा

साहन कूं तो भव घणा, सहजो निरभय रंक।
कुंजर के पग बेड़ियां, चींटी फिरै निसंक।।
सतगुरु मेरा सूरमा, करै सबद की चोट।
मारे गोला प्रेम का ढहे भ्रम का कोट।।

प्रेम

जइ तू ढोला ना आवियो काजळिया री तीज।
चमक भरेली मारवी देख खिवंता बीज।।
उनमी आई बादळी ढोलो आयो चित।
यो बरसई रितु आपणी नैण हमारे नित।।

वीरता

ग्रीझणीं दियै दड़वड़ी सबळी चपै सीस।
पंख झपेटां पीऊ सूवै हूं बलिहारी थईस।।
केहरि केस भमंग मणि सरणाई सूहड़ां।
सति पयोहर कृपण धन पड़सी हाथ मूंआं।।

इण भातं मायड़ भासा री सहज अर सरल सैली ठेठ अदने आदमी नै पण घण महताऊ परसंगा नै हियै लगावण री खमता राखै। राजस्थानी रा बोल-सबद सांगोपांग काळजै मायं काट करै, हिवड़ै मांय हेला मारै अर मन मस्तिष्क नै मन्तर देवै। जिण मांय किणी भातं री टीका टिप्पणी री जरुत नी पड़ै। गूढ़ सूं गूढ़ मरम नै समझण खातर फेर सूं किणी भातं री खेंचल नी करणी पड़ै। इण कारण राजस्थानी साहित री वरतमान मांय घणी महता दीसै। जिण सूं मोट्यार साहित अध्ययन कर आपो आप सद्‌गुणां सूं रू ब रू हो सकेला।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. बज्जू (बीकानेर)
मो.: 9799634344

अेकांकी

मायड़ भोम महान्

❒ आशुतोष 'आशु'

थार धरती री नेहड़ नगरी सिवाणा– इतिहास री ख्यातां में गढ़ सिवाणा नाम सूं जाणीजे। सूरापो अर मायड़ भोमरी रूखाली इणरी शक्ति अर भक्ति दोन्यूं रैया। छप्पनरां भांखरां में ऊभी दुरगादासरी प्रोल इणरी हामल–भरै अर गढ़ सिवाणा रौ कुमठाणो किलौ इणरी साख। मुगल बादशाह अकबर री वार राव कल्ला रायमलोत अठा रा शासक रया। सूरापो अर मायड़ भोम री काण इण एकांकी रौ कथा विषय।

पात्र

कल्ला राय मलोत– गढ़ सिवाणा रा शासक, हाड़ी राणी–कल्ला री जोड़ायत अर साथण्याँ केई ठिकांणा रा ठाकर–सिरदार मुगल सेनापति अर सैनिक, इन्द्र लोक री अप्सरावां–तिलोत्तमा, उर्वशी, मेनका, देवर्षि नारद।, यमराज, चित्रगुप्त ढाढ़ी अर हाजरिया।

पहलो दरसाव

(सिवाणा रा कुमठाणा किला में कल्ला राय मलोत रौ दरबार लाग्योड़ो। नैड़ी अलगी भांय रा सामन्त सिरदार कसूंबल री हथई में वात वंतल करै– राज ढोली राग मांडल में विरद गावतो दीसै अर वात वंतल सुणीजे)

कल्ला रायमलोत– तो हुवण दयौ हथाई सिरदारों आज कांई नुंवी बात सुणीजी।

गूंगरोट ठाकुर– घणी खम्मा राव कल्ला! आपणोगढ़ सिवाणा अलगी भांय सूं हाथी रै उनमान लागै।

देवन्दी ठाकुर–सांची बात है राव कल्ला सूरापो अर मेला खेला इण धरती गुटकी में पायोड़ा। आज इ तिलवाड़ा रै मेलै राजधजा आपणी ई थरपीज ती आयी है।

मवड़ी ठाकुर– घणा रंग राव चंद्रसेण नै जिणां एक साकै में सिरोही किलारौ दरवाजो आपणी गढ़ प्रोल में लाय जड़यौ।

पीपलूंद ठाकुर– हाँ, हाँ राव कल्ला! आ किण सूं अणजाणी के राणी रूपांदे अर मल्लीनाथ जी री माला रै परचा पांण ई लूणी री वेकलू में गंगा सांगलै।

धूमड़ा सिरदार– मुहता नैणसी अर पद्मनाभ री ख्यातां तो जग चावी। मूंछा री मरोड़ पाण ई मायड़ भोम री इदकाई गीतां–

गाईजे– गा भाईड़ा गा।

(ढोली विरद उगेरे)

(अचाणचक रंग में भंग हुवै– एक सैनिक दोड़तो समचो आवै।)

सैनिक– गुनौ माफ सरदारां! अजोगती कैवण हाजर हुयो हूँ।

राव कल्ला– अजेज बोल बावळा–इसी काँई अबखी आयगी?

सैनिक– घणी खम्मा रावजी, मुगल फौजां सिवाणा कानी आवती देखी जै' सावचेती करणी म्हारौ फरज।

गूंगरोट ठाकुर– तो आ बात है, इण रौ कांई सन्ताप बावळा!

धूमड़ा ठाकुर–औ तो सूरापो बतावण रौ अचूक औसाण है। मायड़ भोम री रूखाली रै इण हेलै ने वधावो मान, करौ त्यारियां–'पिरथी परमारां तणी– पिरथी तणा परमार।' करौ साकौ! मचावौ त्राटक!!

(सगळा एकण सागे ऊठ जावै)

दूजो दरसाव

(किला री तहलटी में मुगल फौजां रौ पड़ाव दीसै अर मुगल सिपाही आवता जावता देखाईजे)

मुगल सेनापति– बादशाह रौ हुकम–रात नेठाव करालौ। भाख फाट्यां सूतोड़ा सिंघां नै पार घालणो सोरो रहसी।

एक मुगल सैनिक– हाँ सिपहसालार! म्हांनै तजवीज मिलगी है–किला रौ एक भेदियो लालच में आयग्यो है।

मुगल सेनापति–तो झट हाजिर करौ। कुण है– सगली तपास करनै हाजिर करीजो।

मुगल सैनिक– हाँ हुजूर! गढ़ रौ एक ना कुछ नाई है। थोड़ी सीक जागीर रा लालच में गढ़ रौ गुप्त मारग बतावण नै त्यार है।

मुगल सेनापति– आ बात है तो पछै जेज किण बात री। काले री सिंझ्या किलौ बादशाह रौ। झट ल्यावौ लालची नै म्हारा सामी।

(दूजा दो सैनिक भेदिया नाई नै हाजिर करै–वो इशारा में गढ़ रा गुप्त दरवाजा रा ऐलाण बतावतो देखाईजे)

तीजो दरसाव

(मंच रौ दृश्य बदलै। राव कल्ला अर सिरदारां रौ आवणो हुवै–हाथा तलवारां ढालां देखीजे)

राव कल्ला– तो पूरा गढ़ कोट में आ जाण तो हुयईगी के मुगल आपांणै गढ़ नै हासिल करण आय पूग्या है।

एक सरदार–हाँ राव कल्ला! आ भी जाणकारी है के एक भेदिये गुप्त रास्तो बतावण री कोगताई करली है। विभीषण तो घर घर लाधता आया है राव कल्ला।

राव कल्ला– तो राशन पाणी रा संरजाम पूरा राखजो अर जनानी ड्योढ़ी में समचो करौ के गढ़ रा वीरांनै घणे हुलास साका सारू सीख दिरावै।

एक हाजरियौ– हाँ हुकम, बठे ई समचा मुजब त्यारियां पूरी है।

राव कल्ला–तो वीरां! म्हारा सिंघ सपूतां।। मायड़ री रूखाली करण केसरिया बांधो अर गढ़ रा दरवाजा खोलण रौ हुकम मेलो।

सेनापति– जो बड़ो हुकम! गढ़ रा सगळा वीर सिपाही दोय दोय हाथ करण ताखड़ा पड़ता ई दीसै है।

राव कल्ला– तो करो कूच जय चार भुजा नाथ!

(सगला साकै सारू सिंघाय जावौ)

चौथो दरसाव

(गढ़ सिवाणा री सिरे पोल सामी ई कल्ला री सेना अर बादशाह री फौज शस्त्र चलावती देखीजे)

कल्ला राय मलोत– (हाथ में दुधारी थाम्यां, दुश्मी ने वकारतां थकां)–समाळो आपो आप नै बड़े मियां–आ आयी म्हारी दुधारी साको करण नै।

मुगल सिपाही– (वार नहीं समाळतां थकां)–या अल्लाह!

कल्ला– माफ करी जो–औ पापी पेट भिड़्यो हौ। मायड़ रै मान धकै थांरी कांई बिसात! (आगै वधै)

अगलो मुगल सैनिक– खबरदार कल्ला! इण वार नै झालणो अबखो पड़ैला।

कल्ला– तो हुवण दौ, दो-दो हाथ सिपह सालार! शेर री मांद में हाथ घालणो किण नै कुर्बान करेला।

(दोन्यूं कानी सूं तरवारां रा त्राटक चालै– मुगल सरदार रै कल्ला री दुधारी रौ वार लागतांई मुगल सरदार चीखै)

मुगल सरदार– लाहौल विला कुव्वत– औ तो शेर री मांद में आवणो हुयग्यो। (धरती पड़तो दीसै)

(परदा लारै) में हाथियां री चिंघाड़, घोड़ां री हिणहिणाहट अर तरवारां रा त्राटक बाजता सुणीजे अर बोल ई-जय चार भुजा नाथ। अल्लाह हो अकबर।

दुसमियां रा माथा खेजड़ा रा खोखा ज्यूं धूड़ भेळा हुवता पर्दालारै प्रकाश छाया अर ध्वनि चित्रां रै माध्यम सूं जणीजे)

दरसाव पांचवो

(राव कल्ला रौ रनिवास (जनानी ड्योढ़ी)। राव कल्ला री जोड़ायत हाड़ी राणी अर सखियां रौ मंच पे आवणो हुवै)

राणी हाड़ी– म्हारी साईनी साथण्यां। आपाने वीर नारी री मिसाल बणण रौ एक औसाण आयग्यो है। आप सबरा सुहाग-आपरा वीर पति केसरिया बांध मुगलां रौ मुकाबलो करण दुर्ग बारै सिधाय गया है।

एक औरुं राणी– तो पछै जेज किण बात री। पंडित जी ने बुलाय जौहर री ज्वाल चेतन कराओ। मां दुर्गा आपां नै शक्ति देवै अर आपांरी आंख्यां मायड़ भोम नै आहूत पूरीजे। (अचाणक राव कल्ला रौ मुळकतो शीश मुण्ड हाड़ी राणी रै पूजा थाल में आय पड़ै)

हाड़ी राणी– (हाक बाक हुयोड़ी)- अरे अरे प्राणनाथ! आप म्हारा सूं पैलांई सुरग री सोय करली-थोड़ा तो पौराओ वीर कल्ला। आपरी जोड़ायत ई जौहर री ज्वाल चढ़ आ आयी सुरग में आपरा सांबेलां री साख भरण।

(हाड़ी समेत सगली सखियां परदा लारै देखीजती-अग्नि झालां में बड़ती देखीजै)

(ढाढ़ी रौ मंच पे प्रवेश)

ढाढ़ी– रंग नेहड़ भोम रंग। (दूहो उगेरे)

संग बल जावै गोरियां वर मर जावै कट्‌ट।
घर बालक सूना रमै, वे भोगे रजवट्‌ट।।

(परदो पड़ै)

दरसाव छठौ

(सुरग लोक में चित्रगुप्त रौ कक्ष- यमराज अर चित्रगुप्त रौ एकण सागे आवणो। चित्रगुप्त आपरी गादी विराज पाना पलरावतो देखीजे)

यमराज– आवतां पाण किण गता-घम में अलूझग्या चित्रगुप्तजी! कुणसा न्याव री सलवटां है आपरा लिलाड़पे? म्हेंभी तो जाणूं!

चित्रगुप्त–महाराज! आज सिवाणची धरती रै वीर रा सुगर-सांबेला हुवैला। उण रै करमां रौ लेखो जोखो कूंतण में लाग्योड़ो हूँ।

यमराज– म्हनै भी तो सुणावो म्हारा लेखा पारखी।

चित्रगुप्त–तो सुणो यमराज जी। राव मालदेव जी रा वंश में जायौ और वीर है राव कल्ला। वो ही मालदेव जिण उगणीस बरसां में उगणीस लड़ाइयां लड़ी।

यमराज– हाँ-धकै वधो। औरूँ?

चित्रगुप्त–औ वो वीर कल्ला है जिण मुगल पातशाही सूं संधि नहीं करनै जोबन राजभोगां ने लात मार, पलकती तरवारां री खेती अंगीकार करी।

यमराज– इसड़ा वीर जूझार तो मरुधरा में ई नीपजे है, चित्रगुप्त जी!

चित्रगुप्त– हाँ महाराज् राव कल्ला वे मूंछाळा है जिण अकबर रा भर्‌या दरबार में बूंदी रा राव हाड़ा भोज री राजकंवरी सूं आपरी सगाई हुय जावण री हामल खरी करली। यमराज- पछै कांई करमागति रयी- आतो जाण पड़ै।

चित्रगुप्त– उणी हाड़ी राज कंवरी सूं परणीज कौल वाचां मुजब मुगल बादशाह री घेरा बंदी पाण ई श्रावणी तीज नै हाड़ी राणी सूं हेत री काण केवटी।

यमराज– ऐ राव कल्ला तो हेत अर रणखेत दोन्यूं री मिसाल बणग्या, चित्रगुप्त जी।

चित्रगुप्त– धकै सांबलो महाराज! दुर्ग हार, मांय मुगलां सूं घेरीज्यां पाण ई अभिमन्यु री नांई त्राटक मचायौ अर सिर पाड़्यां ई वारी धड़ बीसियां दुसमियां रा दोय दोय ढोल करतां धरती समायग्यो वाँ सा 'पुरुष।

यमराज– हाँ आ, बात म्हनैं नारद जी भी कयी ही।

चित्रगुप्त– अबै आपई न्याव करो मृत्युदेव।

यमराज– हाँ, चित्रगुप्तजी! देवेन्द्र नै उण सा पुरुष रै सांबेळां रौ समचो अजेज मेलो-घणा बधावां।

(पर्दो पड़ै-अर इन्द्र लोक रा स्वागत द्वार पे अप्सरावां बधावो गावती देखीजे)

दरसाव सातवों

(ठौड़- इन्द्रलोके रो अन्तः पुर। अप्सरावां में वात वंतल)

तिलोतमा– आज कांई बात है बाईसा? इन्द्रलोक रै सुरपुर में इन्तर रो छिड़काव अर वंदनवार बांधीज रया है।

उर्वशी– तूं अजे टाबरई रयी तिलोत्तमा- ठा कौनी तनै? रजवट रा धणी राजस्थान रौ एक सूरो पूरो कल्ला रायमलोत देव धरती पे आय रयो है।

मेनका– (हंसती थकी) इण लाण नै कांई बेरो- आ तो अष्टपौर देवेन्द्र नै रिमझावण में ई लाग्योड़ी रै वै है।

(माळावां गूंथण में लाग जावै)

तिलोत्तमा–तो पछै म्हनै भी तो इण हुलास में म्हारी निरत कला झण कारणी है-म्हैं आ चाली।

(नारदजी रौ आवणो)

नारद– नारायण! नारायण! रंग नेहड़ धरा रंग। सिवाणा रौ औ उजाड़ किलौ बरसां लग आपरा सूरा पूरा राव कल्ला री उडीक करतो रैवैला। वीरां री आ धरा सिंघा री दहाड़ सुणती रैवैला अर वीरां री उडीकरा झांवला पड़ता ई रैवैला- अथाग! अणथाग! (प्रस्थान)

(नेपथ्य में विरुदगान सुणीजे)

म्है जाण्यो धोलो मुवो, सूनो हुयग्यो बग्ग।
बाड़ै उणीज बाछड़ा फेर तडुक्कण लग्ग।।

(परदो पड़ै)

भाषा अध्यापक
शारदा उ. मा.वि. मं. समदड़ी-344021
मो. 9414244195

**इला न दैणी आपणी
हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पाळणै
मरण बड़ाई माय।।**

बुढ़ापो

❐ छाजूलाल जांगिड़

जिन्दगी रो आखरी पड़ाव बुढ़ापो हुवै। जयां बूढ़ा पेड़ रा डाळा, पता सूख ज्यावै, बैंयाही मीनख रो तन सूख ज्यावै। कमर झुक ज्यावै, कान सैं बहरो हो ज्यावै, आँख्या सै कम दीखबो करै। याददास्ती कम हो ज्यावै। हाथ में लाठी रो सहारौ लेणो पड़ै। सगळी इन्द्रियां शिथिल पड़ ज्यावै। कफ, खाँसी रो प्रभाव बढ़ ज्यावै। जाड़, दांत पड़ ज्यावै। मूण्डौ आल्यो सो हो ज्यावै। जठरागनी कम हो ज्यावै। कब्जी रहबा लाग ज्यावै। इसी हालत में दूध, दलिया और खिचड़ी खाबानै मन करै। घर रै माय अंग्रेजी पढ़ेड़ी भूवां आयगी, इसी तूमतबाजी बाक कुण करै। बूढ़ा सूसरा रै मांय बांस आबा लाग ज्यावै।

बुढ़ापा रै मांय कई रोग खड्या हो ज्यावै। सुगर, मूत्र री बीमारी हो ज्यावै। खून रो चाप ऊँचो हो ज्यावैं। पक्षाघात अर हृदयाघात रा झटका आ ज्यावै। लगता ही दौरा पड़नै सै कई मिनखां री मौत हो ज्यावै। ब्रेन हेमरेज रा दौरा सै कैई महीना कोमां में पड्यो रहवै। घर आळा परेशान हो ज्यावै। इसी बीमारी रै मांय कई मिनखां री मौत फटाफट हो ज्यावै। ई दुनिया में कई लोग इसा हुवै जका बीमारी ने जाण बूज'र बुलावै। मिर्च मसाला और चाट पकौड़ा खाबा लाग ज्यावै। बुढ़ापा में मस्सा हो ज्यावै। बामै खून पड़बा लाग ज्यावै। आंकी वेदना सै दुखी हो ज्यावै।

बुढ़ापा में गोड़ा टूट ज्यावै। शरीर रा जोड़ जाम हो ज्यावै। मिनख री हाळत कमरी ऊँट री भांत हो ज्यावै। उठै तो धूजै, बैठे तो धूजै। कई तो पड़कर हाड़िया तुड़ा लेवै पीछ मर्यां ही पिण्डों छूटै। बुढ़ापा में पड़ेडो मिनख खड्यो हो नी सकै।

बुढ़ापा में हाथपगां रो काबू हट ज्यावै। चूंटी री पकड़ कम हो ज्यावै कोई चीज चूंटी सै पकड़ै तो चीज आगे-आगे भागै चूंटी पीछै-पीछै। कई लोगां री नाड़ घड़ी रा पैण्डुलम री भांत हालबो करै। बुढ़ापा में मन री मनसा भी नी मरैं। बूढ़ा आदमी रो मन टाबर री भाँत हो ज्यावै। जद बेटा पोता कहेड़ो न मानै तो मन में झाळ आवै। पण बुढ़ापा रो सीरी कुण होवै।

वारो तो भगवान ही मालिक है। बूढ़ो आदमी आपरी घर हाळी रै सागै बोल बतला' र दिन पूरा करै। जद घर हाळी चल बसै तो बूढ़ा आदमी री दुर्गति हो ज्यावै। बो बिचारो पोळी रै मांय खंखारा करबौ करै। ई कळयुग रै मांय बूढ़ा आदमी री सेवा नी होवै। बूढ़ा नै घर रो भार समझै, बीकी कदर कम हो ज्यावै। माँ-बाप चार-पाँच बेटा रो पाळण पोषण ठीक तरै कर देवै। बानै काम भी लगा देवै। पण बूढ़ा बाप माँ नै नी राख सकै। बाकी सेवा नी कर सकै। जद बूढ़ा बाप रै चार बेटा हुवै। तो पहलो बेटो कहवै दूसरा राखसी। दूसरा कहवै तीसरो राखसी। तीसरा कहवै चौथो राखसी। बै आपस में बुरी तरह लड़े लोग हंसाई करावै। आखिर फैसलो यो होवै कै एक बेटो बाप ने राखै, दूसरो माँ ने राखै। पांच-सात महीना बाद अलटा-पलटी करै। या ई जमाना ही बलियारी है।

एक जमानो ईसो होवतो बूढ़ा आदमी री घणी ईज्जत होवती। बीकै बिना घर रो पतो भी नी हाळतो। बो घर रो प्रधान होवतो। ब्या, शादी, भाँत, छूछक बीकी चौधर बिना नी होवता। बेटा पोता बूढ़ा रो कहेड़ो मानता। दादा दादी बेटा पोता नै कहाणियां सुणा'र चौखा संस्कार देता। पशुपक्षी रै बारै में दयाभाव जगाता। आं संस्कारां सै बूढ़ा आदमी री सेवा हुवती।

अब तो टेलीविजन, मोबाइल, इण्टरनेट, वाट्सअप, फेसबुक रो जमानो आयगो। अब बै सैं चीजां नै खायगा। संस्कारां रो सत्यानाश करदियो। लोगां री भावना ही बदलगी। मान, मर्यादा व इज्जत आबरू सैं माटी में मिळगी। शर्म, लाज, जाण, पिछाण खत्म होयगी। लोगां री भावना या होयगी-म्हें, म्हारा टाबर, म्हारी लुगाई। तीसरो आदमी नी सुहावै। घर में जद मेहमान आ ज्यावै तो बीनै जल्दी सी पार करबा हाळी भावना राखै।

बूढ़ा आदम्यारी दुर्दशा देख र देस में भी आश्रम होवण लाग्या। कई बेटा ईसा दगा बाज होवै। बै कहवै बापूजी थाने कुम्भ रो मेळो दिखा ल्यावां। बिचारो बूढ़ो बाप चल्यो जावै। बी मेळो में बीकै धरम धक्को दियावै। बिचारो बूढ़ो बाप भिखारी बण ज्यावै। मंगतो बण र आपरा दिन पूरा करै। बीकै मन में भी स्वाभिमान जाग्ज्यावै। मन में प्रण कर लेवै ईसा दगाबाज बेटा रै घरै नी जाऊँ।

बूढ़ा आदमी रै सेवा नी होणे रै कारण देस अर समाज री दुर्दशा होयगी। समाज का उल्टा दिन आयगा। छोर्‌या चाहे जीकै सागै भागै लागी। बिना सोचे बिचारे चाहे जीरै सागै सम्बन्ध करै लागी। जद सम्बन्ध टूट ज्यावै जणा पछतावो करके रोवै। बै छोर्‌या पीहर सै भी खोयी जावै। माँ-बाप बानै घर रै मांय नी बड़बा देवै।

लोगां री सहण शक्ति भी खतम होयगी। भाई-भाई, माँ-बाप, भाई-बहन, लोग-लुगाई, बेटा पोता आपस में खून करबा लागया। दारू जण-जण पीवै लागगो। समाज को ढाँचों ही बिगड़गो। बूढ़ा आदमी री सेवा करकै कोई आशीर्वाद नी लेणो चावै। विदेसी संस्कृति और सभ्यता आपणां जीवण में आयगी। अबै तो बूढ़ा आदमी री सेवा करबा हाला घरां का नमूना ही बच्या है। ढंग इसो लागै है कै दिनादिन ई देस रो ढाँचों बिगड़तो लागै है।

सेवानिवृत्त व्याख्याता
घूमचक्कर, नवलगढ़
(झुंझुनूं)

सुभाषित

सत्येन रक्ष्यते धर्मो,
विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते पात्रम्
कुलं शीलेन रक्ष्यते।।

अर्थात्-सत्य के पालन से धर्म की रक्षा होती है। सदा अभ्यास करने से विद्या की रक्षा होती है। मार्जन के द्वारा पात्र की रक्षा होती है और शील से कुल की रक्षा होती है।

कहाणी

वचन रो धणी

❒ दशरथसिंह खिड़िया

डाकू सुजांण सिंह अर डाकू खुमांण सिंह में पीढ़ियां रो वैर। हरमेस आपस मे मरंण–मारंण सारू कमर कसियौड़ा भेवै। दोन्यूं ई अेक दूजै रा मोटा दुसमंण। कीनो इत्तौ के दोन्यूं इ घात लगायां अेक–दूजा नैं मारंण वास्तै मोको उडीकै। बडैरा तो दुसमंण चारौ पाळतां–पाळतां खप्पग्या अर अबै उणां री ओलाद बडैरां ही राड़ पाळियां भेवै। जे आपस में दोन्यां रो आमनो–सामनो व्है जावै तो दोन्यूं ई खांडा–फाचरा व्हियां बिनां नीं छूटै।

समाजोग सूं अेक दिन सुजांण सिंह रै खबर पूगती व्ही के उंण रो छोरौ मरतगाळ हुओड़ौ बाप री वाटां जोवै। खबर सुणतां ई सुजांण सिंह री वैकळता वधगी। काळजा रा टुकड़ा नैं देखंण री उंतावळ इत्ती वधी के दिंन काडणौं अणूतौ ई दोरौ व्हेग्यौ। ओलाद री ममता हिलौरां लैवंण लागगी। सुजांण सिंह चिंणता में पड़ग्यौ। घरां जावंणौ इत्तौ सोरो कठै। बस्ती मांय जावै तो पुलिस रो खतरौ। पुलिस गांव नैं च्यांरूमेर घेरियां बैठी तो बस्ती रै बारै डाकू खुमांण सिहं रा आदमी घात लगायां बैठा सुजांण नैं उड़ीकै। अठीनैं पड़ै तो खाई अर उठीनैं पड़ै तो ऊंडो खाड़ौ। सुजांण सिंह री परेसांणी अणूंती ई वधगी। छोरा खंनै पूगंण रो कोई रास्तौ नहीं सूझै। मांथो चक्करघांणी ज्यांण फिरंण लागग्यौ।

आखिर सुजांण सिंह बेटा सूं मिलंण री लूंठी धारली। आपरा विस्वासू साथियां नै भळावणं दैयर आपरै गांव खांनी व्हीर व्हैग्यौ। सादो वेस अर बिना किंणी हथियार रै गांव री हद में बड़ग्यौ। अंदारा रो फायदो उठाय र किंणी भांत आपरी गुवाड़ी मायं पूगतौ व्हियौ अर घर रै सांमी आय र किंवाड़ बजावंण लाग्यौ इज हो के कोई अणजांण मिनंख उंण रो हाथ झाल लियौ। मिनख रै मूंडा मांथै कपड़ौ बांधियोड़ौ अर खनै कांधा मांथै बंदूक उठायौड़ी। सुजांण सिंह नै समझणां में जैज नीं लागी के ओ आदमी कुंण है। अणजांण मिनंख अंगीरा बरसावती आंख्यां काडतौ–काडतौ उंण सूं बोल्यो–

''थूं कुंण है अर अठै किण सूं मिलंण नै आयौ है?'' सुजांण सिंह सावचेत व्हैग्यो पंण बोल्यौ कीं कोनीं। डकैत उंणरौ कांधौ हिलायर भळै पूछ लियौ–

''म्हारी बात रो पडूत्तर नीं दियौ? गूंगौ है कांई?'' सुजांण ठहरियौ मोटी मरजाद रो मालक। रजपूतंणी रो जायौ झूठ बोलंणौ आपघात समझै। साँच नै आंच कांई। वो संभळ र खुमांण रा आदमीं नैं आपरी सगळी परेसांणी बताय दी। सामनौ करै तो खाली हाथ कियां सामनौ करै। खुमांण रा आदमी खनैं घाती हथयार लियोड़ौ। जैर बुझायौड़ी बरछी तो ताणियां ऊभौ। वो सुजांण री पूरी बात सावधांनी सूं सुंणी अर उण री बातां नैं मगज में तोली। बात में अंणूतौ ई बल लखायौ तो बिरोळ लागग्यौ। सुजांण उंण नैं भळै समझावंण लाग्यौ–

''भायला। परकत सूं अपां अेक दूजै रा मोटा वैरी दुसमंण। दुसमंण नैं मारणौं आपणौं पेलौ धरंम। पंण भाया! म्हैं आज मोटी विपदा मायं फंसियोड़ौ हूँ। म्हारा काळजा रो टुकड़ौ जीवंण–मोत रा द्वार मांथै सुत्तौ म्हनैं उडीकै। वो अेक निजर म्हनैं देखंण री वाटां जोवै। आज म्हनैं उंण खनै पूगणौं जरूरी है। जे वगत मांथै नहीं पूगियो तो म्हारै काळजा मांय उमर भर रो खटकौ रैय जासी। भायला, मरतगाळ आगै तो पथर ई पिघळ ज्यावै।

सुजांण सिंह री आंख्यां कैवतां–कैवतां जळजळी व्हैगी। आंसूड़ा आंख्यां सूं बारै निसरग्या तो उणां नै पूंछिया अर संभळर भळै कैवंण लाग्यौ– ''म्हनै अेकंण भळियां म्हारा बेटा सूं मिलंण दे– पछै जो थूं चावै म्हैं वो ई करस्यूं ओ अेक रजपूत रो वचंन है। खुमांण रो आदमी डाकू अवस हो पंण हो तो वो ई मिनंख। दयाभाव मिनंख रो सभाव हुवै। वो सुजांण रै मन री विवसता समझग्यौ। हाथ जोड़ र सुजांण सूं बोल्यौ– ''म्हैं म्हारा सरदार रो सेवक हूँ। सरदार रो हुकम बजावणौ अर वफादारी निभावंणी म्हारौ फरजंण है। थांनै जे छोड़ दियौ तो म्हैं म्हारे सरदार रो मोटौ अपराधी बंण जास्यूं। म्हारी वफादारी रै लांछण लाग जासी।''

''म्हैं थारी परेसांणी समझूं भाया। म्हारौ बिसासौ कर । अेक तो म्हैं ई डाकू। दूजौ म्हैं रजपूतंणी रो जायौ। रजपूत अर डाकू वचंन रा पक्का हुवै। म्हैं थनैं वचनं देवूं के म्हारै बेटा सूं मिलियां पछै सीधौ थारै खनै इज आय र समरपंण करस्यूँ।''

खुमांण सिंह रो आदमी सुजांण री विवसता समझ गियौ अर उणं नैं बेटा खनैं जावंण री छूट दैय दी। आपरा हथियार ई नीचै कर लिया। सुजांण सिंह फुरती सूं आपरै घरां वड़ग्यौ। मांय उंण री धरंम पत्नी बेटा रै सिरांणै बैठी बेठी रोवै ही। सुजांण नैं देखतां ई वा ऊभी व्हैगी। बेटा रै खनै हूय र उणं सूं बोली–

''आंख्यां खोल बेटा। देख थारा बापुसा पधारिया है।'' मां री बात सूणीं तो बेटो आंख्यां खोल दी। अेक निजर बाप नैं टकटकी लगायर देखंण लाग्यौ। आंख्यां में आंसूड़ा भरीजग्या। सुजांण सिंह खनै आय र उंण रा मांथा मांथे आपरौ हाथ मेल दियौ। बेटो उंणी घड़ी आपरी आंख्यां बन्द कर ली। सुजांण सिंह फूट फूट र रोवंण ढूंकग्यौ तो उंण री पत्नीं थावस बंधावती थकी बोली–

''सरूपसिंह आपनैं इज उडीक तौ हो। उंण रा परांण गिया दस दिनां सूं आप रै मांय अड़ियौड़ा हा। आज वो आपनैं देख र नचीतौ व्हैग्यौ। अबै आप पधारौ अर आपरौ धरंम निभावौ।'' इत्तौ कैय र वा फफक–फफक कर रोवंण ढूंकगी। सुजांण सिंह आंख्यां पूंछतौ–पूंछतौ मूंडौ ढंकर बारै निसरग्यौ। बारै खुमांण रो आदमीं सुजांण नैं इज उडीकतौ हो। खनै आवतां ई सुजांण बोल्यौ–

''ले भाया! थारौ अपराधी हाजर है। थूं चावै तो खुमांण खनै हाजर कर दे– या चावै तो इंणी ठौड़ म्हारा परांण हर ले। म्हैं वचंन रै मुजब हाजर हूँ।''

बहादुर हमेशां बहादुर री कदर करै। सुजांण री बहादुरी, आतम बळ अर निरभीकता देख र खुमांण रा आदमीं रै हिड़दा मांय सुजांण सारू सनमान री भावनां वापरगी। हाथ जोड़ र कैवणं लाग्यौ–

''थांनै इण ठौड़ म्हारै अलावा दूजौ कोई नहीं देखियौ। म्हारा सरदार नैं इंण री कीं भणंक

नीं पड़ै सो आप इणीं घड़ी अठे सूं चाल्या जावौ। इस्सा वीर-सपूत नैं अपडंण रो साहस म्हारै मांय नीं है। आप खुसी-खुसी आपरी ठौड़ पधारौ। म्हैं सरदार नै कैय देस्यू के म्हनैं सुजांण सिंह नीं मिलियो।'' इत्तौ केय र खुमांण रो आदमीं बिनां किणी बात रै चुपचाप अेकां खांनी निकळग्यौ। सुजांण उंण नै इचरज सूं देखतौ इज रैयग्यौ।

खुमांण आपरा आदमी नैं खाली हाथ आयां देख्यौ तो नाराज व्हैग्यौ। उणं नैं जद आ ठा पड़ी के सुजांण सिंह आपरा बेटा सूं मिल र गयौ तो गुस्सो सातूं आसमांन चढ़ग्यौ। नसां तणीजगी अर आंख्यां सूं अगीरा बरसंण लागग्या। खुमांण नैं आपरां विसवासी री आ गफलत अणूंती ई अखरगी। आवेस में आयर उंण नैं मारंण सारू तयार हुऔ इज हो के अचांणचक अेक घोड़े रो असवार उंण सांमी हाजर व्हियौ। वो घोड़ा सूं उतरियौ इज कोनी के उंण पैलां ई छः-सात डकैत उंण नैं घेर लिया। खुमांण रा बन्दूक रो घोड़ौ दबावतौड़ा हाथ रुकग्या। असवार सलाम ठौंकतौ थक्यौ खुमांण खनै आयौ अर बोल्यौ-

''ठहर खुमांण सिंह। थारौ दोसी अर अपराधी तो म्हैं हूँ। इंण में ओ निरदोस है। म्हैं जांणतो हो के ओ मूसीबत में पड़ सकै सो म्हैं वगत मांथै अठै आयगौ। रजपूत वचंन रा पक्का हुवै खुमांण। सांचौ रजपूत जांन री बाजी लगाय देवै पंण कियौड़ा वचंन सूं पाछा नीं फिरै। म्हैं इंण नैं वचंन दियौ कै म्हनै म्हारा बेटा सूं मिलंण दे, पछै जो थूं चावै ज्यूं करजै। कोल रै मुजब म्हैं हाजर हूँ खुमांण।''

सुजांण नैं आप रै सांमी निहथौं देख र खुमांण इचरज में पड़ग्यौ। उंण नैं आपरी आंख्यां मांथै सिकसात विसवास ई नहीं व्हियौ। जद सुजांण सरू सूं ल्यैय र अंत तक री आपरी बात बताई तो खुमांण री आंख्यां फाटी री फाटी रैयगी। सुजांण री निरभीकता अर हिम्मत री वो मनां ई मनां दाद दी। मंन में सनमांन री भावनां उपजी तो इस्सी उपजी के भावनां री लैहरां में बैयग्यौ। सुजांण रो कांधो थप-थपाय र बोल्यौ-

''वाह सुजांण सिंह वाह! थांरी बहादुरी तारीफ जोग है। परकत सूं म्हैं ई डाकू हूँ अर डाकू हमेसां हिम्मत री कीमत करणौं आछी तरियां समझै। थूं म्हारौ जळमजात वैरी दुसमंण अवस है पंण वंचन रा पक्का अर कोल आगै मोत रै मूंडा मांय आवंण री हिम्मत तो कोई थारै जिस्सौ बिरलो इज कर सकै। मायड़ रा इस्सा वीर-बहादुर री खुमांण इज्जत करै। आज रो दिन दौन्यां रै वास्तै सांतरौ दिन है। जा! आज थारी सै दुसमंणी माफ है। आज पछै अपां अेक दूजां रा मोटा दुसमंण हां। जा वीर जा खुमांण आ थनैं नमन करै।'' इत्तौ केयर खुमांण आपरी खोह मांय उतावळौ चालतौ थक्यौ वड़ग्यौ। सुजांण उंण नैं इचरज सूं ताकतौ इज रैयग्यौ। खुमांण रो आदमी उणं नै अठै सूं व्हीर कर दियौ। सुजांण सकपकायोड़ौ आप रै घोड़ा पर सवार हुयर बीहड़ां मांय आयौ ज्यां ई पाछौ निसरग्यौ।

बात आई गई व्हैगी। खासा मईनां बीतग्या। देवयोग सूं अेक दिन खुमांण रो विसवासी वेस बदळियोड़ौ खुमांण रा डेरा मांय आयो अर अेक काम री खबर खुमांण तक पूगती कर दी। आवतां ई कैवंण लाग्यौ- ''सरदार! देवगढ़ सूं खबर है के घरां आपरी पुरबिया रो ब्याव मांड दियौ।'' बेटी रै ब्याव री बात सुंणी तो खुमाण सिंह री बाछां खिलगी। राजी हुवतो थक्यौ बोल्यौ- ''म्हारी पुरबिया रो व्याव! आ तो घंणी चौखी बात है। घंणी चौखी खबर ल्यायौ है वीर सिंह! इण सूं सांतरी दूजी कांई खबर हुय सकै?''

''खबर तो घंणी खुसी री है सरदार पंण....''

''पंण कांई वीर सिंह?''

''सरदार! पुरबिया रो ब्याव तो मांड दियौ पंण थारै बिनां पुरबिया रो कन्यांदान कुंण करसी? इंण बात नैं ल्यैयर घरां भाभी अणूंती ई परेसांण है।''सुंण्यौ तो खुमांण री आंख्यां झुकगी। बात तो पत्ता री है के बाप रै हुवतां थकां दूजौ कन्यादांन कियां करै? अेक निसासो न्हांखतो थक्यौ खुमांण सिंह बोल्यौ- ''बात तो घंणी पत्ता री है वीर सिंह! बेटी रो कन्यांदान तो बाप इज कर सकै।'' इत्तौ कैय र खुमांण वीरसिंह री बात मांथै विचार करण लागगौ। कन्यादान तो कर देवै पंण गांव अर घरां जावंणौ इत्तो सोरौ कठै। च्यारूं खांनी दुसमणां री आसंका मंडरायौड़ी रेवै। घरां जावणौं अर काळ रै मुंडा मायं जावणौं बराबर है। खासौ बिरौळ कर र खुमांण बोल्यौ-

''ठीक है वीर सिंह। थूं घरां जायर खबर पूगती कर दे कै कन्यादांन री घड़ी म्हैं अवस हाजर हुय जास्यूं पुरबिया रो कन्यादान तो म्हैं इज कर स्यूं। अबै तो चावै मोत सूं इज क्यूं नीं सामनो करणौ पड़ै, पुरबिया रो कन्यांदान तो खुमांण सिंह इज करसी।''

''पण सरदार! बात केवंणी सोरी है जब कै कन्यादांन करणौं इत्तौ सोरौ कोनीं। च्यारूंमेर पुलिस अर दुसमंण घात लगायां बैठा है। बे तो इस्सा मोकै नैं इज उड़ीकै। वठै खतरौ ई खतरौ है।''

''बहादुर खतरा सूं कदै नीं डरै वीरसिंह! डाकू तो इयां ई आपरी जांन हथैळी मांय लियां भेवै। मोत सूं तो कायर डरै बावळा। म्हैं देवगढ़ जास्यूं अर अक्स जास्यूं। बेटी रो कन्यादांन बाप नीं करसी तो ओर कुंण करसी?''

खुमांण तो लूंठी तैवड़ ली ही। उण री जिद आगै वीरसिंह चुप व्हैग्यौ। खुमांण सिंह जावंण री तैयारी सरू कर दी। पुरबिया रै ब्याव रै ठीक मोकै खुमांण आपरा विसवासू डकैतां नैं ल्यैय र व्हीर व्हैग्यौ। गांव री हद आवतां ई आपरा साथियां नै उंणी ठौड़ रोक दिया अर उणां नैं ठीक तरियां भळावंण दैय र खुद अंदारा मांय गांव में बड़ग्यौ। गांर रै च्यारूं खांनी पुलिस तैनांत कियौड़ी। बारै सुजाणं रा डकैत घात लगायां बैठा खुमांण नै उडीकै। खुमांण अणूंती ई सावचेती सूं गांव खानी जावै हो के अचांणचक सुजांण रा आदमीं उंण मांथै टूट पड़िया। खुमांण की संभळ पावतौ उंण पैला ई खुमांण मांथै लाठियां बरसगी। अकस्मात रा हमला सारू खुमांण तैयार नीं हो जिकौ अंणचेत हुय र उंणी ठौड़ पड़गियौ। डकैत उंण नैं उठायर आप रै सागै ल्यैयगा। खुमांण रो तंन रगत सूं भरीजग्यौ। घड़ी-दोय घड़ी मांय सै जणिया सुजांण सिंह रै डेरै आय पूग्या। खुमांण री या दसा देखी तो सुजांण बिफरग्यौ। उंण नैं आप रै मांथै हुओड़ो उपकार याद हो। वो फटाफट खुमांण रा घावां री मलंमपट्टी करावंणी सरू कर दी। वैद्यराज सूं खुमांण नैं सावळ कर दियौ। चेतौ आयौ तो सुजांण सूं बोल्यौ- ''आज रोक मंत सुजांण सिंह। म्हनै जावंण दे। म्हारी बेटी चंवरी आगै कन्यादान सारू उभी है। वा म्हारी वाटां जोवै सुजांण सिंह। म्है थनै वचंन देवूं के म्हारौ कारज सधता ई म्हैं अठै हाजर व्है जा स्यूं। आज म्हनैं रोक मत अर जावंण दे।'' आंदौ कांई चावै-दोय आंख्यां। सुजांण तो ओ इज चावतो हो। वो समझग्यौ के उपकार रो बदळौ चुकावंण रो इण सूं सांतरौ अवसर दूजौ नहीं आवैला।

सुजांण संभळ र कैवंण लाग्यौ–

''बात तो ठीक कैयी खुमांण सिंह! म्हारै मांथै थारौ अेक मोटो उपकार उधार रेयोड़ो अर वीर बहादुर कदै ई करयोड़ौ उपकार सूं नचीतौ हुयर नीं सोवै। आज म्हनैं ई मां भवानी सांतरौ मोकौ देय दियौ। कन्या थारी हुवै या पछै म्हारी, कन्या तो आखिर कन्या हुवै। सवासंणी हुवै। कन्यादान में आड़ी देवंण आळा नैं भगवांन ई छमा नीं करै। वो तो मोटो गुनहगार हुवै। पुरबिया थारी जिस्सी म्हारी बेटी। जा खुमांण जा...., आज तो म्हैं ई थनैं नीं रोकस्यूं।'' इत्तौ कैयर सुजांण सिंह अेकां खांनी निसरग्यौ। खुमांण री बाछां खिलगी। बेटी रै ब्याव में पूगंण रो अेक रास्तौ तो साफ व्हैग्यौ। चुपचाप आपरा घोड़ा माथै चढ़ग्यौ। घोड़ो हिंण हिणावतौ सरपटियोड़ौ अंदारा मांय आगै निसरग्यौ।

सावचेती सूं खुमांण गांव मांय वड़ग्यौ। लोगां नैं कीं भंणक नहीं पड़ंण दी अर चुपचाप ब्याव रा भीड़ा में जाय र ऊभग्यौ। उण री पतनीं देखतां ई पैचांणगी पंण भेद खुलंण रा भै सूं चुप इज रैयी। कन्यादांन कर र खुमांण आयौ ज्यांण ई पाछौ देवगढ़ सूं भाजग्यौ। लोग हळफळायौड़ा इज रैयगा अर पुलिस हाथ मसळती रैयगी। देवगढ़ सूं चाल र खुमांण पाछौ सीधौ सुजांण रै डेरै आय पूगियौ। अंदारौ उंण वगत पूरौ मथारा मांथै हौ। ऊंचै अकासां तारां रा थाळ भरियौड़ा जांणे निछरावळ कर रैया हा। खुमांण घोड़े सूं उतर र सीधे सुजांण सिंह री मचली खनैं आय र जवारड़ा करतौ थक्यो बोल्यो–

''ले सुजांण! म्हैं थारौ दुसमंण थारै सांमी हाजर हूँ। थूं वचनां रो पक्कौ है तो म्हैं ई जाटणी रो जायौ हूँ। जबर जाट कियौड़ा कोल नैं कदै ई नीं भूलै। चाहै जांण ई क्यूं नहीं चाली जावै– जाट आपरा कोल मांथै थिर रेवै। सूरज री उगाळी टळै तो खुमांण सिंह रो कोल टळै।'' खुमांण री बातां सुंणतांई सुजांण री बाछां खिलगी। परकत सूं वो डाकू अवस है पंण वीर बहादुर री कीमत आछी तरियां समझै। कायर मींत सूं बहादुर दुसमंण घंणौ सांतरौ हुवै। आपरी मचली सूं उतर र खुमाणं रै खनै आयौ अर उंण री पीठ थप थपावतौ बोल्यौ–

''वचनां रो मोटो धंणी तो थूं है खुमांण। थूं मोत रै मुंडा सूं गियोड़ो वचंन रो पक्कौ पाछौ मौत रे मुंडा मायं आयौ है। इस्सी बहादुरी तो कोई थारै जिस्सौ साहसी इज कर सकै। आज सुजांण सिंह थारी हिम्मत रो कायल व्हैग्यो खुमांण सिंह। मंन तो करै के थारै जिस्सा वीर बहादुर रै आगै म्हारै पुरखां रा कीनां नैं इणीं घड़ी त्याग दूं। बडैरां रा बैरभाव नैं अठै इज दफंण कर न्हाखूं।''

खुमांण री आंख्यां परसंणता सूं फाटी री फाटी रैयगी। उंण नैं सुजांण सूं इस्सी सांतरी आस नीं ही। आंख्यां परसंणता री वजै सूं भींजगी अर खुसी रे मारै दोवड़ौ व्हैग्यौ। संभळ र सुजांण रै सांमी बाथां फैलाय दी–

'पीढ़ियां रा कीना नैं निभावतौ–निभावतौ म्हैं हार गियौ सुजांण। म्हैं हार गियौ। थूं तो आज म्हारै मनचींती कर दिखाई।''

''थू हारियौ कोनीं खुमांण बल्कै थूं तो म्हनैं आपनै हराय दियौ। अनूठौ साहस दिखाय र म्हारौ मनं जीत लियौ खुमांण। आज आपणां पुरखां रा वैर रो खातमौं व्हैग्यौ। पीढ़ियां री दुसमंणी खतंम व्हैगी। मिनखीचारा री जीत व्हैगी।''

दौन्यूं ई अेक दूजा रै गळै बाथां घालर मिलिया। आड़ै–पाड़ै ऊभा दूजा डकैत देखता ई रैयगा। सै जणियां रै मुंडा मांथै अपणाईत रा भाव अर परसणंता झळकै ही। ऊपर अकास में तारां रा थाळ भरियौड़ा। निछरावळ करै हा। दोय मोटा वैरी दुसमणां रो मेळ मिळाप देख र खुद परकरती ई राजी व्हैगी।

'करणी सदन' पृथ्वीराज जी का थड़ा
मेड़तासिटी (नागौर)–341510
मो. 9461155794

हाइकू

❑ सुरेश कुमार

भूल्यो सो चै'रो
जद हियो चितारै
नैंण भरीजैं।

साँसाँ रो साँच
थाँरो नेह निवाच
निवाया राखै।

थाँ जे मुळको
आवैं सौ–सौ रँगड़ा
प्रीत पाँघरै।

के व्है भाखर
थाँरै–म्हारै बिचाळै
ढाई आखर।

जी भर पीयो
इमरत हेताँ रो
अजूँ अधाप्या।

गयो बखत
व्है हिड़दै हाजर
आज आखड़ै।

हेत मं हेत,
मिनख मं मिनख
हेर कठै है।

कुंण बतावै
नद्याँ नैं समदर
आप सोधल्यीं।

भींत रो दर्द
हेताळु हियां ऊभी
दर्द री भींत।

सबद बेली
आखराँ आँसू ढाळै
रात उजाळै।

कूँची नं ताळो
है नीं कोई रुखाळो
रूँखड़ै आळो।

सबद नाव
अरथ उतरगा
पार समंदा।

देखार चालो
बाटाँ, का'ल रा फूल
आज रा काँटा।

सीधा हैं माँदा
चोराँ घर चनगी
राजाजी आँधा।

पण्डाजी करैं
सुन्दर काण्डाँ मिस
सुन्दरी काण्ड।

कागा, बुगला
आज आभै पै छागा
हंस हारगा।

डाकू'र नेता
ढुकर्‌या एकैं घाट
राम रो राज।

लोकराज मं
बेचैं–खांय रुखाळा
लोकलाज नं।

म्हाँ, सूँप्यो देस
ज्याँ पै डाकै रा 'केस'
करर्‌या ऐस।

मिनख ठा'वो
गाँव पँच कहीजै
गुवाड़ दाबै।

दिल्ली री बिल्ली
बैठ्यी मूँछ पलारै
किरसो मरै।

सत्ता री गंगा
न्हाय'र धोळा हूग्या
कागळा काळा।

भाग मं भाठा
किरसांण घरां मं
घाटा ई घाटा।

अध्यापक
रा.बा.उ.प्रा.वि., तिहावली,
पं.स.–फतेहपुर (सीकर)–332307
मो. 9414541743

क्हाणी

किण रो राज सिरे

❐ हेमा

राजा रै दरबार थट्‌ट लाग्योड़ो। सूरमा अर सामन्त सै बिराज्या थका। राजा भर्‌या दरबार में आज री बात यूं शुरू करी। आप आप री बात बंतल अधर में ई छोड़ सगळा राजा री बात नै कान दियौ।

राजा कयौ–आज री बात अजग गजब' इण दरबार में केई जूनी आंख्यां नुवो जुग देखता ई बिराजिया है, तो घणकरा आप आप री उमर रौ आधेटो भोगग्या है। म्हारी नजर नुवादी जवान पीढ़ी पे ई पड़ रयी है। सगळां नै इण बात री ठा पटकणी है के म्हारा सूं लेय नै म्हारा बडेरां तक रा राज में सबसूं सिरे राज किणरी टेम रह्यौ।

राजा री आ बात सुणतां पाण सगळा सरदार गताघम में पड़्या। वां नै इण भांत हाक बाक देख राजा आपरी मंशा सुभट दरसायी– बात रौ साँचो म्यानो बतावणिया रा सौ ई गुनाह माफ। एक पखवाड़ा में इण पहेली री पूरी पड़ताल कर पाछी बळती देवणी। राजा आपरा राज मंत्री नै इण रौ जिम्मो सूंप्यो। राजमंत्री इण री आ तजवीज विचारी– आज री रया में उण मिनख नै जोय लेवणो जिण इण राज री तीन पीढ़ियां रौ राज आपरी निजरां देख लियौ हुवै।

हरकारां सूं पतो लगायां ठा पड़ी के राजनगरी री सांकड़ी अँधारी गली में एक टपारै में खंखार हुयौ बूढ़ो डोकरौ पड्‌यौ गिरणावै। ऊमर रै छेहले धड़ै उण बरस अस्सी तो पार कर ई लिया हुवैला। राजमंत्री खुद उणरै टपरियै जाय पूग्यो। बात बात में राज मंशा ई दरसायी। धोली दाढ़ी ऊपरां टापती बूढ़ ली आंख्यां राजमंत्री री बात नै सुणी अर गुणी। पछै आपरी पाछली जिनगानी नै उकेरतां की थमतां अटकतां कह्यौ– राजमंत्री जी! राजा री बात रौ उगाड़ तो प्रगटाय देऊंला पण म्हनै भी जीवनदान रौ धीजो तो दिरावौ। ऊमर री लाडली छूटती डोर में, म्हैं दण्ड रौ भागी क्यूं बणूं? राजमंत्री उणरा मौर थापलतां थावस बंधायो के थारा सौ ई गुनाफ माफ। थूं तो राजा नै सांच रौ उगाड़ अरथाय दे।

धीजो मिल्यां बूढ़ला नै राजदरबार में हाजिर करीजियो। रात रा सोपा रै उनमान सगळो राजदरबार चम गूंगो होय बूढ़ला री बात सुणी।

तो, सुणो राजा जी! मेह अंधारी रात आधी'क टपगी ही। उण टेम आपरा दादोसा राजगादी बिराजता। म्हारी उमर कोई बीस बरसां री रयी हुवैला। अचाणचक म्हारा घर री आगळ बाजी। दरवाजो खोलतां पाण म्हैं हाक बाक रह्‌ग्यौ। पोटां पोटां मेह पड़ै अर म्हारा दरवाजा आगे एक जोध जवान डावड़ी गहणां सूं लड़ा झूम ऊभी थकी। भीन्या गाभां में डील सिकोड़ती म्हनै मेह अंधारी रात सूं बचाय, मेह ठमण तांई रात वासै री मंशा दरसाई। म्हनै काटो तो खून नी। पण कांई जोर करतौ। उण नवोढ़ा नै म्हारा घर रै मांय लेय मेह ठमण री बाट जोयी। पण परगाळ लग मेह नीठ ठम्यौ। परभात री टेम हुयां म्हैं उणनै उणरा मारग जावण री सलाह दीनी तो उण संकीजता क्यौ–म्हारा सासरियां नै पतियारो कीकर कराऊं? तद म्हारी आत्मा म्हनै मारग बतायो के म्हारी मां रै हाथां लायोड़ी चूनड़ी उणनै ओढ़ाय, उणरा माथा ऊपरां हाथ फेर, मूंडै बोली बहन मान, उणरा सासरै पूगती करी। बात आयी गयी हुयगी। म्हारी ऊमर रौ आधेटो आयग्यो हौ। हड़ीड़ अर डील तोड़ काम करण री अबे म्हारा में सगती नीं रयी। आ टेम आवतां आवतां आपरा पिताजी राजगादी संभाल ली ही। म्हनै ई पण कुंवारा पणा रौ श्राप लागग्यौ दीसै हौ। पण म्हैं म्हारी एकलयी आधी ढलगी ऊमर में खाटला माथै पड़्‌यां पड़्‌यां विचारां रा वतूलिया म्हारा मन में इण भांत ऊठ ऊठ नै म्हनै डगमग करता

> जद दुनिया रो मिनख जमारो
> नागो बूचो डोलै हो।
> इण धरती रो टाबर ई
> वेदां रा मंतर बोळै हो।।
>
> घूम घूम ने दुनिया में
> फैलायो ज्ञान हो।
> आ धरती हिन्दवाण री
> इण धरती रो म्हाने अभिमान हो।।

रैवता– अरे, रे! उण मेह अंधारी रात जे म्हैं म्हारी जोध जवान ऊमर में, गहणां सूं लड़ाझूम उण डावड़ी नै डराय धमकाय उण रा सगळा गहणा लूटपाट कर नै, मेह में घर बारै धक्को देय भगाय देवतो, तो आज इण थाकल पड़ती उमर में उणरा गहणा बेच बेच नै ई म्हारी रोटी रौ जुगाड़ सजतो। पण टेम गयी, बात गयी।

माफी बगसाजो म्हारा राजाजी! दिन गुड़कतां कांई जेज लागै। टेम बीत जावै, बातां रह जावै। आज म्हारी उमर पूरी होवती दीसै। कद राम रौ हेलो आय जावै, कीं जाण नीं। अर आप गादी बिराजिया थका। कीकर कहूँ राजाजिराज! मन तो दौड़े पण शरीर रौ घोड़ो सफा थाकग्यौ। कीकर ई करनै राबड़ी रांध, काया नै भाड़ो देऊं हूँ। नैड़ी आगी ई म्हारी कोई पीढ़ी नाव लेवणियो नहीं। पण मन री कालस इणी भांत नेकी री जोत नै कझलावती रै वै। माचलिया में पड़्‌यां पड़्‌यां मन एक ई बात विचारै। अरे डोफा! उण मेह अंधारी रात गहणां सूं लड़ा झूम वा जोध जवान नारी थारा सारू साख्यात लिछमी बण आयी ही, जे म्हैं उण पर बस नवोढ़ा सूं एकलये रौ फायदो उठाय, जोर जबरदस्ती कर, घर वास कर लेवतो तो आज म्हारो नाम लेवणिया टाबर, अबे तो म्हारी चाकरी में ऊभा लाधता। पण करम में कागळा रा पग हुवै तो हंस रा पग मंडणा दोरा। अबे न्याव री बात आप राज पेटे। म्हनै राम बुलावो कद आय जावै, म्हारो राम म्हनै माफ करै।

सगळा राज दरबार नै जाणे सांप सूंघग्यो। किणी री हिम्मत नहीं हुयी के किण रा राज नै सिरे कैवण री कोगत करै। भलां हाजिर राज सूं दुसमीचारो कुण करै।

अबे थूं ई न्याव कर चकवी– किण रौ राज सिरे?

अर चकवी ई चुप होय, माला में जाय छापळ झेल ली। इतरी बात, नहीं सुणी; उणरा डावा पसवाड़ै लात।

शारीरिक शिक्षक
आदर्श विद्या मन्दिर बालिका माध्यमिक
सिरे मन्दिर रोड (जालौर)
मो. 9460174152

कहाणी

मल जी रौ न्याव

❐ मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल'

लख जी ठाकर गाँव में बाजीन्दा डोकरा। घर में सैंग बात रौ ठाट। अन्न-धन री कीं कमी इण घर में कदेई नहीं आई। सैंग परवार मेनती। मातबर घर में टाबरां माथै ही अणूतो लाड़। घर में चार-चार भायां में एकाएक बेटी लाडेसर नांव ही आपरौ लाड कंवर। बाई सा ने सैंग घर में एक सूं बत्ता लाड लडावे। बाई सा अकूड़ी रा दड़ा ज्यूं दिन दूना न रात चौगुणा बधता गिया। कद जड़ सूं जवान हुया, की ठा ही नीं पड़ी।

आ तो ठीक व्ही कै लख जी एक दिन ठकराणी रै मूण्डे लाडेसर री लीलावां मोड़ा भैगा आवणो, कींरौ कैहणो नीं सुणनो। मन मकराल होवण री बात कानां पड़ी। लख जी खानदानी मिनख व्हारे अहड़ी बातां रौ कद खटाव। व्है तो तुरत फुरत ऊं घड़ी पाडोसी गाँव में व्हां रै जवानी रै हेतालू धीर जी रै कन्ने जा खिटक्या, अर बातां बातां में बाई सा रौ सगपण धीर जी रै मोटोड़ै बेटे संतोख जी सूं तै कर आया। अर चट मंगणी न पट ब्याव री कैवल परवाणे आंवती आखा तीज रै अबूझ सावै माथै ही बाई रा हाथ पीला कर घर बसाय दियो।

पुराणी कैबत है कै बाई री तगदीर बाई लारै। बाई लाडेसर ने सासरा में भी अणूतो लाड मिलियो। पूरो घर लाडी सा लाडी सा करता नीं थाकतो। पूरो पूरो सनमान अर बाई सा भी पूरा लटका सूं सब ने राजी राखता अर आप रै सायब ने तो एक घड़ी निजरों बारै नीं होवण देता। संतोख जी जै कदेई थोड़ा मोड़ा भैगा हो जांवता तो व्हारै गळे पड़ जावता। टेम जांवता कांई टेम लागे। देखतां देखतां बंरस बीत गा पण व्हारै टाबर पणै री भूल चूक कै भगवान री मुरजी कै पेट नीं मंड्यौ पण नीं मंड्यौ। पण जद बाई सा चालीसां पूगा तो औलाद री कमी अखरण लागी। अबै बाई सा रात दिन इणी सोच डूब्या रहैवण लागा। सैणा डावा, ताबीज गंडा अर पर घर नापता भी पेट नीं मंड्यौ जिको नीं मंडयौ। घणा जणां रा तौख राखतां बाई सा रहैगा बांझ''।

किणी तरै सौदो पार नीं पड्यो तो चात्रक बाई सा सायब जी संतोख जी रा कान दूजो ब्याव खातर खावण लागा। बात बणाय न क्हैता कै देखो जी म्हारै तो बांझड़ी होवण रौ ही लिख्यो दीखै। पण म्हारै लारै आप पूत बायरा क्यां रहैवो। आप टेम सर दूजो ब्याव कर म्हारै सौक ले आओ। तो म्हैं भी जीवतां जीव टाबर रौ मूण्डो देख लूं। दिन रात री यां बातां रो जुगली पीटतां देखर रै व्हां रै भी पूरी जंच गी। अर देखतां ही देखतां एक दिन आप दूजो ब्याव कर पधार गिया।

सरू सरू में तो लाडेसर संतोख जी ने मनवारां रै सागै खुद लौड़ी जीतू कंवर रै कन्नै खिनावती। आप अळगी पड़ी तारां री गिणती करती अर भविस रा सुपना देखती। टेम सर भगवान री म्हैर व्ही अर जीतू कंवर एक हिस्ट पुस्त कंवर ने नव्वें मास जलम दियो। पूरो घर खुसियां सूं भरगो। लाड कंवर तो कुंवर नै देख देख ही गैली हो रैयी ही। हर टेम 'म्हारौ लाल' 'म्हारो लाल' कर कर खूब लडावती। पूरी ममता कुंवर माथै ढौलती अर खूब लौरयां गा गा हींडा देती। पण अबै संतोख जी आठूं पौर घर का धणी नै ल्हौड़ी रै कमरे में देख देख रीसां बलती। भई पूगतां कोसीस र सागै संतोख जी नै घणै घणै मान सूं आप रै कन्ने बुलावती। पण संतोख जी नै भी अबै हर टेम जीतू जी रै कमरे में ही सांति मिलती। अबै दुःखी होवण सूं कांई फायदो, 'हाथां कर्या कामणा किण नै दीजै दोस'।

संतोख जी री छेती अर कीं जीतू कंवर रौ भुआर लाड कंवर नै खाते नीं खत रहयौ हो। पण दूजी कांनी व्हा कुंवर नै एक घड़ी सूनो नीं छोड़ती। व्है आप रै लाड में टाबर रै दूध पाणी भूल जाती। इण बात सूं चिड़ र कदै कदै तो जीतू कंवर कुंवर नै कोस न दूध पावती अर पाछौ देती। ईं पर भी लाडकंवर जीतू जी नै सतरा बातां बताती टाबर रै पूंछड़ै आप आप री ममता री मारी दोनूं सोक्यां ल्हौड़्या लड़ती नीं धापती।

दिन रात री इण रामांण अर दांतां कस्सी सूं संतोख जी भी पूरा ऐणाया गिया हा। एक दिन तो गुस्सा-गुस्सा में कह दियो कै मोटोड़ी! आप पराया टाबर माथै इत्तौ कांई गुमेज करो नै इतरी ममता जताओ। अरे बेटी री बाप खुद ही कीं काणो खोड़ो तो जणता। अबै थ्हांने माजना माफक रहेवण में सार है। लाड कंवर छाती में मूखी मार, धाड़ां पाड़ पल्ला लिया। पछै कांई ठा कांई धार रः मूण धार लियो।

दिनूंगे ऊठतां ही जीतू जी कुंवर नै सूतो देख रै रोजीना रा काम धन्धा माथै लाग गिया। लाड कंवर तो अबै कीं काम रै हाथ ही नीं लगावता। व्हां रै तो छाती उकल रही के रांड म्हारी ल्याओड़ी। अर म्हारी छाती मूंग दले। म्हारी बराबरी। तोलै म्हारी बराबरी कर थ्हनै बताऊं। थ्हनै म्हारी ममता नीं देखीजै तो थ्हूं भी कांई पाळ सकै। म्हारै जीवते जीव तो म्हैं थ्हने पूत बायरी बणा छोड़ हूँ। गुस्सा ही गुस्सा में मोखो देख रै कुंवर नै झोली में सूता का सूता ही राख दिया। थोड़ी देर पछै आप खूब ब्याळू पाणी कर कुंवर री घोड़ी कन्नै जा अर देख्यौ कै कठै हि कुंवर जीवतो तो नहीं है। मरबा रो पूरो भरोसो कर कै कुंवर जी तो आया जठै गिया। अबै लाडां जी लागा कूकण। अर जोर जोर सूं धाडां पाड़ पाड रोवण लागा। 'अरे म्हारी सौक रांड मार दियो रे म्हारा पूतं नै, म्हारे घर रा उजाला नै'। अरै म्हैं इण रै लारै घणा मन्सूबा बांध्या हा रे। अरे! इण रांड रै म्हारी ममता खाते नीं खतीजी। हत्मारी मार दियो रै म्हारा मौबी नै। अरै म्हैं आंख्यां नीं देख्यो व्हैतो तो सबर कर लेती पण म्हारै सांमी खा कड़कड़ी रै गळो मसोस दियो। क्हैती जावै ही कै म्हैं काम काज करूं कै थ्हारा पल्ला लेवूं।

अठी तो रोणो पीटणो न कसूर काडणो हाले हो। उठी नै कीं गांव रा पंचां पुळस में खबर कर दी वा तो पुलस आय टपकी। लाड कंवर रै आगे हो रै क्हैबा अर कीं लाड कंवर रै मन मेलू गांव रा लोगां रै क्हैबा सूं जीत कंवर माथै कुंवर री हत्या रौ अजाधर लगाय नै मुगदमों दर्ज कराय दियो। जीतू कंवर खूब क्हयौ सुण्यो पण पुलस कान ही नी दियो। जीतू कंवर रे भाई भतीजां ही लाड कंवर माथै मुगदमों लगायेण री सोची पण वकील कोई आंख्यां देख्यो गवाही नीं होवण सूं मुगदमों हारता। ईं वास्ते मुगदमों नीं लगायो। जीतू जी नै इण न्याव में उम्मर कैद री सजा मिली। अर जेल में चक्की पीसता। एक दिन जज साब ही बात रौ पाणी काढ़ र जीतू कंवर रा भाई न क्हयौ कै सिरकारी कचैड़ी में गवायां हालै। वकील लोग साव झूठी नै सांची बताय मुगदमा जीते। थ्है म्हारे क्हैवणां सूं एक काम करो कै गांव

न चौखळा री मोटी पंचायत राखौ अर चौखळा रा सैंग पंचो नै निंवतो अर पंचायत में 'पंच तो परमेश्वर रूप व्है' व्है थ्हांनै न्याव दिराय सके।

जद आ बात सब रे गले उतरी जद चौखळे री पंचायत थिरपी। दिन तिथ अर टेम मुकर कर मोटी पंचायत कराई। मुकर दिन माथै चौखळे रा नामी सैंग पंच न पंचायत री कारवाई देखण सुणन वाला सब गांव रै चौवटे में आय बिराज्या। सब पंच मिल रै एक सिरे पंच बणावण री बात सामी आई। संजोग ऐसौ पड्यो कै लाड कंवर रा भाई मल जी नै सिरे पंच चुण्या।

टेम सर गांव री पंचायत रा सर पंच ऊभा हो रै क्हैवण ढूका कै सैंग भाई सैण सुणो आज संतोख जी रे घर री राड़ मेटण नै आ चौखळा ही मोटी पंचायत थिरपीजी ही। म्है पंचायत रा सैंग पंच नै गांव रा सैणा डावा मिल रै ओ फैसलो करण तांई आज री पंचायत रा सिरेपंच खुद संतोख जी रा साला नै चौखळा रा नामी पंच 'मलजी' ने मुकर किया है। इण वास्ते पूरी पंचायत मलजी सूं अरदास करै कै व्है इण झगड़ा रौ न्याव व्हांरा अपणा हिसाब सूं करे। म्हांनै पूरी उम्मीद है कै व्है न्याव दूध रौ दूध न पाणी रौ पाणी करैला।

सरपंच साब री सैंग बातां सुण मल जी ऊभा हो रै क्हयौ, कै पंचों री राय तो सिर माथै पण अरदास है कै काल कलास म्हैं फैसलो करूं, क्यूं कै म्हारी तो सगी बैण ही इण झगड़ा में सामल । काले म्हारा न्याव नै नीं आदरै तो पछै म्हारी कांई इजतं रहसी। हां... जा पूरो गांव गवाड़ी घर बार, सग्गो सोई म्हारा न्याव न मानण त्यार व्है तो पंचायत री कारवाही में आ बात लिख र अंगूठा निसाणी करो तो म्हैं ओ न्याव करूं। नीं तो आप कोई दूजो सिरे पंच बणाय दिराओ। फैसला परवाण जो औरत गुनेगार निकले उण रै खलाफ सबने एकजुट होय नै गवाही भुगताणी पड़ेला।

सैंग हाजर पंच न बीजा जितरा लोग मोटी पंचायत में आया हा सगला एक बाणी बोल्या कै म्है सब गुवाही देवांला म्हांने आपरी सरत मंजूर है।

मल जी ले भगवान रौ नांव नै आपरौ इस्ट मनाय न बैनां रा ब्यान लेवण व्हीर हुया। प्हैल पोत व्है आप री सग्गी बैन लाड कंवर रै कन्ने जाय नै बात करतां करतां बैन न क्हयो कै म्हारी बैन आ तो म्हने ही ठा है कै इस्या करतब लख जी री लाडेसर न मल जी पंच री बेनड़ नीं कर सके। अहड़ा खोटा संस्कार उण घर सूं ले रै थोड़ी आई है। पंण इन बात नै पार पटकण पंचों नै सांच रौ परच्यौ तो देणो पडसी। आप यूं करो कै, सांच न किसी आंच, पंचायत रै बिचैकर होय रै, आपरौ घाघरौ जाडी पीड़ियां तांई ऊंचो ले रै निखल जाओ तो सैंग लोग जांण लेय कै आप कसूर वार नीं हो। आप नै कांई भौ। लाडेसर आ सौरी सरत जांण तुरंत त्यार व्हैगा अर मल जी सूं बोल्या कै ओ बीरा सांच नै कांई आंच म्है निखल नै त्यार हूँ। ल्यो, उठो- ऐ बातां तो पछै बैन भाई करता र्हैवां। पंचों नै क्यूं खोटी करां। मल जी पड़ूतर देवतां बैन नै समझाई कै इण में आगल मत करो, टेमसर म्हैं आपनै खबर कर बुलाय लेऊं। म्हनै थ्हारी सौक रा ब्यान तो लेवण दे। देखां कांई सांच बोले।

बैन लाडेसर सूं निवड़ नै मल सा जीतू कंवर रै सामी जाय बात चीत करतां करतां जाड़ी पींडी घाघरे नै ऊँचो ले र निखल ने री सरत राखी। तो जीतू कंवर खाय गुस्सो नै बोली ''बीरा थ्हांने आ बात आपरी बैन नै क्हैवतां औलज नीं आई। अरे नरभागी म्हने हतमारी तो आपरी बैनड़ बणाय दीवी। अबै थ्है आया म्हनै नागी रांड बणावण खातर। म्हैं हतमारी तो बण ही गी, सग्गा जाया न खागी। कांन खोल रै सुण लो बीरा ओ काम आज करूं न काल। आपरी मुरजी पड़ै ज्यूं फैसलो सुणाओ।

मल दोनूं री बातां ले र पंचायत में आयगा। अर भर पंचायत में ऊभा हो रै मल जी फैसलो सुणायो। पूरी पंचायत, चौखळे रा पंच अर गांव रा लोगां म्हारो फैसलो पंचायत रा भाई पानां में उतार लो। अर थ्है सब फैसलो सुण ने त्यार हो तो सुणो। 'टाबर नै म्हारी सग्गी बैण लाड कंवर मारयो है अर साव झूठो अजाधर जीतू कंवर माथै न्हांक्यो है। पंचायत सब पंचा अर गांव वालों की गवाही मांड मुगदमो लगाय दिवाओ'।

तमाम हाजर लोगां न पंचों एका साथै 'पंच परमेश्वर री जय', 'मल जी पंच री जै', 'मल जी पंच- जिंदाबाद' रा नारा बोल नै गांव गुंजाय दियो।

30-31 अलीनगर ब्यावर
(अजमेर)-305901

पाणी

❒ डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत

पाणी अमृत की घूंट, बचावै जीवन नै।
जंगळ-मंगळ वन खण्ड राँखो,
पेड़-पौधां को ध्यान राँखो,
वर्षा होवैली भरपूर।
बचावै जीवन नै.....

वन जंगळ का जीवन बचाओ,
ठोर-ठोर पर खेळी भराओ,
पीवै जंगल का जीव।
बचावै जीवन नै.....

नहर-नदी तळाव भराओ,
गंदगी सैं बानै बचाओ,
धरती म रहवैली सीम।
बचावै जीवन नै.....

कुआ बावड़ी बाँध बणाओ,
वर्षा जळ सैं बानै भराओ,
लैवो जन-जन री आशीष।
बचावै जीवन नै....

गळी-गळी म प्याऊ लगाओ,
परमारथ कर पुन्न कमाओ,
पाणी सब धरमां को मूल।
बचावै जीवन नै.....

भागीरथ गंगा नै ल्याया,
भारत भू नै स्वर्ग बणाया,
पीवां गंगा को नीर।
बचावै जीवन नै.....

वराह रूप धरती नै ल्याया,
जन-जीवन इ पर बपराया,
धरती पाणी को बीज।
बचावै जीवन नै.....

श्रीसर्वेश्वर भवन, नाँगल जैसाबोहरा
वाया-झोटवाड़ा, जयपुर-302040
मो. 8946838583

उडीक

❐ शिवशंकर व्यास

भरी दुपहरी उन्हाले तावड़ा री लाय मांय बूढ़ी मां मनीषा री आंख्यां री पुतलिया, पथराई सी आंख्यां अेकर कनै रैन बसेरा अर अैकर कनै खुला आसमान नै देख'री व्है। सामै शिवजी रा मन्दिर नै निहारता थका सोच री व्ही कै कई ओई संसार व्है, ओ ही परिवार व्है अर इण संसार मांय भगवान रो ही न्याव व्है कैई।

बूढ़ी माँ री आंख्यां सूं आंसूड़ा बारै टपकणनी चावै पण रोता-रोता वै भी सूखग्या व्हा। सोचता-सोचता उणरी आंख्यां उठै हीज रैन बसेरा री नाळा माथै लागगी। बा सोचती व्ही कै जिका म्हारा 4 टाबरा ने 9-9 माह कोख मांय पाली। खुद भूखी रैवती, बिना पाणी दूध रैवती, पैली गरभ मांय पळण वाला टाबरा सारू पूगतो अर जन्म लियोड़ा छोटा-छोटा (नैना) टाबरां ने खिळावणो व्हो। जिकां टाबरां ने सगळा आराम देवण सारू, खुद त्याग कर्‌यो, पाछो दूजो ब्याव भी नीं कर्‌यो; संस्कार दिया, खून रा घूंट पी'र समाज रा भेड़िया सूं लड़ती, इण सारूं कै कालै म्हारा काळजै री अै कोरा मोटी हुवैला, पढ़ैला, लिखैला, सगळा आपरै पगा माथै खड़ा हुवैला अर इण संसार रा सगळा सांतरा सात्विक सुख भोग सकै, बे भी आराम जिका म्है नी दे सकी म्हारे टाबरां ने मिलै। चांरू टाबरा ने काळजा सूं चिपकायोड़ी राखती किरी निजर नीं लागै।

पण ओ कांई हुग्यो.....? म्हारो दूध यूं तो नी हुय सकै, म्हारा संस्कार लाजां नी मार सके। ब्याव हुवता ही सगळा न्यारा हुवण लाग्या। घर ने म्हनै बिना पूछ्या ही बेचद्यो। म्हारै सूं चारूं टाबर अर बिनणियां धोखा सूं मकान ने बेचण रा कागदा माथै दस्तखत करवाय लिया।

आप-आपरा सामान आपरै ठिकाने पूगावण रै पछै म्है अेकली रैग्यी। सगळा एक दूज्या कनै देखै। अब काना-फुसी करै कै तीन-महीना तूं राख, तीन महीना म्है वो और तू राख। कित्ती क जीं की, मर्‌या पछै बांध्योड़ा नी रेवै।

पण पैली कुण राखै अर पछै कुण, बात बणी कोनी, सगळा सोचता लारै नम्बर आवैलो जदताई तो स्वरग सिधार ज्यासी। म्हनै नी बंधणो पड़सी। सगळा री बातां सुण माँ रो कळेजो फाटण लाग्यो, उणनै लाग्यो अबै मरस्यूं।

वां सोचण लागी खुद रा सगळा सुख छोड़ दिया, पाछे लाल जोड़ो टाबरां सारू नी पैरयो, चारू थे साथै राखी पाली आज वै ही म्हारो खून म्हारो बंटवारो करण चाल्या व्है।

हिवड़ा सूं आसीस निकली सगळा सुखी खुस रैवो, थानै बंधण री जरूरत नी व्है। माँ रो त्याग बारै आयो अर बोली, म्हनै वृद्धाश्रम छोड़ दो। सगळा राजी... बो दूर घणो व्हो। वै रैन बसेरा बारे गैला बणा'र छोड़ग्या....। माँ आपरै कपड़ा रै, मांयसूँ बींद री फोटु निकाळ'र सामै नाला माथै बैठी बैठी सामै शिवजी री मूर्ति सूं कीं चमत्कार री उडीक मांय बैठी व्है के किणीजी अेक टाबर नै तो म्हारे खून, म्हारै दूध री लाज आवैला किणीज अेक रो तो काळजो माँ सारू फाटेला, किणीज अेक बीनणी ने तो लागेला की म्है भी लुगाई हूँ। म्हारै भी तो टाबर हुवैला। जै म्हारै करम म्हारै माथै ही आग्या अर वै म्हनै भी किणीज रैन बसेरा माथै छोड़ग्या तो कांई हुवैला.....

एक दिन दो दिन, तीन दिन...तीन महिना हुग्या मां री 'उडीक' उडीक हीज रैगी।

व्याख्याता

लघुकथावाँ

❐ अमित श्रीमाली

दरद

किणी वगत री कलम कचरा पात्र सूं हाथ लागी, हाथ लगतां ई वा हुचकै भरीज'र रोवण लागी..। उण माथै हाथ फेर्‌यो- अठी-उठी सूं देखी.. अर'धीरे-सी रोवण रो कारण पूछ्यो? इतरौ दुख किण बात रौ?

कलम आंसू पोंछती पडूतर दीनौ.. म्हारौ दरद म्हे ई जाणूं म्हैं कदे ई ओ नी सोच्चौ क अेहड़ौ दुख ई आय सकै, कचरै पात्र में ठोड़। केवतां वा पाछी रोवण लागी। रोवती-रोवती बोलती- 'कोई वगत म्हारै साथे निब, जीभ, स्याही हुवती, सगळा मिळ'र मोती री भांत आखर मांडता..अरं वै सबूत बणता.. मानखों। बरसा ताई उणां माथै गुमेज करतौ उण रा आखर! अेहड़ा आखर! किणी रौ उद्धार हुवतौ- किणी रौ काचाण! आज पड़ता दिन! इणी कारणै आंसूड़ा मतैइ टपकै। सुणण वाळे डोकरै पडूतर देवतां ढाढस बंधवायो... थूं तो निर्जीव चीज है... मानखों गरज मिट्‌या भाव ई नी पूछै म्हैं जिकण नै जळम दीनौ आज वो इ आंख्यां तरे रै.. जाणे कद मरै कद मांचो खोळै।

बात समझतां कळम उडन छू हुयगी।

प्रेम

किणी फळसै माथै ताळौ पूरी मजबूती सूं लाग्यौ खुद रै कर्तव्य माथै न्यौछावर हुवण रौ गुमेज करतौ। उण नै इण बात रै पूरौ अंजस क म्हारै हुवतां कुण दोय माथा रौ जिको फळ सै में पग भर सकै! 'टूट जाऊँला.. पण झुकण रौ सवाल ई नी..।' पूरा प्रण लियोडौ इतरावतौ। लाख कोशीशां कर्‌यां वौ टस्स सूं मस्स नी हुवतौ इणां बीचै उण री खुद री इकळौती ताळी पौंछी। उणनै देखतां ताळौ मंद-मंद मुस्कावतां उणनै गळै लगायी...। हिवडे में ठौड़ दी नी. दोयूं रै बीचे मैळ हुयो। पक्कौ भरोसौ हुयां 'क' 'वा उण री है' ताळौ सगळौ न्यौछावर करतां खुद री बातां फैल्यायी..। फळसो खुस्यो.. अेहड़ै प्रेम ने देख'र देवतावां फूल बरसाया।

इण्या-गिण्या

प्लेटफॉर्म माथै आवती रेल ने देखतां मानखौ उतावळी में खुद रौ सामान संभाळतौ दौड़ भाग करण लागौ...। कोई कठै सूं ई चढ़ण री कोशिश करै.. कोई बारां सूं रुमाळ फैंकता हाथा जोड़ी करै, कोई बाथैड़ौ करतां नीं उमर रौ लिहाज राखै नी लुगाई बेन रो..।

दूजी खानी इण्या-गिण्या मिनख खुद रो सामान नेहचै सूं उछायां खुद रै डिब्बै आगल ऊभा... नेहचै सूं चढ़ै..। सामान जगै माथै राखतां 'सीट' साफ करतां शरीर रै फूंका देवै।

दोज्यूं दरसाव देखतां सवाळ उपड़ै-कांई आजादी रै पाछण आई वैवस्था है? इण्या-गिण्या आराम करे-अणूता दुख भोगै पगां पड़े.. पर सेवा रा टीपा पड़ै..। दूजै बोलां में इण्या-गिण्या रै हाथां मानवो बिकग्यौ।

नागेश्वर विद्या मन्दिर,
खाण्डप (बाड़मेर)

मरुधरां मांय-प्रकृति रा रंग ढंग

❒ मोहम्मद अमीन छींपा

मरुधरा मांय कुदरत आपां नै सैण सैण मांय हर बात नै गोखण रौ मौको देवै। प्रकृति री हर बात नै समझण रौ ज्ञान घणौ गजब रौ है। आपणां बडेरा प्रकृति रै ईं सन्देशै ने गौख लेतां घणकरो अन्दाजौ लगै टगै रहन्तो। अकाल पड़णै रौ अन्दाजौ आपणी खेजड़ली सूं लाग ज्यावतो। खेजड़ली अगर जेठ आषाढ़ मांय हरी होवै तो समझो आगै अकाल पड़सी। अर बडेरा आपरै आगे रै जुगाड़ मांय तैयारी करण लाग ज्यांवता। वाय रो अंदाज देख'र बिं रै चालण री दिसा सूं अंदाज करता। टेम रौ ठा तौ बिना घड़ी गै ही राखता। जकौ घणौ सटीक बैठतो। टेम रा न्यारा न्यारा नाम जिंया झांझरकों साढ़े चार बजे प्रातः रौ टेम। बड़ौ झांझरकौ प्रातः चार बजे रौ टेम। भाखपाटी प्रातः पांच बजे अर मुंड़ै अंधेरौ प्रातः साढ़े पांच बजे रौ टेम। तारियो उग्यो, भातै रौ टेम प्रातः 10 बजे रौ टेम। हांडी वगत सिंझया रा चार बजे अर चिलकारौ सिंझया रा साढ़े पांच बजै र लगै टगै रौ टेम। ईं रै अलावा सौपो रात रा 11 बजे रै आसै पासै, आधी रात रात रौ बिचाळौ अर समकरात मतलब पूरी रात। ह बारा चौबीस घंटा रा न्यारा न्यारा नांव। इंया ही पू'न यानी वाय रा चालण सूं सूण अर कसूण अर वाय रै चालण रै दिसावां सूं भी अन्दाजो आपणा बडेरा लंगावता जकौ सोळा आन्ना साची होवन्तौ। नूंवी पीढ़ी प्रकृति रै गोखण रै ईं ज्ञान स्यूं दूर होवण लागरी है। गोखण री आ विद्या घणी सोवणी अर मन मोवणी है। ऐ परम्परावां जीवन्त राखण जोग है। आपणा बडेरा हर म्हीनै री वाय अर बिरखा सूं होवण हाळी नफो अर नुकसान रौ ध्यान राखता। चैत रै म्हीनै हावेण हारै छांटा छिड़कै नै आच्छौ नीं मानता। कैबा चालै- 'चैत चिड़पड़ौ तो सावण निरमलौ।' कहण रौ मतलब चैत रे मांय जै छांटा छिड़कौ हो ज्यावे तो सावण सुखौ ही जावै। बिरखा नीं होवे। बैसाख रै मांय जे लुंआ चालै आपणौ हिवड़ौ हाळै पण आगै आच्छे जमानै रौ ठा चालै। बैसाख मांय आखातीज आवै, करसौ खेतां सूण करण जावै। कागडोड अर छींकला रा सूण आच्छा मानीजै। ईं सूं सांतरै समै रौ अंदाज होवै। घरां सात भांत रै अनाज रौ खीचड़ौ पकै। सगळा देवी अर देवतावां नै धोकिजै। घणी घणी मन्नता मांगीजै। जेठ रे म्हीने छांटो छिड़क्यो आच्छौ मानीजै। ईं छांटा छिड़कै ने मिरगपिया बोलिजै/करसौ बायतौ करै। तेड़ै रै अनाज मांय बाजरी बोइजै/अठै एक कैबा भी चालै-जेठ री बाजरी अर मौबी बेटो किं भागी नै ही मिलै। आसाढ़ री बातां न्यारी/आसाढ़ मांय चार पडुवा आवै। आसाढ़ रै पैले दिन पैली पडुवा बोलिजै। कैबा है-पहली पडुवा गाजी दिन बहत्तर री बाजी/आसाढ़ रै पहले दिन जै आभौ गाजै तो आच्छौ नी मानीजै अर पूरे बहत्तर दिन बिरखा नीं होवै।/ईंया ही दूजी तीजी पडुवा गाजी जड्यां मूल सूं भाजी/आसाढ़ बदी चौथ रे दिन बीज चमकै अर बादल गाजै तो बिरखा घणी होवण रौ अंदाज होवै। आसाढ़ रै म्हीनै बाद सावण सुरंगो आवै/सावण मांय आथुणी उतराधी वाय चालै आ अठै सूरौ बोलिजै/सूरौ सावण घणौ सुहावै चौखो बरसै मेह/सूरौ कहवे जे म्हैं तीन घंटा चाल ज्यांऊ तो खूंटे बंधैड़ै पाड़ा ने पाणी पिला दूं। तिसाया पांडा नै खोलण री जरुरत नीं पड़ै। जै सावण मांय आथुणी दिखणादी वाय चाल ज्यावै आ घणी माड़ी मानीजै। ईं रौ नांव झांझळी बोलिजै। झांझळी रौ दूजो नांव सामर वाल बोलिजै। सामरवाल रै चालण री मियाद होवै। तीन सात चौहदा इक्कीस दिन या तीन म्हीना। झांझळी भाखपाटी शुरू होवै। धीमी धीमी चालै उर दिन उगै सूं पैली नींद घणी आवै। भातै जागै घणों जोर पकड़ ज्यावै अर तेज आंधी रौ रूप ले लेवै। करसा री सावणी री फसल रौ नाश कर देवै। लंबी चाल ज्यावै तो अकाल रौ संकेत बण ज्यावै। अठै मरुधरा मायं झांझळी सूं जूड़ी एक कैबा भी चालै-एक गांव में एक बूढ़ी डोकरी/डोकरी वौ दो पूत/ दोनूं कुआंरा/कई साल बीतग्या/कोई बेटी रो बाप डोकरी रे पूतां ने छोरी देवण नीं आयौ/डोकरी घणी बूढ़ी। रात ने नींद नीं आवै। सोचै-जै म्हैं मरगी तो दोनू पूत कुआंरा रैहसी। बुढ़िया कनै दो तीन म्हीना रौ पिसा रो जुगाड़/जै दो तीन म्हीना बिरखा नहीं होवै तो डोकरी ने घबराण री जरुरंत नी एक रात बुढ़िया सूती ही/नींद नी आ री ही। बुढ़िया सोचो मेरो औ काम झांझळी करसी/झांझळी रौ दूजो नाम सामरवाल/सामरवाळ नै डोकरी बोली-

चाल चाल ऐ सामरवाळ।
मेरा सुत कुंआरा ब्याईजै।।

सामरवाल बुढ़िया री अरदास सुण ली अर चाल पड़ी। चाली इती कै थमण रौ नाम नी लियौ। बुढ़िया कनै जकौ रिपिये पिसा रौ जुगाड़ हो पूरौ हो यो अर बाद मांय दोनूं बेटा भूख सूं मर लिया। बुढ़िया घणी रोई/ पण सामरवाल नीं थमी। छेकड़ बोली-

चालती चालती सामरवाळ।
तू होगी घणी अकराळ।।
मेरा पूत कुंआरा जा सोया।
सरवरिया री पाळ।।

झांझळी माड़ी तो भादुड़ै मांय पुरवाई आच्छी मानी जै। परवाई सूं बिरखा घणी होवै। भादुड़ौ म्हीनौ जमानै रौ राजा होवै। भादुआ मास रै बाद आसौज आवै। आसौज मांय सूरौ ही झोळौ बण ज्यावै। झोलौ माड़ौ। सावणी री हरी फसलां नै मुरझा देवै। पण आसोज मांय मोख पाटणी आच्छी मानीजै। मोख मांय छिपते बगत रै सूरज री किरणां आभै नै चीरती आथूण सूं उगण जांवती दिसै। मोख पाटणै सूं घणी बिरखा होवै अर आगे साटी फसलां बोईजै।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. पटवा (हनुमानगढ़)
मु.पो. मलसीसर तह. भादरा
मो. 9828697696

हाइकू

❒ घनश्याम पारीक

- आंख्यां अदीठ
  कीं हेवौ
  -मतलबी

- गुड़-गोबर
  सब बरोबर
  -पोपां बाई रो राज

- रीत रो रायतो
  कोरी
  -भेड़-चाल

- काणी रो
  काजळ
  -ईमानदारी

- नकटा सूं तो
  उजला ही
  राम-राम
  -समझदारी

- कीड़ी ने कण
  हाथी ने मण
  -भगवान सब रो
  रूखालो

प्रधानाचार्य, सेवगों का मौहल्ला, मेड़तासिटी, नागौर
मो. 9413761361

काळा-बादळा

❐ ओम प्रकाश सैनी

काळा-काळा बादळा आकाशां डोलै रे,
खेत म खड्यो छै यो किसान बोलै रे।
सड़क किनारै यो पेड़ बोले,
नदी क किनारै यो मोर्‍यो बोलै,
आम की छाया म या कोयल बोलै,
बरसै कौनै बादळा तू कैयां डोलै रे।
खेत म खड्यो छै यो किसान बोलै रे
काळा-काळा बादळा आकाशां डोलै रे।

जेठ की दोपहरी में यो ताप बोलै,
आषाढ़ां का बादळा तू कैयां डोलै,
प्यासा मरता जानवर ये कुणनै बोलै,
भूखा मरता जानवर ये सूना डोलै रे।
खेत म खड्यो छै यो किसान बोलै रे
काळा-काळा बादळा आकाशां डोले रे

साग-सब्जी बळगी सारी महँगी होगी,
मटका में तो पानी कौनै बोतल महँगी,
बादळ की आस में दुनिया बसगी,
बैगो आजा बादळा तू कैयां डोलै रे।
खेत में खड्यो छै यो किसान बोलै रे
काळा-काळा बादळा आकाशां डोलै रे।

270, ग्रीन पार्क पथ नं. 2
बैनाड़ रोड, दादी का फाटक
झोटवाड़ा (जयपुर)- 302040
मो. 9929474602

स्कूल सरकारी

❐ रामकुमार वर्मा

चालो रे साथिड़ाँ आपाँ, स्कूल पढ़बा चालां रे,

बड़ी-बड़ी बिल्डिंगां सुविधा सारी रे,
स्कूल सरकारी, वाह-वाह स्कूल सरकारी
मोटा-मोटा कमरा माही, ऊपर पखाँ चाले रे।
दोपहरां के भोजन माही रोटी-दाल घाले रे।।
ताजी तरकारी, वाह-वाह स्कूल सरकारी,
चालो रे...... सरकारी।।1।।

मुफ्त में किताबां बांटे, फीस कोनी लागे रे।
छात्रवृत्ति दे सरकार, साईकल सागे रे।।
करल्यो सवारी, वाह-वाह स्कूल सरकारी,
चालो रे...... सरकारी।।2।।

छात्रा ने ईनाम गार्गी, लेपटॉप मिलसी रे।
होशियारां ने मोको, सबको चेहरो खिलसी रे।।
करल्यो तैयारी, वाह-वाह स्कूल सरकारी
चालो रे...... सरकारी।।3।।

बड़ी-बड़ी लाईब्रेरी अठे, किताबा ने लेल्यो रे।
खो-खो कबड्डी, वॉलीबॉल रोज खेलो रे।।
स्कूल म्हारी रे, वाह-वाह स्कूल सरकारी
चालो रे...... सरकारी।।4।।

वरिष्ठ अध्या., रा.उ.मा.वि. नोसर
जिला-बाड़मेर
मो. 9461083782

म्हारो प्यारो राजस्थान

❐ रामदेव बाबू 'यादव'

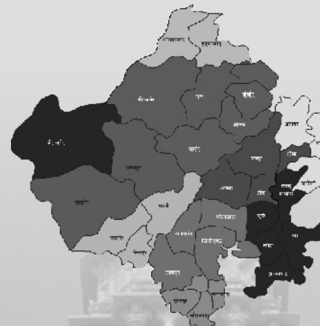

म्हारो प्यारो राजस्थान, म्हारो स्वर्ग राजस्थान

भामाशाह के त्याग रो राजस्थान
दुर्गादास की आन रो राजस्थान
प्रताप री शान रो राजस्थान
म्हारो प्यारो राजस्थान.....

गोरा बादल के बलिदान रो राजस्थान
अमरसिंह की राठौड़ी री राजस्थान
पद्मनी सी पटरानी रो राजस्थान
हाडी रानी के मुंडन रो राजस्थान
म्हारो प्यारो राजस्थान.....

मीरां री भक्ति रो राजस्थान
भर्तहरि की तपोभूमि रो राजस्थान
ब्रह्मा रो मंदिर पुष्कर राजस्थान
गरीब नवाज रो अजमेर राजस्थान
म्हारो प्यारो राजस्थान.....

भारत रो पेरिस जयपुर राजस्थान
झीलों की नगरी उदयपुर राजस्थान
गरमी रो माऊण्ट आबू राजस्थान
चम्बल के शेरों रो कोटा राजस्थान
म्हारो प्यारो राजस्थान.....

रणबांकुरों मरुधर राजस्थान
घना पक्षी विहार रो राजस्थान
खेजड़ली गांव री कुर्बानी रो राजस्थान
अरावली री मान रो राजस्थान
म्हारो प्यारो राजस्थान.....

सेवानिवृत्त (व.ले.प.)
मोतीपुरा, नसीराबाद (अजमेर)-305601
मो. 9214888256

मौसम री दोहावळी

❐ नरेश व्यास

मौसम पल-पल बदले छै, ज्यूं मंडी रा भाव,
दुपैरी लूं बाजै छै, सुबह-सायं सुहावं।।

सीळी-सीळी बायरी, हर मन ने भोळायं।
जाणे बिरखां पावणी, कितरां दिन बिसरायं।।

उन्हाळौ जबरो तप रियो, पाणी जा पूग्यो पाताळ।
इन्द्र राजा हट आवजो, ल्यो सब जीवां ने सम्भाळ।।

बळ-बळती या तावड़ी, अबै तो धीरज धर।
म्हें भी मिनख हां, डावड़ी, फरल्ये पाछी फर।।

बादळियां आती देखर, कोयल करे कुंकार।
बरखां थूं हट लावजे, सब जीवां री पुकार।।

भरी दुपैरी रे मायने, लूं लेवे है मजा।
बहे पसीनो डील सूं, अळायां देवे सजा।।6।।

छूंटी बायरी ज्यूं ही सा, धूळ उड़ी छै नभ रै मायं।
आँख्यां मच मच करण लागी, आंसूड़ां जद आयं।।

भरियां उन्हाळा रे मायने, काया गयी है सूख।
बरखां बणी है पावणी, कांई हुवी म्हांसू चूक।।

छाट्यां छड़क्या न्हांकगी भोळायगी बरखां।
बाट जोवती रेयगी, साजन बिन सजना।।

छूंटी बायरी एक दम, बादळी साथै ही ल्यै आई।
चीड़ी चुरकल्यां बोल पड़ी, सायद बरखां आई।।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय लडकी, रायपुर (भीलवाड़ा) **मो. 8764018111**

बाल साहित्य

संकट में है- पृथ्वी

❒ पुष्पा शर्मा

मैं पृथ्वी हूँ। आम बोल-चाल की भाषा में मुझे धरती माता भी कहते हैं। मेरा महत्व इसलिए भी है कि मैं सौर परिवार की एक सदस्य हूँ, जिस पर ही जीवन है। मैं एक पिण्ड मात्र नहीं बल्कि विविधता युक्त एक प्राणदायक ग्रह हूँ लेकिन आज मैं खून के आँसू रो रही हूँ। मेरी ही संतानें ने अपनी जिन्दगी को खूबसूरत बनाने के जुनून में मुझे जहन्नुम में पहुँचाने का कर्म कर रही हैं। अगर ऐसा ही रहा तो आप सभी को मेरी आवश्यकता पड़ेगी, पर सोचो... क्या यह संभव है? 700 करोड़ से ज्यादा हो चुकी है विश्व की जनसंख्या और 2 लाख लोग प्रतिदिन मेरे ऊपर बढ़ रहे हैं।

मैं वस्त्र धारण नहीं करती लेकिन फैशन की दीवानगी को पूरा करने के लिए मेरे संसाधनों का जिस बेदर्दी से दोहन हो रहा है हर क्षण बढ़ती भौतिक संसाधनों की मांग के बोझ से मेरा दम फूल रहा है।

औद्योगिक संचार क्रान्ति ने जहाँ वैश्वीकरण में अहम् भूमिका निभाई, वहीं ई. कचरे का ढेर लगा दिया कबाड़ हुए कम्प्यूटर, वातानुकूलित साधन (ए.सी.), मोबाइल फोन आदि उपकरण खराब होने पर फेंक दिए जाते हैं जो मेरा वजन बढ़ा रहे हैं। उसी का परिणाम कैंसर, गर्भपात, ग्लोबल वार्मिंग, खनिजों का अकाल....। शायद हे देव पुत्रों तुम्हें अभी यह सामान्य समस्या लगे लेकिन इन चिन्ताओं पर चिन्तन नहीं किया तो यह सुरसा के मुँह की भाँति विकराल हो सकती है।

मेरे आंचल में ही तुम्हें आसरा मिला और आज मेरे सन्तानें ही मेरा विनाश करने पर तुली हुई हैं ऐसे कई भयावह उदाहरण है जब मनु सन्तानों ने अपने लालच व लापरवाही के चलत प्रकृति व धरा को कहीं का नहीं छोड़ा और उसका फल भी भुगतना पड़ा।

क्षीर दायिका होने के नाते मैं धाय माँ हूँ लेकिन क्षीर समान निर्मल गंगा जल में भी शव-शेष, कूड़ा-कचरा डालकर उसे दूषित कर दिया है अब तो वैज्ञानिक भी मानने लगे है कि मेरे क्षीर (गंगा का जल) का बायोलॉजिकल ऑक्सीजन

स्तर 3 डिग्री से बढ़कर 6 डिग्री हो गया है।

विरोधाभास की पराकाष्ठा तो देखिए एक ओर तो गंगा बचाओ अभियान चल रहा है। दूसरी ओर आपाधापी में शौचालयों का निर्माण हो रहा है मैं पूछ रही हूँ कि आखिर वेस्ट डिस्पोजल (मल-निस्तारण) के लिए क्या उपाय किए गए हैं? स्वच्छता का मूल सिद्धान्त है कि मल-मूत्र दूसरों के सम्पर्क में नहीं आना चाहिए। मेरे जल में प्रदूषण का मुख्य कारण उसमें बहाया जाने वाला मल-मूत्र है।

ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय के निर्माण में सीवरेज का समुचित ध्यान नहीं रखा जाता है जिसका परिणाम शौचालय के बने सोकपिट भी मेरे भू-जल को प्रदूषित कर रहे हैं।

हे आर्य पुत्रों... इस सत्य से तुम दूर नहीं भाग सकते कि समय के साथ तुमने मेरा प्राकृतिक सन्तुलन बिगाड़ा है। ये पर्यावरण तन्त्र को भुलाने का स्पष्ट नतीजा है। मेरी खूबसूरती एवं सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए तुम्हें ही संजीवनी की खोज करनी होगी, तुम्हें ही अपनी धरती माँ का ख्याल रखना होगा। मुझे दूषित करना मेरे प्रति हिंसा है धर्म की दृष्टि से भी यह कृत्य हेय है।

सहस्रों उपकार करने वाली धरती माँ... मैं सभी भारतीयों से वचन मांगती हूँ कि मुझे प्रदूषण मुक्त बनाए रखने के साथ स्वच्छ एवं स्वस्थ सोच के साथ ही मेरे कल्याण के लिए प्रयासरत रहेंगे क्योंकि मेरे कल्याण में ही मेरी सन्तानों का कल्याण निहित है। शुभाशीष के साथ... प्रकृति की ओर लौटो... शतायु हो।

अध्यापक
गीता भवन मार्ग, जनता कॉलोनी
दण्ड का रास्ता, केकड़ी, अजमेर
मो. 8003365699

भारतीय करेंसी नोट एवं उसका इतिहास

❐ भारत भूषण गुप्ता

भारत में आधिकारिक रूप से व्यापारिक गतिविधियों के लिए एवं मौद्रिक संचालन को व्यवस्थित एवं सुगम करने हेतु धातु के सिक्कों के स्थान पर कागज के नोटों का प्रचलन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल में विभिन्न निजी बैंकों के माध्यम से प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम 1770 में बैंक ऑफ हिन्दुस्तान के द्वारा बैंक नोट जारी किए गए। शनैः शनैः अन्य बैंकों द्वारा भी नोट जारी किए जाते रहे।

ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान जारी नोटों पर राजा का चित्र अंकित होता था एवं उस समय 1, 5, 10, 100, 1000, 5000 एवं 10 हजार मूल्य के नोट जारी होते थे। वर्ष 1935 में रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना हुई एवं 1938 से 2, 5, 10, 100, 1000, 5000 एवं 10 हजार के नोट जारी करने का अधिकार रिजर्व बैंक को प्राप्त हुआ।

एक रुपया का नोट भारत सरकार द्वारा जारी होता है। उस पर भारत सरकार के वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते हैं। 2, 5, 10, 20, 50, 100, 500 तथा 1000 के नोट जारी तो रिज़र्व बैंक करती है लेकिन ये एक प्रकार से बिल ऑफ एक्सचेंज के रूप में जारी होते हैं जिस पर रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं एवं केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रत्याभूत होते हैं।

विधि मान्य मुद्रा किसे कहते हैं ?

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी प्रत्येक बैंक नोट (रु. 2, रु. 5, रु.10, रु. 20, रु. 50, रु.100, रु. 500 और रु.1000) भुगतान के लिए अथवा उस पर अंकित मूल्य के लिए पूरे भारत में कहीं भी विधि मान्य मुद्रा होगी और भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 26 की उप-धारा(2) में निहित प्रावधानों के अनुसार केंद्र सरकार द्वारा प्रत्याभूत होगी।

मैं अदा करने का वचन देता हूँ इस खंड का अर्थ क्या है ?

भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 26 के अनुसार, भारतीय रिज़र्व बैंक बैंकनोट का मूल्य अदा करने के लिए जिम्मेदार है। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा, मांग पर यह अदायगी बैंक नोट जारीकर्ता होने के नाते है। भारतीय रिज़र्व बैंक पर बैंकनोट के मूल्य की अदायगी का यह दायित्व किसी संविदा के कारण नहीं अपितु सांविधिक प्रावधानों के कारण है।

बैंकनोट पर मुद्रित वचन खण्ड अर्थात ''मैं धारक को 'क' रुपये अदा करने का वचन देता हूँ'' एक वचन है जिसका अर्थ है कि वह बैंकनोट उस निर्दिष्ट राशि के लिए विधि मान्य मुद्रा है। भारतीय रिज़र्व बैंक का दायित्व है कि वह उस बैंकनोट के विनिमय में उसके मूल्य के बराबर राशि के निम्न मूल्यवर्ग के बैंकनोट अथवा भारतीय सिक्काकरण अधिनियम, 2011 के अंतर्गत विधि मान्य अन्य सिक्के दें।

भारतीय करेंसी नोटों का मुद्रा कार्य निम्न पाँच प्रतिभूति प्रेस (Security Press) में होता है।

1. करेंसी नोट प्रेस, नासिक (महाराष्ट्र)
2. बैंक नोट प्रेस, देवास (मध्यप्रदेश)
3. भारतीय नोट मुद्रा निगम (प्रा.) लिमिटेड, सलबोनी (प.बंगाल)
4. भारतीय नोट मुद्रा निगम (प्रा.) लिमिटेड, मैसूर (कर्नाटक)
5. वाटर मार्क पेपर मैन्यूफेक्चरिंग मिल, होसंगाबाद (मध्यप्रदेश)

1997 तक सभी नोटों पर अशोक स्तम्भ मुद्रित होता था। इसी वर्ष से अशोक स्तम्भ के स्थान पर महात्मा गाँधी की फोटो वाले नोट छपने लगे जो कि आज तक निरन्तर जारी हो रहे हैं। समय-समय पर सुरक्षा की दृष्टि से एवं अन्य कारणों से नोटों की बनावट एवं मुद्रण में परिवर्तन किया जाता रहा है।

दृष्टिहीन व्यक्तियों की सुविधा के लिए गाँधी प्रोफाइल वाले नोटों में कुछ अतिरिक्त चिह्न छपने प्रारम्भ हुए थे।

20 का नोट	आयताकार चिह्न	▮
50 का नोट	चोकोर चिह्न	■
100 का नोट	त्रिभुज चिह्न	▲
500 का नोट	डॉट	●
1000 का नोट	चतुष्कोण	◊

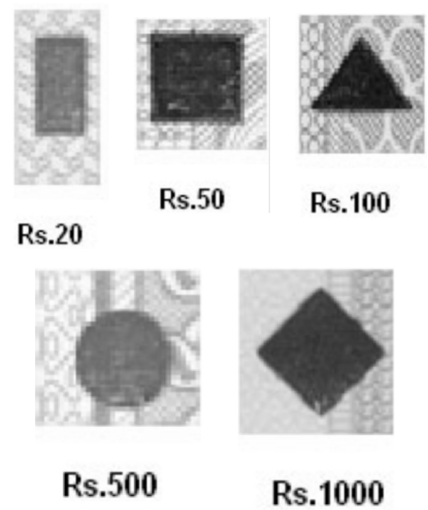

उक्त चिह्नों की छपाई उभारदार होती है। इन पर अंगुली फिराने से स्पष्ट रूप से नोट पहचाना जा सकता है कि यह कितने मूल्य का है।

1987 से 500 के नोटों का प्रथम मुद्रण प्रारम्भ हुआ एवं 1997 में 1000 के नोट का पुनः मुद्रण प्रारम्भ किया गया। 2005 से सभी नोटों पर पीछे की ओर मुद्रण वर्ष छपना प्रारम्भ हुआ तथा Visible Security Thread भी लगाना प्रारम्भ हुआ।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि वर्तमान में जो नोट जारी होता है वह पेपर सेण्डविच के रूप में मुद्रित होता है। आपकी सुविधा के लिए 100 रुपये के नोट का प्रारूप दर्शा रहे हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक

मुद्रा प्रबंध विभाग

अपने बैंक नोटों को जानिए

डॉ. वाई.वी. रेड्डी, गवर्नर के हस्ताक्षर वाले महात्मा गांधी श्रृंखला के अतिरिक्त/नई सुरक्षा विशेषताओं वाले जारी 100 रुपए मूल्य-वर्ग के बैंकनोट

सुरक्षा विशेषताएं

अग्रभाग

ऑमरॉन फीचर - प्रतिरूप (नकल)-रोधक विशेषता

इस विशेषता के कारण ऐसे बैंकनोट की कलर फोटो-कॉपियर से कॉपी करने पर कागज पर अलग रंग की छाया आती है। यह विशेषता नोट के अग्रभाग पर भारतीय रिज़र्व बैंक के नाम के दोनों तरफ और पृष्ठभाग पर दाहिने हाशिये पर छोटे छल्लों के रूप में नज़र आती है।

दोनों ओर छपे चिह्नों का सटीक मेल

वाटरमार्क विंडो के तुरंत बाद एक खड़ी पट्टी के बीचोबीच नोट के अग्रभाग और उसके पृष्ठभाग पर मुद्रित फूलदार डिज़ाइन में मूल्य वर्गीय अंक "100" लिखा हुआ है। अंक का आधा हिस्सा अग्रभाग पर और आधा पृष्ठभाग पर मुद्रित है। मूल्य-वर्ग दर्शाने वाले दोनों मुद्रित हिस्से एक दूसरे पर इस तरह से सटीक छपे हैं कि नोट को रोशनी के सामने देखने पर ऐसा लगता है कि यह एक ही अंक है।

पहचान चिह्न

उन्नत इंटैग्लिओ प्रिंट में एक त्रिभुज है जिससे दृष्टिहीन व्यक्तियों को मूल्य-वर्ग पहचानने में आसानी होती है।

वाटरमार्क खिड़की

इस भाग में महात्मा गाँधी का चित्र, बहु-दिशात्मक रेखाएं तथा मूल्यवर्गीय अंक 100 प्रदर्शित करनेवाला इलेक्ट्रोलाइट वाटरमार्क दिखाई देता है और बैंकनोट को रोशनी में रखकर इन्हें बेहतर देखा जा सकता है।

इंटैग्लिओ प्रिंटिंग

महात्मा गाँधी का चित्र, भारतीय रिज़र्व बैंक की सील, गारंटी और वचन खण्ड, बाईं ओर का अशोक स्तंभ का प्रतीक चिन्ह, बैंक नोट पर भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर तथा दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिये मूल्य-वर्ग जानने हेतु पहचान-चिह्न इंटैग्लिओ प्रिंट में अर्थात् "उभरी हुई छपाई में" मुद्रित है, जिन्हें छूकर महसूस किया जा सकता है।

गुप्त प्रतिमा

नोट को आँख की सीध में रख कर देखने पर महात्मा गाँधी के चित्र के पीछे वाली खड़ी पट्टी में अंक "100" की एक गुप्त प्रतिमा दिखायी देती है।

माइक्रो लेटरिंग

महात्मा गाँधी के चित्र और खड़ी पट्टी के बीच के क्षेत्र में मैग्नीफाइंग ग्लास से अक्षर "RBI" और अंक "100" देखे जा सकते हैं।

सुरक्षा धागा

महात्मा गाँधी के चित्र की बाईं ओर सुरक्षा धागा है जो कि आंशिक रूप से अंदर और आंशिक रूप से बाहर दिखायी देता है। 2 मि.मी. चौड़ाई का एक विशेष प्रकार से रंग बदलने वाला सुरक्षा धागा जिस पर 'भारत' और 'RBI' लिखा हुआ है। नोट को अलग-अलग कोणों से देखने पर इस सुरक्षा धागे का रंग हरे से बदलकर नीला हो जाता है। नोट का पृष्ठभाग तथा अग्रभाग पर अंकित पाठ अल्ट्रावायलेट रोशनी में पीले रंग का चमकीला दिखायी देता है। नोट को रोशनी में रखने पर सुरक्षा धागा पीछे से एक सतत रेखा जैसा दिखायी देता है।

पृष्ठभाग

प्रतिरूप (नकल)-रोधक विशेषता

मुद्रण वर्ष बैंक नोट के पृष्ठ भाग पर दिखायी देता है। 2005

अग्रभाग | पृष्ठभाग

दोनों ओर छपे चिह्नों का सटीक मेल

अन्य विशेषताएं

चमकीलापन

बैंकनोट के संख्या पटल चमकीली स्याही से मुद्रित है। बैंकनोट में चमकीले रेशे हैं। अल्ट्रावायलेट रोशनी में ये दोनों देखे जा सकते हैं।

कागज

बैंकनोट कॉटन और कॉटन के रेशे मिश्रित एक विशेष वाटरमार्क पेपर पर मुद्रित किया जाता है जिससे कि बैंकनोट को छूने पर एक अजीब अनुभूति होती है और नोट में कड़कड़ाहट की आवाज आती है। नई श्रृंखला वाले 100 रुपये के बैंकनोट की छपाई के लिए प्रति वर्ग सें.मी. वजन को बढ़ाने के साथ - साथ अधिक मोटाई वाले कागज का प्रयोग किया गया है।

अगस्त 24, 2005 © भारतीय रिज़र्व बैंक, मुद्रा प्रबंध विभाग, मुम्बई

100, 500 एवं 1000 के नोटों पर अधिक सुरक्षा एवं नेत्रहीनों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए दो और परिवर्तन किए हैं जो इस प्रकार हैं–

स्टार शृंखला के बैंक नोट

अगस्त 2006 तक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी नए बैंक नोटों को क्रमानुसार नंबर दिए गए थे। प्रत्येक बैंकनोट पर अंक और अक्षर/अक्षरों से बने एक उपसर्ग सहित विशिष्ट शृंखला संख्या होती है। बैंकनोटों को पैकटों में जारी किया जाता है, जिसमें 100 नोट होते हैं।

बैंक ने दोषपूर्ण मुद्रित बैंक नोटों के प्रतिस्थापन के लिए, 'स्टार शृंखला' संख्यांकन प्रणाली को अपनाया है। स्टार शृंखला के बैंकनोट महात्मा गाँधी शृंखला के विद्यमान बैंक नोटों जैसे ही हैं, केवल उनमें एक अतिरिक्त विशेषता है अर्थात उपसर्ग और नंबर के बीच के स्थान पर संख्या पैनल में नीचे दर्शाए गए अनुसार एक* (स्टार) है।

2005 से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्वच्छ नोट पॉलिसी जारी की गई इसके अनुसार बैंक नोट पर किसी भी प्रकार का लेखन अथवा स्टेपल किया जाना दण्डनीय अपराध घोषित किया गया साथ ही इस प्रकार की मुद्रा जिस पर कुछ लिखा हुआ हो वह विधिक मुद्रा नहीं रह जाती है एवं बैंक इस मुद्रा को स्वीकार करने से मना कर सकते हैं।

इस पालिसी की पालना में बैंक नोट के पैकेट सिलाई किया जाना एवं स्टेपल किया जाना बन्द हो गया है। सन् 2005 से पूर्व जारी सभी बैंक नोट जून 2016 तक विधि मान्य रहेंगे इसके बाद इनका चलन बन्द हो जाएगा। अत: आर.बी.आई. के निर्देशानुसार बैंकों में जमा उक्त नोट पुन: प्रचलन हेतु नहीं दिए जाते हैं एवं सामान्य जन से भी यह अनुरोध किया गया है कि किसी भी असुविधा से बचने के लिए वे 2005 से पूर्व के नोट नए नोटों से बदलवा लेवें।

बार-बार लोगों के हाथ में आने के कारण नोट गन्दे हो जाते हैं एवं शीघ्र ही फट भी जाते है अत: विदेशों की तरह भारत में भी शीघ्र ही प्लास्टिक के नोट भी प्रचलन में आने लगेंगे। इसकी शुरूआत दस रुपये मूल्य के नोट से होगी।

हम सभी का दायित्व है कि मुद्रा का मूल्य बनाए रखने के लिए इस पर किसी प्रकार का लेखन न कर साथ ही इसे तोड़े-मोड़ें नहीं। विदेशों में तो यह व्यवस्था है कि अगर करेंसी नोट पर कुछ लिखा हो अथवा वह मुड़ा हुआ हो तो विधिग्राह (Legal tender) नहीं होता है भारत सरकार भी यही नियम शीघ्र ही लागू करने का सोच रही है। अत: हमें भी सर्तक हो जाना चाहिए।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अरब देशों बर्मा एवं नेपाल में भी भारतीय मुद्रा निर्बाध रूप से प्रयोग में ली जाती थी। अब भी नेपाल में भारतीय करेंसी नोटों का सामान्य रूप में प्रयोग होता है।

आइए अब हम भारतीय सिक्कों के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त करें।

सबसे पहले जाने सिक्का क्या है ?

एक निश्चित वजन, साइज एवं धातु का टुकड़ा जो कि सामान्यत: गोल होता था वह सिक्के के रूप में प्रचलित हुआ एवं धातु की कीमत के आधार पर उसका मूल्य निर्धारित होता था। इस पर जारी किए जाने वाले का विशेष पहचान चिह्न मुद्रित होता।

विभिन्न रियासतें एवं देश व्यापार की सुगमता के लिए विधि-मान्य सिक्के जारी करते थे जिस पर उसका राज्य चिह्न एवं नाम अंकित होता था।

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत की लगभग सभी बड़ी रियासतों द्वारा सिक्के जारी किए गए थे। सामान्यत: छोटे सिक्के, तांबे के एवं चांदी के होते थे। एक रुपये मूल्य का सिक्का चाँदी का ही होता था। 15 रुपये की एक मोहर होती थी जो सोने की होती थी।

सिक्के की बनावट को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

Mint Mark

पृष्ठ भाग पीछे का भाग

पृष्ठ भाग : सिक्के के इस ओर देश अथवा राज्य का प्रतीक चिह्न मुद्रित होता है। तथा उस देश का नाम लिखा होता है। टॉस करते समय इस भाग को हैड कहा जाता है।

पीछे का भाग : सिक्के के पीछे के भाग पर सिक्के का अंकित मूल्य, जारी करने का वर्ष तथा Mint Mark होता है। टॉस करते समय इस

भाग को टेल कहा जाता है।

Mint Mark : यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण निशान होता है। इससे पता चलता है कि यह सिक्का किस टकसाल (Mint) द्वारा जारी किया गया है। वर्तमान में भारत में चार टकसाल में ही सिक्के मुद्रित होते हैं उनके चिह्न इस प्रकार हैं–

मुम्बई – ♦

कलकता – कोई चिह्न नहीं,

नोएडा – ●

हैदराबाद – ★

स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में निम्न मोनेटरी सिस्टम लागू था –

3 पाई = 1 पैसा, 4 पैसा = 1 आना, 16 आना = 1 रुपया, 15 रुपया = 1 मोहर

भारत की स्वतन्त्रता के बाद दशमलव प्रणाली लागू होने पर 1957 से इसमें इस प्रकार परिवर्तन हुआ। 100 नये पैसे = 1 रुपया

1 जून 1964 से नया पैसा के स्थान पर पैसा शब्द प्रयुक्त होने लगा।

भारत सरकार द्वारा 1, 2, 3, 5, 10, 25 एवं 50 पैसे के सिक्के जारी किए जाते थे। लेकिन मुद्रा स्फीति के कारण धीरे-धीरे इनकी उपयोगिता कम होती चली गई। अब केवल पचास या अधिक पैसे का सिक्का ही चलन में है। इससे छोटे सिक्के विधि मान्य नहीं है।

भारतीय सिक्काकरण अधिनियम 2011 के अनुसार भारत सरकार अधिकतम 10 रुपये का सिक्का चलन हेतु जारी कर सकती है। वर्तमान में 50 पैसे, एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया तथा दस रुपया का सिक्का चलन में है।

वर्तमान में सरकार द्वारा तीन प्रकार के सिक्के जारी किए जाते हैं :

1. **प्रचलन योग्य सिक्के**–सामान्य लेनदेन में प्रयुक्त होने वाले सिक्के इनकी ढलाई में बहुत अधिक सावधानी नहीं बरती जाती है।
2. **स्मारक सिक्के**–इस प्रकार के सिक्के किन्हीं विशेष अवसरों पर जारी किए जाते हैं एवं इनका सामान्य सिक्कों के जैसा पुन: मुद्रण नहीं होता है। विशेष रूप से संग्रह हेतु जारी होते हैं तथा प्रचलन में भी रहते हैं।
3. **अप्रचलित स्मारक सिक्के**–ये सिक्के केवल संग्रहण हेतु ही जारी होते हैं एवं इनमें सामान्यत: चांदी का अंश अधिक होता है तथा इनका निर्गमन मूल्य अंकित मूल्य से कई गुना अधिक होता है। अत: सामान्य लेनदेन में इनका प्रयोग नहीं होता है। इनकी ढलाई में विशेष ध्यान रखा जाता है तथा सामान्य लोगों में इसकी उपलब्धता भी नहीं रहती है। अभी तक जारी सिक्कों का मूल्यवर्ग इस प्रकार है–

10, 20, 50, 60, 75, 100, 125, 150, 200 एवं एक हजार रुपया।

करेंसी नोट एवं सिक्कों का संग्रहण एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य हैं इसे 'हॉबी ऑफ किंग्स' (Hobby of Kings) का दर्जा प्राप्त है। लेकिन इसकी वजह से ही हमारी विरासत सुरक्षित रह पाती है। हमें भी इस ओर ध्यान देना चाहिए एवं अपनी विरासत को संरक्षित करने में सहयोग देना चाहिए।

(डाक टिकट, करेंसी नोट एवं सिक्कों के संग्रहकर्ता)
2-डी-81, जय नारायण व्यास नगर, बीकानेर
मो. 9414429219

प्लास्टिक सर्जरी के जनक

❒ भूरमल सोनी

कहा जाता है कि 26 शताब्दी पहले 'सुश्रुत' ने कटी नाक को ठीक करने के लिए गाल का माँस काटकर उस स्थान पर दवाओं की सहायता से लगाया था। जो कुछ सुश्रुत ने किया वह आज आधुनिक युग के प्लास्टिक सर्जन करते हैं। यह सब प्राचीन महान चिकित्सक 'सुश्रुत' की ही देन है। वास्तव में उन्होंने जो किया उसके लिए सम्पूर्ण विश्व प्लास्टिक सर्जरी का पितामह कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा।

सुश्रुत का जन्म ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व हुआ। ये वैदिक ऋषि विश्वामित्र के वंशज थे। उन्होंने वैद्यक और शल्य चिकित्सा का ज्ञान वाराणसी में दिवादास धन्वंतरि के आश्रम में प्राप्त किया। यहाँ शल्य चिकित्सा के साथ वैद्यक की अन्य शाखाओं का अध्ययन कर विशेष महारत हासिल की थी। इनके द्वारा लिखित 'सुश्रुत संहिता' में ऐसा चिकित्सा ज्ञान है जो आज भी प्रासंगिक है। आठवीं शताब्दी में 'सुश्रुत संहिता' का अरबी भाषा में अनुवाद भी किया गया। इन

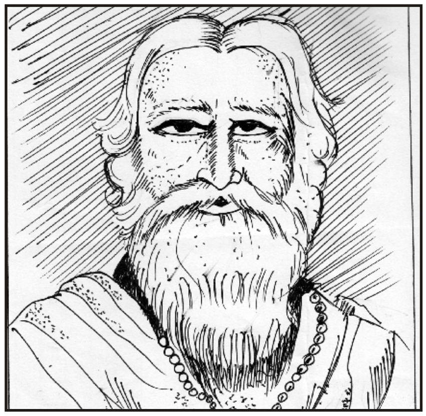

पुस्तकों में 'किताब सुसुरद'और 'किताब-शाशून-ऐ' हिन्दी प्रमुख है।

सुश्रुत प्रथम चिकित्सक थे जिन्होंने शल्य-क्रिया का प्रचार किया। टूटी हड्डियों को जोड़ने, मोतियाबिन्द व पत्थरी निकालने की शल्य-चिकित्सा में सुश्रुत बहुत दक्ष थे। उन्होंने शल्य क्रिया में सबसे पहले उपकरणों को गर्म करने की सलाह चिकित्सकों को दी जिससे कीटाणु मर जाएँ और अन्य प्रभाव न उत्पन्न करे।

अपनी संहिता में सुश्रुत ने 101 अलग-अलग प्रकार के उपकरणों का विवरण भी दिया है जो आधुनिक सर्जन के स्प्रिंग फारसेप्स या काटने, पट्टी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाली फारसेप्स चिमटियों के पूर्व रूप में है।

'सुश्रुत' औजारों के नाम जानवरों और पक्षियों पर रखते थे जिनकी शक्ल से वे मिलते थे। उन्होंने वास्तविक शल्य चिकित्सा से पहले जानवरों पर व शवों पर शल्य क्रिया का अभ्यास करना उचित बतलाया।

कला शिक्षक, रा.आ.उ.मा.वि.
पलाना, बीकानेर(राज.)
मो. 9252176253

उपहार

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

आज राजू बेहद प्रसन्न था। आज उसका जन्मदिन जो था। राजू के जन्मदिन की तैयारी बड़े जोर-शोर से की गई। बंगले पर वेल डेकोरेशन किया गया। बफर डिनर की व्यवस्था अलग से की गई। राजू के कपड़े और सूट अलग से ही रखे थे। जन्मदिन के कार्ड तो दो दिन पहले ही बँट चुके थे।

इतना सब कुछ होने के बाद अचानक राजू को याद आया कि वह अपने अभिन्न मित्र शैलेन्द्र को तो भूल ही गया। शैलेन्द्र राजू का सहपाठी था। वह गरीब जरूर था। लेकिन पढ़ने में होशियार था। पढ़ने-पढ़ाने में वह राजू की मदद भी करता था।

शैलेन्द्र का ध्यान आते ही राजू उसके घर जा पहुँचा। जाते ही उसने जन्मदिन के प्रोग्राम के बारे में बताया तथा पार्टी में आने का निमंत्रण भी दिया। जाते-जाते राजू ने कहा-'देख लेना यदि तू न आया तो समझ लेना तेरी मेरी कुट्टी।'

शैलेन्द्र ने विश्वास दिलाते हुए कहा-''अरे यार! तेरे जन्मदिन की पार्टी में तेरा दोस्त नहीं आएगा तो और कौन आएगा? तू चिंता मत कर, मैं जरूर आऊँगा।''

शैलेन्द्र ने राजू के जन्मदिन पर जाने का वादा तो कर लिया। लेकिन अब उसके सामने समस्या यह थी कि वह राजू को उपहार में दे तो क्या दे? पैसे-कौड़ी तो उसके पास थे नहीं कि वह कुछ खरीद सके।

काफी सोच विचार के बाद उसे ध्यान आया कि उसके पास एक अच्छा सा पेन है। जो स्कूल में फर्स्ट आने पर प्रधानाध्यापक जी की ओर से उसे इनाम में मिला था। बस शैलेन्द्र ने यही छोटा सा उपहार देने का निर्णय किया।

पेन को सहेज कर शैलेन्द्र ठीक समय से पूर्व राजू के घर पहुँचा। तभी उसने देखा राजू के रसोई घर से तेज धुआं निकल रहा था। धुएं के साथ-साथ आग की लपटें भी निकल रही थी। शायद आग लग गई थी।

शैलेन्द्र तेजी से रसोई घर की ओर बढ़ा। उसने देखा आग की लपटें बढ़ती ही जा रही थीं। शायद खाना पकाने की गैस टंकी से गैस लीक होकर बाहर निकल रही थी।

शैलेन्द्र ने आव देखा न ताव हिम्मत करके गैस की टंकी को उठाकर खिड़की से बगीचे की ओर फेंक दी तथा तत्काल दौड़ कर राजू और उसकी माँ को बचाया। तब तक नौकर चाकर तथा फायर ब्रिगेड की गाड़ी भी आ चुकी थी। जैसे-तैसे आग पर काबू पा लिया गया।

जन्मदिन के उत्सव में आये सभी मेहमानों ने शैलेन्द्र के साहस और हिम्मत की प्रशंसा की तथा उसे शाबासी दी। शाम को विधिवत राजू का जन्मोत्सव मनाया गया। सभी ने उसे उपहार दिए। शैलेन्द्र ने भी राजू को पेन उपहार दिया।

राजू ने पेन लौटाते हुए कहा-''शैलेन्द्र! मैं जानता हूँ, यह पेन तुम्हें स्कूल में फर्स्ट आने पर मिला था। इसे तुम ही रखो। यह तुम्हारे परिश्रम का पारितोषिक है। मुझे तुम्हारी ओर से उपहार मिल चुका है। आज तुमने मेरी और मेरी माँ की जान बचाई। यही मेरे लिए सबसे बड़ा उपहार है।

यह कह राजू ने अपनी अश्रुपूरित आँखों से शैलेन्द्र को गले लगा लिया।

से.नि. प्रधानाध्यापक
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे छोटीसादड़ी,
प्रतापगढ़-312604
मो. 9460607990

स्वावलम्बी

❒ दीपचन्द सुथार

पवन सप्तम् कक्षा का विद्यार्थी। माता-पिता की इकलौती संतान होने के कारण वह अहर्निश वात्सल्य में डूबा रहता है। उसकी माँ विद्यालय जाते समय अपने हाथों से ड्रेस व जूते-मौजे पहनाकर बाल संवारती। तत्पश्चात् अँगुली पकड़ कर दरवाजे के बाहर खड़ी टैक्सी में बैठा देती और रवाना होने पर दोनों ओर से हाथ हिलाकर ममत्व दर्शाती वह अभिभूत रहता वह भविष्य के सपने बुनने में व्यस्त रहता। इस प्रकार की दिनचर्या अब उसकी प्रवृति बन गई। जिसे बदलना बहुत कठिन। वह कई बार कहता कि मैं बड़ा हो गया हूँ लेकिन वह माँ के ममत्व की गहराई से अनभिज्ञ। प्रत्येक बच्चा सर्वगुण सम्पन्न नहीं होता। उसमें कुछ न कुछ कमी अवश्य होती है। ऐसी ही एक कमी पवन में भी थी। छुट्टी के बाद घर आने पर माँ गृहकार्य करने के लिए कहती लेकिन उनकी बात को अनसुनी कर मौहल्ले में हम उम्र बच्चों के साथ खेलने लग जाता। पिताजी आदर्शवादी विचारधारा के अनुगामी अतएव संकोचवश उनके आने के पूर्व ही घर आ जाता और पढ़ने लग जाता। कभी-कभार उन्हें कॉपियों व पुस्तकों के पन्नों को बारम्बार पलटते देख पूछते-''क्या बात है पवन?'' वह कहता ''दो प्रश्नों के उत्तर नहीं आ रहे हैं, आप कहे तो राजू से समझ कर आ जाऊँ।'' पिताजी कहते ''मैंने तुम्हें कई बार कहा हैं कि-अध्यापक कक्षा में पढ़ाते हैं तो ध्यान लगाकर सुनो। फिर भी समझ में नहीं आता है तो पुनः समझाने के संदर्भ में श्रद्धापूर्वक निवेदन करो। समय ही असली सम्पदा है इसलिए स्कूल का कार्य स्कूल में ही पूरा करने का प्रयास करो लेकिन मेरे बार-बार कहने के बावजूद भी तुम्हारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। औरों का सहारा लेने वाला विद्यार्थी अपने जीवन को सफल नहीं बना सकता है। दूध में छिपे नवनीत की तरह प्रत्येक बालक में प्रतिभा छिपी होती है। यही विकास की श्रेष्ठ सीढ़ी है। श्रम सहारे आरूढ़ होने वाला बालक ही अपने जीवन को वसंत-सम मुखरित कर सकता है। जो ऐसा नहीं करता है उनकी प्रतिभा को आलस्य रूपी ग्रहण लग जाता है और जीवन को अंधकारमय बना देता है। इसीलिए विचारों की दृढ़ता वृक्षों की जड़ों की भाँति गहरी होनी चाहिए ताकि जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ उनके सपनों को उखाड़ नहीं सकें अतः स्मरण रखो कि- स्वावलम्बन की टहनियों पर आकाँक्षाओं के सुरभित सुमन खिलते हैं जिनकी सुगन्ध युग-युगान्तरों तक भूले-भटकों का मार्गदर्शन करती रहती है।'' ये बातें पवन के समझ के बाहर थी लेकिन हृदय को छूकर उत्साहित कर रही थी। एतदर्थ इस संदर्भ के सूत्र की तलाश में था।

एक दिन वह विद्यालय की छुट्टी के बाद अपने घर की ओर जा रहा था। राह में तेज तूफान आ गया। पास में ही एक उद्यान था। वह भागकर उसमें चला गया। बागवान ने भय के मारे घबराते हुए बच्चे को देखकर अपने कमरे में बैठा दिया। जब तूफान शान्त हो गया तब घर जाने के लिए बाहर निकला तो उसने देखा कि कुछेक वृक्ष जड़ से उखड़े हुए नीचे पड़े हैं लेकिन जिसकी जड़ें गहरी व मजबूत थी वे वैसे के वैसे खड़े हैं। इस दृश्य ने उसे स्वावलम्बी बनने का सूत्र सिखा दिया। इसके बाद दूसरों पर आधारित रहने की प्रवृति छूट गई। अतः समय की महत्ता को जानकर दिन रात पढ़ने लगा। इससे उसका आत्मविश्वास जाग्रत हो उठा। परिणाम स्वरूप आगे चलकर सैकण्डरी परीक्षा में दूसरी रेंक से उत्तीर्ण हुआ। यह देखकर परिजनों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

C/o हेमन्त कुमार जाँगिड़
उम्मेद चौक, ब्राह्मणो की गली, जोधपुर-342001
मो. 9530051273

वेद और उपनिषद् सिखाते
क्या कर्तव्य हमारा
राम-कथा, गीता दिखलाती
जो गन्तव्य हमारा
मिले विश्व में दूर-दूर तक
संस्कृति के बिखरे अवशेष
करते प्रेरित करो पुनः तुम
वितरित जागृति के संदेश

तिरंगा झण्डा

❒ कल्पना दीक्षित

हम आगे कदम बढ़ाएँ,
हम मिल कर सब ये गाएँ,
तिरंगा शान है अपनी,
तिरंगा आन है अपनी,
छू के गगन को करता जाएँ,
ऊँचा नाम वतन का,
लहर-लहर कर देता जाएँ,
ये पैगाम अमन का,
हा-हा-हा....हो-हो-हो।

कभी ना देंगे झुकने इसको,
इस पर हम मिट जाएँ,
हम आगे कदम बढ़ाएँ,
यही धाम है यही है पूजा,
यही तो अपना मजहब है,
विकास शांति कभी न रुकना,
यही तो इसका मतलब है,
हा-हा-हा.....हो-हो-हो।

इसकी सेवा के खातिर हम,
अपनी जान लुटाएँ,
हम आगे कदम बढ़ाएँ,
शेखर का अरमान तिरंगा,
हम सबकी पहचान है,
हम सब का अभिमान तिरंगा,
इस पर हम कुर्बान हैं
हा-हा-हा....हो-हो-हो।

इसकी रक्षा की खातिर हम,
अपना शीश कटाएँ,
हम आगे कदम बढ़ाएँ,
हम मिल कर सब ये गाएँ।

पुस्तकालयाध्यक्ष
डाइट-उदयपुर
मो. 9462677857

बच्चों को संस्कारी बनाएँ

❒ सांवलाराम नामा

बच्चे कच्चे घड़े की तरह होते हैं। कच्चे घड़े को पकाने के बरती जाने वाली सावधानी बच्चों की परवरिश के मामले में भी रखनी पड़ती है। आजकल पति-पत्नी दोनों ही कामकाजी हैं। वेतनवृद्धि होती है पर संयुक्त परिवार बिखरते जा रहे हैं। जीवन स्तर भले ऊँचा हो रहा है किन्तु मर्यादाओं का उल्लंघन बतौर तेजी से जारी है। अनुशासन और शिष्टाचार के प्रति लोगों का रुझान घट रहा है। संयम और धैर्य तो जैसे रहा ही नहीं।

संस्कारों का बेहद अभाव हमारी सभ्यता एवं संस्कृति पर तो कुठाराघात कर रहा है। बच्चे कुछ ज्यादा ही जिद्दी, मनमाने बनते जा रहे हैं। दोस्तों के साथ और उनकी ही मर्जी से जीने का नया अंदाज परिवार में कलह, फिजूलखर्ची को आमंत्रण कर रहा है।

धीरे-धीरे बच्चों को किसी भी तरह का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं होता और वे मुँहजोर बन जाते हैं। इसी दौर में माता-पिता की चिंताएँ बेतहाशा बढ़ने लगती हैं, उन्हें लगता है कि कहीं औलाद गलत राह चुनकर भटक न जाए। यहीं संस्कारों का अभाव खटकने लगता है। जरूरत है समय की नजाकत को समझने की। ज्यादा सख्ती यदि उचित नहीं तो ज्यादा ढील भी ठीक नहीं है। दोनों ही स्थितियों में बच्चों का भटकना स्वाभाविक है।

सही समय पर सख्ती जरुरी

बच्चों को लाड़-प्यार, दुलार जरुरी है, किन्तु यह ध्यान में रखते हुए कि कहीं वे उसको गलत समझ कर बिगड़ने की भूल न कर बैठें। बच्चे दुनियां को अपनी नजर से देखते हैं और हम अपनी नजर से। यह जरूर याद रखें कि कभी हम भी बच्चे रह चुके हैं अतः वक्त से पहले और जरूरत से ज्यादा उम्मीद न रखें। अपना कर्त्तव्य ईमानदारी से निभाएं और बच्चों को उनके कर्त्तव्यों का निर्वाह याद कराएँ। बच्चों को प्यार से उनकी भूल, गलती समझाएँ तथा ये भी हिदायत दें कि ऐसी गलतियों का आगे कैसा प्रभाव पड़ सकता है। समयानुसार सख्ती बहुत ही जरूरी है।

आत्म निर्भर बनाएं

बचपन से ही बच्चों को अपना कार्य स्वयं ही करने की आदत डालना सिखाएँ। उनका मार्गदर्शन करें किंतु हर कार्य स्वयं न करते हुए उन्हीं से करने को कहें। कभी-कभी माँ ही बच्चों को आलसी बनाती है। प्रारंभ में जैसी आदत डालेंगे, बच्चे उसी के आदी बनेंगे।

पाबंदियाँ भी एक दायरे तक ही ठीक लगती हैं। बेहतर होगा कि बच्चों को आत्मनिर्भरता की प्रेरणा, प्रोत्साहन सतत् प्रदान करें, याद रहे कि छः से बारह वर्ष की उम्र में माँ ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है।

कायदों, नियमों को समझाएँ, लादें नहीं

नियमों का निर्माण बगैर किसी उद्देश्य के कभी नहीं किया जाता है। बच्चों को भी, सहज ढंग से नियम समझाएँ। खिलौनों को बाजार में कैसे रखा जाए, बाजार में या दुकानों में खरीददारी के दौरान कैसे रहा जाए। सत्संग में शोर गुल न मचाने की बात घर पर ही समझाएँ ताकि बच्चे सत्संग से लाभान्वित हो सकें। दूसरों के घर जाने पर किस तरह से उठें-बैठें यह शिक्षा भी बच्चे माँ से ही पाते हैं।

अपनी बातें स्पष्ट अंदाज में कहें

बच्चे से कोई बात करते समय लहजा ध्यान रखें क्योंकि बच्चे आप से ही बहुत कुछ ग्रहण करते हैं। नाराजगी भरे स्वर में हर पल कहना उचित नहीं कहा जाएगा। बाल मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर विशेष तौर से कहा है। बच्चों को यह यकीन कराएँ कि आप उनकी परवाह करते हैं। साफ-सुथरी एवं स्पष्ट बातें करना बच्वें में विश्वास बढ़ाता है और वे गलतफहमी का शिकार होने से बचते हैं।

नियम तोड़ना क्यों गलत है, उन्हें अहसास कराएँ

उदाहरणों के द्वारा बच्चे को यह समझाएँ कि नियमों का पालन करना कितना हितकारी है जबकि नियमों को तोड़ना कितना गलत है। नियमों को सम्मान देने की आदत बहुत फायदेमंद होती है। स्कूल जाने से पहले और स्कूल से घर आने के बाद कौन-कौन सी बातों को गंभीरता से लेना जरूरी है, यह बात बच्चे को ठीक ढंग से समझाना चाहिए।

सच बोलने की आदत डालें

सच से नाता तोड़ने की शिक्षा भी बच्चे माँ-बाप से ही प्राप्त करते हैं। माँ-बाप ही बच्चों को झूठ बोलना सिखाते हैं और जब बच्चे झूठ बोलने की आदत डाल लेते हैं तब माँ-बाप उन्हें ही डांटते-फटकारते हैं। अच्छा होगा यदि बच्चे के सच कहने की आदत का सम्मान करना सीखें ताकि उसे सच बोलने की प्रेरणा मिलती रहे।

कहा है- 'संस्कारोति संस्कृतम।'

से.नि.व्याख्याता
सदर बाजार रोड़, निकट बड़ा चौहरा,
भीनमाल-343029, (जालौर)
मो. 9587848485

उठो जागो...

❒ विशम्भर पाण्डेय

उठो जागो! अब सवेरा हो गया है।
तजो आलस, अब सवेरा हो गया है।।
उगा सूरज, बिखेरी स्वर्ण-किरणें,
धनी हुई धरा, सवेरा हो गया है।
बन्द आँखों के सपन हैं, झूठ सारे,
पलक खोलो सच, सवेरा हो गया है।
नीड़ से निकली है चिड़िया देर की,
गा रही है मुँडेर, सवेरा हो गया है।
जो कली डाल पर रात भर उदास थी,
खिल कली अब फूल, सवेरा हो गया है
रात नागिन बनी, अब रस्सी जान लो,
तोड़ दो बन्धन, सवेरा हो गया है।
बहुत जगते रहे हैं उल्लू रात भर,
सोने दो अब उन्हें, सवेरा हो गया है।
'व्यग्र' छोड़ो व्यग्रता सब भूलकर,
बच्चे चले स्कूल, सवेरा हो गया है।

कर्मचारी कॉलोनी,
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर-322201
मो. 9549165579

मेरे दादाजी

❒ ओमदत्त जोशी

दादा जी मेरे दादा जी,
रहते सदा सादा जी,
दादा जी मेरे दादा जी।
आलस्य उन्हें तनिक नहीं सताता,
जल्दी उठने में ही आनन्द आता,
योग, प्राणायाम कसरत करते,
स्नान-ध्यान कर पाठ-पूजा में लगते।
स्वाध्याय में समय लगाते ज्यादा जी,
दादा जी मेरे दादा जी,
रहते सदा सादा जी,
दादा जी मेरे दादा जी।
मितभाषी हैं मनन मंथन करते,
भक्ति भाव से भजन करते,
सभी को समझते एक समान,
सिक्ख, ईसाई, हिन्दू हो मुसलमान,
परहित, परोपकार का पूरा निभाते वादा जी,
दादा जी मेरे दादा जी,
रहते सदा सादा जी,
दादा जी मेरे दादाजी।
हैं बिल्कुल ही भोले-भाले,
नहीं बुनते झूठे जाले,
कभी नहीं रहते बैठे ठाले,
सब का साथ निभाने वाले
कठोर परिश्रम का रखते पूरा माद्दाजी
दादा जी मेरे दादा जी,
रहते सदा सादा जी,
दादा जी मेरे दादा जी।

पूर्व व्याख्याता, साहित्य सदन
वर्धमान कॉलेज के पास, ब्यावर
अजमेर-305901
मो. 9309353637.

मेरा प्यारा भारत देश

❒ उत्सव जैन

सोने की चिड़िया वाला,
जगत गुरु कहलाने वाला।
विश्व को ज्ञान देने वाला,
अहिंसा में विश्वास रखने वाला।।
मेरा प्यारा भारत देश(1)
विश्व को अपना परिवार मानने वाला,
जियो और जीने दो का सन्देश देने वाला।
शान्ति प्रिय मैत्री भाव रखने वाला,
सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में रहने वाला।।
मेरा प्यारा भारत देश(2)
कृषि प्रधान कहलाने वाला,
गंगा,यमुना जैसी पवित्र नदियों वाला।
गाँवों में बसने वाला,
पावन धरती को माँ का दर्जा देने वाला।।
मेरा प्यारा भारत देश(3)
सभी पर्व और त्योहार मनाने वाला,
मेलों में आनन्द मनाने वाला।
सभी धर्मो का आदर करने वाला,
गुरुओं का सम्मान करने वाला।।
मेरा प्यारा भारत देश(4)
वृक्षों की पूजा करने वाला,
प्राणीमात्र की सेवा करने वाला।
झगड़ों से दूर रहने वाला,
स्वच्छता का ध्यान रखने वाला।।
मेरा प्यारा भारत देश(5)

मु.पो.नौगामा तह. बागीदौरा
बांसवाड़ा
मो. 9460021783

आओ हम अच्छे बनें

❒ ऋतु संदल

आओ हम अच्छे बनें,
आओ हम अच्छे होने का प्रयास करें,
कोशिश करें।
कहते हैं अक्सर कोशिशें कामयाब होती हैं,
अगर वो सच्चे दिल से की जाए,
पर क्या है? अच्छे की परिभाषा।
जो सहज है, सत्य है और सुन्दर,
वही है अच्छा होने का प्रमाण,
मान सको तो मान लो,
बिना किसी कारण के किसी को देना एक,
प्यारी सी मुस्कान,
इन्सान होने के नाते, करना दूसरे का सम्मान।
निभाना अपने कर्त्तव्यों को अनवरत,
ना मांगते हुए अधिकार,
करना अपने संरक्षकों और
गुरुओं का सपना साकार।
मन लगाकर हर काम को करना,
ना चिन्ता करना क्या होगा परिणाम।
ना तुम्हें पहाड़ों को चीरना है,
ना है नदियों को लांघना,
बस अच्छा बनने के लिए रखना,
इन बातों का ध्यान। आओ....
आओ हम अच्छे बनने का प्रयास करें,
आओ हम अच्छे बनने की कोशिश करें।
कहते हैं कोशिशें अक्सर कामयाब होती हैं,
अगर वो की जाएँ सच्चे दिल से।
आओ हम दुआ करें,
अच्छे बनने की कोशिश करें।

व्याख्याता
1747 ए, कीर्तिनगर, जोधपुर-342007
मो. 9413960222

माटी हिन्दुस्तान की

❒ सत्यनारायण नागोरी

युगों-युगों से वन्दनीय है माटी हिन्दुस्तान की,
यह माटी शूर-वीरों की आर्यो की सन्तान की।
सुजला, सुफला भारत माता, रामकृष्ण का देश है,
धर्म, ज्ञान, दर्शन से मंडित यह पावन परिवेश है।
ऋषि, मुनियों का शुभ्र तपोवन, गंगा चरण पखारती,
सीमा-रक्षक प्रखर हिमालय धन्य धन्य माँ भारती।

यहाँ शान्ति और प्रेम का सदियों से सन्देश है,
ऐसा उत्तम जग में निराला अपना भारत देश है।
लव-कुश, भरत, शिवाजी, राणावीर सुभाष सपूत हैं,
बापू जैसे सत्य पुजारी नेहरू जैसे पूत हैं।
भगतसिंह, आजाद यहाँ पर अगणित वीर हमीद हैं,
इस माटी की रक्षा हित कितने हुए शहीद हैं।
पावन धरा की गौरव गरिमा रक्षक है सम्मान की,
सदा-सदा से पूजनीय है माटी हिन्दुस्तान की।

व्याख्याता, रा.उ.मा.वि.
केलवाड़ा-313325, राजसमन्द
मो. 9610334431

बस्ता भारी

❒ घनश्याम शर्मा

आधुनिकता खोज है स्कूल की तैयारी,
छोटे छोटे बच्चों पर बस्ता भारी।
भाषण में अविराम नेता जी बोल रहे थे,
बन्द पड़े बच्चों के बस्ते खोल रहे थे।
एक नया और विषय मैं लगवा दूं,
थोड़ी उठी कमर को भी मैं और झुका दूं।
भविष्य की है बात करें, पर है अंधियारी,
छोटे-छोटे बच्चों पर है बस्ता भारी।
रोटी जहाँ मिले वो तुम मत पढ़ लेना,
हिन्दी वाली मेडम का तो यही है कहना।
वो किताब पढ़ डालो जिसमें है हरियाली,
पढ़े हुए बच्चों की जिससे जेबें खाली।
बनना था वकील फिरे बनके दुखियारी,
छोटे-छोटे बच्चों पर है बस्ता भारी।
सामाजिक, विज्ञान, गणित है हिन्दी राजा,
भूगोलों का ज्ञान समाज उपयोगी ताजा।
कम्प्यूटर की नई किताब भी लगी है न्यारी,
छोटे-छोटे बच्चों पर है बस्ता भारी।
इससे वो अच्छे है जिनमें ज्ञान लपट है,
पढ़े हुए लोगों में वो जीवन में मस्त है।
अकबर का है नाम रटा भूला दुनिया सारी,
छोटे-छोटे बच्चों पर है बस्ता भारी।

द्वारा मनोहर लाल शर्मा
जेल वाली टंकी के पास
बीकानेर

ऋतुराज

❒ चन्द्रशेखर शर्मा

फागुन की बह चली बयार,
कोयल करने लगी पुकार।
सर्दी के दिन हवा हुए,
लदे आम, फूले महुए।
इतराए सरसों के खेत,
निखरी नदी किनारे रेत।
किए ढाक ने नव-शृंगार,
कुंज कली-किसलय के हार।
ले पराग भँवरे दौड़े,
उड़ते तितली के जोड़े।
बागों में बतियाते कीर,
जंगल-जंगल काग फकीर।
खेत-खेत बाली, बूटे,
मस्त फागुनी स्वर फूटे।
गूंजा गगन बसंती साज,
सज-धज आ पहुँचे ऋतुराज।

नवज्योति पब्लिक स्कूल
रख्यावल, खेमली
उदयपुर-313201

बेटी बचाओ

❒ नृहसिंहदास वैष्णव

बेटी है कुदरत का उपहार,
जीने का उसको भी अधिकार।
जिस घर कन्या का सम्मान,
वह घर समझो स्वर्ग समान।
बेटी तो है घर की शान,
सभी करो उसका सम्मान।
आंगन में बिटिया आएगी,
घर की रौनक बढ़ जाएगी।
आओ मिलकर अलख जगाएँ,
कन्या जन्मे खुशी मनाएँ।

कुदरत का अनुपम वरदान होती हैं बेटियाँ,
दिल जिगर सब की जान होती हैं बेटियाँ।
कुल के तारे के समान होती हैं बेटियाँ,
क्यों कहते हो कि मेहमान होती हैं बेटियाँ।

बेटी को मत समझो भार,
ये है जीवन का आधार।
भेजो इनको शिक्षा के द्वार,
पूरे परिवार का ये करेंगी उद्धार।

बिटिया करती रोशन नाम,
भ्रूण परीक्षण का क्या काम।

करमावास
(बाड़मेर)344021

घटता पानी...

❒ डॉ. लीला मोदी

बादल पानी बरसाता भाप बन के उड़ जाता,
जग की प्यास बुझाता अपना रस्ता आप बनाता।

नभ में इंद्रधनुष चमकाता धरती सरसाता उपजाता,
आँसुओं का मर्म जताता ऊसर बंजर धरा थमाता।

सबको घोले और घुलाता बेरंग होकर रंग दिखाता,
मानव की लाज कहाता गंगाजल अमरत कहलाता।

पानी की महिमा जग गाता संस्कृतियों को पनपाता,
मूरख इसको व्यर्थ बहाता घटता पानी हँसी उड़ाता।

291 मोती स्मृति, टिपटा, कोटा-324001
मो. 9462829900

बाल कविता

❒ ज्ञानप्रकाश पीयूष

तुलसी जी का प्यारा पौधा,
मम्मीजी का प्यारा पौधा।
नित उठ इसको शीश झुकाएँ,
भक्ति भाव से नीर चढ़ाएँ।
धूप जलाएँ, दीप जलाएँ,
आँख मूँद कर स्तुति गाएँ।
बच्चों की वह खैर मनाएँ,
अपने सुहाग की कुशल मनाएँ।
तुलसी जी का प्यारा पौधा,
मम्मी जी का प्यारा पौधा।

से.नि.प्रिंसिपल 1/258, मस्जिद वाली गली,
तेलियांवाला मौहल्ला, सिरसा-125055
मो. 9414537902

जीवन मूल्य

❒ शमिन्द्र कौर

अक्षरों को पढ़ना शब्दों का गढ़ना
मात्र ही कहाँ होता है,
सयानापन तुम समझो
पिता की मजबूरी माँ के चेहरे पर आई
चिंता की लकीरें।
तुम जानो जीवन के सत्य जिंदगी बचाने के लिए
सीखो बेशक झूठ बोलना भी
निभाओ रिश्तों को निभाते हुए जान जाओ
जीवन-मूल्य भी।।

प्रधानाध्यापक
म.सं.24, III ब्लॉक, पुरानी आबादी,
श्रीगंगानगर-330001 **मो. 9828214672**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

"मेरा मानना है कि विश्व का कल्याण भारतीय विचार में समाहित है। वर्तमान दुनिया में जो पूंजीवाद और समाजवाद अपने अस्तित्व का संघर्ष कर रहे है। ऐसे में पूरे जगत में यदि कोई आशा और उत्साह का संचार करता है तो वो है एकात्म मानवदर्शन का विचार, जो भारतीयता के मूल विचार सबके कल्याण की कामना से परिपूर्ण है।"

अपनों से अपनी बात

उत्कृष्टता की ओर कदम

सर्व प्रथम प्रदेश के अपने सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की अनेकानेक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। हमारी माननीय मुख्यमंत्री जी जिस प्रकार 'टीम राजस्थान' का विचार रखती है उसी अनुरूप हमने 'Team Education' के विचार को क्रियान्वित कर राजस्थान शैक्षिक गुणवत्ता के लिये नये आयाम स्थापित किए है। हमने जो परिवार भाव से काम प्रारम्भ किया उसको एक पहचान मिलने लगी है जिससे परिवार के मुखिया होने के नाते मुझे गर्व की अनुभूति है। अगस्त महीने में ऐसे दो अवसर आए जो राजस्थान 'Team Education' से जुड़े हर व्यक्ति के लिये गौरवानुभूति के पल कहे जा सकते है। बिहार के माननीय शिक्षामंत्री श्री अशोक चौधरी अगस्त के प्रथम सप्ताह में जयपुर यात्रा पर आए। इस दौरान 07 अगस्त को वे मुझसे मिलने पधारे। बातचीत में उन्होंने राजस्थान में हुए स्टाफिंग पैटर्न, शाला दर्पण/शाला दर्शन, परामर्श कैम्प लगाकर पदस्थापन में पारदर्शिता लाने, विभिन्न प्रोत्साहनकारी योजनाओं, वृहत् स्तर पर शिक्षकों की नई भर्ती/डीपीसी, विद्यालयों में भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाने, जनसहभागिता एवं जनसहयोग जैसे अनेकानेक नवाचारों का प्रसन्नतापूर्वक जिक्र करते हुए न केवल इसके लिए हमारी प्रशंसा की अपितु इन्हें बिहार में लागू करने का संकल्प व्यक्त करते हुए हमारे सहयोग की अपेक्षा भी की। आप जानते हैं कि केन्द्र सरकार स्तर पर पहले ही ऐसी प्रतिक्रियाएँ प्रकट की जा चुकी हैं। 'Team Education' को इस हेतु बधाई एवं साधुवाद।

दूसरा वृत्तान्त और भी अद्भुत एवं हर्षित कर देने वाला है। 70वें स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2016) का राज्यस्तरीय समारोह अजमेर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हमारी लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीया वसुन्धरा राजे ने शिक्षा विभाग की उपलब्धियों एवं नवाचारों पर हर्षित होते हुए जो कहा उसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। परीक्षा परिणामों में हुई सराहनीय वृद्धि, नामांकन, विद्यालयों में हुए निर्माण कार्य, प्रयोगशाला, आर्ट एण्ड क्राफ्ट रूम, शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षक भर्ती एवं पदोन्नति, व्यक्तिगत नियोज्यता वृद्धि, कौशल विकास, शैक्षिक अवसरों की विविधता प्रदान करने वाली व्यावसायिक शिक्षा की सुलभता एवं जन सहभागिता व जन सहयोग आदि पर फोकस करते हुए उन्होंने शिक्षा विभाग की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की जो हमारे लिए गौरव एवं प्रसन्नता की बात है। इन सभी उपलब्धियों तथा योजनाओं-प्रायोजनाओं के सफल एवं बेहतर संचालन के लिए राज्य के शिक्षक एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी तथा कार्मिक धन्यवाद के पात्र हैं।

राजस्थान को 'Best State in Skill Development' का खिताब लगातार दूसरी बार मिलने पर मुख्यमंत्री जी ने बधाई देकर हमें प्रोत्साहित किया। राज्यस्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री जी के द्वारा शिक्षा विभाग को इतना महत्त्व दिया जाना जहाँ हमें प्रसन्नता देता है, वहीं और अधिक परिश्रम, लगन, उत्साह, समर्पण एवं प्रतिबद्धता से अहर्निश कर्त्तव्यपालन की सीख भी देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी 'Team Education' इसमें खरी उतरेगी। एक बार पुनः आप सबको शुभकामनाएँ।

शिक्षा विभाग में कार्य करते हुए हमें सदैव उत्कृष्टता की ओर कदम बढ़ाने चाहिए। हमारे में जो सर्वोत्तम है, उसे निर्विकार रूप से अपने विद्यार्थियों को दे देना चाहिए। शत प्रतिशत नामांकन ही नहीं अपितु शत प्रतिशत ठहराव सुनिश्चित करने के साथ ही हमें गुणवत्तायुक्त शिक्षण एवं अधिगम का मार्ग भी प्रशस्त करना चाहिए। शत प्रतिशत नामांकन व परीक्षा परिणाम तथा गुणवत्ता में वृद्धि के लिए बीकानेर मण्डल 'टारगेट शत प्रतिशत' एवं 'मिशन मेरिट' जैसे नवाचार कर रहा है। मैं चाहता हूँ कि उत्कृष्टता के लिए कोई कसर इस वर्ष हम नहीं छोड़ें और राजस्थान को शिक्षा के क्षेत्र में सिरमोर प्रान्त बनाकर ही दम लें। शिक्षा क्षेत्र में सुधार की जो लहर गत दो वर्षों में चली है, उससे हमारी शान, मान, उत्साह एवं मन की प्रसन्नता में वृद्धि हुई है।

इस माह में शिक्षक दिवस (5 सितंबर 2016) है। शिक्षकों को महिमा दिलाने वाले महान मनीषि, उद्भट विद्वान, प्रखर वक्ता, दर्शनशास्त्र के मर्मज्ञ और कुशल राजनेता हमारे द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन् को स्मरण करते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर चलने का संकल्प इस अवसर पर हमें लेना चाहिए। मैं उन दिव्यात्मा-महात्मा को भाव सुमन अर्पित करते हुए प्रणाम करता हूँ। राज्य में पहली बार शिक्षक दिवस के अवसर पर जिला एवं पंचायत समिति स्तर पर भी शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। मैं राज्य में शिक्षा का आलोक फैला रहे शिक्षक भाई-बहनों को इस अवसर पर बधाई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य, कीर्ति एवं प्रतिष्ठा की कामना करता हूँ। वे स्वाध्यायी बने और अध्ययन एवं मनन के बल पर स्वयं का परिष्कार कर विश्व के परिष्कारक बनें। इसी में उनके शिक्षक होने की सार्थकता है। इसी महीने में राजस्थान में जन्मे पूरी दुनिया में एकात्म मानव दर्शन जैसा अद्वितीय विचार दुनिया को देने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्मशताब्दी वर्ष (25 सितम्बर) प्रारम्भ होगा।

कोई चलता पद चिह्नों पर, कोई पद चिह्न बनाता है। है वही सूरमा इस जग में, जो अपनी राह बनाता है।।

ऐसे ही विचारक और चिन्तक थे पं. दीनदयाल जी, जिन्होंने अपनी राह स्वयं बनायी। मेरा मानना है कि विश्व का कल्याण भारतीय विचार में समाहित है। वर्तमान दुनिया में जो पूंजीवाद और समाजवाद अपने अस्तित्व का संघर्ष कर रहे है। ऐसे में पूरे जगत में यदि कोई आशा और उत्साह का संचार करता है तो वो है एकात्म मानवदर्शन का विचार, जो भारतीयता के मूल विचार सबके कल्याण की कामना से परिपूर्ण है।

गत दिनों एक सड़क दुर्घटना में मेरे पैर में फ्रेक्चर हो जाने पर पूरे राज्य से मिली शुभकामनाओं के लिए मैं अभिभूत हूँ। आपकी मंगलकामनाएँ मेरा सम्बल है। मैं ठीक हूँ और अपनी अधिकतम क्षमता एवं योग्यता से शिक्षा हित में कार्य करने का संकल्प फिर से दोहराता हूँ। मेरा तन, मन और सर्वस्व शिक्षा के लिए समर्पित रहे, बस मैं यही चाहता हूँ। मैं अनेक अवसरों पर कह चुका हूँ और शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर पुनः दोहराता हूँ कि मैं मंत्री होने से पहले शिक्षक हूँ और मुझे मेरे शिक्षक होने पर गर्व है।

शिक्षक दिवस के मंगल अवसर पर एक बार पुनः आप सभी के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

चित्रवीथिका : माह सितम्बर, 2016

दिनांक 21 मई से 27 मई, 2016 तक 'रेजीडेन्स प्रोग्राम इन राष्ट्रपति भवन' नई दिल्ली में राष्ट्रपति महोदय के मेहमान के रूप में राजस्थान शिक्षा विभाग की प्रतिनिधि आशा दशोरा, व्याख्याता इतिहास, रा.उ.मा.वि., सेंती, चित्तौड़गढ़ महामहिम राष्ट्रपति महोदय को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए।

70वें स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री जगदीश चन्द्र पुरोहित राष्ट्रध्वज को सलामी देते हुए एवं कार्यालय परिसर में उपस्थित अधिकारियों तथा कार्मिकों को संबोधित करते हुए।

70वें स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान श्री जगदीशचन्द्र पुरोहित ध्वजारोहण पश्चात कार्यालय परिसर में उपस्थित अधिकारियों तथा कार्मिकों को संबोधित करते हुए।

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय कालियास, तह. आसीन्द जिला भीलवाड़ा में 'विश्व युवा कौशल दिवस' के अवसर पर आयोजित विद्यार्थी रैली।